देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
July 2023
Vol.-18, Issue-1(2)

Impact Factor
7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. निशीथ गौड़, डॉ. वर्षा रानी

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 18 **ISSUE-1(2)** **(जुलाई 2023)** **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. निशीथ गौड़,
डॉ. वर्षा रानी

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराव
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध–पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के **Arial, Times New Roman** में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी **Email ID : grsbohal@gmail.com** पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :- उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज **7x9.5** पर टाईप कराकर **JPG** या **PDF** फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा
Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

जुलाई 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	शुभकामना संदेश	प्रोफेसर आनन्द मोहन	10–10
2.	सम्पादकीय	डॉ. निशीथ गौड़, डॉ. वर्षा रानी	11–12
3.	ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य में वैश्वीकरण की भूमिका	रेखा कुमारी डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह	13–17
4.	शिकंजे का दर्द : दलित स्त्री चेतना का नया सोपान	हिना	18–21
5.	हिन्दी सिनेमा में साहित्य पोषित सामाजिक चेतना	डॉ. डी. सी. पाण्डेय	22–28
6.	'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रित वृद्ध जीवन की त्रासदी	डॉ. दीपक कुमार	29–31
7.	डॉ. राम गोपाल सिंह की व्यंग्य-चेतना	डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल	32–38
8.	चीन-ताइवान सम्बन्ध एवं भारतीय सुरक्षा	एस. सी. श्रीवास्तव	39–41
9.	विदेशों में हिन्दी साहित्य सृजन	सोनू गौतम	42–46
10.	स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान	प्रो. जमादार रूकसाना एल.	47–50
11.	पण्डितराजजगन्नाथकृतसूर्यलहर्याः रसभावादीनां विमर्शनम्	Priyanka Barik	51-54
12.	Impact of Internet usage on Academic Achievement : Both Positive & Negative	Ved Pal, Dr. Madhuri Hooda	55-61
13.	माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रतिमान का अध्ययन	पंकज कुमार, डॉ. मंजू सिंह	62–68
14.	मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	नेहा यादव	69–72
15.	ROLE OF MATHEMATICS IN NATURE	Dr. Pawan Chanchal, Dr. Yogendra Kumar	73-76
16.	आदिवासी समाज का स्वरूप	गुलशन कुमार, डॉ. सत्येन्द्र कुमार	77–80
17.	वीरशैव संप्रदाय के प्रगतिवादी कवि-पाल्कुरिकि सोमनाथ	डॉ. डी. सत्यलता	81–83
18.	लोक गीतों में नारी की मनोवेदना की अभिव्यक्ति; रिसर्च एण्ड डेवलपमेण्ट योजनान्तर्गत उच्च शिक्षा (उ. प्र. सरकार द्वारा अनुदानित शोध के अंतर्गत)	डॉ. ज्योति शर्मा	84–87

19.	E–GOVERNANCE, ROLE, CHALLENGES, TOOLS AND CURRENT STATUS OF SMART CITY IN INDIA	RAHUL SAXENA, NAKUL SHARMA	88-95
20.	युगप्रवर्त्तक निराला	डॉ. दीपाली शर्मा	96–99
21.	'ग्लोबल गाँव का देवता' : गरीबी का स्त्री–सन्दर्भ	डॉ. अभिषेक शुक्ल	100–103
22.	ग्रामीण एवंनगरीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षिकाओं की ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. कुमारी सरिता, भावना बरनवाल	104–107
23.	E-Learning -Transformation in Indian Education System	Dr. Aruna Anchal, Ms. Ashu Soni	108-113
24.	VITAMIN AND MINERALS : BOON AND NEED FOR THE SUSTENANCE OF LIFE	DIPIKA, Dr. Avadh Narayan Dwivedi	114-125
25.	संत कबीर की सामाजिक चेतना	रेखा रानी	126–130
26.	रमणिका गुप्ता का अपराजेय संघर्ष	प्रियंका सिंह	131–137
27.	रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतना	डॉ० सुनीता देवी, बिमला शर्मा	138–143
28.	जल संकट	कैलाश प्रजापत	144–148
29.	लार्ड कार्नवालिस के न्यायिक सुधार : एक ऐतिहासिक विशलेषण	Dr. Vikram Singh Deol	149-152
30.	राजनीति में मीडिया चित्रण हिंदी अखबारों में महिला राजनेताओं का अध्ययन	नरेन्द्र सोनी, डॉ. सुनैना	153–161
31.	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी समस्या	उषा कुमारी	162–167
32.	वर्तमान भारतीय लोकतंत्र में अम्बेडकर के विचारों की भूमिका	राजेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. मधुलिका यादव	168–171

DAYALBAGH EDUCATIONAL INSTITUTE
(DEEMED TO BE UNIVERSITY)
DAYALBAGH
AGRA - 282 005, UP (INDIA)

Phone : 0562-2801545, Fax : 0562-2801226
website :- http://www.dei.ac.in

शुभकामना संदेश

बोहल शोध मंजूषा शोध की दिशा में एक अत्यंत उच्च श्रेणी की पत्रिका है। जो अनुसंधान के क्षेत्र में शोधार्थियों को नवीन शोध कार्य के लिए प्रेरित करती है । यह शोध की दिशा में एक सकारात्मक प्रयास है। इस शोध पत्रिका का जुलाई 2023 का 'संस्कृत संस्कृति एवं मूल्य संवर्धन' अंक विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान में मनुष्य को नैतिक मूल्यों की आवश्यकता अधिक है । आज जैसे-जैसे मानव ज्ञान- विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर प्रगति के सोपानों पर चढ़ता जा रहा है, वहीं वह मानवीय मूल्यों को विस्मृत कर बैठा है। जिस पर ध्यान देने की अत्यंत आवश्यकता है और इस विशेषांक के द्वारा ऐसे सभी पहलुओं पर शोध प्रपत्र लिखे गए हैं। बोहल शोध मंजूषा का जुलाई 2023 का यह अंक अनुसंधान के विकास की संभावना से परिपूर्ण है। इस अंक की सफलता के लिए मेरी अनंत शुभकामनाएं।

आनन्द मोहन

प्रोफेसर आनन्द मोहन
कुलसचिव,
डी.ई.आई (डीम्ड टू बी) विश्वविद्यालय, दयालबाग़,आगरा

अतिथि सम्पादक की कलम से.....

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मेरा।
- संत कबीर

शिक्षा एक व्यापक शब्द है। केवल साक्षरता को संकुचित अर्थ में भले ही शिक्षा कह दिया जाए किंतु वास्तविक शिक्षा तो व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है । यह हमारी शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का उद्घाटन करती है। संस्कृत में हमारी संस्कृति सन्निहित है, संस्कार निहित हैं एवं संपूर्ण जीवन मूल्य समाहित हैं ।

ज्ञान- विज्ञान का केंद्र, चारों वेद, उपनिषद्, पुराण, धर्मशास्त्र, नीति ग्रंथ, सुरभारती के द्वारा ही प्रतिष्ठित हैं। न केवल प्राचीनतम साहित्य वरन् आज अत्यंत नव्य विधाओं में संस्कृत लेखन अनवरत चलता ही जा रहा है। यह एक वैज्ञानिक भाषा है और कंप्यूटर,एआई, कोडिंग आदि के लिए भी श्रेष्ठ सिद्ध हो चुकी है। आज युवा शक्ति को संस्कृत साहित्य में समाहित इन नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को समझने की आवश्यकता है और उन्हें अपने आचरण में उतारने की ज़रूरत है।

बोहल शोध मंजूषा के जुलाई 2023 के विशेषांक में सम्मिलित आलेख 'संस्कृत संस्कृति एवं मूल्य संवर्धन' पर आधारित हैं और वर्तमान में मूल्यों के संवर्धन की ही आवश्यकता है जिससे यह विशेषांक अपनी सार्थकता सिद्ध करता है। बोहल शोध मंजूषा द्वारा शोध के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयास निस्संदेह स्तुत्य हैं । जिनका लाभ लेखकों एवं शोधार्थियों को प्राप्त हो रहा है और आगे भी प्राप्त होता रहेगा।

बोहल शोध मंजूषा के अतिथि विशेषांक का उत्तरदायित्व प्रदान करने हेतु बहुत-बहुत आभार एवं समस्त शोधरत विद्वज्जन को अनंत शुभकामनाएं।

डॉ निशीथ गौड़,

असि. प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

कला संकाय, डी.ई.आई (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग़, आगरा

विशेषांक सम्पादक की कलम से.....

भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, आध्यात्म, इतिहास, पुराण, भूगोल, राजनीति एवं विज्ञान की मूल स्रोत संस्कृत भाषा आज भी भारतवर्ष का गौरव एवं प्राण है। वेदों के रहस्यमय ज्ञान से लेकर साधारण जनजीवन के मनोरंजन से संबंधित पंचतंत्र की कथाओं तक जितना भी साहित्य आज उपलब्ध है, सब संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है। "सर्वे भवन्तु सुखिन:" के मध्यम से सभी का कल्याण एवं "वसुधैव कुटुम्बकम्" के मध्यम से विश्व बंधुत्व की अवधारणा के साथ साथ मानवीय मूल्यों की स्थापना करना संस्कृत की अनुपम देन है। शिक्षकों, शोधार्थियों, अभिभावकों, छात्र – छात्राओं, एवं अन्य पाठकों के मध्यम प्रत्येक नागरिक के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना तथा मानवीय मूल्यों के अंकुर डालने हेतु गुगनराम एजुकेशन एवं सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित अंतर्राष्टीय बहुभाषी पत्रिका 'बोहल शोध मंजूषा' का यह जुलाई अंक भाग एक समग्र रूप से 'संस्कृत, संस्कृति एवं मूल्य संवर्धन' विशेषांक नाम के अनुरूप ही मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित एक यज्ञ है, जो संस्कृत, संस्कृति एवं मूल्य संवर्धन हेतु प्रकाशन की ओर से आहूत किया गया है जिसमे सम्पूर्ण भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों ने इस विशेषांक के लिए अपने शोधालेख रुपी आहुतियां दी है।

इसके अतिरिक्त सामान्य अंक के लिए आप सभी ने पत्रिका परिवार को अपना अनुपम सहयोग दिया है। हम हृदय तल से सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते है और आशा करते है कि भविष्य में भी आप सभी का सहयोग हमें इसी प्रकार मिलता रहेगा।

बोहल शोध मंजूषा विगत कई वर्षों से अनुसन्धान के क्षेत्र में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित किये हुए है। अनुसन्धान के क्षेत्र में नवीन आयामों के माध्यम से लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। यह लोकप्रियता आप सभी के सहयोग एवं प्रेम की परिचायक है।

मैं आदरणीय प्रो. आनंद मोहन कुलसचिव डी. ई. आई. विश्वविद्यालय , दयालबाग, आगरा को धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने अपने आशीर्वाद स्वरुप शुभकामना सन्देश भेज कर हमें प्रोत्साहित किया । साथ ही मैं बोहल शोध मंजूषा की कार्यकारिणी समिति को भी धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने मुझे अतिथि संपादक का उत्तरदायित्व प्रदान किया।

डॉ. वर्षा रानी

संस्कृत – विभाग

डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 13-17

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य में वैश्वीकरण की भूमिका

रेखा कुमारी, शोधार्थी,
समाजशास्त्र विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, (बिहार) 802301
डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह, शोध निर्देशक
सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, शेरशाह कॉलेज, सासाराम (बिहार)

सारांश :-

ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्य आंतरिक रूप से समाज में उनकी स्थिति से जुड़ा हुआ है। भारतीय महिलाएं परिवारों में जो योगदान देती हैं उसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है, और इसके बजाय उन्हें आर्थिक बोझ के रूप में देखा जाता है। भारत में बेटे को प्राथमिकता दी जाती है, क्योंकि बेटों से अपेक्षा की जाती है कि वे उम्र बढ़ने के साथ–साथ माता–पिता की देखभाल करें। बेटे की इस प्राथमिकता के साथ–साथ बेटियों के लिए दहेज की ऊंची लागत के कारण कभी–कभी बेटियों के साथ दुर्व्यवहार होता है। इसके अलावा, भारतीय महिलाओं में शिक्षा और औपचारिक श्रम शक्ति भागीदारी दोनों का स्तर निम्न है। उनके पास आम तौर पर बहुत कम स्वायत्तता होती है, वे पहले अपने पिता, फिर अपने पतियों और अंत में अपने बेटे के नियंत्रण में रहती हैं। ये सभी कारक भारतीय महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। खराब स्वास्थ्य का असर न केवल महिलाओं पर बल्कि उनके परिवारों पर भी पड़ता है। खराब स्वास्थ्य वाली महिलाओं में कम वजन वाले शिशुओं को जन्म देने की संभावना अधिक होती है। उनके अपने बच्चों को भोजन और पर्याप्त देखभाल प्रदान करने में सक्षम होने की भी कम संभावना है।

अंत में, एक महिला का स्वास्थ्य घरेलू आर्थिक कल्याण को प्रभावित करता है, क्योंकि खराब स्वास्थ्य वाली महिला श्रम बल में कम उत्पादक होगी। जबकि भारत में महिलाओं को कई गंभीर स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का सामना करना पड़ता है, यह प्रोफाइल केवल पाँच प्रमुख मुद्दों पर केंद्रित है : प्रजनन स्वास्थ्य, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, पोषण संबंधी स्थिति, लड़कियों और लड़कों के साथ असमान व्यवहार और एचआईवी एड्स। भारत के 25 राज्यों और 7 केंद्र शासित प्रदेशों के बीच संस्कृतियों, धर्मों और विकास के स्तरों में व्यापक भिन्नता के कारण, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि महिलाओं का स्वास्थ्य भी अलग–अलग राज्यों में बहुत भिन्न होता है। अधिक विस्तृत तस्वीर देने के लिए, जब भी संभव होगा प्रमुख राज्यों का डेटा प्रस्तुत किया जाएगा। बालिकाओं के प्रति भेदभाव व्यवस्थित और व्यापक है जो देश के कई जनसांख्यिकीय पहलुओं में प्रकट होता है। पूरे देश के साथ–साथ इसके ग्रामीण क्षेत्रों में भी, पुरुषों की तुलना में महिलाओं में शिशु मृत्यु दर अधिक है। आमतौर पर, हालांकि विशेष रूप से नहीं, यह उत्तरी और पश्चिमी राज्यों में है कि महिला शिशु मृत्यु दर अधिक

है, दो लिंगों की विशिष्ट दरों के बीच दस अंक का अंतर असामान्य नहीं है।

कीवर्ड :- वैश्वीकरण, महिला, स्वास्थ्य सेवा, स्वास्थ्य सूचना।

प्रस्तावना :-

महिला अस्वस्थता अक्सर गरीबी, अज्ञानता जागरूकता का अभाव और चिकित्सीय सुविधा के अभाव में होता है। चूंकि महिलाओं के ही समाज तथा परिवार का आधार कहा जाता है। यदि महिलाओं ही अस्वस्थ है तो एक उज्जवल और निरोगी समाज की कल्पना ही नहीं जा सकती है। अतः महिला विकास हेतु यह अनिवार्य घटक है। आजादी के बाद से सरकार के समक्ष महिलाओ के स्वास्थ्य में सुधार एक महत्वपूर्ण चुनौती रहा है। विशेषकर ग्रामीण महिलाओं की जहां आज भी उचित चिकित्सा का आभाव पाया जाता है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि परिवार की धुरी में महिला होती है। उसकी स्वास्थ्य की स्थिति का सीधा प्रभाव परिवार के सदस्यों पर पड़ता है। यदि घर की महिला स्वास्थ्य है। उसके बच्चे भी स्वास्थ्य होंगे और परिवार के अन्य सदस्यों पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वास्थ्य केवल रोग अथवा दुर्बलता की अनुपस्थिति को ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक खुशहाली की स्थिति को कहते हैं। एक स्वास्थ्य महिला ही अपने परिवार का देखभाल व पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति बेहतर ढंग से कर सकती है। यद्यपि इसका स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक जरूरत है क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति न केवल शारिरिक व मानसिक रूप से वरन सामाजिक रूप से भी स्वयं को अच्छा महसूस करता है और जिम्मेदारियों का निर्वाहन करने में सक्षम होता है। फिर भी महिला स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि महिलाओं पर मां, पत्नी, बहन व बेटी के रूप में जीवन मे अनेक जिम्मेदारियों के निर्वाहन के दायित्व होता है। स्वास्थ महिला स्वस्थ सन्तान को जन्म देकर स्वस्थ व खुशहाल भावी पीढ़ी का निर्माण करती हैं। इसके साथ ही स्वस्थ महिला परिवार व राष्ट्र के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अनेक महत्वपूर्ण कार्यों का उचित ट्रिक्स से निष्पादन कर समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्वास्थ्य समस्या एक गम्भीर चिंता का विषय है और यह समस्या वर्तमान समय में भी बनी हुई है। सरकार की भूमिका इस दशा में आजादी के पूर्व काल में उनके दायित्वों के अनुरूप नहीं रही, परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्वास्थ्य सेवाओं की दशा में पर्याप्त प्रगति हुई है। इसके बावजूद आज भी हम महिलाओं के स्वास्थ्य की स्थिति को सन्तोषजनक नहीं कह सकते हैं। राश्ट्रीय परिवारिक स्वास्थ सर्वेक्षण–4, 2015–16 के आकड़ों के अनुसार केवल 51 प्रतिशत गर्भावती महिलाएं ही बच्चे के जन्म से पूर्व जागरूकता कार्यक्रमों में शामिल हुई केवल 30 प्रतिशत महिलाओं ने आयरन फॉलिक एसिड वाले खाद्य पदार्थो का सेवन किया। पूरक पोषण अभियान में मिलने वाला एशन 51 प्रतिशत गर्मवती महिलाओं को मिला। मातृत्व लाभ योजनाओं का लाभ लेने के लिए सभी राज्यों में नाम दर्ज कराने वाली महिलाओं की वादाद 50 प्रतिशत है। बच्चों की 79 प्रतिशत डिलीवरी अस्पताल में होने के बाबजूद के 42 प्रतिशत महिलाएं ही तुरन्त बच्चों को दूध पिलाना शुरू करती है। बच्चों को सिर्फ एक बार स्तर स्तनपान कराने वाली महिलाओं की संख्या 55 प्रतिशत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं राष्ट्रीय परिवार सर्वेक्षण–5 (2019–2021) के रिपोर्ट के अनुसार देश मे ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्य यहाँ रह रहें आम नागरिकों की तुलना में कहीं अधिक निम्न स्तरीय है। कमजोर स्वास्थ्य कुपोषण का परिणाम है जिसकी शुरुआत गर्भावस्था में होती है और जीवनपर्यंत चलती रहती है। जनसंख्या के

दृष्टिकोण के देखा जाए कि जिस राज्य में जनसंख्या अधिक है, वहाँ महिलाओं की समस्याएं अधिक है।

2011 के जनगणना के अनुसार बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, आंध प्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों की जनसंख्या शीर्ष स्थान पर है।

ग्रामीण क्षेत्रों में कम उम्र में विवाह करने की प्रथा आज भी व्याप्त है। यहाँ वैधानिक आयु 18 वर्ष से कम उम्र में ही लड़कियों की बड़ी संख्या में विवाह किया जाता है। अपरिपक्व अवस्था मे विवाह हो जाने, कम उम्र में यौन सम्बन्धों में रत हो जाने तथा जल्दी मातृत्व धारण कर लेने के परिणामस्वरूप लोग एक तो स्वयं रोगी हो जाते हैं, दुर्बल, रोगी व अल्पायु वाली सन्तानों को जन्म देती है। बाल विवाह हो जाने के कारण माताएँ अधिक सन्तानों को जन्म देती हैं और वह बच्चों का देखभाल में भी सक्षम नहीं हो पातीं। फलतः माता का स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित होता है। आंकड़ों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता हैं कि दक्षिण भारत के राज्यों की तुलना में उत्तर भारत के राज्यों में बाल विवाह अधिक होता है। फलतः इन राज्यों में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति अधिक खराब हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 53.4 प्रतिशत महिलाओं का विवाह 18 वर्ष से कम आयु में सम्पन्न हो जाते हैं। राज्य अनुसार विवाह की आयु में असमानताएं हैं। इसके बाद बिहार 68.6 प्रतिशत का स्थान है।

ग्रामीण में महिलाओं के स्वास्थ्य पर परिवार नियोजन का भी व्यापक प्रभाव पड़ा है। परिवार नियोजन का तात्पर्य यह तय करना कि आपके कितने बच्चे हो और कब हो? यदि आप बच्चे पैदा करने के लिए थोड़ी प्रतीक्षा करना चाहते है तो उनके उपलब्ध साधनों में से कोई एक चुने सकते है। इन्ही साधनों को परिवार नियोजन के साधन, बच्चों के जन्म के बीच अन्तर रखने के साधन या गर्म निरोधक साधन कहते है। प्रतिवर्श लगभग 5 लाख महिलाएं गर्मधारण, प्रसव तथा असुरक्षित गर्भपात की समस्याओं के कारण मृत्यु की शिकार हो जाती है। इनमें अनेक मौतों को परिवार नियोजन द्वारा रोका जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य :-

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य में वैश्वीकरण की भूमिका का पता लगाना।

अध्ययन पद्धति :-

प्रस्तुत शोध आलेख द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। जिसमें, सरकारी रिपोर्ट, गैर सरकारी रिपोर्ट, शोध आलेख, जनगणना, पुस्तकों आदि को शामिल किया गया है। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य में वैश्वीकरण की भूमिका :-

महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए एक प्रमुख बाधा असमानता है, पुरुषों और महिलाओं दोनों के बीच और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, सामाजिक वर्गों और स्वदेशी और जातीय समूहों में महिलाओं के बीच रहा है। ये सामाजिक, आर्थिक या संरचनात्मक निर्धारकों में निहित हैं जैसे भौतिक संसाधनों तक असमान पहुंच, बचपन के विकास में असमानता और प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में बाधाएं उत्पन्न करते है । वैश्वीकरण से शिक्षा पद्धति में सुधार किया गया। शिक्षा ने महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार में महिलाओं ने सकारात्मक भूमिका निभाई है।

महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार के लिए, हमें प्रजनन स्वास्थ्य, मातृ मृत्यु, कुपोषण और गैर–संचारी रोगों से संबंधित मुद्दों पर ध्यान दिया गया। वैश्वीकरण से सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के तहत गुणवत्तापूर्ण और

किफायती स्वास्थ्य सेवाओं के संचार प्रौद्योगिकी का एक सन्तुलन प्रयाग किया गया। आज महिलाएं अपने स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति काफी जागरूक हो गई है। अपने स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याओं के निदान के लिए संचार माध्यमों का प्रयोग करती है। वैश्वीकरण के आने पश्चात संचार प्रौद्योगिकी में काफी विकास हुआ है। जिनका फायदा महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार में मिल रहा है।

महिलाओं के बेहतर स्वास्थ्य को प्राप्त करने के लिए प्रजनन स्वास्थ्य से परे एक समग्र, व्यापक और जीवन–प्रक्रिया दृष्टिकोण की आवश्यकता को महसूस कर रही है– गर्भावस्था से शुरू होकर नवजात शिशु, बचपन, किशोरावस्था और उम्र बढ़ने की अवधि अपना ध्यान रख रही हैं। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए सशक्त होती जा रही है। इसमें वैश्वीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

भारतीय महिलाओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी बहुत सी समस्यायें उच्च स्तर के प्रजनन से जुड़ी या उससे ज्यादा गंभीर हुयी समस्यायें हैं। समग्र रूप से देखें तो प्रजनन भारत में घट रहा है जैसा कि आकलन किया गया है कि वर्ष 2005–06 तक कुल प्रजनन दर घट कर 27 रह गई है। फिर भी, प्रजनन स्तर, में राज्य, शिक्षा, धर्म, जाति और आवास स्थान के अनुसार बहुत अधिक अनार पाया जाता है।

भारत के अधिकतम जनसंख्या वाले प्रान्तों अर्थात् उत्तर प्रदेश और बिहार में कुल प्रजनन दर प्रति महिला 4 बच्चों से अधिक है। इसके विपरीत, केरल जैसे प्रान्त में, जहाँ अपेक्षाकृत उच्च स्तर की महिला शिक्षा और स्वायत्तता है कुल प्रजनन दर दो से नीचे है।

दस्तावेज इस बात पर भी बल देता हे कि परिवार नियोजन कार्यक्रमों की लम्बे समय तक सफलता के लिये ये अनिवार्य हे कि व्यक्ति को विकल्प चुनने का पूरा–पूरा अवसर दिया जाना चाहिये और किसी प्रकार की जोर–जबरदस्ती नहीं की जानी चाहिये।

इस समय विकासशील देशों में लगभग 55 प्रतिशत दम्पत्ति परिवार नियोजन का कोई न कोई साधन प्रयोग में लाते हैं। अगर निरपेक्ष रूप से देखा जाये तो ये आंकडा 1960 के दशक से 10 गुना बढौत्तरी दर्शाता है (460 मिलियन दम्पत्ति) तथा प्रतिशत की दृष्टि से ये वृद्धि 5 गुना है।

नेतृत्व पद तक पहुँचना महिलाओं के लिये विशेष रूप से दुर्लभ ही साबित हुआ है और स्वास्थ्य क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है। वर्ष 2021 में मेडिकल जर्नल 'लैंसेट' (Lancet) में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, महिलाएँ वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल कार्यबल के 71 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती हैं और यद्यपि पुरुष एवं महिला दोनों अपने शुरुआती करियर में इस क्षेत्र में समान रूप से प्रगति करते हैं, महिलाओं द्वारा व्यवधानों का सामना करने की संभावना पाँच गुना अधिक होती है।

अनुमान किया जाता है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में महिलाएँ वैश्विक जीडीपी (3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर) में 5 प्रतिशत प्रति वर्ष का योगदान करती हैं, जिसमें से लगभग 50 प्रतिशत गैर–मान्यता प्राप्त और अवैतनिक हैं। यदि महिलाएँ समान रूप से अर्थव्यवस्था में भाग लेने में सक्षम हों तो इसके परिणामस्वरूप वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 160 ट्रिलियन डॉलर की वृद्धि या मानव पूंजी संपदा में 21.7 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है।

निष्कर्ष :–

सरकार ने स्वास्थ्य के मोर्चे पर कमर कस ली है और हर नागरिक तक स्वास्थ्य सुविधाए पहुँचाने का बीठा उठाया है। एक तरफ स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन, उज्ज्वला, पोषण अभियान, मिशन इन्द्रधनुष

जैसी योजनाओं के जरिये देश में बीमारियों का बोझ कम करने का प्रयास पूरे जोर शोर से किया जा रहा है तो दूसरी तरफ योग, खेल और फिटनेस को बढ़ावा देकर आम जन के स्वास्थ्य जीवन भौली के प्रति जागरूक किया जा रहा है। हाल ही शुरू की गई, 'फिट इंडिया मूवमेंट– इसी दिशा में एक पहल है। लेकिन इन सभी प्रयासो के परिणाम तभी सामने आएगे जब हम सभी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगे और स्वच्छ जीवन शैली अपनाएगे। आज जनसंचार के माध्यम से लोगों में यह चेतना पैदा हो गयी है कि यदि किसी देश की महिलाएं अशिक्षित बनी तो उसे देश का विकास सम्भव नहीं है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षित बनाने के प्रति जागरूकता लाने में भी सूचना तकनीक माध्यम काफी कारगर साबित हुई है। सूचना तकनीक के माध्यम से सरकार के द्वारा महिला स्वास्थ हेतु अनेकों प्रकार की सुविधाएं प्रदान की जाती है, जैसे– हेल्थ–आईडी, डिजि डॉक्टर, व्यक्तिगत स्वास्थ्य रिकार्ड, ई–फार्मेसी, टेलीमेडिसिन इत्यादि सरकार के द्वारा भी महिला स्वास्थ्य के प्रति कई प्रकार के मोबाइल एप्लीकेशन लॉच की गयी है इनमें से वंडर एप–जो गर्भावती महिलाओं की देखभाल तथा उनके चिकित्सीय सलाह उपलब्ध कराती है। ई–संजीवनी पोर्टल या ई–संजीवनी एप– इसे सी–डीएसी द्वारा विकसित किया गया है इसे कोविड महामारी के समय डॉक्टर चिकित्सीय परामर्श लेने के लिए लॉच किया गया था। तथा अनमोल एप–स्वास्थ्य विभाग द्वारा गर्भावती महिलाओं और बच्चों का डिजिटल हेल्थ रिकार्ड रखा जाता है। इस प्रकार महिला स्वास्थ्य हेतु संचार माध्यम भी अहम भूमिका निभाती है। मां और बच्चों की सेहत और पोषण सुधारने के मकसद से बनाई गई तमाम योजनाऐ होने के बावजूद इनका फायदा लेने वालों की तादाद बहुत ही कम रही है।

सन्दर्भ सूची :–

1. National family helth Survey - 5 (2019-2021) international institution for population sciences, Mumbai
2. देशाई, नीरा व उषा ठक्कर ''भारतीय समाज में महिलाएं'' राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली।
3. Kishor, S. And K.Jonson (2000), Reproductive health and domestic violence : for the poorest women unniqaoli disadvantage ? Demography.
4. Census of India & 2011 : Total population Table, Registrar Journal of India, New Delhi
5. Reproductive and child helth " district leval household survey - 2 (2002-04)'' international institution for population sciences, Mumbai .
8. Kulkarni (2011), "Towards an exploration of Indian's fertility transition". Annual Conference of the Indian Association.
9. Pathak, K.B. (2001), "Fertility transition in India", Vikas Publishing, New Delhi.
10. Nanda, S. (2006), "Determination of motherhood in teenage and fate of their pregnancy out come." Nation Fertility Survey.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 18-21

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

शिकंजे का दर्द : दलित स्त्री चेतना का नया सोपान

हिना

विद्यार्थी (जे.आर.एफ.) हिंदी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा–Pin 124001

दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है– दबाया गया, शोषित, उत्पीड़ित, सताया हुआ आदि। दलित विमर्श से अभिप्रायः उस साहित्य से है जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को अभिव्यक्त किया है अपने जीवन संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा है दलित विमर्श उनकी उसी अभिव्यक्ति का विमर्श है। चेतना का संबंध दृष्टि से होता है। दलित चेतना ऐतिहासिक और सामाजिक भूमिका की छवि के मतिभ्रम को तोड़ती है। दलित चेतना एक सांस्कृतिक चेतना है इसमें विद्रोह परिलक्षित होता है। मानव अधिकारों से वंचित, सामाजिक रूप से नकार दिया जाना, दलित होना है तथा उसके अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई अर्थात चेतना ही दलित चेतना है। दलित चेतना का सीधा संबंध श्मैं कौन हूं श्से व्यापक रूप से जुड़ा हुआ है। यही चेतना साहित्य की प्रेरणा बनकर दलित साहित्य के रूप में उजागर होती है जिसमें मुक्ति और आजादी के गंभीर सरोकार निहित है।

'शिकंजे का दर्द' सुशीला टाकभौरे जी द्वारा रचित दलित महिला की आत्मकथा हैं। हिंदी में दलित साहित्य के अंतर्गत स्त्री आत्मकथाएं अभी तक बहुत कम आई है जिसमें शिकंजे का दर्द अपनी अहम भूमिका निभाता है। इस आत्मकथा में लेखिका ने पारिवारिक व सामाजिक अनुभवों के माध्यम से दलित और शोषित समाज को समाजशास्त्रीय ढंग से अभिव्यक्त किया हैं। लेखिका लिखती है, 'शिकंजे का दर्द' में संताप है दलित होने का, स्त्री होने का। इसमें शोषित, पीड़ित अपमानित, अभावग्रस्त दलित जीवन की व्यथा है। स्त्री होना ही जैसे व्यथा की बात है चाहे हमारा देश हो या विदेश के अन्य देश हर जगह शोषण, उत्पीड़न का शिकार स्त्री ही रही है जिस देश में वर्णभेद, जातिभेद की कलुषित परंपराएं हैं वहां दलित स्त्री शोषण की व्यथा और भी गहरी हो जाती है। सदियों से तिरस्कृत और अभावग्रस्त परिस्थितियों में रहने के लिए मजबूर किए गए दलित जीवन की व्यथा कथा का दर्द 'शिकंजे का दर्द' में समाहित है। 'शिकंजे का दर्द' लिखने का उद्देश्य दर्द देने वाले शिकंजे को तोड़ने का प्रयास है।[1] 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा जहां एक और दलित नारी की मुक्ति का स्वर है वहीं दूसरी ओर सदियों से उपेक्षित, अछूत अस्पृश्य, दलित कहे जाने वाले वर्ग के शोषण और शोषण से मुक्ति का स्वर भी है। दलितों में भी दलित समझी जाने वाली नारी मनुवादी समाज व्यवस्था के शिकंजे में कई वर्षों से फंसी मुक्ति के लिए छटपटा रही है लेखिका हिंदू त्योहारों, रीति–रिवाजों के माध्यम से स्त्रियों पर लगाई गई पाबंदियों का तार्किक विश्लेषण करती हुई कहती है कि, 'मनुस्मृति में स्त्रियों को हमेशा पिता, भाई, पति और पुत्रों के संरक्षण में रहने के निर्देश दिए गए हैं स्त्रियों को शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर बना कर रखा जाता है 'रक्षाबंधन' भी ऐसा ही त्यौहार है।[2]

स्त्रियों को पढ़ाने लिखाने का रिवाज उस समय नहीं था। पढ़ने लिखने का रिवाज केवल लड़कों को और वह भी दलितेत्तर जातियों को ही था। गांव के बड़े बुजुर्ग अक्सर यही कहते थे, 'लड़कियां तो चिरैया है, समय आते ही उड़कर प्रदेश चली जाएंगी'[3] लोगों की सोच रहती थी, 'लड़की जात पढ़ कर क्या करेगी?'[4] लेखिका की नानी चाह कर भी अपनी बेटी को स्कूल नहीं भेज पाई थी शिक्षा के प्रति ललक, उत्सुकता और आदर होने के बाद भी वे शिक्षा से वंचित रहे। लेखिका लिखती है कि, 'मनुस्मृति में अछूतों को शिक्षा से दूर रखने के निर्देश दिए गए हैं समाज में इन निर्देशों का पालन श्रद्धा और निष्ठा के साथ किया जाता था।'[5] कक्षा में शिक्षक भी सवर्ण बच्चों पर ही ध्यान देते थे दलितों को हमेशा ही हेय दृष्टि से देखते थे आगे की पंक्ति में सवर्ण महाजनों के बच्चे बैठते थे पीछे की पंक्ति में दलित बच्चे बैठते थे। एक पढ़े–लिखे शिक्षक का भी इस तरह सोचना मनुवादी सोच को दर्शाता है। एक दिन लेखिका कक्षा में आगे बैठ जाती है तो गुरुजी उसको डांटते हुए कहते हैं, 'सुशीला तुम आगे क्यों बैठी हो? तुमको सबसे पीछे बैठना चाहिए।'[6] शिक्षकों की उपेक्षा और अपमान के कारण दलित बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं लेकिन लेखिका का इन सब के बावजूद शिक्षा ग्रहण करना महिला चेतना को दर्शाता है।

'शिकंजे का दर्द' हिंदू समाज की विडंबनाओं को उजागर करती है एक दलित नारी के साथ अत्याचार और बलात्कार सामान्य बात थी जिस कारण उन्हें घर से कहीं बाहर नहीं भेजा जाता था उन्हें हर समय घर में ही रहना पड़ता था मैट्रिक तक आते–आते सुशीला जी का स्वभाव भी अंतर्मुखी और चिंतनशील हो गया था। इनका संस्कार बन गया था कि लड़की होने के कारण ज्यादा बात नहीं करना, अकेले नहीं जाना, तर्क वितर्क नहीं करना और गरीबी में जीने की आदत होना। प्रेमलता के प्रेम प्रकरण से डरी मां जब पूछती है तो लेखिका उत्तर देती है कि, 'मैं ऐसा क्यों करूंगी? मैं तो बूढी ही जनमी हूं।'[7] अभावग्रस्त जीवन में हर तरीके की समस्या का सामना करना पड़ता था ऐसे शिक्षा विरोधी वातावरण को नकारते हुए उनकी मां कहती थी, 'शादी भी कर देंगे अच्छा पढ़ा–लिखा अच्छी नौकरी वाला लड़का मिलेगा तभी शादी करेंगे तब तक पढ़ती है तो पढ़ने दो पढ़ाई करके आगे चलकर वह भी अच्छी नौकरी करेगी'।[8] लेखिका भी अपनी शिक्षा में आने वाली हर बाधा को पार करती हुई उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अपने सपने को पूरा करती है।

आत्मकथा में अनमेल दांपत्य जीवन के कई पहलू उजागर होते हैं। उनका 6 मार्च 1974 में नागपुर के सुंदरलाल टाकभौरे से विवाह हुआ। लगभग 20 साल का अंतर होने से यह एक अनमेल विवाह था। नया सपना लेकर ससुराल में आई सुशीला जी को एक और शिकंजे का दर्द भोगना पड़ा। पति का मारना, पीटना पुरुष सत्ता का प्रदर्शन था। कितनी भी पढ़ी–लिखी स्त्री हो पुरुषों के अत्याचार का शिकार होना पड़ता है क्योंकि लड़कियों को यही सिखाया जाता है कि पति परमेश्वर होता है। पुरुष स्त्री को हमेशा भयभीत रखकर, डरा धमका कर अपने शासन सत्ता को कायम रखना चाहता है। पुरुष सत्ता बनी रहे इसीलिए स्त्रियों को शुरू से कमजोर बना कर रखा जाता है। परंतु सुशीला जी अधिक दिनों तक गुलामी कहां रहने वाली थी वह बचपन से ही शोषण से मुक्ति के लिए निरंतर संघर्ष कर रही थी। एक बार जब उनके पति उनको मारने के लिए चप्पल उठाते हैं तो लेखिका उनका विरोध करती है और बताती है कि, 'चप्पल दिखाते हुए वे ऊंची आवाज में बोले –हां, अब बोल, तुझे क्या कहना है? मैंने आराम से चाय का कप टीटेबल पर रखा और चप्पल उठाकर उलट–पुलट कर देखी, न जाने कितना क्रोध कितना आवेग मेरे भीतर भर गया। मुझे कुछ भी होश नहीं रहा, चप्पल मेरे हाथ में थी और मैं चीखते

हुए कह रही थी– 'तुम मुझे चप्पल से मारोगे? चप्पल से मारोगे.....?'[9] सुशीला जी को अपने ननंद पति सास के व्यवहार में और घर में हमेशा के लड़ाई झगड़े ने उन्हें भले ही झगड़ालू बना दिया था लेकिन तब वह पर बराबरी से अपने हक की बात कहने लगी थी। लेखन के अलावा सामाजिक कार्यों में भाग लेती और समाज का मार्गदर्शन भी करती। बूटा सिंह ने प्रशंसा करते हुए कहा था, 'सुशीला बहन जैसी हमारी महिलाएं सामने आएगी तो हमारी प्रगति जरूर होगी।'[10] लेखिका का उद्देश्य नारी चेतना तथा दलित चेतना दोनों था। समाज स्त्रियों को राजनीति से दूर रखता है लेखिका का उद्देश्य समाज जागृति और समाज सेवा रहा है समाज में जागृति लाने का काम एक पुरुष ही नहीं महिला भी कर सकती है समाज को स्त्री के अस्तित्व को पहचानना चाहिए।

दलित उत्पीड़न की अनेक घटनाएं घटती है। खुल्लम खुला जाति भेद की कटु बातें कही जाती है सुशीला जी की कहानी 'सिलिया', 'बदला', 'संघर्ष', 'छोआ मां' इसके प्रमाण हैं। इनकी कहानियां भी अधिकतर दलित शोषित पीड़ित पात्रों का दुख दर्द है आत्मकथा में नारी चेतना जागृत होती है लेखिका के घरवाले शिक्षा के माध्यम से ही उनको सक्षम बना पाए हैं। हालांकि शिक्षा पाने के लिए कदम कदम पर उनको जलील होना पड़ा है। लेखिका औरों की तरह साबित नहीं हुई है जो संघर्षों से हार कर घर बैठ जाए बल्कि उन्होंने उसका डटकर मुकाबला किया है लेखिका के लिए समाज में जगह बना पाना इतना आसान नहीं रहा होगा। इस मुकाम तक पहुंचने में समाज के सामने लोहे सा बनकर खड़ा होना पड़ा होगा। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रीवादी स्वर गूंजना कोई छोटी बात नहीं है।

सुशीला जी को जीवन भर मनुवादी व्यवस्था की मनोवृति वाले पुरुष की उपेक्षा, उलाहना, मारपीट गाली–गलौज अस्तित्व हिनता का शिकार होकर शिकंजे के दर्द को सहना पड़ा और लगातार उससे मुक्ति के लिए वे संघर्ष करती रही। आर्थिक तौर पर भी समाज में स्त्री का शोषण होता रहा है समाज की रूढ़िवादी सोच का हर जगह सामना करना पड़ता है। सुशीला जी ने यह भी समझा है कि अगर सक्षम होना है तो पहले आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना होगा। 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा मंश लेखिका अपने भोगे हुए बीहड़, अविश्वसनीय अनुभव को व्यक्त करती है। वह कहना चाहती है कि इस सृष्टि में व्याप्त दुःख, शोषण, अन्याय, अत्याचार, विषमता, पराधीनता का अंत होना चाहिए। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था के विरुद्ध स्त्री पुरुष समानता का निर्माण हो, धर्मांधता के विरुद्ध मानवतावादी विचार हो, शोषित पीड़ितों के उत्थान के साथ समतावादी नई समाज व्यवस्था हो –नया समाज हो इसके लिए सभी लोगों को प्रयत्नशील होना चाहिए।

उपसंहार :–

प्रारंभिक आत्मकथाओं में जहां व्यक्ति महत्वपूर्ण होता था वही दलित आत्मकथा में लेखकों के व्यक्तिगत जीवन के साथ समाज की अहम भूमिका है। इन आत्मकथाओं में एक और मर्मांतक पीड़ा है तो दूसरी ओर सवर्णवादी आतंक। लेखक के जीवन में संघर्ष है तो सामाजिक आंदोलन और स्वाभिमान की लड़ाई भी। दलित साहित्य में आत्मकथाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसके साथ ही महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दलित आत्मकथाएं जीवन की जिस विद्रूपता को समाज के सामने लाती है वहां तो दलित लेखक सबसे पहले स्वयं को ही नग्न करता है महिमामंडन की तो वहां गुंजाइश ही नहीं रहती है। दलित लेखकों ने अपने जीवन के जातीय दंगों से उपजे शोषण की विभीषिका को अभिव्यक्त किया है जिससे जाति व्यवस्था की अमानवीय विद्रूपता सामने आई है। 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में दलित तथा स्त्री होने की पीड़ा दिखाई देती है लेकिन

लेखिका सभी बाधाओं को तोड़कर उच्च शिक्षा ग्रहण करती है तथा समाज में अपनी नई पहचान बनाती है।

लेखिका सामाजिक, आर्थिक और अन्य सभी कष्टों को झेलती हुई और उनसे लड़की हुई निरंतर आगे बढ़ती है और दलित समाज की स्त्रियों के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती है। बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर जी द्वारा किए गए संघर्षों को लेखिका तथा दलित समाज कभी भी नहीं भूल सकता क्योंकि दलितों में चेतना जगाने का कार्य बाबा साहब द्वारा ही किया गया था। बाबा साहब द्वारा किए गए अथक प्रयासों से ही दलितों को समाज में समानता का अधिकार मिला तथा सदियों से चली आ रही जातिभेद तथा लिंगभेद जैसी कुरीतियों को तोड़ने के लिए नई चेतना का निर्माण हुआ। दलित साहित्य समाज में नई चेतना लाने का प्रयास कर रहा है तथा दलित साहित्य धीरे–धीरे हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना रहा है। दलित चेतना तथा स्त्री चेतना दोनों से ही हम समाज में फैली कुरीतियों के अंधकार को मिटा सकेंगे तथा समाज में एक नया प्रकाश फैला सकेंगे।

संदर्भ :–

1. शिकंजे का दर्द, पृष्ठ 9
2. वही, पृष्ठ 34
3. वही, पृष्ठ 17
4. वही, पृष्ठ 16
5. वही, पृष्ठ 16
6. वही, पृष्ठ 22
7. वही, पृष्ठ 116
8. वही, पृष्ठ 107
9. वही, पृष्ठ 223
10. वही, पृष्ठ 177

heenamandiya@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 22-28

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी सिनेमा में साहित्य पोषित सामाजिक चेतना

डॉ. डी. सी. पाण्डेय

सहा0 आचार्य हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय हल्द्वानी शहर किशनपुर, गौलापार (नैनी0) उत्तराखण्ड–263139

सारांश :–

संवेदना का स्पंदन साहित्य का मूलाधार है। कालजयी साहित्य देश, काल, समाज की सीमाओं से ऊपर मानवीय मूल्यों का संवाहक होता है। साहित्य स्वयं सीधा परिवर्तन न कर भाव–विचारों को सुपोषण प्रदान कर मानस का निर्माण करने में अमिट योगदान देता है। संवेदना की जागृति का क्षण आत्म–साक्षात्कार का चैतन्य क्षण होता है। सामाजिकता हमें अपने वृत्त से ऊपर उठकर विराट तत्व तक पहुँचने में सहायता करती है। साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। रचनाकार अपनी कृति, कथ्य, गीतादि के माध्यम से श्रृवण या दृश्य माध्यम द्वारा दर्शकों अथवा पाठकों में भावना और रागात्मक तरंगों से संवेदना के बीज सावधानीपूर्वक वपन करता है। साहित्यकार में संवेदनशीलता के लिए उसके व्यक्तित्व में अनुभूतिपरकता के तत्व का होना अनिवार्य एवं अपरिहार्य गुण है।

सामाजिक मूल्यों की प्रतिस्थापना, नैतिकता का संरक्षण, मर्यादा का पोषण, विकृतियों का पात्रात्मक चित्रण, जनसरोकारों का भावोन्मीलन, साधारणीकरण आदि का समावेश वह अपने विराट संवेदनशीलता, चेतना एवं गहन अनुभूतिशीलता के स्वतः सुलभ अन्तः साधनों से कर पाता है। इस प्रकार अपने मनोभावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति देने की भावना ने साहित्य को जन्म दिया। साहित्य नानाविध रूपों में पाठकों के समक्ष भिन्न–भिन्न वस्त्राभूषणों से अलंकृत होकर प्रकट होता आया है। गद्य–पद्य एवं चम्पू के अतिरिक्त सिनेमा ने एक ऐसे प्रभावशाली साधन के रूप में अपनी उपस्थिति व्यक्त की है जो अपने पूर्ववर्ती साधनों–माध्यमों की अपेक्षा द्रुतगति से व्यापक रूप से समाज में अपनी बात पहुँचाने में सक्षम है। यह तकनीकी का खेल है। तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी की सहायता से साहित्य को सिनेमा ने जन–जन तक सरलता, सुगमता एवं सस्ते में पहुँचाने का कार्य किया। सही मायने में सिनेमा साहित्य की विधाओं में एक है। परन्तु जिस तरह गुलशन नंदा एवं कुशवाहा कांत की चर्चित औपन्यासिक कृतियों को साहित्य की परिधि में न मानने वाले तथाकथित बुद्धिजीवियों की तरह ही साहित्य व पाठयक्रम में सिनेमा से जुड़ी अन्तर्वस्तुओं को उतना स्थान, सम्मान एवं महत्व न दिया जाना पृथक से परिचर्चा का विषय है। क्योंकि हिंदी सिनेमा मात्र साहित्य न होकर साहित्य की अनुप्रयोगात्मक विधा क्षेत्र है जो रोजगार से प्रत्यक्ष सम्बद्ध है।

बीज शब्द :–

कालजयी, मानस, जनहित, सिनेकार, कलम के सिपाही, सैल्यूलॉयड, बरहना, रक़्स, बोसाबाजी, मगरिब,

जनहित।

मूल शोधालेख :–

सिनेमा और समाज के मध्य गहन सम्बन्ध है, परस्पर पूरक दोनों पक्षों की सहयात्रा समय के साथ–साथ प्रगाणेत्तर होती देखी जा सकती है। वैश्विक स्तर पर प्रत्येक राष्ट्र में साहित्यिक कृतियों पर फिल्मों का निर्माण होता आया है, हिन्दी सिनेमा भी इससे अछूता नहीं है। ''साल में देश की 30 भाषाओं और बोलियों में लगभग 1000 फिल्में बनती हैं।''[1] विगत 123 वर्षों के यात्रा वृत्तान्त में भारतीय सिनेमा ने भारतीय समाज को कई प्रकार से प्रभावित किया है। विशेषतः हिंदी सिनेमा ने भारतीय समाज के मध्य सशक्त उपस्थित व्यक्त की है तथा समाज को रचनात्मक आयाम प्रदान किये हैं। उसे नई दशा–दिशा देने का कार्य किया है। साहित्यिक कृतियों पर फिल्म बनाने का श्रीगणेश बंगाल से माना जा सकता है भारत जी लिखित 'देवदास' से चली यह यात्रा अद्यतन अनेक नाम रूपों में अनवरत है। व्यावसायिकता के दौर में सत्यजीत राय की 'पाथेर पांचाली' हो या ऋत्विक घटक की 'नागरिक' आदि साहित्यिक रचनाओं पर फिल्म निर्माण करना आज भी भी किसी जोखिम के कार्य से कम नहीं है।

सिने जगत से जुड़े निर्माता–निर्देशकों का उद्देश्य धनार्जन, मनोरंजन के साथ–साथ कलम के सिपाहियों द्वारा प्रदत्त संदेश से ज्ञान में वृद्धि करना भी रहता है। व्यावसायिक एवं सार्थक सिनेकारों के मध्य उद्देश्य की सूक्ष्म विभाजन की पंक्ति मात्र मसालेदार फिल्म न बनाकर समाज सुधार की संदृष्टि अन्तर्निहित रहती है। निवेशित धन की मुनाफे के साथ वापसी विशुद्ध साहित्यिक कृतियों के फिल्मांकन से कम ही संभव होते देखी गयी है। सर्वस्वीकार्य है कि फिल्मकार का प्राथमिक उद्देश्य भाषा, साहित्य, समाजोद्धार का परिमार्जन, प्रदर्शन कम व्यावसायिक दृष्टि का प्रभाव अधिक होता है। यद्यपि सार्थक फिल्मकारों की एक दीर्घ श्रृंखला आज हिंदी सिनेमा में उपलब्ध है जिनका उद्देश्य धनलिप्सा से अधिक सामाजिक चेतना का जागृत संदेश प्रदान करना है। हो भी क्यों न, सुधी पाठकों का बड़ा वर्ग उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से एकटक अपलक निहार जो रहा है। भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहब फाल्के द्वारा सन् 1913 ई0 में निर्मित पहली श्वेत–श्याम मूक फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' भारतेन्दु जी की नाट्य रचना पर आधारित थी। तब से अब तक विभिन्न पड़ावों की आरोहावरोह भारी भारतीय सिनेमा की यात्रा ने लगभग सवा सौ वर्षों की गौरवमयी यात्रा पूर्ण की है। सुनहरे पंखों की उड़ान लिए हिंदी सिनेमा जाने–अनजाने में हमारे समाज का अभिन्न अंग बन गया। 'आलमआरा' (1931) से लेकर निर्माता विपुल शाह व निर्देशक सुदीप्तो सेन की 'द केरला स्टोरी' (2023) तक विभिन्न विषयों पर साहित्यिक कृतियों पर आधारित अनेक फिल्में बनी हैं। ऐसा नहीं कि जनता ने सभी फिल्मों को हाथों–हाथ लिया हो। सिनेमा में साहित्य की आत्मा को बचाने की ऊहापोह में सिनेकारों की व्यावसायिकता कहीं पीछे छूट जाती है। अनुभव कहता है कि ऐसा अनेक बार हुआ है कि साहित्यिक कहानी या उपन्यास का चरम सिनेमा के मानकों में रच–पच नहीं पाता। इसीलिए फिल्मकार साहित्यिक कृतियों पर सिनेमा बनाने से कतराते नजर आते हैं। प्रेमचंद और उनकी रचनाओं को सिनेमा जगत–फिल्म निर्माण के क्षेत्र में इस उदाहरण को सरलता से समझा जा सकता है।

उपन्यास सम्राट की मृत्यु से चार वर्ष पूर्व सन् 1932 ई0 में उन्होंने प्रथम फिल्म कथा 'मिल' लिखी थी, जिसका केन्द्रीय विषय मिल मालिकों एवं मजदूरों के मध्य संघर्ष के कारणों, लक्ष्यों, उद्देश्यों का सत्यपथ पर चित्रित करना था पर गोरी हुकूमत को यह विषय पचा नहीं। सेंसर बोर्ड ने इसे कैंची चलाकर 'गरीब परवर' नाम

से संस्तुत किया। 'गोदान', 'गबन', सेवासदन' आदि भी इसी श्रेणी की रचनाएं रहीं। जिन्होंने मात्र मनोरंजन की चासनी में भिगोई फिल्में देने के बजाय सिनेमा को जनकल्याण की दीर्घलक्ष्य से विचलित होने से सावधान किया। रेणु, धर्मवीर भारती, मन्नू भण्डारी आदि कथाकारों की रचनाओं पर भी सार्थक सिनेमा देखा जा सकता है। 'तीसरी कसम', 'बदनाम बस्ती', 'आषाढ़ का एक दिन', 'सूरज का सातवां घोड़ा', 'सत्ताइस डाउन', 'रजनीगंधा', 'सारा आकाश', 'नदिया के पार', 'प्यासा', 'कागज के फूल', 'साहब बीबी और गुलाम' आदि फिल्मों के द्वारा साहित्य को बड़े–छोटे–मझोले पर्दे पर सशक्त अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है।

एक सक्षम सामर्थ्यवान दूरदर्शी गहन चिन्तनशील निर्देशक के हाथ में सिनेमा, समाज का वह आईना है जो सच्चाई को सरल, सपाट ढंग से प्रस्तुत करने का साहस रखता है। ज्वलंत रूप में 'गदर एक प्रेम कथा', 'स्लमडॉग मिलेनियर', 'गंगाजल', 'बैंडिड क्वीन', 'पान सिंह तोमर', 'गैंग्स आफ वासेपुर', 'टायलेट–एक प्रेमकथा', 'न्यूटन', 'कड़वी हवा', 'क्वीन', 'पैडमैन', 'आर्टिकल–15', 'कश्मीर फाइल्स' तथा 'द केरला स्टोरी' आदि की लोकप्रियता से इसे समझा जा सकता है। हिन्दी साहित्य के मात्र मनोरंजन के हल्के मार्ग पर चलने वाले सिनेमा जगत को न केवल मार्गदर्शित किया वरन् ऐसे अनुशासन की परिधि में बांधा कि समूचे भारतीय सिनेमा को जन–मन के कंठ–मन तक संयोजित करने का कार्य किया है। सिनेमा की सफलता के लिए भारतीय सिनेमा के जनक गोविंदराज धुंधीराज फाल्के साहेब ने साहित्य को जरूरी माना और कहा कि ''साहित्य के बिना सिनेमा की यात्रा अधूरी है।''[2] साहित्यिक रचना का अध्ययन करने में सिनेमा देखने की अपेक्षा अधिक समय लगना स्वाभाविक है।

सेल्यूलॉयड पर सितारों से सुसज्जित देखी–सुनी कथा–पटकथाओं का प्रभाव अधिक गहन एवं व्यापक रूप से स्थाई व प्रत्यक्ष देखा गया है। साहित्यिक कृतियों पर आधारित निर्मित सिनेमा समाज की मनोवृत्ति को बदलने में बड़ी भूमिका निर्वहन करता है। राष्ट्रीय, सामाजिक परिवेश की जड़ों से जुड़ी सौंधी सुगन्ध को प्रवाहित करता भारतीय सिनेमा, विशेषतः हिन्दी सिनेमा, साहित्य का ऋणी रहेगा जिसने भारतीयता की आत्मा को तत्वतः प्रचारित–प्रसारित करने का कार्य किया है। कोई भी साहित्यकार सर्जक होने के कारण स्वभावतः संवेदनशील एवं प्रगतिशील होता है। उपन्यास–कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने कहा था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं वरन उसके आगे मशाल लेकर चलने वाली सच्चाई है। 'दादा साहेब फाल्के' ने लगभग सवा सौ वर्ष पहले जिस चिन्तन के आधार पर यह कहा होगा कि फिल्म विधा सिर्फ मनोरंजन के साथ नहीं चल सकती, उसमें सौद्देश्यता आवश्यक है। उसी सूक्त वाक्य को परवर्ती निर्माता निर्देशकों ने आत्मसात करते हुए साहित्य एवं सिनेमा के मणिकांचन संयोग को सशक्तता प्रदान की, अर्थात् साहित्य ने जो कहा सिनेमा ने उसे संजीदगी के साथ प्रदर्शित किया। साहित्य–सिनेमा दोनों समाज का प्रतिबिम्बित रूप है। साहित्य ने सिनेमा की यात्रा को यथार्थवादी लोकयात्रा से संयोजित किया। मात्र मनोरंजन की चासनी में डूबोकर सिनेमा को प्रस्तुत करने के बजाय साहित्य ने उसे दीर्घजीवी बनाने के लिए एक सजग पोषक की तरह मार्गदर्शित किया है।

किन्तु दोनों के मध्य वास्तविक विरोधाभास से भी सुधी पाठकगण भली–भांति परिचित हैं, अन्यथा एक साल के अनुबन्ध–करार पूर्ण करने से पहले ही मात्र नौ माहों में प्रेमचंद जी मायानगरी से बनारस क्यों लौट आते भला? वहाँ से लौटकर उन्होंने जैनेन्द्र जी को एक पत्र लिखा जिसके कुछ अंश इस तरह से हैं ''.....लेखक कलम

का बादशाह क्यों न हो, यहाँ डायरेक्टर की अलमदारी है और उसके राज्य में उसकी (लेखक की) हुकुमत नहीं चल सकती, क्योंकि डायरेक्टर यहाँ मानते हैं कि वे जनता के इस्लाह के लिए फिल्में नहीं बनाते। उनके लिए फिल्म बनाना एक व्यवसाय है और धन कमाना उनकी गरज.... सिनेमा में किसी इस्लाह की तवक्कों (आशा) करना बेकार है। यह सनअत (व्यवसाय) भी उसी तरह सरमायादारों के हाथ में है। जैसे शराबफरोशी उन्हें इससे बहस नहीं कि पब्लिक के मज़ाक (रूचि) पर क्या असर पड़ता है। इन्हें तो अपने पैसे से मतलब 'बरहना' (नंगा) रक़्स (नाच) बोसाबाजी (चूमाचाटी) और मर्दों का औरतों पर हमला यह सब उनकी नजर में जायज है। पब्लिक का मज़ाक (सुरूचि) इतना गिर गया है कि जब तक ये मुखर्रिब (घातक) और हयासोज (निर्लज्ज) नजारें न हों उन्हें तस्वीर में मजा नहीं आता मजाक की इस्लाह का बीड़ा कौन उठाये? सिनेमा के जरिए मगरिब (पश्चिम) की सारी बेहूदिगियाँ हमारे अंदर दाखिल की जा रही है। ..... मैंने खूब सोच लिया और इस दायरे से निकल जाना ही मुनासिब समझता हूँ।''

इधर विगत दो दशकों से वैश्वीकरण की अतिबाजारवादी ताकतों ने साहित्य–सिनेमा के चोली–दामन के साथ को अलग करने का बराबर कुप्रयास किया है। परन्तु सजग लेखकों, निर्माता निर्देशकों को ज्ञात है कि साहित्य विहीन सिनेमा की उम्र भला क्या होगी? जिन कालजयी रचनाओं को सिनेमा–साहित्य में आज याद किया जाता है उनमें मात्र मनोरंजन न होकर कुछ सामाजिक संदेश भी हैं। यही उदात्त तत्व उसे इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम स्थान प्रदान करता है। इतिहास गवाह है कि जिस सिनेमा में भारतीय मूल्य, परम्परा एवं दर्शन की आत्मा लुप्त थी वह आज काल कवलित हो गये या अकाल विलुप्ति की सूची में आ गये। सर्वविदित है कि बाजार का सम्बन्ध मुनाफे मात्र से होता है जबकि साहित्य का सम्बन्ध मूल्यों से होता है। बाजारू चश्मे से बनने वाला सिनेमा क्षणिक प्रचार भले ही पा जाये परन्तु साहित्य के बिना सिनेमा सुहागरहित व फेसलेस व्यक्तित्व की तरह सिद्ध हुआ है। साहित्य एवं सिनेमा की प्रगाढ़ता, पाठकों की आत्मीयता, सुधी दर्शकों का सामन्जस्य सजग समाज का द्योतक होता है। समाज का सच–भोगे हुए साहित्यकारों–फिल्मकारों की रचना में बहुसंख्यक समाज की मौलिकता प्रतिध्वनित होना स्वाभाविक है। सम्भवतया निदेशकों की नई पौध को हालीवुड की नकल करने वाली यूँ ही नहीं कहा जाता होगा इधर ''दिल्ली, इलाहाबाद, पटना, भोपाल से आए नए निर्देशक साहित्य को पढ़कर आते हैं और वे उन पर फिल्कें भी बनाना चाहते हैं। मगर साहित्यकार की शर्तों और बाजार के जोखिमों से डर जाते हैं।''[3]

स्त्री, दलित एवं आदिवासी विमर्श केन्द्रित साहित्य पोषित सिनेमा भले ही कम मात्रा में उपलब्ध हो परन्तु इन वीभत्स सच्चाइयों पर आधारित सिनेमा सामाजिक सरोकारों को प्रतिध्वनित करता है। बाजार आधारित लाभ की मानसिकता से निर्मित सिनेमा में भी सामाजिक समसामयिक परिवेश का सांगोपांग चित्रण कमोवेश देखा जा सकता है। बाल श्रम, बाल विवाह, बहु विवाह, बेमेल विवाह, अनुलोम विवाह, प्रतिलोम विवाह, विधवा पुनर्विवाह, ऊँच–नीच, छुआछूत, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, अलगववाद, उग्रवाद, भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार, वेबस किसान, पलायन, बेरोजगारी, शोषण, दमन, अत्याचार, घरेलू हिंसा, यौन हिंसा, पाखंड, अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, औद्योगिकरण, शहरीकरण, दोहरे चरित्रधारी, धर्मगुरू एवं राजनेता, राजनीति–अपराध एवं पुलिस तन्त्र की मिलीभगत, श्वेतवसन अपराध, बाल अपराध, राष्ट्रभक्ति, लैंगिक विषमता, किराये की कोख, सहजीवन, अविवाहित माता–पिता आदि सहित मनोविश्लेषणात्मक बिन्दुओं पर यथा अवसाद, भग्नाशा, तनाव, दबाव, चिन्ता, ईर्ष्या,

कुण्ठा, आत्महत्या, कुढ़, बेचैनी, दोगला व्यक्तित्व, अवसरवादिता, स्वार्थपरता, चाटुकारिता, चापलूसीपन, चमचागिरी एवं राजदरबारी परिक्रमाधारी व्यक्तित्व जैसे अनेक विषयों को साहित्य की रचनाओं द्वारा चित्रित करते हुए सिने निदेशकों ने अपने रंग में रंगते हुए पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत सत्य है। हिन्दी साहित्यकारों एव ंसिनेकारों ने भी समय के साथ कदमताल मिलाई है। ''भारतीय सिनेमा के आरम्भिक वर्षों में कुल जमा 91 फिल्में बनी। आज देश में 100 साल बाद सिनेमा उद्योग का चेहरा पूरी तरह बदल चुका है, आज हर साल 1000 से ज्यादा फिल्मों का निर्माण होता है।''[4] एसोचैम के अनुसार भारतीय फिल्म उद्योग का राजस्व प्रतिवर्ष बढ़ता ही चला जा रहा है।

हिन्दी सिनेमा का सबसे अच्छा पहलू यह है कि वह पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने में निर्णायक भूमिका अदा करता है। जीवन की वास्तविकताओं से बहुत हद तक सरोकार न रखने वाले व्यवसायिक सिनेमा जो मुख्यधारा का सिनेमा भी कहा जा सकता है परन्तु गुणात्मक रूप से समृद्ध, सम्पन्न यथार्थ सिनेमा ऑस्कर तक पहुँच रखता है। ''भारत की आत्मा गाँव में बसती है।'' गाँधी जी के कथन को सार्थक करता आज के हिन्दी सिनेमा का कैमरा पुनः ग्रामोन्मुख है जहाँ तकनीकी के चतुर चितरों को अपने ताने–बानों में से मौलिक पटकथाएँ चुनते हुए देखा जा सकता है, जो सुखद है। सुधीर मिश्रा, तिग्मांशु धूलिया, अनुराग कश्यप, राजकुमार गुप्ता आदि से पाठकों को पर्याप्त उम्मीदें हैं।

जीवन के उतार–चढ़ाव भरी यात्रा में आशा–निराशा, सुख–दुःख, जय–पराजय, लाभ–हानि, जन्म–मरण आदि को पात्रों के माध्यम से साहित्य में चित्रित करने वाले रचनाकार से कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से इन बिन्दुओं व सामाजिक बुराईयों को फिल्मांकित कर सिनेमा पाठकों–दर्शकों को उनके प्रति सावधान करता है। साहित्य से संजीवनी प्राप्त सिनेमा सामाजिक बुराईयों को मिटाने का प्रयास करता हुआ हमें सजग करता चलता है। ''वास्तविक जीवन में भूत, वर्तमान, भविष्य को एक साथ देखना सम्भव नहीं होता। सिनेमा के पर्दे पर हम इसे आसानी से देख सकते हैं।'[5]

साहित्येत्तर विशयों पर निर्मित सिनेमा जिनमें मात्र हिंसा, सेक्स, हत्या, अनैतिक सम्बन्धों को देखकर दुर्बल चरित्र के लोग तथा आंशिक बाल–किशोर मन अपने आवेगों से नियन्त्रण खो बैठते हैं तथा कभी–कभी अपराध की दुनिया की ओर भी मुड़ते हुए देखे गये हैं। खून, मार–काट, बलात्कार, चोरी, डकैती, आइटम जैसे मसालों की चाशनी में लबालब डूबोई फिल्में बरसाती नाले की तरह होती हैं। चरित्रहीनता, कुटिलता, मूल्यहीनता, एक दूसरे को मिटाने का जुनून, अहंकार, प्रतिशोध, निकृष्टता, पारिवारिक सम्बन्धों का छल–कपट, दुराचार, बौद्धिक विलासिता आदि जैसी विकृत मानसिकता का चित्रण करने वाला सिनेमा किसी शिष्ट साहित्य से प्रेरित नहीं हो सकता। उनका उद्देश्य मात्र और मात्र धन कमाना है। कपोल कल्पनाधारित इस तरह का वैचारिक प्रदूषण कृत्रिम–आभासी दुनिया की लफ्फाजीमात्र है या बहुत ही न्यून वर्ग का घिनौना चित्रण। यह भारत की आत्मा, परिवारों एवं साहित्य का सच नहीं हो सकता। क्योंकि उनके पास पैसा है इसलिए वो चाहे कुछ भी दिखाए। किसी भी व्यक्ति, वस्तुस्थिति पात्र का महिमामण्डन करें। पर कुतर्कों द्वारा उसे सही सिद्ध करने का घटिया प्रयास विभिन्न माध्यमों से भले ही कुछ लोग करते रहें। ''लेकिन बात वही है कि जब आप सौ बार झूठ को दिखाओगे तो धीरे–धीरे इसका सामान्यीकरण होकर वह सब चुपके से 'सच' बनकर हमारे अन्तर्मन में बैठ जायेगा। संस्कृति की तबाही एक दिन में नहीं होती।''[6] सिनेमा दूरदर्शन बड़े–छोटे पर्दे के द्वारा भी यही सब चरणबद्ध रूप में करता

आ रहा है अब इसमें एन्ड्रोयड फोन को नया साधन माना जा सकता है।

शोध पत्र लेखन विधि :-

प्रस्तुत शोधपरक आलेख को अन्तिम रूप देने से पूर्व सम्बन्धित पूर्व साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं, साहित्यकारों, पत्र साहित्य, समीक्षा, चर्चा–परिचर्चा, वार्ताविली आदि स्रोतों का अध्ययन, मंथन, मनन कर स्वानुभवपरक बिन्दुओं को आत्मसात् कर अभिव्यक्त किया गया है। प्रस्तुत ज्वलंत एवं संवेदनशील शीर्षक पर अनुभवों एवं विश्लेषण से भोगे–देखे–सुने–पाये गये वास्तविकता को लेखांकित करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

उद्देश्य :-

साहित्य रहित सिनेमा की बाजारूवादिता एवं मुख्यधारा से असम्पृक्त चलचित्र की सामाजिक विकृतियों को बढ़ाने में नकारात्मक भूमिका को चिन्हित करने के साथ ही बाल–किशोर एवं युवाओं द्वारा भदेस, फूहड़ता व अश्लीलता का अंधानुकरण कर अपने व समाज के लिए अनादर्श जीवन पर प्रकाश डालने के साथ ही धनलोलुप–व्यावसायिक दृष्टि सम्पन्न सिने निर्माता–निर्देशकों, कलाकारों को आत्मावलोकन हेतु प्रेरित करने का लघु प्रयास मात्र है। कालजयी साहित्य, साहित्यकार, फिल्मकार किसी परिचय के मोहताज नहीं होते। दिखावे की चकाचौंध से उन्हें कुछ लेना–देना नहीं होता।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षतया इस बिन्दु पर सहमत हुआ जा सकता है कि साहित्य एवं सिनेमा दोनों अलग–अलग विधाएँ होने पर भी सुई–तागे, दिया–बाती की तरह यदि साथ–साथ सहयात्रा तय करते हैं तो दोनों परस्पर पूरक हैं, सिक्के के दो पहलुओं की तरह मूर्तिमान हैं। हिन्दी सिनेमा में भारतीयता की आत्मा दृष्टिगोचर हो सकें इस हेतु इसका साहित्य से जुड़ाव–गठजोड़ नितान्त अनिवार्य है। हिन्दी साहित्य एवं हिन्दी सिनेमा की प्रगाढ़ता को और गहन करने के लिए सिने क्षेत्र की नामचीन हस्तियों एवं साहित्य के सशक्त स्वर्णिम हस्ताक्षरों के मध्य मधुर समन्वय बैठक व समीक्षा अपेक्षित रहेगी। गैर सरकारी संगठन, साहित्यक संस्थाएं, विविध फाउंडेशन, एन0बी0टी0 आदि इसमें महती भूमिका निर्वहन कर सकते हैं।

हमारे साहित्यकारों एवं फिल्मकारों को इस बिन्दु का अहसास कमोवेश होगा ही कि समाज के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक नैतिक स्वास्थ्य का भी अपना गुरूतर महत्व है। साहित्य एवं सिनेमा के क्षेत्र में दोनों प्रभावशाली व्यक्तित्वों को इस संधि बिन्दु पर गहन मन्थन की आवश्यकता महसूस की जाती है। मणिरत्नम, राजभौलि, प्रकाश झा जैसी प्रतिभाओं से सुधी पाठकों को बहुत आशाएं हैं कि देश–समाज की युवा पीढ़ी में सद्मानस का निर्माण करने तथा सौहार्दपरक रचनात्मक वातावरण निर्मित करने में उनकी भूमिका, कहाँ ठहरती है? फिल्म 'बादल' की यह पक्तियाँ सिनेकारों को चैतन्य भूमि पर खड़े होकर सोचने को बाध्य करती है–

''अपने लिए जिए तो क्या जिये,
तू जी ए दिल जमाने के लिए।''

सन्दर्भ सूची :-

1. चटर्जी शैवाल, सदी का सिनेमा : यात्रा और अन्तर्यात्रा, ऊबी–थकी आत्माओं के लिए फिल्मों का शोरबा, राष्ट्रीय सहारा, हस्तक्षेप, देहरादून, शनिवार, 19 मई 2012, पृ0– 04

2. अग्निहोत्री सुधीर, सिनेमा और साहित्य, परीक्षा मं0, नि0 माला– 2018–2019 सं0– अनिल अग्रवाल, 7 R/5 ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स इलाहाबाद– 211001, पृ0– 209
3. भारती आनन्द, सिनेमा में साहित्य : हाथ तो मिले पर दिल नहीं, राष्ट्रीय सहारा, हस्तक्षेप, देहरादून, शनिवार 19 मई 2012, पृ0– 02
4. पांडे पीयूष, बॉलीवुड का अर्थ, राष्ट्रीय सहारा, हस्तक्षेप देहरादून, शनिवार, 19 मई 2012, पृ0– 03
5. जैन योगेश चन्द्र, सं0 नि0 माला, समाज पर सिनेमा का प्रभाव, अरिहन्त पब्लि0 (इण्डिया) लिमि0 पृ0– 109
6. शर्मा अमिताभ, किस समाज का दर्शन है दूरदर्शन, साप्ताहिक परिशिष्ट, दैनिक जागरण, रविवार, 07 दिसम्बर 1997 ई0

डॉ0 डी0सी0 पाण्डेय, सहा0 प्राध्या0
राजकीय महाविद्यालय हल्द्वानी शहर, किशनपुर गौलापार, हल्द्वानी (नैनीताल), जनपद– नैनीताल, उत्तराखण्ड
पिन– 263139
drdcpandey3075@gmail.com
मो0: 9411319412

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 29-31

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रित वृद्ध जीवन की त्रासदी

डॉ. दीपक कुमार

सहायक प्रोफेसर, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय भेरियां, पेहवा, कुरुक्षेत्र।

चित्रा मुद्गल द्वारा आत्मकथात्मक शैली में लिखित 'गिलिगडु' उपन्यास वृद्धों की समस्या को केंद्र में रखकर लिखा गया एक लघु उपन्यास है जिसमें तेरह दिन में घटित दो वृद्धों की कथा को चित्रित किया गया है। इसमें बुढ़ापे का दर्द, घर में उपेक्षित व्यवहार व घर से बाहर निकाले गये वृद्धों के जीवन की व्यथा को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के मुख्य पात्र सेवानिवृत्त सिविल इंजीनियर बाबू जसवंत सिंह व सेवानिवृत कर्नल स्वामी के जीवन के साथ–साथ आज के बदलते जीवन–मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में घर, परिवार व समाज में बुजुर्गो की वास्तविक स्थिति का चित्रण बड़ी बेबाकी से हुआ है।

आधुनिक औद्योगिक प्रगति के युग में वृद्धजन अपने आपको फालतू और अनुपयोगी समझता हुआ घोर एकाकीपन तथा उपेक्षा का शिकार पाता है। बचपन और यौवन तो हवा की तरह उड़ जाते हैं, पर बुढ़ापा मनुष्य के जीवन में स्थायी जगह बना लेता है। इस संदर्भ में डॉ. अर्चना मिश्रा का कथन है – ''गिलिगडु उपन्यास में चित्रा जी ने वृद्धों की बेचारगी, संवेदनशीलता और जीवन शैली को विस्तार दिया है। पुस्तक के फ्लैप पर लिखी इबारत भी इस उपन्यास की आधारभूमि की ओर संकेत करती है। गिलिगडु चित्रा जी का आकार में छोटा परन्तु संवेदनशीलता में कहीं गहरा उपन्यासहै। इस उपन्यास में सेवानिवृत्त बुजुर्ग की एकरेखीय कहानी नहीं जीवन के रंग बहुआयामी रूपों में उभरकर आये हैं।[1]

भारतीय संस्कृति में हमेशा बुजुर्गों को अनुभव और ज्ञान का भंडार माना गया लेकिन वर्तमान समाज बुजुर्गों के प्रति अपने कर्त्तव्य को भूल गया है। वृद्धावस्था जीवन का अंतिम पड़ाव होता है जिससे हर मनुष्य को गुजरना होता है। किन्तु सामाजिक जीवन शैली में वृद्धों के कष्टों को देखकर ऐसा लगता है जैसे बुढ़ापा कोई अभिशाप हो। चित्रा मुद्गल ने समाज की इसी नब्ज को पकड़कर अपनी लेखनी चलाई है।

गिलिगडु उपन्यासकी कहानी ऐसे दो बुजुर्गों की है जो घर–परिवार और आर्थिक रूप से समृद्ध होते हुए भी अकेले हैं। लेखिका ने बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी के बहाने देश के वृद्धों की दयनीय दशा का वर्णन किया है। भूमंडलीकरण पश्चिम का अन्धानुकरण, टूटते परिवार और भौतिकता के प्रति बढ़ते लगाव के कारण मनुष्यता समाप्त होती जा रही है। इस प्रक्रिया में कमजोर लोग पिसते हैं जिनमें बाल, वृद्ध, स्त्री, दलित और विकलांग प्रमुख है।

हमारे समाज में बुजुर्गों की तीन श्रेणियाँ हैं– एक वे हैं जिनका कोई परिवार नहीं, इसलिए वे अकेले रहते हैं। दूसरे वे जो भरा–पूरा परिवार होते हुए भी अकेले रहने को बाध्य हैं और तीसरे वे है जो परिवार में रहकर

भी अकेले हैं। उपन्यास में बाबू जसवंत सिंह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बेटे नरेन्द्र के पास दिल्ली चले आते हैं। यहाँ उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता है। वे अपनी तुलना टॉमी से करने लगते है – ''इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं – एक टॉमी, दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह।''[2] इसी प्रकार कर्नल साहब की कथा है जो इससे कहीं ज्यादा करुण है। पत्नी की मौत के बाद कर्नल स्वामी अकेले हो गये थे। उनके तीनों बेटे नये–नये शहरों में बस जाते हैं। धन की आकांक्षा से खुद के बेटे ने कर्नल साहब को पीटकर मार डाला। कर्नल साहब की पड़ोसन मिसेज श्रीवास्तव बाबू जसवंत सिंह से कहती है – ''ऐसी कसाई औलादों से आदमी निपूता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई औलाद नहीं।''[3]

बुढ़ापे में व्यक्ति अकेला, निर्बल और असहाय हो जाता है। उसे अपने दैनिक कार्य व भरण–पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यही निर्भरता उनकी समस्या का कारण बन जाती है। जसवंत सिंह की बीमारी के चलते पायजामें में खून लग जाने पर बहु सुनयना उन्हें उलाहना देते हुए कहती है – ''उनके पायजामें और चड्डी में लगे खून के धब्बे वॉशिंग मशीन में नहीं छूटते। उनके बाथरूम में रिन की बट्टी रख दी गई है। कपड़े धोने डालने से पहले वे स्वयं धब्बों को तनिक रगड़ दिया करें।''[4] बहु सुनयना का कहा सुना तो बाबू जसवंत सिंह जैसे–तैसे सह लेते हैं पराये घर की स्त्री जो ठहरी लेकिन अपने बेटे नरेन्द्र द्वारा रोकना टोकना उनको बहुत चुभता है। अपने माले की लिफ्ट खुली छोडकर भूल जाने पर जब नरेन्द्र उन्हें टोकता है तो खिन्न मन से वे कहते है कि ''इस घर में बच्चों की शिकायतें नहीं आती। बुढ़ो की आती है। इस सोसायटी के लोग शायद कभी बूढ़े नहीं होंगे। न उनकी शक्ति क्षीण होगी न स्मृति। ऐसे अजर–अमर जन्में हैं, न कभी कोई कष्ट आयेगा न हारी–बीमारी।''[5] बुजुर्गों की इस स्थिति पर लेखिका क्षमा शर्मा लिखती हैं – ''अपनो द्वारा ठुकराए जाने का जो मलाल होता है, उसका क्या कोई इलाज होता है? वे बार–बार यह अहसास दिलाते हैं कि उनकी जरूरत अब घर में तो क्या इस धरती पर ही नहीं रही। उन्होंने जिनके लिए अपनी उम्र और अपने सारे संसाधन लगा दिए वे ही दो जून की रोटी के लिए दुत्कारते हैं।''[6]

उपन्यास में कर्नल स्वामी हमेशा मनगढंत कहानियां बनाकर बाबू जसवंत सिंह को सुनाते रहते हैं कि उनका भरा–पूरा परिवार है और वे परिवार में बहुत खुश हैं जबकि उनका जीवन इसके बिल्कुल विपरीत था। वे बाबू जसवंत सिंह को समझाते हुए कहते हैं – ''जीवन मुठभेड़ों से ही जिया जाता है मिस्टर सिंह।''

चित्रा मुद्गल ने उपन्यास में पात्रों के माध्यम से सामाजिक अवमूल्यन को भी बड़ी कुशलता के साथ चित्रित किया है। जसवंत सिंह के बेटा और बेटी दोनों उनकी जमीन–जायदाद बैंक बैलेंस को लेकर लालायित है। उनकी बेटी कहती है–''लॉकर में अभी है तो बहुत कुछ बाबू जी। अम्मा के अपने कई सेट, चाँदी का ढेरों सामान। अम्मा हमेशा कहती रही अपनी पचलड और कुन्दन का सेट वे अन्वीता को देंगी और विक्रम की बहु के लिए...।''[7] वृद्धावस्था जीवन का ऐसा पड़ाव होता है जहाँ व्यक्ति अपने अतीत के साथ ज्यादा जीता है। इस संदर्भ में पाश्चात्य विचारक अरस्तु लिखते हैं कि – ''वे उम्मीद से अधिक यादों के सहारे जीते हैं।''[8] इस उम्र में व्यक्ति भविष्य के सपने देखना बंद कर देता है क्योंकि उनका शरीर उनको हकीकत में बदलने में सक्षम नहीं रहता। जीवन के अंतिम पड़ाव तक व्यक्ति अपने अनेकों करीबी लोगों को खो देता है जैसे जीवनसाथी, माता–पिता,भाई–बहन आदि व्यक्ति भी जीवन जीने की लालसा खत्म हो जाती है। जीवनसाथी की मृत्यु बुढ़ापे को और अधिक कष्टदायक बना देती है।

उपन्यास में कर्नल स्वामी का चरित्र निश्चय ही प्रेरणादायी है। कर्नल स्वामी के जीवन की सच्चाई व अन्त समय में उनके पुत्र द्वारा पीटकर निर्मम हत्या की बात सुनकर बाबू जसवंत सिंह का दिल द्रवित हो उठता है जिसके परिणामस्वरूपवे अपनी सारी सम्पति के साथ–साथ अपने दाह संस्कार का अधिकार भी सुनगुनिया और उसकी संतान को दे देते हैं।

आधुनिक पीढ़ी में भावनात्मक रिश्ते नहीं है। भौतिकता के प्रभावस्वरूप वे एकल परिवारों में रहने के कारण स्वयं तक ही सिमट कर रह जाते हैं। बाबू जसवंत सिंह पोते के जन्मदिवस पर उसे पार्टी देना चाहते हैं लेकिन मलय का यह करारा जवाब उनके दिल को ठेस पहुंचाता है – ''उसका यह कार्यक्रम इसके दोस्तों के साथ है। घरवाले इसमें शामिल नहीं होंगे। –––अपनी गाड़ी के लिए पापा उस रोज दफतर से ड्राइवर बुलवा लेंगे। अपने साथ हम किसी भी बड़े को नहीं ले जाएंगे। पार्टी बोरिंग हो जायेगी।।''[8]

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि आधुनिक जीवन में वृद्ध उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। इसके लिए वुद्धों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा और युवाओं को बुजुर्गो के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना होगा। बुजुर्गो को इस प्रकार उपेक्षित और असहाय छोड़कर हम इस समस्या का समाधान नहीं खोज सकते। चन्द्रमोलेश्वर प्रसाद लिखते हैं –''बुढ़ापे को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, एक ऐसी दृष्टि जिसमें संवेदना हो और बूढों के लिए आदर व सम्मान का जीवन देने की आकांक्षा हो।''[9]

संदर्भ ग्रंथ :–

1. डॉ. अर्चना मिश्रा–चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग चिंतन, पृ. 36
2. चित्रा मुद्गल, 'गिलिगडु' सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 96
3. वही, पृ. 138
4. वही, पृ. 71
5. वही, पृ. 65
6. क्षमा शर्मा–दैनिक जागरण हिन्दी समाचार–पत्र से 'अपनों की अनदेखी का दर्द' शीर्षक से 11 जून 2017
7. वही, पृ. 95
8. वही, पृ. 33
9. चन्द्रमोलेश्वर प्रसाद–वृद्धावस्था विमर्श, परिलेख प्रकाशन, नजीबाबाद, संस्करण, 2016

पता :–
डॉ. दीपक कुमार, सहायक प्रोफेसर, हिंदी
मकान नं. 2176, ताज पैलेस के पीछे, रामनगर कालोनी, कुरुक्षेत्र–136118
मो. नं. 8708861229
ईमेल–dk6877kkr@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 32-38

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

डॉ. राम गोपाल सिंह की व्यंग्य–चेतना

डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल

सह आचार्य, हिन्दी विभाग शा. घो. कला, विज्ञान एवं गो. प. वाणिज्य महाविद्यालय शिवले,
तहसिल– मुरबाड, जिला–थाना (महा.) पिन. 421 401

प्रस्तावना :–

स्वर्ग का इस पृथ्वी को सबसे श्रेष्ठ वरदान महापुरूष ही हैं। विश्व में आज जो कुछ महत्त्वपूर्ण हम देखते हैं, उन सबकी तह में सर्जनशील महापुरूषों के जीवन का इतिहास लिखा पड़ा है। जिसे प्राप्त करने के लिए जनसाधारण जीवन पर्यन्त साधना करता है, उसे महापुरूष ही प्रदान करते हैं। वह उन्हीं के मस्तिष्क की उपज है, उन्हीं के विचारों का क्रियात्मक रूप है।

किसी देश का विचारशास्त्र उस देश की सभ्यता और संस्कृति का सबसे मूल्यवान रत्न होता है। साहित्य के बिना राष्ट्र का व्यक्तित्व गूंगा होता है। राष्ट्र की वाणी तो उसका साहित्य ही है। जिस देश में एक भी सर्जनात्मक व्यक्तित्ववाला साहित्यिक जन्म लेता है, वहाँ की भूमि धन्य हो जाती है। उसकी गोद में कितने ही कवि, कलाकार, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक आदि खेला करते हैं। सच्चे साहित्यिक की कलम से देश की संस्कृति बदल सकती है, युग प्रभावित होता है। प्रागैतिहासिक काल में जिस आध्यात्मिक साहित्य का सृजन हुआ, उसी पर आगे चलकर भारत का विशाल व्यक्तित्व बना। उसी के कारण भारत आज इस रूप में बना हुआ है। किसी ने ठीक ही कहा है कि यदि व्यास न होते तो 'भारत' वह न होता जो आज है। उनके महाभारत ने भारतीय संस्कृति को नया मोड़ दिया। उन्होंने ऐसे भारत का निर्माण किया जिसकी नींव आज तक कोई स्पर्श नहीं कर सका।

दुनिया के इतिहास में सर्जनशील व्यक्ति का क्या स्थान है इसे कारलाइल ने स्पष्ट करते हुए लिखा है –"अगर हमसे कोई पूछे कि भारतीय साम्राज्य और शेक्सपियर दो में से एक को छोड़ने की नौबत आ जाये तो तुम किसे छोड़ना पसन्द करोगे? इसके उत्तर में तत्क्षण मैं कहूँगा – भारतीय साम्राज्य रहे चाहे जाये, शेक्सपियर को हम नहीं छोड़ सकते। भारत तो एक दिन हमारे हाथ से जायगा ही पर भोक्सपियर को हमसे कोई नहीं छीन सकता।"

साहित्य का सृष्टा ऐसी दृष्टि से सम्पन्न होता हैं कि वह गत, आगत और अनागत को देख लेता है, वह प्रत्यक्ष और परोक्ष को जान लेता है, जो इस प्रकार दृष्टि सम्पन्न नहीं हैं, उसकी कृति चिरस्थायी नहीं हो सकती। बर्नार्ड शॉ का कथन है – "नये युग का प्रकाश सिर्फ प्रतिभाशाली शक्ति की आँखें ही पहले–पहले देख सकती है और उसका काम है अपनी कला–कृतियों द्वारा जन साधारण के दिमाग में उसे उतारना।" डॉ. राम गोपाल सिंह

एक ऐसे ही प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं जो अपने व्यक्तित्व एवम् कृतित्व के माध्यम से अपने समकालीनों में एक गरिमामय स्थान रखते हैं। वैसे डॉ. सिंह मूलतः भाषा वैज्ञानिक हैं, लेकिन इसके अतिरिक्त वह एक संवेदनशील व्यंग्यकार भी हैं। इनका व्यंग्य निबन्ध, आलोचना एवम् कविता में विशेष रूप से दर्शनीय है। प्रस्तुत लेख में डॉ. राम गोपाल सिंह के काव्यगत व्यंग पर विचार किया गया है।

व्यंग्य का स्वरूप :–

सभ्यता के विकास के साथ 'व्यंग्य' की यात्रा सामाजिकता के गहरे और मूल संदर्भ के साथ अपने विकसित रूप में बढ़ती रही है। हरिशंकर परसाई के अनुसार "व्यंग जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिध्याचारों और पाखण्ड का पर्दाफाश करता है।"[1] वे कहते हैं – "व्यंग्य एक माध्यम है कोई राजनीतिक पार्टी नहीं, व्यंग्य उजागर और सचेत करता है।"[2] सचमुच व्यंग एक सही मापदण्ड है व्यवस्थित जीवन के लिए। "सही व्यंग्य व्यापक, जीवन–परिवेश को समझने से आता है। परिवेशगत विसंगतियों की तह में जाना, कारणों का विश्लेषण करना, उन्हें सही परिप्रेक्ष्य में देखना– उसी से सही व्यंग्य बनता है।"[3] "सच्चा व्यंग्य जीवन की समीक्षा होता है, वह मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करता है। अपने से साक्षात्कार कराता है, चेतना में हलचल पैदा करता है, व्यवस्था की सडांध की ओर इंगित करता है और परिवर्तन की ओर प्रेरित करता है।"[4] डॉ. राम गोपाल सिंह ने हास्य एवम् व्यंग्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है – "हास्य एवम् व्यंग्य का सम्बन्ध प्रत्यक्षतः आनंदानुभव, गुलगुली, वास्तविक हंसी, हास्यमय परिस्थिति आदि से है; फिर भी, हास्य में बुद्धि एवम् विवेक की पूर्णतः अपेक्षा होती है। इस दृष्टि से हास्य एवम् व्यंग्य को क्रियात्मक मानसिक चेष्टा कहा जा सकता है जिसका खुशी के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।"[5] प्रो. श्रीमती आशा सिंह ने व्यंग्य पर विचार करते हुए लिखा है "व्यंग्य मनुष्य की अंतः चेतना को दोषमुक्त कर उसे विशेष व्यवस्था के तहत सकारात्मक कार्य–प्रवृत्ति की ओर अग्रसित करती है।"[6] डॉ. इन्द्र बहादुर सिंह ने व्यंग पर अपने विचार स्पश्ट करते हुए कहा है–"मानव जीवन के सन्दर्भ में जब हम व्यंग्य की बात कहते हैं, तब हमारा अभिप्रायः यही होता है कि व्यंग्य में मनुष्य के स्वतंत्र चिन्तन, व्यक्ति–स्वातंत्र्य, आचारण–स्वातंत्र्य, आर्थिक, स्वतंत्रता, परस्पर प्रेम तथा मानवीय आशा–आकांक्षाओ के प्रत्येक पक्ष को स्थान दिया जाता है।"[7]

बरसानेलाल चतुर्वेदी व्यंग्यकार के प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं – "व्यंग्यकार का कार्य न्यायाधीश की भाँति न्यायपालन करने का है, तथा शिष्ट समाज की मर्यादाओं की रक्षा करना है। उसका कार्य नर–नारियों के नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं अन्य कसौटियों पर खरे उतरने के लिए सचेत करने का है।"[8] धनंजय वर्मा हास्य और व्यंग्य के अंतर को स्पष्ट करते हुए लिखते है – 'हास्य एक ऐसा दर्पण है, जिसमें सारी दुनिया की विरूपताएँ प्रतिबिम्बित होकर हमारा मनोरंजन करती है।.... लेकिन व्यंग्य एक्सरे से खींची गयी वह तस्वीर है जो ऊपर से स्वस्थ और भले चंगे दिखने वाले आदमी और समाज के अन्दरूनी क्षय और कैंसर को उभारती है।"[9]

व्यंग जीवन की विद्रूपताओं–विडम्बनाओं, असंगति–निसंगतियों, सामाजिक विषमताओं–वैयक्तिक दुर्बलताओ की आलोचना है। व्यंग्य जन–जीवन के गर्हित, कुत्सित, जघन्य आयामों, व्यापारों का साक्षात्कार करता–कराता है। व्यंग्य मनुष्य के अमानवीयकरण समाज के असामाजीकरण व संस्कृति के निसंस्कृतीकरण को उजागर करता है। व्यंग सामाजिक के दंभ, आडंबर, पाखंड जैसी दुर्मनोवृत्तियों का, समाज की तंयगत, व्यवस्थागत, शासनगत

दुष्प्रवृत्तियों का ह्रासोन्मुख जीवनमूल्यों–मनोव्यापारों–सामाजिक व्यवहारों का दर्पण है। व्यंग्य यदि दृष्टि की धूमिलता, दर्शन की विकृति व मूल्यों के अवमूल्यन पर कभी हास–परिहास के तो कभी उपहास के आवरण में हल्के–फुल्के अंदाज से तो कभी तिक्तता–कटुता मिश्रित रीति से चोट करके चुभता है तो वह सामाजिक–आर्थिक विषमताओं को कुरेदता है व सामाजिक कुरीतियों–कुप्रथाओं, दुष्प्रणालियों–दुष्प्रवृत्तियों, सामाजिक–राजनीतिक–आर्थिक–सांस्कृतिक अनैतिकताओं पर भी वज्र–प्रहार करता है।

सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक–सांस्कृतिक–मानसिक–भावात्मक शोषण–दमन–उत्पीड़न, अन्याय–अत्याचार, अनाचार–कदाचार पर आघात करना यदि व्यंग्य की प्रवृत्ति है तो जनसुधार, समाज–सुधार उसका उद्देश्य। निंदा, उपहास, आलोचना व्यंग के हथियार हैं, जिनसे अशिव का ध्वंस करके पुनर्रचना किंवा नवनिर्माण की ओर व्यंग्य उसके आलंबन को प्रेरित–प्रवृत्त–परिचालित करता है।

व्यंग का प्रभाव चाहे स्थायी एवं दूरगामी न हो परन्तु वह झकझोरता – झिंझोड़ता जरूर है – बुराईयों – कमजोरियों को हटाने, मिटाने के लिए उतना नहीं तो उन पर सोचने, उनसे दो–चार होने के लिए बाध्य अवश्य करता है। व्यवस्था से जूझने व आत्म–संघर्ष करने की ऊर्जा तो प्रदान करता ही है। इस प्रकार सामाजिक क्रान्ति में उतनी न सही सामाजिक परिवर्तन में व्यंग्य की भूमिका महत्व पूर्ण है।

डॉ. राम गोपाल सिंह की व्यंग्य–चेतना :-

डॉ. राम गोपाल सिंह की कविताओं में व्यंग्य की पृष्ठभूमि में विभिन्न प्रकार की सामाजिक, राजनीतिक एवम् आर्थिक विसंगतियाँ एक साथ कार्य करती रही हैं। इन्ही विसंगतियों और अवरोधों ने व्यंग्य की पृष्ठभूमि तैयार की और उसे युगीन सत्यों एवम् कुष्ठाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया है–

"उन्होंने चुनाव की प्रणाली पर /उसकी परिपाटी पर
पहले भाषण झाड़ा / रात को बैठक की
और सबको कह डाला
सुबह चुनाव हुए सम्पन्न / वे बने सर्व सम्मति से अध्यक्ष
और उनके चेले महामंत्री /और इस तरह सबकी नज़र में
लोकतंत्र की लाज बच गयी।"[10]

भारत संस्कृति प्रधान देश रहा है। वहाँ पर शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक की बहुत प्रतिष्ठा है। शिक्षक जो गुरू के नाम से अभिहित किया जाता है, वह स्वयम् गोविन्द से बढ़कर माना गया है। क्या सगुण क्या निर्गुण सभी ने इस गुरू की महिमा का गुणगान किया है। गुरू आश्रम या गुरूकुल पवित्र माना जाता था। अवतारी पुरूष भी इस गुरूकुल में शिक्षा ग्रहण करने जाते थे, लेकिन पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से हमारा परम्परित शिक्षा–संस्थान टूट गया। गुरूकुल, अब स्कूल–कॉलेज व विश्वविद्यालय बन गये। गुरू वेतन भोगी टीचर और शिक्षार्थी शुल्क देकर अध्ययन करने वाले स्टूडेण्ट। आपसी स्नेह–सूत्र टूट गया। गुरू–शिष्य का सम्बन्ध समाप्त हो गया। अब तो नौकरी के लिए येन–केन प्रकारेण डिग्री प्राप्त करना ही शिक्षार्थी का जीवन–धर्म बन गया है।

डॉ. सिंह इस अधः पतन की तरफ संकेत करते हुए लिखते हैं –

"बहन! तुम स्कॉलर तो नहीं रहीं/लिखना भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ? उत्तर देगी?/ धीसिस कहाँ लिखवाया?

तमगा कैसे पाया?"[11]

किसी प्रकार डिग्री प्राप्त कर नौकरी में जाना और अपनी नयी ईजाद की गयी कला के माध्यम से प्रमोशन पाना, पुस्तकें छपवा लेना आज की शैक्षणिक, विशेषता बन गयी है। आपने इस कुप्रवृत्ति पर करारा व सटीक प्रहार करते हुए लिखा है –

"बहन! तुम विदुषी तो हुई नहीं /पढ़ना–पढ़ाना भी नहीं आया
पर एक बात पूछूँ? उत्तर दोगी/ये नौकरी कैसे पाई?
धड़धड़ प्रमोशन कैसे कमाया?
बहन! तुम लेखिका तो हुई नहीं /लिखना भी तुम्हें नहीं आया
पर, एक बात पूछूँ? / उत्तर दोगी?
पुस्तक कहॉ छपाई?/पुरस्कार कैसे पाया?"[12]

आजकल उच्च शिक्षा संस्थानों में भ्रष्टाचार अपनी सीमा पर है। शोधकार्य के नाम पर ये बैठे हुए गुरू घण्टाल एक नयी संस्कृति ही ईजाद कर रहे हैं। अपनी पहली व्याहता पत्नी को छोड़कर शोधछात्रा को पहले रखैल बनाते हैं और बाद में मुस्लिम बन कर शादी कर लेते हैं। इस प्रकार 'स्नेह' कब 'प्रेम' में बदल जाता है किसी को इसका पता ही नहीं लगता। लेकिन कवि तो कवि है, जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि। और कवि 'स्नेह' और 'प्रेम' के माध्यम से ऐसे गुरू घण्टालों के नकाब को उठा देता है –

"चाह थी उन्हें /स्नेह की /गुरफपद रज की
पर प्यार वे देने लगे /और ब्याहता को दे तलाक /उन्हें पत्नी बना
स्नेह को / प्रेम से सँजोने लगे।"[13]

उच्च शिक्षा–संस्थानों में भाई–भतीजावाद, जात–पात, भाषा–प्रान्त, साँठ–गाँठ और जोड़–तोड़ अपनी चरमपर है। रिटायर्ड होने के बावजूद भी ये मठाधीश सिंहासन को प्रभावित करते हैं और अपने मोहरे इधर–उधर बैठाने की साज़िश रचते हैं। यह प्रक्रिया यथाशक्ति नगर, महानगर, प्रान्त, पूरे देश में चलायी जाती है। कुछ तो मठाधीश ऐसे भी हैं जिन्होंने अपने परिवार तक का त्याग कर दिया हैं और जजमानी का नया तरीका ढूँढ़ निकाला है – थैली सेठों की जेब में बैठकर लोकार्पण, उद्घाटन, स्वागत आदि में पुरोहिती करना। डॉ. राम गोपाल सिंह इन धृतराष्ट्रों को पहचानते है और उनकी करतूत को रेखांकित करते हुए कहते हैं –

"वृद्धजन! / आपके अन्दर का अहम्
लालच, /माया, /भरम –
सब पर द्दाने की लालसा
दुर्योधन बनकर /तुम्हारे अन्दर /गहरे गयी है पैठ
जिसके तुम बाप हो / सदृश धृतराष्ट्र हो।।"[14]

आजकल करीब–करीब हर जगह सुरा–सुन्दरी का बोलबाला है। जो दरवाजा सिर पीटने पर भी नहीं खुलता, 'परमात्मा के कुत्ते' के वस्त्र उतारने पर भी नहीं संवेदित होता वह दरवाजा आप सुरा–सुन्दरी की चाबी से खोल लीजिए और हमेशा के लिए। ये महिलाएँ भी बिस्तर की तरह बिद्दने को तैयार रहती हैं, महज उन्हें चाहिए कुछ कलदार सिक्के, कुर्सी, नाम और नहीं तो पेट भरने के लिए कुछ आश्वासन। कवि इस प्रवृत्ति पर प्रहार

करता है, उस व्यवस्था पर प्रहार करता है जिसके तहत यह सब सम्भव होता है –

"कूटनियाँ /भ्रष्ट दूतियाँ / भ्रष्ट वामाचार में निष्णात बुड़ठों को
रूप की चमक दिखाकर/विमोहित कर रही हैं/और
'जीरो' को 'हीरो' का रूतबा देकर/अपनी चालें चल रही हैं।
और इस तरह अपना पेट भर रही हैं।"[15]

इस कविता की अन्तिम पंक्ति – "और इस तरह अपना पेट भर रहीं हैं" हमारी व्यवस्था पर करारी चोट है। जिस समाज में पेट भरने के लिए आज भी स्त्रियों को वामाचार का आश्रय लेना पड़े, उस समाज को, उस समाज के ठेकेदारों को लानत है। स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व और न्याय की बातें सब मिथ्या हैं। सदियों की शोषित–पीड़ित नारी आज भी अपावन है, विवश व मज़बूर है। विकास की सारी बातें यहाँ आकर व्यर्थ साबित हो जाती हैं।

डॉ. सिंह ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में सत्ता पर विराजमान धृतराष्टों, सत्ता के गलियारे में घूमने वाले दलालों, तलवा चाटने वालों, जी हूजुरी करने वालें सब पर व्यंग्य प्रहार किया हैं। इस देश में जायज–नाजायज सब चलता है। कवि के शब्दों में –

"तू भी कर ले मौज, यहाँ पर सब चलता है।
लपक–लपक के लपक, यहाँ पर सब चलता है।।
पद मिला कुण्डली मार, यहाँ पर सब चलता है।
यह दुनिया का व्यौहार, यहाँ पर सब चलता है।।
अंधों के कंधों पे लँगड़े मौज करें।
अंधों–लगड़ों की साँठ–गाँठ से सभी डरें।।
यहाँ ऐसों की है भरभार, यहाँ पर सब चलता है।
तू भी करले मौज, यहाँ पर सब चलता है।।"[16]

हमारे समाज में सारी बुराई की जड़ ये नेता हैं। इन्हीं के कारण भारतीय लोकतंत्र हास्य तंत्र बन गया है। कवि इन नेताओं की करतूतों पर सात्विक ढंग से प्रकाश डालते हुए कहता है –

"कलियुग के नेता की /पूर्व जन्मों की पोल
देती हैं उसकी करतूतें खोल/तभी तो यह हो रहा है
कि कलियुगी नेता/अपने पूर्वजन्म की
साँप, बन्दर, मगर,/गिरगिट, बगुला आदि की
सभी योनियों की स्मृतियाँ/इसी जन्म में
नेता के रूप में/ढो रहा है।।"[17]

स्वतंत्र भारत के लिए नेता और सरकारी कर्मचारियों की गठजोड़ अभिशाप है। इन दोनों की मिली–भगत से देश चौपट हो रहा है। यहाँ की ग़रीब जनता और ग़रीब होती जा रही है और धनवान और धनी। यह पूँजीवादी विकास प्रजातंत्र की सामाजवादी व्यवस्था की छत्रछाया में हो रहा है। शस्त्र–श्यामला इस धरती को ये नेता, ये सरकारी कर्मचारी छुटे साँड़ की तरह चर रहे है और रौद रहे हैं। सबसे बड़ा व्यंग्य तो यह है कि देश की जनता

यह सब जानते हुए भी उनकी नाक में नकेल नहीं डाल पा रही है, क्योंकि उसी के बीच का एक व्यक्ति उसका संरक्षक है। डॉ. सिंह ने अपनी 'ये अफसर' कविता में इन्हें 'रक्तबीज' के रूप में चित्रित करते हुए लिखा है –

"ये होते हैं रिटायर तो दूसरे पैदा हो जाते हैं
जो इनके ही पथ पर चलते हैं
और इस तरह ये अफसर /नौकर होते हुए भी
मालिक बने फिरते हैं
और लोकतंत्र का /भरपूर फायदा उठाकर
पूरे देश को/हरा भरा घास का मैदान समझकर
ब्यूह चरते हैं/अकड़ते हैं/पसरते हैं
गलियाया करते हैं।"[18]

डॉ. राम गोपाल सिंह 'महिला विमर्श' या 'महिलाओं की स्वतंत्रता' के नाम पर उन्हें उच्छृंखल होने तक की छूट नहीं देते। विज्ञापन, फिल्म या जीवन के दूसरे क्षेत्रों में पाश्चात्य देशों की नकल पर वह नग्नता व शरीर –प्रदर्शन के वे विरोधी हैं। उनकी सौन्दर्य दृष्टि नग्नता में नहीं बल्कि परम्परित भारतीय नारी के शील व आचरण में, जीवन की यथार्थता एवं पूर्णता में ढूँढ़ती है। उनके यहाँ नारी के वे सभी रूप वन्दित हैं, जो भारतीय समाज में मान्य हैं। यह शरीर, यह भौतिक, सौन्दर्य प्रकृति का वरदान है। कवि इस शरीर–सौष्ठव का उपयोग नौकरी, पद–प्रतिष्ठा या ऐश्वर्य के लिए करना गलत मानता है। जो स्त्रियाँ इस मानसिकता की शिकार है, 'उन पर व्यंग्य करता हुआ कवि कहता है –

"आज की द्रोपदी/हो गयी है बड़ी चतुर
चुपके–चुपके चीर–हरण कराकर
और आगे चीर–हरण का वास्ता देकर
पा जाती है नौकरी/प्रतिष्ठा, सम्मान
और बना लेती है कोटी/जिसे देखकर कोटा भी शरमाता है।"[19]

डॉ. राम गोपाल सिंह बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं। वे भाषा–वैज्ञानिक, कवि, लघु कथालेखक, टिप्पणीकार, समीक्षक पत्रकार, स्तम्भ–लेखक, तथा कुशल वक्ता, मंच–संचालक एवम् योग्यतम् शिक्षक हैं। वे शक्ति, शील और सामाजिकता के उपासक हैं। इसके व्यक्तित्व को देखकर ही, एक बार डॉ. इन्द्र बहादुर सिंह ने ठीक ही कहा था –

"अगर मैं परीक्षक होता, नम्बर सौ के सौ देता।
लियाकत के कुछ और देता, शराफत के कुछ और देता।।"

डॉ. सिंह जितने सधे व्यंग्य कवि हैं, उतने ही कुशल व्यंग्य निबन्धकार एवम् व्यंग्य समीक्षक भी। यहाँ पर उनके व्यंग्य निबन्ध 'सत्यंग की महिमा' से एक उदाहरण प्रस्तुत है– "अचर, अजर, अमर, आनन्दकन्द, स्वच्छ, श्याम केश–राशि, पीयूषपूर्ण नेत्र छवि, शुक तासिका, मध्य दसन द्दटा, पुण्यधाम, सौन्दर्यग्राम, रसजान, सौन्दर्य शोभायुक्त ग्रीवा धारिणी ..... राधिका की रूपदृष्टा का वर्णन मेरे शब्द नहीं कर सकते....." पण्डित जी ने अपनी पिलायती बोरे के समान तौंद में सिहरन पैदा कर गर्दन झटकते हुए महाज्ञानी की मुद्रा के स्वर में प्रखरता लाते

हुए भोले–भाले ग्रामीणों पर मर्माहत शब्द बाणों का प्रहार जारी रखा।

कीर्तन सभा में उपस्थित वृद्ध–बाल–युवा भक्तजनों को पण्डित जी के वे शब्द उनकी समझ से बाहर थे और शायद इसीलिए पीढ़ी–दर–पीढ़ी वे इन महापण्डितों के ब्रह्मवाक्यों से मंत्रमुग्ध होते आ रहे थे और आज भी स्थिति भिन्न न थी। पण्डि जी अपनी पाण्डित्य रूपी तोप से शब्दजाल का धमाका करने ही वाले थे कि रामरतन बोल पड़ा– "पण्डज्जी! हम समझत नाही, तुम का बेलत हो। तुम्हारी राधा तो अति सुन्दर अबला लागे है।"[20]

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डॉ. रामगोपाल सिंह की व्यंग्य–रचनाओं में शक्ति का ऊर्जस्थित, उदम्य प्रवाह, सौन्दर्य का सात्विक प्रस्फुटन, ओज और शौर्य का यथार्थ अनुलेखन, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विद्रूपताओं और जन–सहानुभूति का आकलन एक साथ अभिव्यक्त करने की अद्भूत शक्ति विद्यमान है। अपने को सभ्य, श्रेष्ठ और शिक्षित कहने वाले व्यक्तियों की घोर हिंसात्मक वृत्तियों पर आपने कठोर कुठाराघात किया है। सभ्य समाजोचित एवम् मानवोचित नैतिकता की रक्षा के लिए आपने मीटे–तीखे व्यंग्य–बाणों का प्रहार करके समाज में एक नयी चेतना पैदा करने की कोशिश की है।

संदर्भ संकेत :–

1. व्यंग्य का सौन्दर्य–शास्त्र, मलय, शब्दसृष्टि, मैजपुर दिल्ली, 2008 पृ. 9.
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मुल्याकंन, डॉ. सुरेश माहेश्वरी, विकास प्रकाशन कानपुर, 1994 पृ. 20.
3. समकालीन हिन्दी व्यंग्य : एक परिदृश्य, डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, गिरनार प्रकाशन महेसाना, गुजरात 1990, पृ. 36–37.
4. वही, पृ. 37.
5. हास्य–व्यंग्य भारती, सम्पादकीय, डॉ. रामगोपाल सिंह, पृ. 1, प्रवेशांक 1, जनवरी–मार्च 2000.
6. हिन्दी व्यंग्य–कर्म एवम् समकालीन परिदृश्य, सं. डॉ. शिला तिवारी, डॉ. विनय कुमार पाठक, प्रयास प्रकाशन बिलासपुर, 2002, पृ. 16.
7. वही, पृ. 110.
8. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, बरसानेलाल चतुर्वेदी, (भूमिका) ज्ञानभारती दिल्ली, 1977, पृ. 3–4
9. एक व्यंग्य यात्रा, प्र. सं. रा.वा.पाटील, अलेख सांस्कृतिक अकादमी जलगांव, 1987, पृ. 2
10. हास्य–व्यंग्य भारती, पृ. 1, प्रवेशांक 1, जनवरी–मार्च 2000.
11. वही, पृ. 4.
12. वही, पृ. 4.
13. हास्य–व्यंग्य भारती, पृ. 5, अंक–6–7, अप्रैल–सितम्बर, 2001.
14. वही, पृ. 13.
15. हास्य–व्यंग्य भारती, पृ. 4, अंक–4–5, अक्टूबर–मार्च, 2001.
16. हास्य–व्यंग्य भारती, पृ. 5, अंक–2–3, अप्रैल–सितम्बर, 2000.
17. वही, पृ. 5.
18. हास्य–व्यंग्य भारती, पृ. 8, अंक–6–7, अप्रैल–सितम्बर, 2001.
19. हास्य–व्यंग्य भारती, पृ. 4, अंक–2–3, अप्रैल–सितम्बर 2000.
20. हास्य–व्यंग्य भारती, पृ. 10, अंक–4–5, अक्ट्बर – मार्च – 2001.

दूरभाष 9423025562, Email prakashdhumal69@gmail.com.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 39-41

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

चीन–ताइवान सम्बन्ध एवं भारतीय सुरक्षा

एस. सी. श्रीवास्तव

रक्षा अध्ययन विभाग, जे0 पी0 पी0 जी0 कालेज, जगतपुर वाराणसी.–यू0पी0.–221302

भूमिका :–

भारत और ताइवान के संबंध वाणिज्य संस्कृति और शिक्षा पर केंद्रित हैं चीन की संवेदनशीलता की वजह से इन्हें अब तक जानबूझकर लो–प्रोफाइल रखा गया है। लेकिन हाल ही के कुछ सालों में चीन के साथ तनावपूर्ण रिश्तों के बीच भारत ने ताइवान के साथ अपने संबंधों को निभाने की कोशिश की है। भारत ने विदेश मंत्रालय में तत्कालीन संयुक्त सचिव (अमेरिका) गौरांगलाल दास को ताइवान में राजनयिक नियुक्त किया। मई 2020 में बीजेपी ने अपने दो सांसदों मीनाक्षी लेखी और राहुल कसवान को ताइवान की राष्ट्रपति साई इंग वेन के शपथ ग्रहण में वर्चुअली शामिल होने के लिए कहा. भारत ताइवान के लिए प्राथमिकता वाले देशों में से एक है। अब तक, भारत और ताइवान के बीच यह काफी हद तक एक आर्थिक और लोगों से लोगों के बीच संबंध रहा है। अब चीन के साथ तनाव के बीच भारत सरकार भारत–ताइवान संबंधों को आगे बढ़ाने की जरूरत पर ध्यान दे रही है। हालांकि, समय समय पर चीन भारत के स्टैंड का विरोध जताते आया है।

प्रस्तावना :–

अमेरिकी नौसेना प्रमुख एडमिरल माइक गिल्डे ने हाल में कहा कि भारत ने चीन के समक्ष दो मोर्चों पर चुनौतियां उत्पन्न कर दी है। उनके अनुसार भारत ने चीन को न केवल दक्षिण चीन सागर से पूरब की ओर देखने पर बाध्य किया है, बल्कि उसे संदेश भी दिया है कि भारत की ओर से करारा जवाब मिलेगा। ऐसी परिस्थितियों को देखते हुए ताइवान पर चीनी हमले का खतरा पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। अमेरिकी सैन्य प्रतिष्ठान के एक वरिष्ठ अधिकारी ने गत वर्ष अमेरिकी संसद को बताया था कि 2027 तक चीन ताइवान पर हमला बोल सकता है, लेकिन अमेरिकी खुफिया विभाग को अब लगता है कि चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग उससे पहले ही ऐसा दांव चल देंगे। उसे आशंका है कि इस साल नवम्बर में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस और 2024 में अगले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के बीच में कभी भी ऐसा हो सकता है। यानि जो बाइडन के कार्यकाल में ही चीन ऐसा दुस्साहस दिखा सकता है।

सामरिक चुनौतियाँ :–

अफगानिस्तान में एक आतंकी संगठन के आगे समर्पण और फिर यूक्रेन को रूसी हमले से बचाने में बाइडन की नाकामी और इस युद्ध मे उलझने के कारण अमेरिका की स्थिति कमजोर हो गई है। साथ ही रूसी सेनाओं को पीछे हटने के लिए मजबूर करने के मकसद से रूस पर लगाए गए पश्चिमी आर्थिक प्रतिबंधों की

असफलता भी ताइवान पर शिकंजा कसने से जुड़ी शी चिनफिंग की हसरतों का दरकना एशिया में चीनी आक्रामकता को नए तेवर देगा। इससे हिंद–प्रशांत में शक्ति संतुलन बिगड़ेगा। कई देशों की सामरिक चुनौतियां बढ़ जाएंगी। विशेषकर जापान के लिए, जिसके नेताओं को लगता है कि ताइवान के बाद चीन का अगला निशाना उनका ओकिनावा प्रांत हो सकता है। चीनी की ऐसी आक्रामकता भारत की सुरक्षा के लिए भी शुभ संकेत नहीं। एशिया में चीन की जिस सबसे बड़े हिस्से पर नीयत खराब है, वह भारत का अरूणांचल प्रदेश है। अरूणांचल ताइवान से तीन गुना बड़ा है। चीन पहले ही उसे अपने नक्शें में दिखाता आया है।

पिछले साल जब बीजिंग ने भारतीय इलाकों का अपने हिसाब से नामकरण किया तो भारत के विदेश मंत्रालय ने इसे हास्यास्पद बताते हुए उसे ऐसी हरकतों से बाज आने के लिए कहा। अगर चीन ताइवान पर काबिज हो जाता है तो अरूणाचल उसके लिए नया ताइवान बन जाएगा। ऐसे में ताइवान की सुरक्षा का मुद्दा भारत के लिए कही ज्यादा महत्व का हो गया है। चीन का कोई सैन्य अभ्यास भी सहज नहीं होता। 2020 में चीन की सैन्य टुकड़ी ने भारतीय सीमा के आस–पास जो अभ्यास किया, वह दोनों देशों के बीच कई मोर्चों पर टकराव का बिन्दु बना, जिसकी चिंगारी दुर्गम बर्फीले हिमालयी क्षेत्र में भड़कती रही। इसीलिए ताइवान के इर्दगिर्द चीनी सैनय परीक्षणों को हल्के में नहीं लिया जा सकता। उनमें उसे हड़पने के शी चिनफिंग के ऐतिहासिक मिशन की झलक मिलती है। ऐसी परख में ताइवान की आर्थिक नाकेबंदी या उसे अलग–थलग करने की थाह ली गई, जो दर्शाता है कि शी चिनफिंग ताइवान पर ऐसा शिकंजा कसने की रणनीति अपना सकते है, जिसमें यह देश चीन के साथ विलय को बाध्य हो जाए। इस दौरान धैर्य की भी परीक्षा ली, क्योंकि दागी गई कुछ मिसाइले जापानी सामुद्रिक सीमा के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र में जाकर गिरीं।

चीनी आक्रामकता.....

क्या ताइवान पर चीनी आक्रामकता भारत की बेचैनी बढ़ा सकती है? याद रहें कि हिमालय की ऊंची बर्फीली चोटियों पर चीनी और भारतीय सैन्य बल करीब ढाई वर्ष से उलझे हुए हैं। ऐसी ही एक झड़प में चीन को अपने सैनिक भी गंवाने पड़े, जो कि 1979 में वियतनाम हमले के बाद चीनी सैनिकों के हताहत होने का पहला मामला था। हालांकि पिछले कुछ समय में यह तल्खी और तनातनी शायद कुछ घटी है लेकिन जरा सा गलत आकलन भारी पड़ सकता है।

ताइवान को लेकर शी ने जैसी घेराबंदी, के प्रयास किए हैं, उसे देखते हुए अगले माह भारत–अमेरिका संयुक्त सैन्य अभ्यास की महत्ता और बढ़ गई है। दोनों देशों के बीच यह प्रस्तावित अभ्यास हिमालयी क्षेत्र में समुद्र तल से 3000 मीटर की ऊँचाई पर होगा। पूर्व में किसी भी सैन्य अभ्यास के मुकाबले चीनी सीमा के ज्यादा नजदीक होने वाला यह अभ्यास शायद बीजिंग को यही संदेश दे कि ताइवान के साथ युद्ध छेड़ने की सूरत में उसके लिए दूसरा संभावित मोर्चा भी खुल सकता है। युद्ध अभ्यास, कोडनेम वाली यह कवायद, चीनी सीमा से मुश्किल से सौ किमी के दायरे में होने जा रही है।

सकल घरेलू उत्पाद के पैमाने पर ताइवान दुनिया की 22वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। अप्रत्यक्ष रूप में ही सही, लेकिन एशिया की सुरक्षा में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उसका स्वायत्त अस्तित्व है। उसकी सेना का अमेरिका और जापान के साथ मजबूत गठजोड़ है। चीनी थियेटर बल को उलझाकर भारत भी ताइवान की अपनी तरह से मदद कर रहा है, अन्यथा उसका उपयोग ताइवान के विरूद्ध ही हो सकता था। ऐसे परिदृश्य

मे ंभारत और जापान के लिए आवश्यक हो गया है कि वे परस्पर परामर्श के साथ ही ताइपे और वाशिंगटन को भी साथ जोड़कर सहमति बनाएं कि ताइवान पर चीनी हमले की स्थिति में उसकी रक्षा के लिए वे किस प्रकार योगदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष :–

किसी भी अन्य देश की तुलना में भारत अमेरिका के साथ सबसे ज्यादा वार्षिक युद्ध अभ्यास करता है। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार होने के साथ ही सबसे बड़े सामरिक सहयोगी के रूप में भी उभर रहा है। इसके बावजूद भारत के विरूद्ध चीनी आक्रामकता पर बाइडन के मुंह से एक बोल तक नहीं फूटा। न ही बाइडन प्रशासन से ताइवान का रक्षा कवच मजबूत करने में कोई तत्परता दिखाई है। जो भी हो, ताइवान के स्वायत्त अस्तित्व में अमेरिका की केन्द्रीय भूमिका है। अगर अमेरिका–जापान, भारत और आस्ट्रेलिया साथ मिलकर ताइवान की रक्षा के लिए कारगर समन्वय बनाता है तो संभव है कि वह द्वीपीय देश को लेकर यथास्थिति बनी रहे। चीन को ताइवान पर हमला करने से केवल यही तथ्य रोक सकता है कि इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

Reference :-

1. Srivastava J.M, “Rashtriya Suraksha ki Avdharna” Chandra Prakash and company, Hapur, Page 85.
2. Pakula, Hannah (2009). The Last Empress Madame Chiang Kai-shek and the Birth of Modern China. ISBN 9781439154236.
3. Backus, Maria (September 2002). Ancient China. Lorenz Educational Press, 2002.
4. U.N. Ghosal, A History of Political ideas, Oxford University Press, Bombay, P. 84,1959.
5. Tansen Sen (January 2003). Buddhism, Diplomacy and Trade : The Realignment of Sino- Indian Relations, 600-1400. University of Hawaii Press.
6. Williams, Barbara (2005). World War Two. Twenty-First Century Books, 2004.
7. Conboy, Kenneth J. (2002). The CIA's Secret War in Tibet. ISBN 9780700611591
8. Singh Lallan Jee – Antar Rashtriya sambandho par yudh ka prabhav, Bareilly,1945.
9. Thondup, Gyalo (14 April 2015). The Noodle Maker of Kalimpong: The Untold Story of My Struggle for Tibet. ISBN 9781610392907
10. Saletorey, Bhasker Anand, Ancient Indian Political thought and institution, Asia publishing house ,1963.
11. Documents: 'The Question of Tibet' Taiwan Journal
12. Prasad and Manishanker.Katilya ke rajnatik aveam samagik vichar, Motilal Banarasi Das,1998..
13. India and his neighbors, page 20, New Delhi-1984.
14. Mukerji and Radaha kumud, Chandragupta Maura and his times, Motilal Banarasi Das,1966.
15. Taiwan says Dalai Lama welcome to visit, a trip that would infuriate China Reuters.
16. Dalai Lama wishes to visit Taiwan in 2021.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 42-46

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विदेशों में हिन्दी साहित्य सृजन

सोनू गौतम
स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, अलीपुर, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली।

प्रस्तावना :–

विदेशों में हिन्दी साहित्य का सृजन विशेष रूप से भारतीयों द्वारा किया जाता है। विभिन्न देशों में रहने वाले हिन्दी भाषी लोग, अपनी भाषा और साहित्य के माध्यम से अपनी संस्कृति और भारतीय विचारधारा को जीवंत रखने का प्रयास करते है। वे अपनी कविताएँ, कहानियों, उपन्यास, नाटक, लेख, और अन्य रचनाएँ हिंदी में लिखते है। और अकसर स्थानीय साहित्य समारोहों और कार्यक्रमों में इसका प्रदर्शन भी करते है।

विदेशी में हिन्दी साहित्य के सृजन की प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय संपर्क और साहित्यिक आदान–प्रदान के कारण धीरे–धीरे बढ़ी है। विदेशों में निवास करने वाले हिन्दी भाषी साहित्यकारों कवियों, लेखकों, और कविता गायकों की संख्या में वृद्धि हुई है, जो अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं।

विदेशों में हिंदी साहित्य सृजन के कुछ प्रमुख कारण :–

1. **भारतीय डायस्पोरा :–** भारतीय डायस्पोरा विभिन्न देशों में बड़ी संख्या में वास कर रही है। और वहाँ भारतीय संस्कृति, भाषा और साहित्य को जीवित रखने का प्रयास कर रही है। इस प्रयास के तहत हिन्दी साहित्य के कई रचनाकार विदेशों में लेखन कर रहे है। और अपनी कहानियाँ, कविताएँ और उपन्यासों के माध्यम से हिन्दीभाषा और साहित्य को प्रचारित कर रहे हैं।

2. **साहित्यिक सम्मेलन और मंच :–** विदेशों में हिंदीसाहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्यिक सम्मेलन, कवि सम्मेलन, काव्य गोष्ठी, लेखकों के मंच आदि आयोजित किए जाते हैं। ये मंच साहित्यिकों को एक साथ आने और अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करते हैं। जिससे हिंदी साहित्य की उत्पत्ति और प्रचार–प्रसार में मदद मिलती है।

3. **प्रकाशन :–** विदेशों में हिन्दी साहित्य की प्रकाशन के लिए कई प्रकाशकों और पत्रिकाओं ने उद्यम शुरू किया है। इन प्रकाशनों के माध्यम से हिंदी कविताएँ, कहानियाँ उपन्यास, नाटक आदि को विदेशी पाठकों तक पहुंचाना जाता है।

4. **अकादमिक अध्ययन :–** विदेशी विश्वविद्यालयों मेंहिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन के कार्यक्रम चलाए जाते है। जिससे विदेशी छात्रों को हिंदी साहित्य का अध्ययन करने का अवसर मिलता है। इसके परिणाम स्वरूप

विदेशी छात्र हिंदी साहित्य के सृजन में भी सक्रिय हो रहे हैं।

इन सभी कारणों से साफ है कि विदेशों में हिन्दी साहित्य का सृजन और प्रचार–प्रसार बढ़ रहा है। जिससे हिंदी भाषा साहित्य और संस्कृति को वैश्विक मंच पर मान्यता मिल रही है।

हिंदी साहित्य विश्व में अपनी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है और यह विदेशों में भी व्यापक रूप से प्रचारित हो रहा है। कई विदेशी लेखकों, कवियों और पाठकों को हिंदी साहित्य में रुचि होती है और वे उसे अपने आवासीय देशों में प्रचारित करते हैं।

हिंदी साहित्य के विदेशों में सृजन की कुछ मुख्य वजहों में से एक यह है कि विदेशी देशों में रहने वाले हिंदी भाषा के बोलने वाले लोग अपनी मातृभाषा के माध्यम से अपनी भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करना चाहते है। हिंदी साहित्य में उनका एक साधन होता है जिसके माध्यम से वे अपनी पहचान को जीवंत रख सकते है।

विदेशों में हिंदी साहित्य की सृजना अकसर संघटनाओं, सम्मेलनों, साहित्यिक कार्यक्रमों और साहित्यिक पत्रिकाओं के माध्यम से होती है। कई देशों में हिंदी साहित्य के संगठन बनाए गए हैं जो हिंदी साहित्य को प्रचारित करने, लेखकों को प्रोत्साहित करने और साहित्यिक गतिविधियों को संचालित करने का कार्य करते हैं। इन संगठनों द्वारा साहित्यिक मंच, सम्मेलन और साहित्यिक सभाएं आयोजित की जाती हैं जिनमें लोग हिंदी साहित्य की रचनाओं को सुनते हैं और अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करते हैं।

विदेशों में हिंदी साहित्य की सृजना न केवल भारतीय लेखकों द्वारा होती है, बल्कि वहां रहने वाले विदेशी लोग भी हिंदी में लेखन करते हैं। इन लोगों की रचनाएं विभिन्न पत्रिकाओं, साहित्यिक ब्लॉगों और साहित्यिक प्रतिष्ठानों में प्रकाशित होती है। हिंदी साहित्य के विदेशी लेखकों का यह प्रयास होता है कि वे अपने लेखों के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य को विश्व स्तर पर प्रस्तुत करें और उसे आगे बढ़ाने का कार्य करें।

विदेशों में हिंदी साहित्य की सृजना में सभी लेखकों और साहित्यिकों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इसके माध्यम से हिंदी भाषा, साहित्यिक परंपरा और भारतीय संस्कृति को विश्व में प्रचारित किया जा सकता है और एक साथियों का समृद्ध संगठनिक और साहित्यिक समुदाय बनाया जा सकता है। हिंदी साहित्य की विदेशों में सृजना उसकी संप्रेषण शक्ति और अविरलता को प्रकट करती है जो भाषा, साहित्य और मानवीय भावनाओं के अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के माध्यम से जुड़ सकती है।

हिंदी साहित्य विदेशों में भी बड़े धारावाहिक रूप में प्रचारित हो रहा है और उसका सृजन भी हो रहा है। विदेशों मैं हिंदी भाषा और साहित्य की रुचि बढ़ रही है और यहां भी हिंदी कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और नृत्य के क्षेत्र में सृजन कार्य हो रहा है।

विदेशों में हिंदी साहित्य का आदान–प्रदान मुख्य रूप से निम्नलिखित कारणों से हो रहा है :–

1. **भारतीय विदेशी समुदाय :–** विदेशों में निवास करने वाले भारतीय समुदायों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के लिए हिंदी साहित्य को अपना माध्यम बनाया है। वे अपनी कविताएं, कहानियाँ, नाटक आदि

लिखते हैं और इन्हें स्थानीय समाचार पत्रों, मासिक पत्रों और संगठनों के माध्यम से प्रकाशित करते हैं।

2. **हिंदी भाषा के प्रेमी** :– कुछ विदेशी लोग भारतीय साहित्य और भाषा के प्रेमी होते हैं और हिंदी साहित्य के प्रति रुचि रखते हैं। वे हिंदी में कविता, कहानी, उपन्यास लिखते हैं और अपने काम को प्रकाशित करने के लिए विदेशी प्रकाशनों का सहारा लेते हैं।

3. **हिंदी के अध्ययन कार्यक्रम** :– विदेशों के कुछ विश्वविद्यालयों और संस्थानों में हिंदी के अध्ययन कार्यक्रम चलरहे हैं। ये कार्यक्रम विदेशी छात्रों को हिंदी साहित्य, भाषा और संस्कृति की अध्ययन संबंधी ज्ञान प्रदान करते हैं और इस प्रकार वे भी हिंदी साहित्य के अध्ययन और सृजन में रुचि दिखाते हैं।

3. **साहित्यिक समारोह** :– विदेशों में हिंदी साहित्य से सम्बंधित साहित्यिक समारोह आयोजित किए जाते हैं। इन समारोहों में हिंदी कवियों, लेखकों, गीतकारों और कलाकारों को बुलाया जाता है और वे अपनी रचनाएं प्रस्तुत करते हैं। ये समारोह हिंदी साहित्य के संचार को प्रोत्साहित करते हैं और विदेशी लोगों को भी हिंदी साहित्य के प्रति अधिक जागरूक करते हैं।

इस प्रकार, विदेशों में हिंदी साहित्य का सृजन हो रहा है और इससे हिंदी भाषा और साहित्य की प्रचार–प्रसार में मदद मिल रही है।

हिंदी साहित्य विदेशों में भी सृजनात्मकता का अद्यतन कर रहा है और विस्तार कर रहा है। विदेशों में निवास करने वाले हिंदी भाषा के प्रशंसक, लेखक, कवि और साहित्यिक लोग नए और रोचक पथों पर चल रहे हैं जिससे हिंदी साहित्य का अंतरराष्ट्रीय स्तर प्राप्त हो रहा है।

विदेशों में हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न साहित्यिक संगठन और समुदायों की स्थापना हुई हैं। इन संगठनों द्वारा साहित्यिक कार्यशालाएं, सेमिनार, कविता गोष्ठी, कवि सम्मेलन और साहित्यिक मंच आदि आयोजित किए जाते हैं जहां विदेशों में रहने वाले हिंदी साहित्यकार अपनी रचनाएं प्रस्तुत करते हैं और साझा करते हैं। इसके अलावा, विदेशों में हिंदी पत्रिकाओं की उत्पादन भी हो रही है जो हिंदी साहित्य की विविधता और गहराई को प्रदर्शित करती हैं।

विदेशों में हिंदी साहित्य का सृजन एक ग्रामीणीकरण और महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो हिंदी भाषा, साहित्यिक परंपरा और साहित्यिक धाराओं को दुनिया भर में प्रचारित करती है। विदेशों में बसे हुए हिंदी भाषी लोग अपनी मातृभाषा के माध्यम से साहित्यिक रूपांतरण, रचनात्मकता और प्रचार के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को बढ़ाते है।

विदेशों में हिंदी साहित्य का सृजन कई तरीकों से होता है। कुछ लोग अपने व्यक्तिगत रचनात्मकता के माध्यम से कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास और नाटक लिखते हैं और उन्हें स्वयंसेवक या प्रकाशकों के माध्यम से प्रकाशित करते हैं।

विदेशों में हिंदी साहित्य के लेखकों ने अपनी रचनाएं विभिन्न विषयों पर लिखी है, जैसे कि प्रेम, यात्रा, विचार, संघर्ष, पर्यावरण, भारतीय संस्कृति, और देश–विदेश के सम्बन्धों पर इन रचनाओं में हिंदी भाषा की सुंदरता

और गहराई दिखाई जाती है, जो विदेशी पाठकों को भी प्रभावित करती है। विदेश में हिंदी साहित्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करने वाले कवियों में नामों की सूची में नाम शामिल हैं।

जैसे कि सुरेश जोशी, केदारनाथ सिंह, जयशंकर प्रसाद, अमरनाथ जीग्नाशु, तारा गुप्ता, और श्री निवास रायइन कवियों ने अपनी कविताओं और गीता के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रतिष्ठित प्रतीकों की स्थानीय और वैश्विक मंचों पर मान्यता प्राप्त की हैं।

यह स्पष्ट है कि विदेशों में हिंदी साहित्य का सृजनात्मक योगदान बढ़ रहा है और इससे हिंदी भाषा की गरिमा और महत्त्व दुनिया भर में पहचाने जा रहे हैं। विदेशों में हिंदी साहित्य के सफलतापूर्वक सृजन का यह विस्तार महत्वपूर्ण है जो भारतीय साहित्य की विविधता और प्रभाव को दुनिया तक पहुंचाने में मदद कर रहा है।

हालांकि हिंदी साहित्य की मूल भूमिका भारत में है, लेकिन विदेशों में भी हिंदी साहित्य का सृजन हो रहा है और इसकी प्रगति दिखा रहा है। विदेशों में रहने वाले हिंदी भाषी लोग, साहित्यिक रूप से अपने अनुभवों, विचारों, और विविध विषयों पर लेखन कर रहे हैं।

विदेशों में हिंदी साहित्य का प्रमुख कारण है अन्य देशों में बसे हुए भारतीय लोगों का यह इच्छा है कि वे अपनी मातृभाषा के माध्यम से अपने भावों और अनुभवों को व्यक्त कर सकें। उन्हें अपनी संस्कृति और भाषा के प्रति गहरा सम्मान होता है और वे इसे आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं।

विदेशों में हिंदी साहित्य के कुछ प्रमुख क्षेत्रों में शामिल हैं :–

1. **कविता और काव्य :** विदेशों में रहने वाले हिंदी कवियों द्वारा रचित कविता संग्रह, काव्यांश और कविता स्लैम्स का आयोजन होता है। वे अपने भावों, विचारों और अनुभवों को साझा करने के लिए इस माध्यम काउपयोग करते हैं।

2. **कहानी और उपन्यास :** हिंदी भाषा के प्रशंसकों द्वारा उपन्यास, कहानी संग्रह और लघुकथा लेखन किया जाता है। वे विभिन्न विषयों पर लिखते हैं और अपने अनुभवों, समस्याओं और सामाजिक मुद्दों को दर्शाते हैं।

3. नाटक हिंदी नाटकों का आयोजन विदेशों में भी किया जाता है। विदेशी कलाकारों द्वारा हिंदी भाषा में रचित नाटकों का प्रदर्शन किया जाता है और इससे हिंदी साहित्य के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा मिलता है।

4. लेखन प्रतियोगिताएं विदेशों में हिंदी साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए लेखन प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। इन प्रतियोगिताओं में भारतीय लेखकों के अलावा विदेशों में रहने वाले हिंदी भाषीलोग भी हिस्सा लेते हैं और अपनी रचनाएं प्रस्तुत करते हैं।

उपसंहार :–

इन सभी तत्वों से पता चलता है कि हिंदी साहित्य विदेशों में सक्रिय रूप से सृजन हो रहा है और उसकी पहुंच व्यापक हो रही है। यह साबित करता है कि हिंदी साहित्य की भाषा और साहित्यिक धाराएं विश्व स्तर परमान्यता प्राप्त कर रही हैं।

विदेशों में हिंदी साहित्य के सृजन का एक महत्वपूर्ण केंद्र है भारतीय अभिमान और साहित्यिक संगठनों

का स्थापना करना। ये संगठन लोगों को एक साथ लाते हैं और हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समारोहों, कार्यशालाओं, लेखक संगोष्ठियों और साहित्यिक पुरस्कारों का आयोजन करते हैं। इन संगठनों के माध्यम से हिंदी भाषी लोग अपने काव्य, कहानी, और उपन्यासों को प्रकाशित करने का भी मौका प्राप्त करते हैं।

कई देशों में हिंदी साहित्यकार अपने रचनात्मक कार्य करते हैं और उनकी पुस्तकें विभिन्न भाषाओं में अनुवादित भी होती हैं। विदेशों में हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित लेखकों में रवींद्रनाथ टैगोर, राही मासूम रजा, निदा फाजली, मंसूर आतीश, और विजय विक्रम सिंह शहर हैं। इनके अलावा भारतीय डायस्पोरा के कई युवा लेखक भी अपनी पहचान बना रहे हैं और हिंदी साहित्य में अद्वितीय योगदान दे रहे हैं।

विदेशों में हिंदी साहित्य का सृजन एक साथीत्व भावना और साहित्यिक आदान–प्रदान की रूपरेखा को मजबूत करता है, जिससे भारतीय साहित्य विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त करता है और विभिन्न सांस्कृतिक माध्यमों के माध्यम से भी प्रचारित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. हिंदी का प्रवासी साहित्य – डॉक्टर कमल किशोर गोयनका।
2. भारतीय डायस्पोरा : विविध आयाम – रामशरण जोशी।
3. प्रवासी साहित्य भाषा और समाज – मोनिका देवी।
4. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य – विमलेश कांति वर्मा।

पता :– 26/1 गली नं–1 कृष्णा विहार, बेहटा हाजीपुर, लोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश–201102
मोबाइल नू. 9990223648
ई. मेल. –sguatam422@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 47-50

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान

प्रो. जमादार रूकसाना एल.

हिंदी विभागाध्यक्षा एवं सहयोगी प्राध्यापक, यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

सार :–

भारत के महान साहित्यकारों ने आजादी की लड़ाई में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से युवकों में आजादी के लिए लड़ने का जज्बा पैदा किया था। भारत को आजाद हुए 75 साल हो गए। इस अवसर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसके द्वारा देश की आजादी के आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति देने वाले लाखों क्रान्तिकारियों को याद किया जा रहा है। आजादी की इस लड़ाई में तत्कालीन राजनेताओं का ही नहीं, बल्कि साहित्यकारों, कवियों और विविध क्षेत्रों में कार्य करने वाले व्यक्तियों तथा छात्राओं का भी अहम योगदान रहा।

स्वतंत्रता आंदोलन का वह युग जो पीड़ा, कड़वाहट, दंभ, आत्मसम्मान, गर्व गौरव तथा शहीदों के लहू को समेटे हुए था। प्रत्येक वर्ग अपने–अपने तरीके से बलिदान दिया हुआ था। ऐसे समय क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम जनता के अंतर में अपने शब्दों से कवियों ने जोश भरा। जैसे रविंद्रनाथ टैगोर, बंकिमचंद्र चटर्जी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, सुभद्राकुमारी चौहान, रामप्रसाद बिस्मिल, रामधारीसिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, माखन लाल चतुर्वेदी, बदरीनारायण चौधरी। भारत की राष्ट्रीयता का आधार राजनीतिक एकता न होकर सांस्कृतिक एकता रही है।

प्रस्तावना –

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिस आधुनिक युग का प्रारंभ किया, उसकी जड़े स्वाधीनता आंदोलन में ही थीं। भारतेंदु और भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने युगचेतना को पद्य और गद्य दोनों से अभिव्यक्ति दी। इसके साथ ही इन साहित्यकारों ने स्वाधीनता संग्राम और सेनानियों की प्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जगाने का प्रयास किया। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषणकारी 'नीतियों का खुलकर विरोध भी किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंग्रेजों द्वारा निरीह भारतीय जनता पर जुल्मो सितम और लूट खसोट का उन्होंने कड़ा विरोध किया। उन्हें इस बात का क्षोभ था कि अंग्रेज यहाँ से सारी संपत्ति लूटकर विदेश ले जा रहे थे। इस लूटपाट और भारत की बदहाली पर उन्होंने काफी कुछ लिखा। 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नामक व्यंग्य के माध्यम से भारतेंदु ने तत्कालीन राजाओं की निरंकुशता, अंधेरनगरी और उनकी मूढ़ता का सटीक वर्णन किया है, अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है।

'भीतर–भीतर सब रस चुसै, हंसी–हंसी के तन–मन–धन जाहिर बातिन में अति तेज, क्यों सखि साजन,

मुसै। न सखि अंगरेज।"

द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वाधीनता संग्राम में अपनी लेखनी व्दारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। महावीर प्रसाद व्दिवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी तलवाररुपी कलम को पैना किया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनाने हेतु प्रेरित किया।

भारत–भारती के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त 'राष्ट्रकवि कहलाए, तो वहीं माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान का भाव जागृत किया। जैसे –

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृ–भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।"

सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झाँसी की रानी' कविता के माध्यम से भी स्वाधीनता आंदोलन को और गति देने में अद्वितीय भूमिका निभायी है। जैसे –

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने,पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"[3]

इन पंक्तियों द्वारा कवयित्री ने अंग्रेजों को ललकारने का काम किया। इस कविता को कौन भूल सकता है जिसने अंग्रेजों की जड़े हिलाकर रख दी। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर, जोश भरने वाली यह अनूठी पंक्तियाँ है।

जयशंकर प्रसाद ने भी 'अरुण, यह मधुमय देश हमारा' इस कविता में भी यवनों के आक्रमण के विरुद्ध सभी भारतीयों को एकत्र करने लिए यह गीत गाया था। भारतीयों को देश की रक्षा के लिए प्रेरित किया इस कविता में प्रसादजी ने भारत वर्ष के अतीत की गौरव गाथा प्रस्तुत करते हुए अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। भारत के निद्रिस्त वीरों को जगाने का अपनी मृतभूमि के पैरों में पड़ी हुई दासता की जंजीरे तोड़ने का आवाहन उन्होंने किया :–

"अरुण यह मधमुय देश हमारा। जहाँ पहुँच जनजान क्षितीज को मिलता एक सहारा।"

साथ ही 'भारत वर्ष' इस कविता द्वारा भी उन्होंने वीरों को संदेश दिया कि :–

"हिमालय के आँगन में
उसे प्रथम किरणों का दे उपहार,
उषा ने हँस अभिनन्दन किया और
पहनाया हीरक–हार।

जगे हम लगे जगाने विश्व,
लोक में फैला फिर आलोक्य
व्योम–तम पुंज हुआ तब नष्ट,
अखिल संसृति उठी अशोक।।"[4] (आधुनिक कविताएँ– 'भारत वर्ष'– जयशंकर प्रसाद– पृ. 40)

इन पंक्तियों द्वारा आधुनिक हिंदी काव्य के प्रगतिकार राष्ट्रीयता के प्रेमी स्व. जयशंकर प्रसाद ने भारत की प्रशंसा करते हुए, यवनों के विरुद्ध इकट्ठा आने के लिए प्रेरित किया है।

इक्बाल ने 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्ता हमारा तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' लिखा। इन सबके अलावा बंकिमचंद्र चटर्जी का देश प्रेम से ओत–प्रोत गीत 'वंदे मातरम्' ने लोगों की रगों में उबाल ला दिया। अब किसी भी कीमत पर देश के लोगों को पराधीनता स्वीकार नहीं थी।

"वंदे मातरम् !
सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्यशायतां मातरम् ! वंदे मातरम् !"

देशभक्ति से ओत–प्रोत उनकी यह एक ऐसी रचना है जिसके जरिए कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने आजादी की बलिवेदी पर शहीद हुए वीर सपूतों के प्रति अगाध श्रद्धा दिखाई है और बलिदानों को सर्वोपरि बताया है। एक फूल के माध्यम से उन्होंने अपनी बातों को जिस सशक्तता और उत्कृष्टता के साथ कहा है, वह बेहद सराहनीय है। कविवर जयशंकर प्रसाद की कलम भी बोल उठी :–

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयं प्रभा।
समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।"

भारत माता जो स्वयं अपनी आलोक से स्वतंत्र है, प्रबुद्ध है हिमालय की ऊँची चोटियों से जनता को आह्वान कर रहीं है कि, परतंत्रता जो जनता में छायी हैं नाराजगी जो निर्माण हुई है उसे दूर कर, इस आदर्श पथ पर बढ़ते जाना है। भारत माता की उस पुकार का अवलोकन कर हमें स्वतंत्रता प्राप्त करनी है।

रामधारी सिंह दिनकर की कविता ने आजादी के आंदोलन में नवजागरण का कार्य किया। उन्होंने सांस्कृतिक गरिमा को वाणी दी। उन्होंने एक ओर अतीत का गौरव गान किया तो दूसरी ओर युगीन यथार्थ से सामाजिक–राष्ट्रीय जागरण का आवाहन किया। 'जनतंत्र का जन्म' इस कविता में सैंकड़ों वर्षों के संघर्ष के बाद भारत औपनिवेशिक सत्ता से आजाद हुआ। उस आजादी के स्वागत का यह कविता जयघोष करती है। कवि भारतीय जनता के संघर्ष और उसकी जिजीविषा का वर्णन करते हैं। दूसरी ओर यह कविता आजादी के चरित्र को रेखांकित करती है और बताती है कि यह आजादी मूल्यवान है वह निम्न पंक्तियों से स्पष्ट होता है –

"सदियों की ठंडी – बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"[5]

(साहित्यालोक : संपादक – सणू कदम, डॉ. गिरिश काशिद, रामधारी सिंह दिनकर – जनतंत्र का जन्म, पृ. 125)

निष्कर्ष :-

आज श्यामलाल गुप्त पार्षद का यह गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।' भले ही हम गुनगुना रहे हो और इक्बाल की यह नज्म भी कि सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्ता हमारा लेकिन देश की वास्तविक परिस्थिति इससे भिन्न है। आज, वर्तमान समय में भी वैसी ही, ओजस्वी रचनाओं की जरुरत है, जो जन–जन को आंदोलित कर सके, उनमें जागृति ला सके। भ्रष्टाचार व अराजकता को दूर कर हर हृदय में भारतीय गौरव बोध एवं मानवीय मूल्यों का संचार कर सके।

आज के हमारे कवियों और साहित्यकारों का यह उत्तरदायित्व बनता है कि वे इस देश के बारे में सोचे, और उसी परंपरा को जीवित रखें। जो मैथिलीशरण गुप्त की परंपरा है, प्रेमचंद की परंपरा है, नीरज की परंपरा है।

अर्थात यहाँ पर चाटुकारिता को अपना उद्देश्य नहीं माना जाता और दरबारी कवि होना यहाँ पर अभिशाप है। यहाँ दरबार कवि ढूँढता है, कवि दरबारों को नहीं ढूँढते यहाँ पर कवि किसी मोह में आकर लेखनी नहीं चलाते, यहाँ तो राष्ट्र जागरण के लिए लिखा जाता है राष्ट्रोत्थान के लिए लिखा जाता है, राष्ट्रोद्धार के लिए लिखा जाता है। क्योंकि सभी कवि अपना यहा दायित्व समझते हैं कि राष्ट्र जागरण, राष्ट्रोद्धार और राष्ट्रोत्थान ही उनकी लेखनी का एक मात्र व्रत है, एकमात्र ध्येय है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. साहित्य रत्न – डॉ. सुरैय्या शेख, पुष्प की अभिलाषा, माखनलाल चतुर्वेदी – पृ. 62
2. साहित्यरत्न – डॉ. सुरैय्या शेख, झाँसी की रानी – सुभद्राकुमारी चौहान, पृ. 65
3. आधुनिक कविताएँ – भारत वर्ष – जयशंकर प्रसाद, पृ. 40
4. चंद्रगुप्त नाटक – जयशंकर प्रसाद, चतुर्थ अंक – दृश्य.
5. साहित्यालोक – संपादक – राणू कदम – जनतंत्र का जन्म – रामधारीसिंह 'दिनकर', पृ. 125
6. आधुनिक कविताएँ– जयशंकर प्रसाद – पृ. 35

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 51-54

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

पण्डितराजजगन्नाथकृतसूर्यलहर्याः रसभावादीनां विमर्शनम्

Priyanka Barik

Research Scholar, Department of Sanskrit, Jadavpur University

भूमिका :–

संस्कृतसाहित्ये अनेकेषां कवीनां काव्यानाञ्च परिचयो न लभ्यते। तथापि बहूनां विमर्शकानां काव्यशास्त्रग्रन्थाध्ययनेन तद्विमर्शनेन च इदानीमस्माभिः कविकाव्यानां परिचयः प्राप्यते। किन्तु पण्डितराजस्य जगन्नाथस्य परिचये नास्ति एतादृशः क्लेशः। जगन्नाथः स्वकीयग्रन्थेषु काव्येषु च स्वकुलगोत्रजननिजनकगुरूणां स्वाश्रयदातृणां राज्ञां च वृत्तान्तम् उल्लिखति। प्राणाभरणकाव्ये एवम् उच्यते –

'त्रैलिङ्गान्वय मङ्गलालय महालक्ष्मीदयाललितः
श्रीमत्पेमरभट्टसूनुरनिशं विद्वल्ललाटान्तपः।
सन्तुष्टःकमताधिपस्य कवितामाकर्ण्य तद्वर्णनम्
श्रीमत्पण्डितराजपण्डितजगन्नाथो व्यतानीदिदम्।।'

जगन्नाथस्य वाक्येन अनेन जगन्नाथः दक्षिणभारतस्य आन्ध्रप्रदेशस्य तैलाङ्गब्राह्मणकुले जनिमलभत। एतस्य लक्ष्मीपेरुभट्टाख्यौ पितरौ स्तः इति ज्ञायते।

दण्डिमम्मटानन्दवर्धनादयः विख्याताः लक्षणग्रन्थकाराः इतरेषां महाकवीनाम् उदाहरणानुरूपाणि पद्यानि स्वीयग्रन्थेषु नियुयुजिरे। किन्तु पण्डितनरेन्द्रः स्वलक्षणग्रन्थानुगुणं लक्षश्लोकं स्वनिर्मितमेव नियुयुजे इति जगन्नाथस्य लक्षणग्रन्थस्य अवलोकनेन अवगम्यते। अयं जगन्नाथः स्वनिर्मितानां सर्वेषां ग्रन्थानाम् आरम्भे मङ्गलश्लोकान् भगवतः नारायणस्य स्तवरूपेण निबबन्ध। अनेन अयं जगन्नाथः नारायणस्य भक्तः आसीदिति अवगम्यते।

'श्रीमत् ज्ञानेन्द्रभिक्षोरधिगतसकलब्रह्मविद्प्रपञ्चः
काणादीराक्षपादीरपि गहनगिरो यो महेन्द्रादवेदीत्।
देवादेवाध्यगीष्टस्मरहरनगरे शासनं जैमिनीयम्
शेषाङ्कप्राप्तशेषामलभणितिरभूत् सर्वविद्याधरो यः।।'
'पाषाणादपि पीयूषं स्यन्दते यस्य लीलया।
तं वन्दे पेरुभट्टाख्यं लक्ष्मीकान्तं महगुरुम्।।'

तेन महात्मना सः महान् पण्डितशिरोमणिः पेरुभट्टमहाभागः वेदान्तशास्त्रं ज्ञानेन्द्रभिक्षोः अधीतम्। वैशेषिकदर्शनं न्यायदर्शनं च महेन्द्रशास्त्रिणः बोधितवन्तः। काशीक्षेत्रे खण्डदेवात् जैमिनिदर्शनम् अध्यगीष्ट। व्याकरणशास्त्रं शेषवीरेश्वरेण अबोधि। एवं सकलशास्त्रमपि अन्येषां गुरूणां सविधे अधीत्य सकलशास्त्रपारावारपारीणः अभूत् पेरुभट्टमहाभागः।

एतादृशेभ्यः सकलशास्त्रकृतभूरिपरिश्रमेभ्यः महागुरूभ्यः तातपादेभ्यः अलङ्कारव्याकरणादिसकलशास्त्राणि अधीतानि। अपि च यस्य प्रभावेण कठोरहृदयात् मत्तः अमृतसदृशकाव्यानि निर्ममिरे।

सूर्यलहर्याः सामान्यपरिचयः –

पण्डितराजः जगन्नाथः लहरीपञ्चकं रचयामास। तत्र सूर्यलहरी अपि अन्यतमा विद्यते। अस्यां सूर्यालहर्यां भगवन्तं सूर्यं सभक्ति सश्रद्धं स्तौति कविः। अस्यां सूर्यालहर्यां त्रिंशत्संख्याकाः श्लोकाः वर्तन्ते। इयं लहरी स्रग्धरावृत्तौ एव विरचिता विद्यते। सूर्योदयकाले पद्मानां विकसनात् मधुपार्थिवानां भ्रमराणाम् आनन्दः, शोकदावाग्निना विकलहृदां कोकवधूनां साक्षात् रक्षास्वरूपः, तमससमूहानाम् उत्पतनम्, चक्षुषां साहाय्यस्वरूपः शक्तिप्रदः। कोऽपि विलक्षणः तेजसाम् अयं साक्षात् समूहः उदयाचलस्य सीमातः प्रादुरासीत् इति सूर्यस्य उदयं वर्णयति कविः।

कल्मषजालेभ्यः ऊर्ध्वं स्थित इति यस्य सूर्यस्य वेदैः उच्चौः उक्ता अथवा वेदैः कथितम्। कोऽपि रामचन्द्रादयः पूजार्थं पद्मं नेत्रयोः तुल्यतां निन्युः। यस्य ओष्ठौ ऋक्सामौ भवतः। द्रुतकनकनिभं यस्य स्मश्रुकेशाखिलमङ्गं राजते। सोऽयं सर्वेषाम् अन्तरात्मा। दिनेशः सूर्यः तव मङ्गलानि सततं प्रयच्छतु इति पण्डितराजः जगन्नाथः प्रार्थयत्यत्र। इमां लहरीं सुधालहरीति अपि कथ्यते।

सूर्यलहर्या रसभावादीनां विमर्शनम् –

'प्रातर्निगत्य गोभिः सह रुचिविषये सञ्चरन्त्योह्नि ताभिः
साकं सायं निकायं प्रति पुनरपि याः सम्प्रयातुं त्वरन्ते।
यासां दिव्यप्रबावस्त्रिजगदघवनश्रेणिदाहैकदावः
क्षेमं तन्वन्तु ता वः शिवमयवपुषो वासरेशस्य गावः।।'

प्रभाते किरणैः धेनुभिश्च सह निर्गत्य रुचिविषेय सञ्चरन्त्यः सन्ध्यायां ताभिः साकं पुनरपि स्ववासं प्रति त्वरमाणा भवन्ति। यासां गवां किरणानां दिव्यप्रभावः त्रिभुवनस्य पापानि एव वनश्रेणिः तस्याः दाहे एकः अद्वितीयः दावाग्निः मङ्गलमयशरीरस्य दिनपतेः ताः द्युतयः युष्माकं मङ्गलं विस्तारयन्तु।

अस्मात् श्लोकात् कविः जगन्नाथनिष्ठः सूर्यविषयकः रतिभावः ध्वन्यते। अतः अत् भावध्वनिः व्यज्यते।

'संहृत्य द्राग् बहिःस्थं तिमिरकुलमथाभ्यन्तरं हर्तुकामा
रन्ध्रालीभिर्गृहाणामुदरमनुदिनं ये निःशङ्कं विशन्ति।
भानोस्तेमी ह्रषिकाण्यखिलतनुभृतां हर्षयन्तो हितेश
हृद्रोगं संहरन्तां हिममहिमहृतो हेमहृद्याः करा नः।।'

शीघ्रं बहिःस्थम् अन्धाकारसन्दोहं विनाश्य ततः परम् अन्तःस्थम् अन्धकारं लोपयितुकामाः ये कराः गवाक्षादिमार्गैः गृहाणाम् अभ्यन्तरं प्रत्यहं निःशङ्खं प्रविशन्ति। प्राणिनां विषेये इन्द्रियाणि मोदयन्तः हितेहाः हिममहिमहृदः स्वर्णवत् मनोहराः ते अमी दृश्यमानाः सूर्यस्य किरणाः अस्माकं हृद्रोगम् अपहरन्तु इति प्रार्थयति कविः।

अस्मात् श्लोकात् कविः जगन्नाथनिष्ठः सूर्यविषयकः रतिभावः ध्वन्यते। अतः अत्र भावध्वनिः व्यज्यते।

'द्रागद्वैतं वितन्वतन्त्रिभुवनमभितः कौङ्कमीनां द्युतीनां
न्यकुर्वन्मान्द्यामुद्रामथ रजनिरुजां कोकसीमन्तिनीनाम्।
तद्रान्धानान्ध्यसिन्धोरिह विततरैरुद्धधानंकराग्रैः
स्वान्तध्वान्तं धुनीतामुदयगिरिशिरश्चुम्बि मार्ताण्डबिम्बम्।।'

त्रिभुवनम् अभितः कुङ्कुमसम्बन्धीनीनां कान्तीनाम् अद्वितीयतां झटिति प्रकटयत्। अथ रजनिरुजां कोकीनां मनोमालिन्यं दूरयत, इह अतिव्यापनशीलैः रश्मिप्रवाहैः हस्ताग्रैश्च निद्रया अन्धान् अन्धकारसागरात् उद्धरत्। उदयाचलस्य शिरश्चुम्बिः सूर्यबिम्बं लोकानां हृदः अन्धकारं दूरीकरोतु इति।

अस्मात् श्लोकात् कविः जगन्नाथनिष्ठः सूर्यविषयकः रतिभावः ध्वन्यते। अतः अत्र भावध्वनिः व्यज्यते।

'अन्तर्नीरं नदीनामनुदिनमुदये बिम्बता ये समन्ताद्
गीर्बाणाद्रेरूपदञ्चन्मणिगणजटिलां मेदिनीं दर्शयन्ति।
विप्रप्रोक्षिप्तसन्ध्याञ्चलिजलकणिकाजालमाकाशमध्ये
माणिक्यव्रातयन्तो मम मिहिरहरा मान्द्यामुन्मूलयन्तु।।'

ये सूर्यकिरणाः प्रत्यहम् उदयकाले नदीनाम् अन्तर्नीरं समन्तात् प्रतिफलिताः। पुनश्च देवानां पर्वतस्य मेरोः स्फुरद्भिः रत्नाराशिभिः विचित्रां पृथिवीं दर्शयति। विप्रैः प्रदत्तः सन्ध्याञ्जलेः जलकणसमूहम् आकाशमध्ये माणिक्यवृन्दमिव कुर्वन्तः ते सूर्यकिरणाः मम दुरवस्तां दुरयन्तु इति प्रार्थयति।

अस्मात् श्लोकात् कविः जगन्नाथनिष्ठः सूर्यविषयकः रतिभावः ध्वन्यते। अतः अत्र भावध्वनिः व्यज्यते।

'त्राणं त्रैविष्टपानां तरणमथ पयस्तोमताम्यत्तनूनां
नद्यान्तानामतर्क्यं त्रिगुणमयतया यन्त्रयाणां तुरीयम्।
तत्तादृक् तुन्दिलायास्तरुणतरतमः सन्ततेरन्तकृत् त्वां
तेजत्रैलोक्यताम्रीकरणचतुरिमी त्रयतां चित्रभानोः।।'

त्रिभुवनजन्मनां रक्षकः, जलसमूहेन ताम्यन्ती समुद्रनाम् अचिन्त्यं सत्वरजस्तमंसि गुणेन त्रयाणामेषां चतुर्थं तुन्दिलायाः अतिघनान्धकारसन्ततेः विनाशकं त्रैलोक्यस्य ताम्रीकरणे निपुणं सूर्यस्य तादृक् तेजः त्वां त्रायतामिति।

अस्मात् श्लोकात् कविः जगन्नाथनिष्ठः सूर्यविषयकः रतिभावः ध्वन्यते। अतः अत्र भावध्वनिः व्यज्यते।

'गीर्बाणग्रामणीभिर्गगनतलगतैर्गीर्भिरूद्गीथगाभि
र्गन्धर्वैश्वापि गीता गुणगणगरिमोद्गारिगाथासहस्रैः।
गाहं गाहं गृहालीरगतिकगदिनां गन्धयन्तो गदार्तिं
ग्लानिग्रामं ग्रसन्तां ग्रहुचिगुरवो गोपतेर्गोविलासाः।।'

गगनतलगतैः देवानां मुख्यैः सामवेदाघातृभिः वाग्भिः गान्धर्वैश्चापि गुणगणानां महत्वां प्रकटयन्त्री गीतिसहस्रैः स्तुताः, ये रोगिणाः गृहसमूहान् प्रविश्य रोगजं दुःखं लेशयन्तः ग्रहाणां द्युतिषु मुख्याः सहस्रांशोः गवां किरणानां विलासाः युष्माकं दुःखराशिं नाशयन्तु।

अस्मात् श्लोकात् कविः जगन्नाथनिष्ठः सूर्यविषयकः रतिभावः ध्वन्यते। अतः अत्र भावध्वनिः व्यज्यते।

उपसंहारः –

शास्त्रेषु बहुत्र सूर्यस्य उल्लेखः वर्तते। तथैव पुराणसाहित्ये स्तोत्रसाहित्येऽपि सूर्यवर्णनं च अस्ति। पण्डितराजजगन्नाथविरचितायां सूर्यलहर्यां रसभावानां गुणालङ्कारणां विमर्शनं विद्यते। एवं पण्डितराजस्य जगन्नाथस्य सूर्यलहर्याः वस्तुविषये रसभावादिविषये च ज्ञानम् अस्माभिरत्र अधिगतम्। सूर्यविषये अनेकानि तथ्यानि प्रस्तुतानि। अयं लघुशोधप्रबन्धः अध्येतृणां कृते परमरमणीया सुललिता मनोज्ञा च वर्तते इति शम्।

सहायकग्रन्थसूची :-

1. जगन्नाथः, रसगङ्गाधरः, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. जगन्नाथः, चित्रमीमांसखण्डनम्, चौखम्बा–संस्कृत सीरीज, वारणसी, 1983
3. जगन्नाथः, मनोरमाकुचमर्दनम्, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1983
4. जगन्नाथः, रसगङ्गाधरः, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1677
5. जगन्नाथः, सूर्यालहरी, चौखम्बा सूरभारती प्रकाशन, वाराणसी
6. पण्डितराजजगन्नाथः, लहरीपञ्चकम्, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2005

पादटिप्पणी –

1. प्राणाभरणम्, श्लोकः 53
2. तैलङ्गकुलावतंसेन पण्डितराजजगन्नाथेन आसफविलासम् – पि. 8
3. Ramaswamy Shastri Jagannatha Pandita, P. 13
4. रसगङ्गाधरः, प्रथमाननम् –2, पण्डित मदनमोहन झा महोदयस्य व्याख्यानम् चन्द्रिका संस्कृत हिन्दीव्याख्योपेतः
5. रसगङ्गाधरः, प्रथमाननम् –3, पण्डित मदनमोहन झा महोदयस्य व्याख्यानम् चन्द्रिका संस्कृत हिन्दीव्याख्योपेतः सूर्यलहरी 19
6. तत्रैव 28
7. तत्रैव 25
8. तत्रैव 13
9. तत्रैव 16
10. तत्रैव 17

Priyanka Barik

D/O - Subrata Kumar Barik

Raghunathpur, P.O- Jhargram., House No. 80/10 (Behind K.K.I)

District - Jhargram. Pin Code - 721507, West Bengal

Ph: - 9531505288

Priyankabarik483@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 55-61

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Impact of Internet usage on Academic Achievement : Both Positive & Negative

Ved Pal, Research Scholar,
Dr. Madhuri Hooda, Associate Professor,
Department of Education, M.D.U, Rohtak

Abstract :-

Millions of individuals use the internet as a platform for the creation and exchange of information. Indeed, this fact has a significant and profound impact on both social life and academic success. In the evolution of information technology, the internet is a fundamental technology. The knowledge-based society now considers the Internet to be an essential tool. The way things are done is changing as a result of the usage of technology. This includes the work done in universities where the teaching and learning process is changing. It is crucial to understand how technology affects student achievement. This study looked into how using the internet affects academic performance. Both the institution and the students may benefit from this paper. Institutions can spend more on online resources to improve their students' academic performance and yield better outcomes. Additionally, it will give readers a thorough understanding of the numerous internet resources and how students can use them to raise their academic performance.

Keywords :- Internet, Academic Achievement and Students.

INTRODUCTION :-

The Internet is made up of a network of millions of computers that are connected to one another on a global scale; it is a medium that does not place a limit on the amount of information that can be accessed by a user. Because the Internet has so many benefits and can make a lot of tasks easier, it is beneficial for effectiveness and efficiency. The effectiveness and efficiency of a specific Internet, like the Internet, may be seen in the way that it offers its users a wide range of services that make life easier and more enjoyable. The growth of information and communication technology is being facilitated by the existence of the internet. One outcome of the sophistication and development of science and artificial technology is the Internet.The term "internet" is an acronym for "interconnected

networking," which in Indonesian denotes a collection of linked computers across various networks. The Internet offers many benefits to everyone on a daily basis, but students particularly benefit from it. Additionally, the Internet, which is a relatively new source of scientific resources and is filled with a wealth of knowledge, varies greatly in terms of its objectives, target audiences, dependability, and other factors. Therefore, it's critical that end users are educated on the standards by which information content should be evaluated and are aware of the wide range of information that is available on the Internet.The definition of the Internet is that it is the greatest computer network in the world that connects all computers, connected devices (such as smartphones and tablets), switches, routers, hubs, and other connecting devices, as well as the computer itself, into a single container. Between 1996 and 2001, there was a significant increase in the amount of time spent using e-mail and surfing the web; different Internet usage patterns have been linked to both positive and negative outcomes; dysphoric symptoms have been linked to a variety of internet activities, including shopping, playing games, and research; the study's findings suggest that Internet use is one of the primary factors influencing students' academic performance and social lives.In Ghana, 60% of people agreed that education in 2020 would be considerably different from how it is today. To make the most of technological resources, teleconferencing and distance learning will be widely used. Additionally, many learning activities will move to being personalised and just-in-time. "Hybrid" classes, which combine elements of online learning with the absence of on-campus lectures, will also be widely used.

Over the past decade, the Internet has become an integral part of life for the majority of the population. Of course, the Internet is of great importance in the modern world and brings great benefits to humanity: as an inexhaustible source of information, a tool for organizing the educational process, as an indispensable assistant in work and business, as a means of conducting and planning leisure time and much more. Today, any modern person at least once a day, for communication, work or simply searching for the necessary information, visits the World Wide Web and part of the population of our planet no longer represent their lives without the Internet. However, excessive addiction to the Internet negatively affects the psyche and emotional sphere of a person.The enormous rise in Internet usage in recent years has had unfavourable psychiatric repercussions, including Internet addiction and, in some cases, a condition that is akin to a mental disorder. Long-term active efforts have been made in Asian nations to curb overuse of the Internet. The issue with utilising the Internet, which has spread to every country in the world today, can be broadly characterised as the inability to control one's online behaviour, which has detrimental effects on day-to-day activities.According to quantitative research (Sampath Kumar & Manjunath, 2013), teachers and academics have been using the internet to support their research and instruction. Their academic performance has improved as a result of using the

internet, specifically since writing research papers helps students conduct better research and learn more effectively. Additionally, (Sushma et al., 2014) found that a student's Internet addiction increased with the amount of time they spent on it. The study demonstrated that internet usage is increasingly used as a gauge of academic success. Beyond the allotted period, using the Internet won't be a sign of academic success.

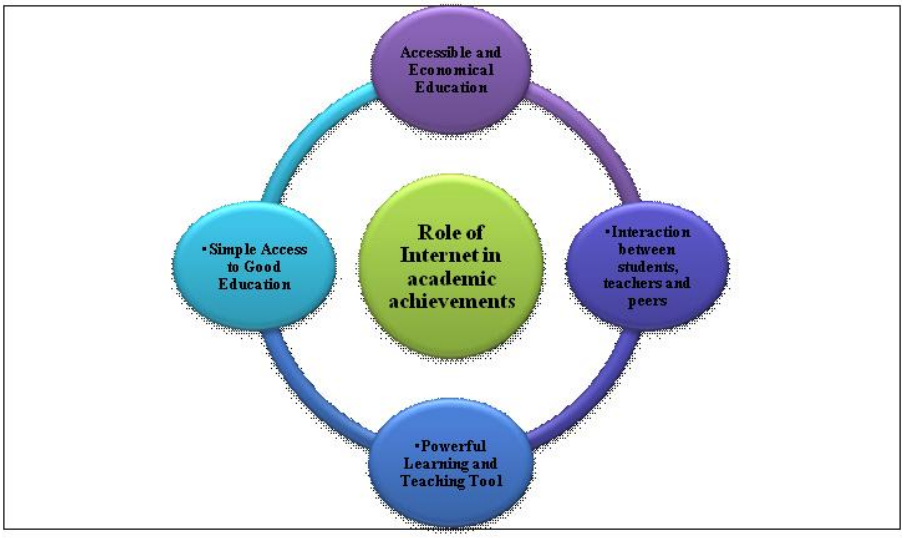

Internet Usage's Effects on Student's Academic Achievement :-

The tedious days of having to visit the library and leaf through a tonne of dusty books in order to locate the necessary information are long gone. The internet is a global network of interconnected systems that enables intuitive distant communication. The internet was initially sent in 1969, but it wasn't until the 1990s that it became accessible to the broader public. The study found that, especially among young people, the internet has become a widely used resource for sexual wellbeing information. Although there are undeniable benefits to the internet, there are also numerous and growingly detrimental effects. People are using the internet in the wrong ways.

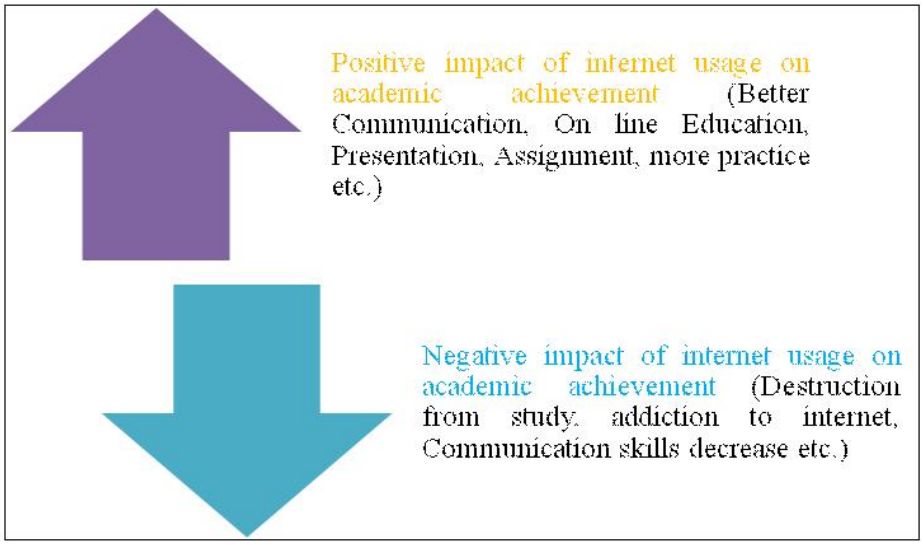

Positive Impacts of Internet Usage on Academic Achievement :-

The best way to obtain information about anything is via the internet, which simplifies our work. It offers the most efficient forms of communication, including email and instant chat. Online banking and shopping have made life less confusing. With the availability of countless books and journals online, training has significantly improved. Exploration has been easier as a result. Online course admissions are simple for students. The internet is a must-have for pupils in today's classrooms because it offers so many benefits to them. Below, we list each benefit or good thing that the internet has done for kids' education.

Internet connectivity and communication :-

Additionally, the Internet facilitates interaction and communication between professors and students. Students and teachers can connect with one another and communicate with one another via the internet. Many students and teachers benefit from the ability to easily discuss educational resources with one another online via the internet.

Online learning using the Internet :-

Many tasks, including schooling, are made simpler for individuals by the Internet. Prior to the internet, it was exceedingly challenging for students to obtain information from the appropriate sources and from the appropriate individuals. They invest a lot of money and valuable time in their education, as well as waste both. However, with the internet, it has become more simpler for the pupils. They don't need to squander their valuable time by going to class. Students can simply learn at home using the internet. They do not need to travel so far from their home to the study. It is simple to obtain at home.

Assistance with completing projects and presentations :-

Students can also use the internet to do their homework and tasks. They make it simple for students to finish their assignments and presentations. I personally used the internet to gather information for my assignments and presentations. The internet truly broadens my learning for me, which is a big assistance. The internet helps us learn more and more things, and in better ways.

Internet practise is available to students :-

The finest forum for students to practise their professions is the Internet. The internet is the finest practise environment for students interested in learning various computer-related languages who work in the IT or computer science fields. On the internet, there are numerous websites that they can use to practise and learn more.

Internet-based content that is relevant :-

prior to the internet's creation. In order to find the pertinent information for their studies,

students used to read a variety of books. They found it quite challenging to research information in the large books, which wastes a lot of pupils' valuable time. However, with the internet, it has become more simpler for pupils. On the internet, they can find their study materials with ease. There is a wealth of information and knowledge on the internet. On the internet, you may find the best and most relevant stuff. Students can use the internet to look for all of their available online assignments, quizzes, presentations, and other study-related items.

Negative Impacts of Internet Usage on Academic Achievement :-

In addition to its benefits and beneficial outcomes, the internet also has a negative impact on students. The internet has several negative effects on a student's academic performance. Internet use is more likely to distract kids from their studies and divert them to other types of activity.

Communication Skills of Students Drop :-

Since the internet greatly eases students' lives and offers many benefits to students, Although it enhances communication, it also has a significant impact on pupils' communication abilities. Students can readily locate the material they're looking for online because the internet is regarded as a veritable gold mine of knowledge and information. They avoid social interaction outside because of this. Students use the internet to engage in online browsing. The students were shackled to it. The majority of students use the internet for pleasure instead of going outdoors to engage in other activities and socialise with others. The children' communication skills and talents gradually deteriorate as a result. They are reliant on the web.

Increase the amount of time you spend online surfing :-

The pupils' valuable time is one of the most significant things. For them, every second counts. However, they frequently waste their valuable time on the internet. Due to internet usage, students frequently lose concentration on their academics and learning and become involved in other kinds of activities, such as playing games and watching movies.

Use of the Internet too much :-

The addiction to excessive internet use is one of the worst negative consequences of the internet on kids' academic performance. The introduction of the internet has an impact on the majority of students. Student education, study, and learning are significantly disrupted as a result of internet addiction. All of the negative effects of the internet are mostly caused by internet addiction. The root cause of all the negative impacts of the internet is internet addiction. The most hazardous impact of the internet on students' academic performance is online addiction.

Destruction from the Study :-

The Internet is the most distracting thing in a student’s educational life. Most students are

addicted to the internet and use the internet all the time for surfing, playing video games, watching movies, and videos, listening to music, and many more. They get distracted from studying and learning. Most of the students get distracted in their study and learning time. Due to the internet, they cannot focus on their study and learning.

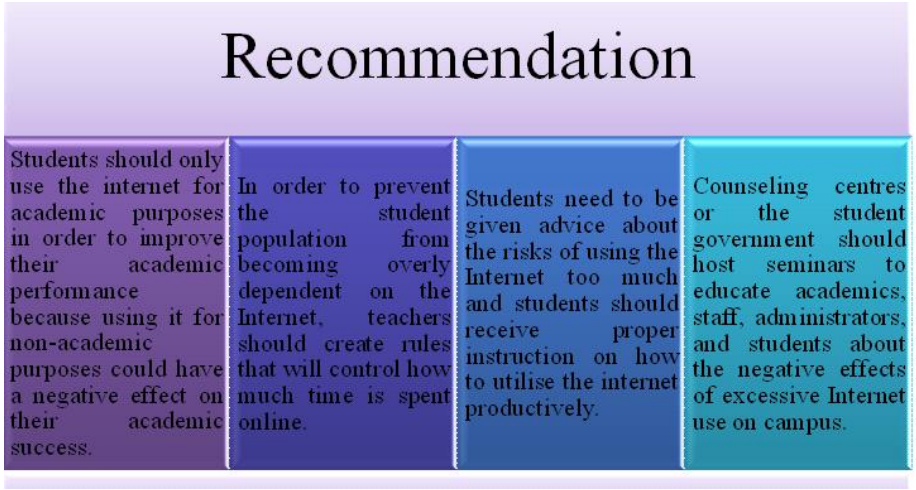

Conclusion :-

For students, the Internet is a tremendously effective tool for education and learning. It is a rather modern creation. The benefits and drawbacks of the internet for pupils in the classroom come first. The pupils' use of the Internet will determine whether it is used for good or bad. Despite how useful the internet is for students, it may also be damaging to them. It is our obligation to watch over how our kids and pupils utilise the internet for research and education.This paper's conclusion is that internet use is one of the elements that affects academic achievement. Unless the internet is used for learning and academic objectives, the amount of time spent online will have an impact on the students' social lives. This essay demonstrates the direct correlation between academic success and Internet use for research purposes.

References :-

1. Azizi, E. (2014). Relationship between Internet Competency and Academic Achievement of Science Students in Bachelor Level. Research Journal of Recent Sciences, 3(9), 34-38. (http://goo.gl/oHBJZI) (2015- 03-23).
2. Bloom, B., Furst, E., Hill, W., & Krathwohl, D. (1956). Taxonomy of Educational Objectives: Handbook I, The Cognitive Domain. New York: Adison-Wesly.
3. Castaño, J. (2011). El uso de Internet para la interacciónenelaprendizaje: Un análisis de la eficacia y laigualdadenelsistemauniversitariocatalán. UniversitatOberta de Catalunya. (http://goo.gl/hZW1Rs) (2015- 05-22).
3. Cea, M.A. (2005). La exteriorización de la xenofobia. Revista Española de InvestigacionesSociológicas,

112(5), 197-230. (https://goo.gl/B9TU43) (2015-02-28).

4. Chen, S.Y., & Fu, Y.C. (2009). Internet Use and Academic Achievement: Gender Differences in Early Adolescence. Adolecense, 44(176). (http://goo.gl/ZzkiOW) (2015-04-14).
5. Sushma M., Peter D., Natalya G., Gregory L., & Donald C. (2014). The Impact of Internet Addiction On University Students And Its Effect On Subsequent Academic Success: A Survey Based Study. Issues in Information Systems, 15(1), 344-352. Retrieved from http://iacis.org/iis/2014/67_iis_2014_344-352.pdf
6. Wittwer, J., &Senkbeil, M. (2008). Is Students' Computer Use at Home Related to their Mathematical Performance at School? Computers & Education, 50(4), 1.558-1.571. doi: http://doi.org/10.1016/j.compedu.2007.03.001
7. Zillien, N., &Hargittai, E. (2009). Digital Distinction: Status-Specific Types of Internet Usage. Social Science Quarterly, 90(2), 274-291. doi: http://doi.org/10.1111/j.1540-6237.2009.00617.x

kaliavedpal@gmail.com
hoodamadhuri@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 62-68

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रतिमान का अध्ययन

पंकज कुमार, शोधार्थी
डॉ. मंजू सिंह, निर्देशक
स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (भोजपुर)

सारांश :–

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को जानना है। प्रस्तुत अध्ययन में भोजपुर जिले के विभिन्न क्षेत्रों से 360 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया है। ये सभी 13 से 19 वर्ष की आयु के बीच के हैं। न्यादर्श का चयन करने के लिए यादृच्छिक चयन विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में 160 किशोर तथा 160 किशोरियों को लिया है जो कि माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत हैं। व्यक्तित्व गुणों के मापन के लिए विद्यार्थियों पर बिग फाईव पर्सनालिटी स्केल (हिंदी रूपांतरणयन या अनुकूलन प्रो. आर.एन. सिंह एवं प्रो एस. एस. भारद्वाज के द्वारा 2013) मापनी का प्रशासन किया गया। परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परिक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य बिन्दु :– किशोर, विद्यार्थी, व्यक्तित्व, प्रतिमान इत्यादि।

प्रस्तावना :–

व्यक्तित्व के विकाश में शिक्षा की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा मानव के व्यवहार में सौन्दर्य लाने का कार्य करती है। शिक्षा के द्वारा समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है और सभ्यता के रथ को आगे बढ़ाता है। बालक की वैयक्तिक प्रगति, उसका शारीरिक मानसिक और भावनात्मक विकास तब तक भली प्रकार नहीं हो पाता है जब तक वह शिक्षा न ग्रहण करे। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल खिल उठता है तथा सूर्य के अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है।

किशोरावस्था बालक के विकास क्रम में आने वाली वह समस्या है, जिसमे प्रविष्ट हो जाने पर बालक न तो बालक रहता है और न ही प्रौढ़ कहा जा सकता है। इस अवस्था मे बाल्यावस्था की प्रायः सभी शारिरिक और मानसिक विशेषताओं का लोप हो जाता है और उसके स्थान पर नवीन गुणों का अविर्भात होने लगता है, विशेष रूप से किशोरों के भीतर शारीरीक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा मानसिक चार प्रकार के मुख्य परिवर्तन दृष्टि

गोचर होते है यद्यपि पूर्व किशोरावस्था में इन परिवर्तन का स्वरूप वैसा नहीं होता जैसा उत्तर किशोरावस्था महत्वपूर्ण अवस्था है और इन अवस्था में पहुंच कर बालक तेजी से विकास की पूर्णता की ओर बढ़ते लगता है। केवल बालक का तेरह वर्ष का हो जाना ही किशोरावस्था के प्रारंभ के लिए पर्याप्त नहीं समझा जाता है।

वास्तव मे किशोरावस्था की शुरुवात बालक की शारिरिक आयु पर ही नहीं बल्कि उसकी भीतर उत्पन्न होने वाली शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं पर आधारित है। किशोर तथा किशोरियों के भीतर यौन संबंध विशेषताएँ और उनसे संबंधित मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक परिवर्तन इस अवस्था के मुख्य लक्षण माने जाते है, परन्तु व्यक्तिगत भिन्नताओं के कारण कुछ बालको के भीतर ये लक्षण अपेक्षाकृत कुछ समय बाद उदभुत होते हैं चूंकि किशोर में समायोजन क्षमताओं, सवेगात्मक अनुभूतियों और समाजिक सम्बंधों का स्वरूप पूर्व किशोर और उत्तर किशोर दोनो मे एक सा नहीं होता है, इसलिए किशोरावस्था को सुविधा की दृष्टि से दो उप अवस्थाओं मे बाँट दिया जाता है। वास्तव में यह अवस्था व्यक्ति के निर्माण की अवस्था में बनकर तैयार होती है यदि बालक को भावी जीवन में महान बनना है तो उसे इस संकल्प मे व्यक्ति के जीवन की सरिता का प्रवाह जिस ओर मोट दिया जाता है उसी ओर वह सदा प्रवाहित होती रहती है।

व्यक्तित्व :-

व्यक्ति के व्यक्तित्व के स्वरूप को समझने से पहले इसका अर्थ को जानना अति आवश्यक है। व्यक्ति शब्द पूरे मानव जाति से संबंधित है। जिसका अर्थ है व्यक्ति के विशिष्ट गुणों के आधार पर किया जाता है अर्थात एक व्यक्तित्व उन गुणों से परिपूर्ण होता है। इसका आधार पर एक सामान्य व्यक्ति से विशिष्ट गुणों वाला व्यक्ति की पहचान किया जा सकता है।

व्यक्तित्व की व्याख्या अनेक दृष्टिकोण से की गई है जिसमें दार्शनिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व का व्याख्या आत्मा, स्वयं एवं व्यक्ति के रूप में बताई गई है। व्यक्तित्व को अंग्रेजी में personality कहते हैं जो लैटिन शब्द पर सोना (persona) से लिया गया है। जिसका अर्थ नकाबया मुखौटा होता है। जिसे नाटक करते समय नायक पहनते हैं। उस समय में यूनानी काल में चमतेवदं शब्द का प्रयोग मुखौटा के लिए होता था। जिसे पहनकर यूनानी कलाकार मंच पर विभिन्न प्रकार के अभिनय किया करते थे। उस समय व्यक्ति के व्यक्तित्व का अर्थ शरीर के बाहरी बनावट या वेशभूषा के आधार पर व्यक्तित्व का आकलन किया जाता था। ऐसे व्याख्यान को अवैज्ञानिक घोषित किया गया। उसके बाद अनेक मनोविज्ञानी को ने व्यक्तित्व की अनेक परिभाषाएं दिए। ऐसी परिभाषाएँ 49 दी गई है। इन 49 परिभाषाओं का आलपोर्ट ने विशेषण करके 50वां परिभाषा दिया। जो आज भी अनेक वैज्ञानिकों को मान है क्योंकि काफी विस्तृत एवं वैज्ञानिक हैं।

इस प्रकार व्यक्तित्व की निम्नलिखित परिभाषा है नीचे दिए गए हैं,

आलपोर्ट (1937) का अनुसार, "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व संयोजन को निर्धारित करते हैं।"

आइजेंक (1952) के अनुसार, "व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्र–प्रकृति ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब करीब एक स्थाई एवं टिकाऊ संगठन है, जो वातावरण में उसके अपूर्व संयोजन का निर्धारण करता है।"

व्यक्तिच पांच कारकीय मॉडल (प्रतिमान) – व्यक्तित्व के कई मनोवैज्ञानिकों ने शीलगुणों के मॉडल या विमा या कारक बतलाए। लेकिन इस क्षेत्र में दिए गए विचार संतोषजनक एवं स्पष्ट नहीं हो पाया तब जाकर

दो दशकों में हुए महत्वपूर्ण शोधों के आधार पर कुछ मनोवैज्ञानिकों में इस सिलसिले में कुछ खास विमाओं के बारे में सहमति नजर आती है। ऐसे प्रमुख शोधकर्ता है :– गोलडवर्ग (1981), कोस्टा एवं मैकक्रे (1994), होगान (1983) नौल्लर ला एवं कैमरे (1987)। इनमें शोधकर्ताओं का विचार है कि व्यक्तित्व के पांच महत्वपूर्ण विमा या शीलगुण है। जो सभी द्विधुवीय है। जिसका व्याख्यान नीचे इस प्रकार है :–

बहिर्मुखी – इस शीलगुण या विमा द्वारा व्यक्ति के अंतर–वैयक्तिक होने वाले आंतरिक क्रिया की तीव्रता एवं मात्रा का मापन किया जाता है।

स्नायुविकृति – इस विमा द्वारा व्यक्ति के सांवेगिक अस्थिरता एवं समायोजन का मापन किया जाता है।

कर्त्तव्यनिष्ठता – इस विमा के माध्यम से व्यक्ति के लक्ष्य–निर्देशित व्यवहार में अभिप्रेरण, दुराग्रह तथा संगठन का मात्रा का मापन किया जाता है।

सहमतिशिलता या सहमतता – इसके द्वारा व्यक्ति के चिंतन, भाव एवं क्रियाओं में साहनुभूति से प्रतिरोध के सांतत्य पर व्यक्ति की अंतर वैक्तित्व उमुखयता की गुणों की मापन किया जाता है।

अनुभूतियों का खुलापन या संस्कृति – इस बीमा द्वारा अग्रलक्षी खोज तथा अपने लिए अनुभूतियों का मूल्यांकन साथ ही साथ अपरिचित वस्तु की पहचान तथा अन्य व्यक्तियों की पहचान करना एवं सहन शक्ति का भी मूल्यांकन किया जाता है।

पूर्व शोध कार्य :–

योगेश्वर प्रसाद शर्मा (2016) ने "माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षणिक रूचि का उनके व्यक्तित्व अंतर्मुखी–बहिर्मुखी आयामों के संदर्भ" में अध्ययन किया। इसमें अध्ययनरत् छात्राओं की आयु 11–17 वर्ष तक है। जिसमें 100 छात्रों का चयन किया गया तथा इस शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि छात्रों के शैक्षणिक रूचि का उनके व्यक्तित्व के अंतर्मुखी–बहिर्मुखी आयामों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मंजुला धर दुबे (2017) ने "व्यक्तित्व तथा संवेगात्मक समायोजन किशोरों के संदर्भ" में अध्ययन किया। जिसमें शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय एवं महाविद्यालयों से 300 किशोर छात्र–छात्राएं का चयन किया गया। उपकरण में समायोजन संबंधित मापनी ए.के.पी. सिंह और आर.पी. सिंह तथा व्यक्तित्व संबंधित मापनी– डॉ पी. एफ.अजीज और रेखा गुप्ता का उपयोग किया गया। परिणाम स्वरूप पाया गया कि किशोरावस्था के बालकों के संवेगात्मक, व्यक्तित्व एवं समायोजन क्षमता में मध्य सार्थक विभिनता के अस्तर प्रकट करती है।

लक्ष्मी शर्मा (2017) "बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण में संयुक्त परिवार की भूमिका : एक शोधात्मक अध्ययन" के आधारपर पाया की संयुक्त परिवार में बच्चे भावनात्मक एवं रचनात्मक रूप से दूर एवं पास के सगे–संबंधियों से जुड़े रहते हैं। जबकि एकल परिवार में आज इस हद तक बिखराव है किअपने नजदीकी सगे–संबंधियों का भी परिचय नहीं जानते। अतः निष्कर्ष देखा गया कि संयुक्त परिवार के बच्चों का बड़े स्तर पर सामाजिक, सुरक्षा, सहयोग एवं प्रसिद्ध स्वता ही प्रद्धत होती है।

डॉ. अशोक कुमार (2020) ने "किशोरावस्था के बालकों के व्यक्तित्व विकास में मूल्यपरक शिक्षा का योगदान" पर अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर पाया कि किशोरों के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। इसके द्वारा ही किशोरों के मानसिक तथा शारीरिक विकास होता हैं। अतः निष्कर्ष में पाया गया कि मूल्य शिक्षा का किशोरों के व्यक्तित्व विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य –

1. माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों में व्यक्तित्व प्रतिमान का अध्ययन किया जाएगा।
2. उच्य माध्यमिक विद्यालय एकल परिवार के किशोर एवं किशोरियों में व्यक्तित्व प्रतिमान का अध्ययन किया जाएगा।

परिकल्पना –

1. माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों में व्यक्तित्व प्रतिमान में अंतर पाया जाएगा।
2. उच्य माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों में व्यक्तित्व प्रतिमान में अंतर पाया जाएगा।

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गाया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन में भोजपुर जिले के उच्य माध्यमिक एवं माध्यमिक के प्रतिदर्श का चुनाव किया गया। शोध कार्य के लिए कुल 360 विद्यार्थियों में से 160 किशोर एवं 160 किशोरियों का चयन किया गया।

क्षेत्र	उच्य माध्यमिक विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय
किशोर	80	80
किशोरी	80	80
कुल	160	160
कुल योग	320	

उपकरण –

बिग फाईव पर्सनालिटी स्केल (Big five personality scale) इस बिग फाईव पर्सनालिटी स्केल का निर्माण कोस्टा एवं मैक क्रौ द्वारा 1992 किया गया। जिसका हिंदी रूपांतरणयन या अनुकूलन प्रो. आर.एन. सिंह एवं प्रो एस. एस. भारद्वाज के द्वारा 2013 में किया गया। इस स्केल में 50 एकांश है जो व्यक्तित्व के पांच आयामों का मापन करती है।

सांख्यिकीय –

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परिक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विशलेषण –

1. परिकल्पना – माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों में व्यक्तित्व में अंतर देखा जाएगा।

तालिका –1

क्षेत्र	कुल सं (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–मान (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
किशोर	80	10.86	2.595	6.9329	स्वीकृत (P<-01)
किशोरी	80	8.30	2.043		

ग्राफ संख्या – 1

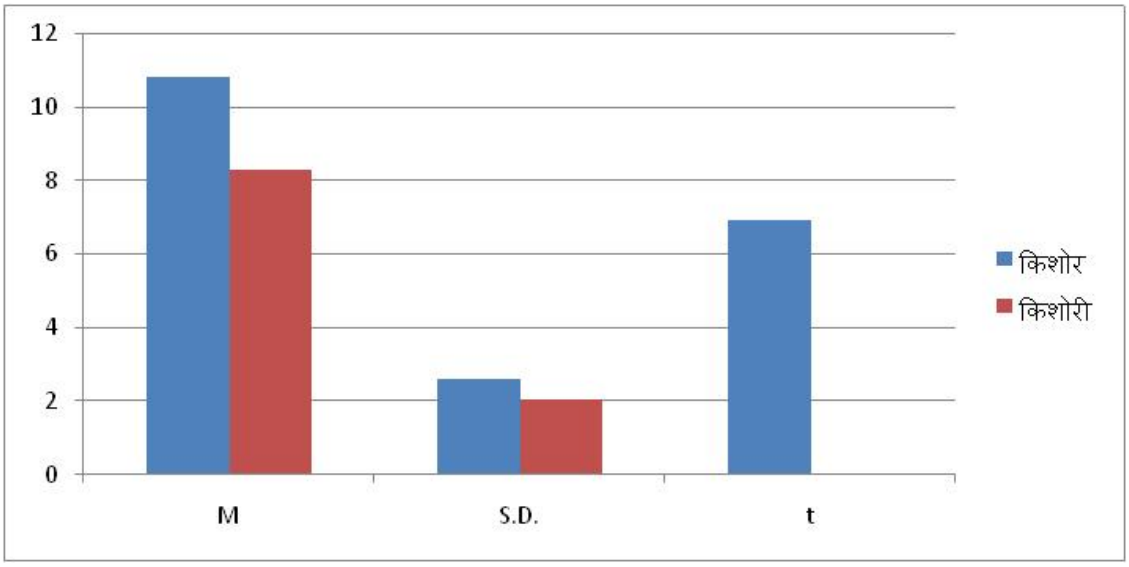

2 .परिकल्पना –

उच्य माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों में व्यक्तित्व प्रतिमान में अंतर पाया जाएगा

तालिका – 2

क्षेत्र	कुल सं (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी–मान (t)	स्वीकृत / अस्वीकृत
किशोर	80	7.52	1.787	16.0889	स्वीकृत (P<-01)
किशोरी	80	3.64	1.208		

ग्राफ संख्या – 2

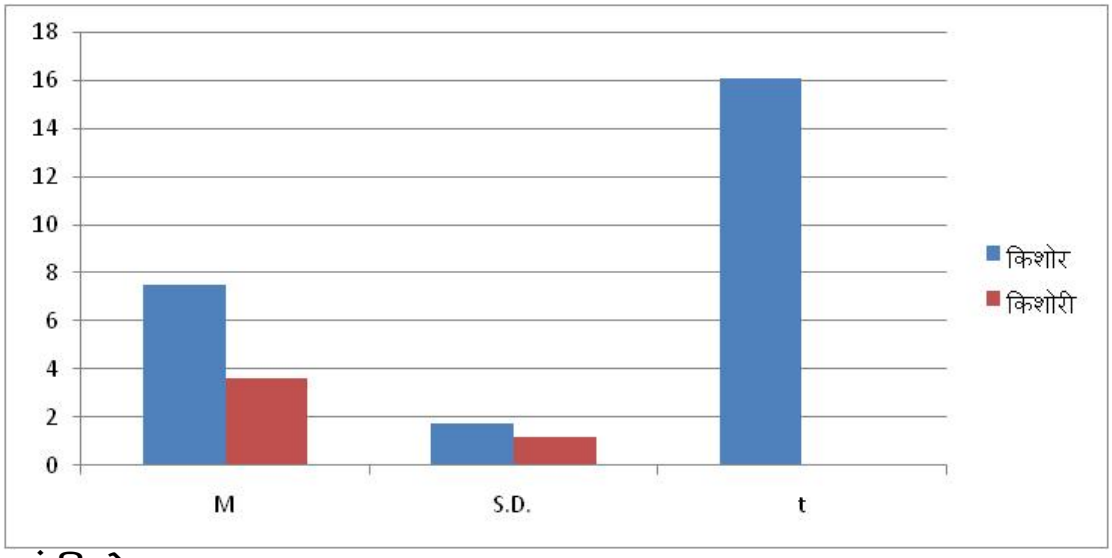

परिणाम एवं विश्लेषण :–

परिकल्पना –1 "माध्यमिक विद्यालय किशोर–किशोरी में व्यक्तित्व प्रतिमान में अंतर देखा जाएगा।"

तालिका–1 एवं दण्ड आरेख का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों व्यक्तित्व प्रतिमान का प्राप्त मध्यमान क्रमशः 10.86 एवं 8.30, मानक विचलन क्रमशः 2.595 एवं 2. 043 तथा t का मान 6.9329 प्राप्त हुआ है।

df 158 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है। जबकि t प्राप्त मान 6.9329 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों व्यक्तित्व प्रतिमान में सार्थक अन्तर होता है। तथा माध्यमिक विद्यालय के किशोरों में व्यक्तित्व प्रतिमान किशोरियों से अधिक पाया गया है।

परिकल्पना – 2 "उच्य माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों में व्यक्तित्व प्रतिमान में अंतर देखा जाएगा।"

तालिका – 2 एवं दण्ड आरेख का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि उच्य माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों व्यक्तित्व प्रतिमान का प्राप्त मध्यमान क्रमशः 7.52 एवं 3.64, मानक विचलन क्रमशः 1.787 एवं 1.208 तथा t 16.0889 का मान प्राप्त हुआ है।

df 158 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है। जबकि t 16.0889 प्राप्त मान है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। उच्य माध्यमिक विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों व्यक्तित्व प्रतिमान में सार्थक अन्तर होता है। तथा उच्य माध्यमिक विद्यालय के किशोरों में व्यक्तित्व प्रतिमान किशोरियों से अधिक पाया गया है।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक विद्यालय के किशोर–किशोरी में व्यक्तित्व प्रतिमान में सार्थक अंतर पाया गया है। मध्यमानों के आधार पर संयुक्त परिवार के किशोरों की अपेक्षा किशोरियों के मध्यमानों कम है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है की माध्यमिक विद्यालय के किशोरियों की व्यक्तित्व प्रतिमान की तुलना में किशोर अधिक प्रभावशाली पाया गया है।

2. उच्य माध्यमिक विद्यालय के किशोर–किशोरी में व्यक्तित्व प्रतिमान में सार्थक अंतर पाया गया है। मध्यमानों के आधार पर एकल परिवार के किशोरों की अपेक्षा किशोरियों के मध्यमानों कम है। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है की उच्य माध्यमिक विद्यालय के किशोरियों की व्यक्तित्व प्रतिमान की तुलना में किशोर अधिक प्रभावशाली पाया गया है।

संदर्भ सूचि :–

1. पाठक पी. डी. (1975), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ संख्या–116–125, 126–132, 133–139
2. सिंग अरुण कुमार (2015), उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,

पृष्ठ संख्या 792–819, 962–1104, 142–151.

3. सिंग अरुण कुमार, आशीष कुमार सिंह (2010), व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 93–112, 113–151
4. शर्मा योगेश्वर प्रसाद (2016) ने "माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षणिक रूचि का उनके व्यक्तित्व अंतर्मुखी–बहिर्मुखी आयामों के संदर्भ" International multidisciplinary research journal 6(5)
5. शर्मा योगेश्वर प्रसाद (2016) ने "माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षणिक रूचि का उनके व्यक्तित्व अंतर्मुखी–बहिर्मुखी आयामों के संदर्भ" International multidisciplinary research journal 6(5)
6. लक्ष्मी शर्मा (2017) "बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण में संयुक्त परिवार की भूमिका : एक शोधात्मक अध्ययन" Innovatio the research concept vol.-2, Page No. 29-31.
7. डॉ अशोक कुमार (2020) ने "किशोरावस्था के बालकों के व्यक्तित्व विकास में मूल्यपरक शिक्षा का योगदान" International journal of research, Page 300-303.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 69-72

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

नेहा यादव

असि0 प्रोफेसर, महात्मा असऊबाबा के0के0पी0 इंस्टिट्युट, टेकनगाढ़ा, आजमगढ़–276138

मैथिलीशरण गुप्त जी ने सांप्रदायिक एकता को राष्ट्रीय चेतना के लिए आवश्यक मानकर ''काबा और कर्बला'' नामक कृति की रचना की जिसमें पैगम्बर मुहम्मद साहब तथा उनके नाती इमात हुसैन के जीवन, उपदेश, त्याग और बलिदान का मार्मिक चित्रण किया है। इस काव्य में उन्होंने यह प्रतिवादित करने का प्रयास किया है कि सभी धर्म एक ही मार्ग पर ले जाते है। वे मनुष्य को प्रेम करना सिखाते है, उनमें द्वेष–भावना नहीं फैलाते। हम दूसरे धर्मो को जाने और उनके प्रति सहिष्णु हों तो सांप्रदायिकता का विनाश संभव है।

''यह सारा संसार है उस प्रभु का परिवार।
सबसे रखना चाहिए, प्रेमपूर्ण व्यवहार।।
यही ईश्वरोपासना, यही धर्म का मर्म।
एक दूसरे के लिए करें यहाँ सब कर्म।।
मनुज मात्र के अर्थ जो करते है उपयोग।
सच्चे जन भगवान के है ब सवे ही लाग।''[1]

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय हिन्दू–मुस्लिम सांप्रदायिकता सबसे भयानक रूप में देश में व्याप्त थी। अतः राष्ट्रीय नेताओं और कवियों का हिंदू–मुस्लिम सांप्रदायिकता की ओर विशेष ध्यान गया। गुप्त जी ने 'मुसलमान के प्रति' शीर्षक से एक लंबी कविता लिखी जिसमें उनका सुधारक रूप प्रबल है–

''मुसलमान भाई हो शांत
सोचो तुम्ही तनिक एकांत
तुम निज हेतु करो सब कर्म
और दो छोड़ दें हम निज धर्म?
रहे तुम्हारा कुछ भी बोध
हमको तुमसे नहीं विरोध।
मातृभूमि का नाता मान
है दोनों के स्वार्थ समान।[2]

हिन्दी भाषा का यह सौभाग्य रहा है कि उसमें राष्ट्रीय जागरण का स्वरूप बदलता रहा है। इस बदलते परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा में राष्ट्रीय जागरण का सदैव सृजन होता रहा है। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का हिन्दी

साहित्य पर बहुत गहरा प्रभाव है। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से ही जनता के हृदय में राष्ट्रीय भावनाओं का सम्पादन होने लगा था, जिसे कवियों की वाणी ने और भी मुखर कर दिया।

हिन्दी का आधुनिक काल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से आरम्भ होता है। उनके काव्य की चेतना में पराजय की पीड़ा है, अपनी दुर्बलताओं पर अफसोस है, परन्तु स्वतंत्रता की पुकार है। राष्ट्रीयता की जो तान भारतेन्दु युग में छोड़ी गई थी उसका स्वर गुप्त जी में बहुत हो जाता है।

सन् 1921 के बाद भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के तीव्र विकास के साथ हिन्दी में राष्ट्रीय काव्य की एक सशक्त धारा सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश को अपनी प्रेरणा से आलोकित करती रही।[3]

इस काल में माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा, नवीन जैसे क्रांतिकारी कवियों ने अपनी राष्ट्रीय रचनाएँ लिखीं। मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय जागरण के इन महान कवियों की इसी परम्परा की अद्वितीय कड़ी है। गुप्त जी का युग राजनीतिक क्रांति का युग था। जिस समय उन्होंने साहित्य–सृजन प्रारम्भ किया भारत दासता की श्रृंखलाओं में जकड़ा हुआ था। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को जो तीव्र स्वर दिया वह देश के शतकोटि कंठो में गूंज[5] उठा। राष्ट्रीय विजय के पुण्य स्वतंत्रता पर्व पर जिस मंगल की आवश्यकता थी, वैसा ही स्वर उनके काव्य में सुनाई पड़ता है :–

मानस–भवन में आर्यजन जिसकी उतरो आरती
भगवान! भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती
हो भद्रा भावोदभाविनी वह भारती है भगवते
सीतांपते! सीतापते! गीतामते! गीतामते!

गुप्त जी की राष्ट्रीयता की परिधि अतिव्यापक इसी कारण उन्होंने सभी प्रमुख धर्मो को अपनी काव्य–साधना का विषय बनाया। ''साकेत'' में जिस तन्मयता से राम का, 'द्वापर' में उसी तन्मयता से कृष्ण का चरित्र प्रस्तुत किया है। 'अनघ' में गाँधी जी के और यशोधरा में बुद्ध के पावन परित्रों का गुणगान किया गया है। वे स्वार्थ व्यय जीवन को लांघनीय नहीं समझते। उनके पात व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए जीवन धारण नहीं करते बल्कि समाज के कल्याणार्थ अपने व्यक्तिगत हितों का त्याग करते है। वे 'भुवन सेवा' को ही अभीष्ट कर्तव्य समझते हैं–

न तन सेवा न मन सेवा,
न जीवन और धन सेवा।
मुझे है इष्ट जन सेवा,
सदा सच्ची भुवन सेवा।।[5]

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं को पढ़ने के उपरान्त लगता है कि मैथिलीशरण गुप्त को अपने राष्ट्र के अतीत पर गर्व रहा है और यह बात उनके काव्य में यदा–कदा प्रस्फुटित भी हुई है। मैथिलीशरण गुप्त ने जनता में सांस्कृतिक चेतना जगाने के लिए अपने अतीत के गौरव का गान किया है। इस सम्बन्ध में 'भारत–भारती' के अतीत खण्ड में कवि ने लिखा है–

भू लोक के गौरव प्रकृति का, पुष्य लीलास्थल कहाँ फैला मनीहर गिरी हिमालय और गंगाजल जहाँ सम्पूर्ण देशों से अधिक जिस देश का उत्कर्ष है उसका किलोऋषि भूमि है वह कौन? भारत वर्ष है।[6]

गुप्त जी का मानना था कि प्राचीन काल में हमारी संस्कृति इतनी उन्नत थी कि सारे विश्व के लोग

भारतीयों का शिष्यत्व ग्रहण करते थे। इस सम्बन्ध में वे लिखते है–

संसार भर में आज जिसका छा रहा आतंक है
नीचा दिखाकर रूस को भी जो हुआ निःशंक है
जय पाणी जो वर्धक हुआ है एशिया के हर्ष का
है शिष्यत्व वह जापान भी वृद्ध भारत वर्ष का।।[7]

गुप्त जी की रचनाओं में नारी के उस गौरवमय राष्ट्रीय स्वरूप के भव्य दर्शन होते है, जहाँ वह देश सेवा के व्रत में तत्पर पुरूष की सहचरी और सहयोगिनी एवं पुरूष की प्रेरणा बनकर आई है। वह सैनिको का जोश द्विगुणित करती है तथा अवसर के अनुसार प्रचंड भी बन जाती है।

छल पाया क्या हमें क्रूर छलनाओं ने भी स्वतंत्रता का युद्ध लड़ो ललनाओं ने भी अबलाएँ शक्तिरूपिणी आत्मिक बल में इसे सिद्ध कर दिया उन्होंने समर स्थल में।[8]

गुप्त जी ने देश सेवा को ही मानव धर्म की कसौटी माना है। राष्ट्रहित के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान भी कम है। 'रंग में भंग' काव्य पढ़ने के बाद ये बाते और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है। रंग में भंग काव्य में लाल सिंह नरेन्द्र की पुत्री, यशोधरा में यशोधरा तथा सिद्धराज में मीनलदे के चरित्र में प्राप्त होती है। राष्ट्रहित के लिए वह पति और पुत्र सभी का बलिदान कर सकती है। रंग में भंग काव्य में लालसिंह की कन्या को अपने पति के रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त करने पर खेद नहीं होता अपितु वह स्वयं सती होने के लिए सहर्ष प्रस्तुत हो जाती है–

मरण एक न एक दिन तनुधारियों का सिद्ध है
जन्म से ही मरण का संबंध लोक प्रसिद्ध है
किन्तु अवसर का मरण क्या सहज में मिलती कभी
इसलिए अब हे पिता आज्ञा मुझे दीजे अभी।[9]

गुप्त जी कभी सत्ता के विरूद्ध नहीं रहे, न ही सत्ता के प्रति विरोध भाव को उनसे प्रोत्साहन ही मिला, पर पराधीन कल्पना प्रतिमा उनके अन्तर्मन में यदा प्रतिष्ठित थी, जिसका स्वतन वह निरंतर करते रहे और जिसे जनमात्र के सामने रखकर वह उसे निरंतर प्रेरणा देते रह सके। स्वाधीन भारत के आदर्श की सतत साधना ने ही उन्हें राष्ट्रकवि के पद पर आसीन भी तो कराया था। राष्ट्रकवि गुप्त जी द्विवेदी युग के प्रमुख कवि थे। द्विवेदी युग विद्रोह का युग था। साहित्य और कला के क्षेत्र में बलिदान, संघर्ष, प्रतिरोध, क्षोभ, आत्म सम्मान, वीरता, साहस, त्याग और नवजागरण का स्पष्ट दृश्य इस युग में दिखाई पड़ने लगा था। जब देश गुलाम होता है तब अतीत का चिंतन परीक्षण और वर्तमान के अनुकूल उसका नवीनीकरण उभरता है।

राष्ट्रवादी कवि अपनी जन्मभूमि के प्रति प्रेम व उत्कृट भाव रखता है। अपनी राष्ट्रभूमि को 'पुबोडहं प्रथिव्यां' के समान प्रेम करता है अपनी जन्मभूमि का स्तुति करता है को राष्ट्र पुत्र अपने देश पर गर्व करता है। 'भारत भारती' में भारत वर्ष की श्रेष्ठता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है–

मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत–भारती' का अतीत खंड संपूर्ण द्विवेदी युगीन काव्य में भारत के अतीत गौरव गान का श्रेष्ठतम अंश है–

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे।
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।।

देश की आजादी के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले युद्धवीर या धर्मवीर, मर्कवया दानवीर अथवा दयावीर, सत्य, अहिंसा और शील के लिए बलिदान हो जाने वाले वीरों के विविध ढंग से पूजा अर्चना की है। थे भीष्म तुल्य महाबली, अर्जुन समान महारथी श्री कृष्ण लीलामय हुए थे आप जिनके सारथी।

गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीय जागरण का ओजस्वी स्वर दिखाई पड़ता है। 'स्वदेश संगी' में गुप्त जी ने लिखा है–

धरती हिलकर नींद भगा दे
वज्रनाद से व्योम जगा दे
दैव और कुछ लाग लगा दे।

'साकेत' के जरिए गुप्त जी ने विदेशी शक्ति से देश की रक्षा के लिए संकल्पित नजर आ रहे है–

पुण्य भूमि पर पाप कभी हम सह न सकेंगे,
पीड़क पापी यहाँ और अब रह न सकेगें।

राष्ट्रीय भावना के विकास में 'जन्मना जाति सिद्धांत' बहुत बड़ा बाधक है। वर्तमान सूचना युग में भी तब जबकि जाति की भावना समाज से लगभग गायब हो चुकी है बावजूद इसके भी लोग जातीय सीमा से घिरे नजर आते है। गुप्त जी का मानना था कि जाति की बेड़िया तोड़े बिना गुलामी की बेड़िया नहीं टूटेगी। इसीलिए गुप्त जी ने 'अनघ' काव्य में लिखा है कि–

इसका भी निर्णय हो जाए
नहीं अछूत मनुज क्या हाय करे अशुचिता
सबकी दूरे, उनसे घृणा करे सो क्रूर।

अछूतों के मंदिर प्रवेश पर उठने वाले सवालों पर भी गुप्त जी ने कटाक्ष किया है–

मंदिर का द्वार जो खुलेगा सबके लिए
होगी तभी मेरी वहाँ विश्व भर भावना।

अतएव हिंदी साहित्य के क्षेत्र में जीवन की दिशा को श्रृंगार से निकालकर राष्ट्रीय स्वरों की पुनीत गंगा की ओर मोड़ने का सर्वाधिक श्रेय गुप्त जी को है और इसी कारण उन्हें हिंदी की राश्ट्रीय काव्यधारा में मूर्धन्य स्थान प्राप्त है।

संदर्भ :-

1. मैथिलीशरण गुप्त, काबा और कर्बला, साहित्य सदन।
2. मैथिलीशरण गुप्त, हिंदू, साहित्य सदन, झाँसी।
3. जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल, हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर।
4. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, साहित्य सदन, झाँसी।
5. मैथिलीशरण गुप्त, अनघ, साहित्य सदन, झाँसी।
6. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, पृष्ठ संख्या 33
7. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, पृष्ठ संख्या 63
8. मैथिलीशरण गुप्त, राज्य–प्रजा, पृष्ठ संख्या 34
9. मैथिलीशरण गुप्त, रंग में भंग, पृष्ठ संख्या 21

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 73-76

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ROLE OF MATHEMATICS IN NATURE

Dr. Pawan Chanchal, Assistant Professor,
Dr. Yogendra Kumar, Assistant Professor
Govt. Girls College Ajmer, Rajasthan

Abstract :-

Mathematics has long been recognized as a fundamental tool for understanding the natural world. This research explores the role of mathematics in nature, focusing on its applications across various scientific disciplines and its significance in uncovering underlying patterns and laws. The study delves into historical examples, current research, and future prospects, highlighting the potential threats and challenges in harnessing the full power of mathematics in understanding and preserving the intricate harmony of nature.

Keywords :- Mathematics, Nature, Scientific disciplines, Patterns, Laws, Applications, Future prospects, Threats.

Introduction :-

Mathematics, as a universal language of patterns and relationships, plays a crucial role in understanding the natural world. From describing the motion of celestial bodies to modeling the behavior of subatomic particles, mathematics serves as an indispensable tool in scientific exploration. This research aims to investigate the diverse applications of mathematics in nature, its historical significance, current contributions, future possibilities, and potential threats.

Historical Significance :-

The use of mathematics in understanding nature dates back to ancient civilizations, with the Greeks employing geometry to explain the motion of planets and the Egyptians using mathematics for agricultural purposes. Archimedes' work on calculating the areas of shapes laid the foundation for integral calculus, a powerful mathematical tool used in modern physics and engineering.

Applications across Scientific Disciplines :-

Mathematics finds application across various scientific disciplines, such as physics, biology, chemistry, and ecology. In physics, mathematical equations describe the fundamental forces of nature, leading to breakthroughs in quantum mechanics and general relativity. Biologists use mathematical

models to study population dynamics and the spread of diseases. Chemists employ mathematical methods to predict molecular interactions and chemical reactions, while ecologists use mathematical models to understand ecosystems' stability and resilience.

Mathematics and environment :-

Mathematics and the environment are interconnected in various ways. Mathematics plays a crucial role in understanding and addressing environmental challenges, enabling us to analyze, model, and predict natural phenomena and human impacts on the environment. Here are some key aspects where mathematics and the environment intersect :

Climate Modeling :- Mathematics is used to create complex climate models that simulate Earth's atmosphere and ocean dynamics. These models help scientists understand climate change patterns, predict future scenarios, and assess the impact of various factors like greenhouse gas emissions and deforestation.

Environmental Data Analysis :- Mathematical techniques, including statistics and data analysis, are employed to analyze large sets of environmental data collected from various sources, such as satellite imagery, weather stations, and environmental sensors. This analysis aids in identifying trends, patterns, and anomalies that inform decision-making and policy formulation.

Conservation and Biodiversity :- Mathematical tools, like population dynamics models and graph theory, are applied to study endangered species and ecosystems. This helps conservationists make informed decisions on habitat preservation and restoration efforts.

Pollution Monitoring and Control :- Mathematics is used to develop models for air and water pollution dispersion, allowing researchers to predict the spread of pollutants and design effective control measures.

Renewable Energy Optimization :- Mathematical optimization techniques are employed to maximize the efficiency and output of renewable energy sources like solar panels and wind turbines. Sustainable Resource Management: Mathematics assists in managing finite resources such as water, forests, and fisheries, ensuring they are used sustainably and responsibly.

Environmental Policy and Economics :- Mathematics plays a role in economic models that assess the cost-benefit analysis of environmental policies and projects.

Green Technology Development :- Mathematical simulations and models aid in designing and testing environmentally friendly technologies, such as electric vehicles or energy-efficient buildings.

Ecosystem Dynamics :- Mathematics is used to study ecological interactions between species, predator-prey relationships, and the spread of diseases within populations.

Environmental Education :- Mathematics is a fundamental part of education, and its inclusion in environmental science and sustainability curricula ensures that future professionals understand and can apply quantitative methods in their work.

Uncovering Patterns and Laws :-

One of the essential roles of mathematics in nature is its ability to reveal hidden patterns and laws governing natural phenomena. The Fibonacci sequence, found in sunflowers and seashells, exemplifies the pervasive occurrence of mathematical patterns in living organisms. Moreover, fundamental laws like Newton's laws of motion and Kepler's laws of planetary motion were derived from mathematical analyses, shaping our understanding of the universe.

Future Prospects :-

The future of mathematics in nature is promising. Advancements in computational power and mathematical algorithms enable scientists to tackle complex problems more effectively. Machine learning and artificial intelligence are revolutionizing the application of mathematics in various fields, allowing for faster data analysis and improved predictions. Moreover, interdisciplinary research between mathematicians and scientists from other domains is likely to yield groundbreaking discoveries.

Threats and Challenges :-

Despite its significance, the role of mathematics in nature faces challenges. Incomplete or inaccurate data can lead to flawed mathematical models, resulting in incorrect conclusions. The reliance on mathematical abstractions may oversimplify the complexities of nature, leading to limited insights. Additionally, the diminishing emphasis on mathematics education in some regions may hinder future generations' ability to appreciate and leverage its power.

Conclusion :-

The role of mathematics in nature is of paramount importance, providing invaluable insights into the underlying order and principles governing the natural world. By exploring historical developments, current applications, and future prospects, we can harness the full potential of mathematics to address complex challenges and preserve the delicate balance of nature.

References :-

1. Stewart, I. (2015). "Calculating the Cosmos: How Mathematics Unveils the Universe." Basic Books.
2. Devlin, K. (1997). "The Language of Mathematics: Making the Invisible Visible." Holt Paperbacks.
3. Gleick, J. (1987). "Chaos: Making a New Science." Viking Press.
4. Trefethen, L. N., & Bau III, D. (1997). "Numerical Linear Algebra." SIAM.

5. Murray, J. D. (2002). "Mathematical Biology: I. An Introduction." Springer.
6. Murray, J. D. (2002). "Mathematical Biology: II. Spatial Models and Biomedical Applications." Springer.
7. Newman, M. E. J. (2010). "Networks: An Introduction." Oxford University Press.
8. Volterra, V. (1931). "Leçons sur la théorie mathématique de la lutte pour la vie." Gauthier-Villars.
9. Goodwin, B. C. (1963). "Tempo and Mode in Evolution." Cold Spring Harbor Symposia on Quantitative Biology, 28, 229-242.
10. Courant, R., & Hilbert, D. (1989). "Methods of Mathematical Physics: Vol. 1." Wiley.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 77-80

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आदिवासी समाज का स्वरूप

गुलशन कुमार, शोधार्थी,
डॉ. सत्येन्द्र कुमार, सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय।

भारतीय समाज और संस्कृति विश्व में अपनी विविधता के लिए जानी जाती है। भारतीय समाज की विविधता को जनजातियां एक निराली छवि प्रदान करती हैं। भारत में जनजातियों की संख्या 500 से अधिक है। इन जनजातियों को वन्यजाति आदिवासी, आदिम जाति, गिरिजन आदि अनेक नामों से जाना जाता है।

'आदिवासी' शब्द का अभिप्रायः आदिम तरीके से जीवन यापन करने वाले लोगों से है। अधिकतर जनजातियां ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करती है जहां आधुनिक सभ्यता के चरण नहीं पहुंच पाए हैं। आज भी कई जनजातियां आदिम स्तर पर ही अपना जीवन गुजार रही हैं, जबकि दुनिया के अधिकांश देश प्रगति की चरम सीमा पर है। रमणिका गुप्ता आदिवासियों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए लिखती हैं, "आदिवासियों की गति में नृत्य है, वाणी में गीत, जब चलता है तो थिरकता है और वह जब बोलता है तो गीत के स्वर फूटते हैं। वह अकेला नहीं समूह में रहता है, समूह में सोचता है, समूह में जीता है। इसकी समृद्ध संस्कृति का स्वामी सभ्यता की दौड़ में एक षड्यंत्र एवं साजिश के तहत दंभी विजेताओं के समूह द्वारा अलग–थलग कर दिया गया है। आज भी यह प्रक्रिया जारी है बल्कि अब तो उसे खत्म करने की मुहिम चलाई जा रही है, वहीं उनका प्रदर्शन करके उसे भरमाया जा रहा है तो कहीं उत्सव लगाकर उसे दिग्भ्रमित किया जा रहा है।

दरअसल आदिवासी अपने श्रम के बल पर सदैव आत्मनिर्भर और स्वावलंबी रहा है। अपने समूह और समाज से जुड़कर, प्रकृति का साथी बनकर जीना उसकी शैली और स्वभाव रहा है। वह प्रकृति से संवाद करता है, उसका सहयात्री है उसको गाय की तरह पोसता और दुहता है, उसे कब्जे में लाने का कभी भी उसका लक्ष्य नहीं रहा है। प्रकृति के प्रकोप को वह सहता है, सहता रहा है और रोकता भी रहा है। उसके मुकाबले खड़ा भी रहता है पर सदैव उसका मित्र बना रहता है। प्रतिशोध की भावना से भरकर वह प्रकृति को नष्ट नहीं करता। वह उसे रिझाता है, मनाता है और केवल जीने भर या जरूरत भर उससे लेता है पर उसे बदले में देता भी है; अपना प्यार, अपनी देखरेख और अपनी संवेदना।[1]

आदिवासी समाज की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

1. **निश्चित सामान्य भूभाग :–** प्रत्येक जनजाति समाज का एक सामान्य व निश्चित निवास स्थान रहता है जिसमें उनमें सामान्य बोली और सामूहिक भावना दिखाई देती है। हर एक जनजाति का अपना निश्चित ऐसा सामान्य भूभाग पर अस्तित्व होता है।

2. **एकता की भावना** :– प्रत्येक जनजाति समाज के सामान्य भौगोलिक स्थान के साथ उनमें एकता की भावना दिखाई देती है। इनके कुछ खास अवसरों पर यह लोग इकट्ठा होकर अपने कार्य को अंजाम देते हैं।

3. **सामान्य बोली** :– प्रत्येक जनजाति की अपनी अलग और विशिष्ट बोली होती है। इस बोली के कारण उनमें सामूहिक भावना निर्माण होती है। इसी बोली के कारण इनका भूभाग भी जाना जाता है।

4. **अंतर्गत विवाह** :– आदिवासी जातियों में अपने ही सजातीय में विवाह करने का नियम है। इन नियमों के आधार पर ही इन जातियों के अंतर्गत विवाह होते हैं।

5. **रक्त संबंधों के नियम** :– इन आदिवासी जातियों में रक्त संबंधों का बहुत महत्व होता है जो सामूहिक भावना और विकास में सहायक होते हैं।

6. **अपनी सुरक्षा की पहचान एवं आवश्यकता** :– यह जातियां दूसरों के आक्रमण से अपनी रक्षा हो, इस हेतु यह सामूहिक एकता को महत्व देते हैं। इसके लिए उनका एक नेता होता है और उसे सहायता करने के लिए सलाहकार भी रहते हैं। उनकी अनेक टोलियां होने के बाद भी एक टोली का एक नेता रहता है जो सभी की सुरक्षा के लिए कार्य करता है।

7. **राजनीतिक संगठन** :– प्रत्येक जनजाति का एक राजनीतिक संगठन रहता है। इन राजनीतिक संगठन के आधार पर वे अपने समाज के नियमों का निर्माण करते हैं तथा समाज की सुरक्षा एवं विकास का नियोजन करते हैं।

8. **धर्म का महत्व** :– आदिवासी समाज में धर्म को असाधारण महत्व प्राप्त है। इस आदिवासी जनजातियों में धार्मिक नियमों का पालन कठोरता से किया जाता है। अगर समाज के किसी भी व्यक्ति ने इन नियमों का उल्लंघन किया तो उसे उचित दंड दिया जाता है।

9. **सामान्य संस्कृति** :– एकात्मता की भावना, सामान्य भाषा, सामान्य धर्म और राजनीतिक संगठन के कारण उनकी एक सामान्य संस्कृति निर्माण हुई है।

10. **गोत्र संगठन** :– अनेक गोत्र मिलकर एकत्र रहने के कारण इन गोत्रों में परस्पर संगठन और सहयोग होता है। लगभग आदिवासी जनजातियों में संगठन का महत्व है।

11. **निषेध व पाबंदियां** :– आदिवासी समाज की जनजातियों में प्रत्येक जाति के विवाह, व्यवसाय इत्यादि कारणों की पाबंदियां और निषेध का वे कठोरता से पालन करते हैं। इन आदिवासी जनजातियों की निषेध एवं पाबंदियों का सभी लोग कठोरता से पालन करते हैं।

12. **अशिक्षा और पिछड़ापन** :– आदिवासी समाज की लगभग सारी जातियां जंगलों में बसने के कारण शिक्षा के प्रवाह से दूर है और यही एक प्रमुख कारण है कि यह समाज आज भी पिछड़ा हुआ है। यह समाज अंधविश्वासी है और धार्मिक नियमों का कठोर पालन करने वाला भी। शायद इन्हीं कारणों की वजह से यह समाज आज भी अंधश्रद्धा और पिछड़ेपन के दलदल में फंसा हुआ है।[2]

आदिवासियों में गहनों और गोदनों के प्रति विशेष लगाव देखने को मिलता है। आदिवासी सोने के गहने नहीं पहनते हैं। आदिवासी अपनी भाषिक विशिष्टता, संस्कृति, प्रजाति एवं प्रकृति आधारित धर्म के कारण समाज की मुख्यधारा से अलग होता है। आदिवासी समाज अत्यंत गरीब, शोषित, पीड़ित, भोला जिसे आज तक सब ने लूटा, खासोटा और चूसा है। उनके बीच जमींदार, व्यापारी, ठेकेदार, महाजन, वकील और यहां तक कि धर्म का

नाम लेकर जो भी गया हर एक ने किसी–न–किसी प्रकार उनका शोषण ही किया है।

इस समय देश का शायद सबसे उपेक्षित तबका आदिवासी ही है। देश का आदिवासी समाज अस्मिता और अस्तित्व की दोहरी चुनौतियों से जूझ रहा है। नई आर्थिक नीतियों के बाद शुरू हुई विकास की अंधी दौड़ का सबसे ज्यादा नुकसान आदिवासियों को उठाना पड़ा है। आदिवासी समाज के स्वरूप को समझने के लिए उनके सांस्कृतिक पक्ष को ध्यान में रखना चाहिए जिसमें भाषा, धर्म, मिथक, जीवन शैली, आवास, प्रकृति से संपृक्तता, उनके पर्व, उत्सव, नृत्य, गीत, अंधविश्वासों को समझना होगा तभी आदिवासी समाज का समग्र ज्ञान प्राप्त हो सकता है। हरिराम मीणा के शब्दों में, "आदिवासी अस्मिता का सवाल निःसंदेह समग्र सांस्कृतिक परंपरा की अवधारणा से जुड़ा हुआ है। भौगोलिक भाषा, धर्म, जीवन शैली, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था, प्रजातीय पहचान आदि के आधार पर कई मानव समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं और उस पहचान को सुरक्षित और बाहरी हस्तक्षेप से स्वतंत्र रखने के प्रयासों को ऐसे समुदायों की अस्मिता से जोड़ा है...। इस दृष्टिकोण से आदिवासी समुदाय अपनी प्रत्येक पहचान की सीमाओं को तोड़कर भौतिक विकास को अपनाता हुआ शेष समाज के साथ अंतःक्रिया करता हुआ राष्ट्रीय समाज का हिस्सा बनता है।[3] निश्चित तौर पर भारतीय इतिहास में आदिवासी समाज की अपनी एक अलग संस्कृति एवं पहचान रही है लेकिन हमने उनका उपयोग केवल कला के रूप में ही अधिक किया है बल्कि पहचान के रूप में कम। इसलिए आज बाजारीकरण के दौर में भारतीय आदिवासियों के जीवन और अस्मिता को बचाना आवश्यक हो गया है। मूलतः आदिवासी जंगल के दावेदार होकर भी जंगलों से खदेडे जा रहे हैं। विकास के नाम पर शासन एवं उद्योगपतियों द्वारा भूमि अधिग्रहण करके उनकी जमीनें एवं कोयला खदानों पर जबरदस्ती से अधिकार जमाया जा रहा है।

आज 21वीं सदी में पहुंच कर भी हमारे देश का आदिवासी समाज अपने विकास से कोसों दूर है। इसीलिए आज आदिवासियों के सामने विस्थापन की भयंकर समस्या उत्पन्न हो रही है। सरकार की उदासीन नीतियों के कारण आदिवासियों की स्थिति विकट बनी हुई है। विकास के नाम पर आदिवासियों का पलायन और विस्थापन आदि समस्याओं पर विचार–विमर्श होना आवश्यक है।[4] आज जब देश का आदिवासी समाज चौतरफा समस्याओं और चुनौतियों से घिरा हुआ है तो जरूरत है कि इस बारे में गंभीर विचार किया जाए और सही समझ का विकास किया जाए। ...अगर सरकार सकारात्मक पहल करे तो आदिवासियों को बचाया जा सकता है। आदिवासी भाषाओं के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। अगर हमारी सरकारें उन्हें संरक्षण दे और सही भाषा नीतियां बनाए तो उन्हें बचाया जा सकता है। आदिवासी भाषा–साहित्य में आदिवासियों का पारंपरिक ज्ञान और विश्व दृष्टि भरी हुई है जो खास तो है ही, एक वैकल्पिक ज्ञान परंपरा का जीवंत दस्तावेज भी है, इसीलिए उसे बचाया जाना बेहद जरूरी है।[5]

वस्तुतः आदिवासियों की सरलता और अज्ञानता उनके लिए अभिशाप बनी हुई है। इसी कारण शोषकों ने उनकी चल–अचल संपत्ति को हड़प लिया है। यदि आदिवासियों का विकास करना है तो कुछ मुद्दों को ध्यान में रखना होगा। उनके लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था करनी होगी। इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करना होगा। यह कार्य प्रचार–प्रसार से नहीं आत्मीयता से करना होगा। उनको आर्थिक दृष्टि से सक्षम करना होगा। उनकी संस्कृति की रक्षा करनी होगी, उन्हें मुख्यधारा से संपृक्त करना है तो हम सभी को मिलकर यह पहल करनी होगी।

सन्दर्भ :–

1. वीरेन्द्र, कुमार (सं), आदिवासी विमर्श और हिन्दी साहित्य, पैसिफिक पब्लिकेशन, दिल्ली, संस्करण – 2013, पृ. 50–51
2. रघुवंशी, डॉ. महेन्द्र, हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन, विद्या प्रकाशन, कानपुर, संस्करण – 2021, पृ. 19–20
3. चौधरी, डॉ. प्रमोद, आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास, विद्या प्रकाशन, कानपुर, संस्करण – 2017, पृ. 15
4. सोनटक्के, डॉ. माधव व डॉ. संजय राठोड, भारतीय साहित्य और आदिवासी–विमर्श, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण – 2018, भूमिका से उद्धृत।
5. मीणा, गंगा सहाय, आदिवासी चिंतन की भूमिका, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण – 2021, पृ. 29

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 81-83

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वीरशैव संप्रदाय के प्रगतिवादी कवि–पाल्कुरिकि सोमनाथ

डॉ. डी. सत्यलता

आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम।

वह बारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध का समय था। दक्षिण भारत में विशेषकर कर्णाटक और आंध्र प्रदेश में एक ओर शंकराचार्य के द्वारा प्रतिपादित अद्वैत का ज्ञान मार्ग तथा कुमारील भट्ट का मार्ग और रामानुज के द्वारा प्रतिपादित विशिष्टाद्वैत का भक्ति मार्ग क्षीण दशा की ओर अग्रसर हो रहे थे। जनसाधारण के लिए ये तीनों मार्ग सुलभ ग्राह्य नहीं थे। इस अवसर पर बसवेसवार के द्वारा प्रतिपादित वीरशैव संप्रदाय का प्रचार जोरों से चलने लगा। इस संप्रदाय में वंश अथवा वर्ण, स्त्री–पुरुष, अमीर–गरीब, पंडित–पामर आदि का भेदभाव नहीं था। उसके अनुसार सब शिव भक्त बराबर है। यदि कोई शिव भक्त है तो बस आराध्य है, पूजनीय है ओर प्रसंसनीय है।

वास्तव में शिव से भी वीरशैव संप्रदायी माध्यम जाता था। समाज की ऊँच–नीच की भावना को मिटाकर उसे समान स्तर पर लाने के लिए प्रयत्न इन भक्तों ने उस सामंती शासन काल में यदि समाज में आदर प्राप्त की लिये तो इस में कोई आश्चर्य नहीं है। वईडों का बहिष्कार, कर्म–ज्ञान मार्ग का तिरस्कार, मात्र शिव भक्त के प्रति आदर, लिंग विभूति और रुद्राक्ष धारण के अतिरिक्त लिंग प्रसादित शास्त्र धारण और अपने संप्रदाय के प्रचार के लिए वीरता और उद्रेक के साथ दंड–नीति का भी प्रयोग करना इस संप्रदाय के मूल्य अंग होने के कारण, अनेक पीड़ियों से शोषित और दलित साधारण जनता का आवेग और प्रतिरोध की भावना भड़क उठी और इस भावना को प्रकट करने के लिए यह संप्रदाय उनके लिए एक अच्छा साधन–सा बन गया था। वीरावेश और वीरतापूर्ण कार्यों से ओत–पोत होने के कारण इस संप्रदाय का नाम कदाचित वीरशैव संप्रदाय चल पड़ा।

उस समय के दक्षिण भारत का इतिहास साक्षी है कि कर्णाटक के राजा बिज्जलई. सन् 1162 के शासन काल में मंत्री का पद भार सम्हालते हुए स्वयं बसवेश्वर ने अपने अधिकार के बाल पर वीरशैव संप्रदाय के प्रचार के लिए बाल प्रयोग ही नहीं किया, अपितु राजकोष का सारा पैसा इस कार्य के लिए खर्च भी किया था। बसवेश्वर के पहले, शैव धर्म पाशुपत और कालमुख आदि शाखा का प्रचार था जिसे परिष्कृत कर बसवेश्वर ने उसे वीरशैव का नाम दिया था और उसका प्रचार किया था। इस नामकरण के समय से ही इसकी उप शाखाएं हो गयीं; एक लिंगायत और दूसरी आराध्य। लिंगायत शाखा के प्रचारक स्वयं बसवेश्वर हो गए तो आराध्य के उनके समकालीन तेलुगु कवि मल्लिकार्जुन पण्डिताराध्य। लिंगायत कर्नाटक में अधिक न प्रचार में आने तो आराध्य आंध्र प्रदेश में। दोनों ने एक ही वीरशैव संप्रदाय का प्रचार किया। दोनों के उद्देश्य और सिद्धांत समान थे, फिर भी दोनों के प्रचार की प्रणालियाँ अलग अलग थीं। बसवेसवार उग्रवादी थे। पण्डिताराध्य शांत स्वभाव के बसवेश्वर भक्त अधिक थे। पण्डिताराध्य पंडित अधिक थे। संक्षेप में पहले दल के थे दूसरे नरम दल के।

बसवेश्वर और पंडिताराध्य के उपरांत वीरशैव संप्रदाय के विपुल प्रचार और प्रसार करने, उसे सुस्थिर दिशा प्रदान करने उसे जनसाधारण के साथ साथ पंडितों के दिलों में भी स्थान दिलाकर उसे साहित्य में स्थान दिलाने का श्रेय "पाल्कुरिकि सोमनाथ" कवि को है। इन्होंने बसवेश्वर और पंडिताराध्य दोनों का गहन अध्ययन किया। दोनों के गुणों की उन्होंने अपने में सम्मिलित कर लिया। बसवेश्वर की भक्ति और पंडिताराध्य की विदवत्ता इन दोनों गुणों के समन्वय के कारण वे अपने कार्यों में अधिक सफल हुए और वीरशैव संप्रदाय के प्रचार में दुगुना योग डे सके।

पाल्कुरिकि सोमनाथ का जन्म सन् 1240 में वर्तमान वारंगल जिले, आंध्र प्रदेश के पाल्कुरिकि नामक ग्राम में हुआ था। ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के कारण बाल्यावस्था में ही उन्होंने वेदांग, उपनिषद पुराण आदि संस्कृत ग्रंथों में प्रवीणता प्राप्त की। द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत, बौद्ध, जैन और लोकायत संप्रदाय के अतिरिक्त उन्होंने बसवेश्वर और पंडिताराध्य के द्वारा प्रतिपादित वीरशैव संप्रदाय का भी सम्यक अध्ययन किया। अपने पूर्ववर्ती वीरशैव की रचनाएँ जैसे; पंडिताराध्य का शिवतत्व सार और यथावाक्कुल अन्नामय्या के सर्वेश्वर शतक का उन्होंने गहन अध्ययन किया। उन्होंने केवल वीरशैव की रचनाएँ अच्छी लगी बल्कि उनका संप्रदाय भी अच्छी लगा। इस कारण उन्होंने इस में दीक्षा ली और इनको प्रचार में लग गए। सोमनाथ के तेलुगु की साहित्यक भाषा संस्कृत मिश्रित थी। बड़े–बड़े पद्य और गद्य की समासयुक्त पंक्तियों से काव्य रचे थे। उस समय तेलुगु साहित्य के सृजन का अर्थ था संस्कृत छंदों में काव्यों की रचना करना और संस्कृत के पुराणेएतिहासिक काव्यों का तेलुगु में रूपांतरित करना तथा संस्कृत काव्यों से इतिवृत्त लेकर तेलुगु में यथावत उनका प्रतिपादन करना मात्र था। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार की रचनाएँ संस्कृत जानने वाले सीमित संख्या के विद्वान लोगों तक ही परिमित होती थी।

पाल्कुरिकि सोमनाथ प्रकांड विद्वान थे। यदि वे तत्कालीन तेलुगु साहित्यक परंपरा का पोषण कर सकते थे तथा विद्वत मंडली में विपुल ख्याति प्राप्ति कर सकते थे। लेकिन सोमनाथ को अपने विचारों को जन–जन तक पहुंचाना था। अतः उन्होंने अपने विचारों को प्रकट करने के लिए जन भाषा की ही अपनाया। अपनी भाषा को उन्होंने "जानु तेलुगु "का नाम दिया। जनता में प्रचलित मुहावरों तथा कहावतों को जो साहित्य के लिए अनुपयुक्त समझे जाते थे। ग्रहण कर उन्होंने अपनी भाषा को जीवन बना दिया। संस्कृत छंदों में जकड़ी हुई और इस कारण अपने रूप को ही त्यागकर संस्कृत ही आत्मसात हो जाने वाली तेलुगु भाषा को तेलुगु छंदों ही जो कि लोकगीतों तथा लोकमानस तक ही सीमित थे, प्रयुक्त कर उसकी रक्षा की और उसे तेलुगुपन प्रदान किया संस्कृतमयी, संस्कृत के प्रभाव से प्रताड़ित तेलुगु भाषा जो संस्कार विहीन होकर पंडितों से अनादृत होकर अपनी स्वाभाविक गेय मधुरिमा से दूर कहीं लुप्त प्रयासी जा पड़ी थी, उसका पुनरुद्धार करके द्विपादों में पुनः उसे उसकी मधुरिमा प्रधान करके उसे साहित्यिक स्थान दिलाने वाले सोमनाथ की भाषा खालिस तेलुगु थी। उनके छंद तेलुगु के अपने थे, उनके इतिवृत्ति तेलुगु प्रदेश के थे, उनका साहित्य शुद्ध तेलुगु साहित्य था। पाल्कुरिकि सच्चे अर्थ में तेलुगु भाषी थे, तेलुगु भाषा के लिए उन्होंने जन्म लिया और तेलुगु जनता ने ही उन्हे अमर कवि बना लिया। पाल्कुरिकि सोमनाथ को अमर कवि बनाने का श्रेय तेलुगु जनता के साथ साथ उनके अपनाए हुए वीरशैव संप्रदाय को भी है क्योंकि उन्होंने इसी संप्रदाय से समाज में प्रगति लाने के साथ इन प्रगतिवादी विचारों के प्रचार के लिए साहित्य में भी प्रगतिवादी कार्य करने की आवश्यकता समझी थी।

पाल्कुरिकि सोमनाथ के तेलुगु में बीस ग्रंथ उपलब्द है। इन में बसवापुरणम् और पंडिताराध्य चरित्र, दो महाकाव्य है जो कि वीरशैव संप्रदाय के संस्थापक बसवेश्वर और मल्लिकार्जुन पण्डिताराध्य की जीवनी और उनके काव्यों से संबंधित है। पाल्कुरिकि सोमनाथ ने अपने काव्यों में जनसाधारण को स्मरण रखने के लिए संभवतः सरल नहीं होगा यह समझकर उन्होंने उसे दो भागों में करके दो पंक्तियों का छंद द्विपद्य का निर्माण किया जिसे उन्होंने साधारण से साधारण स्त्री–पुरुष के भी स्मरण करने और गाने योग्य बना दिया। पाल्कुरिकि सोमनाथ ने इतिवृत्ति के संभानध में स्वतंत्र होकर, परंपरा से हटकर, संस्कृत इतिवृत्तियों का परित्याग कर जन साधारण में तथा लोकगीतों में प्रचलित समसामयिक देशी गाथाओं को जो कि जन–जन का इति के मानस में बैठी हुई थीं। अपने काव्यों का इतिवृत्त बनाकर जनता का हृदय जीत लिया और उन्हें आकृष्ट कर लिया था। उदाहरण के लिए तीसरे आश्वासन का एक प्रसंग हैं :–

"तल्लिगल्गिनानेलतपसिगानिच्चु –
दल्लिगल्गिनानेलतल्जडलगट्टू –
दल्लियुन्नविषम्बुद्रावनेलिच्चु –
दल्लियुंडिनदोल्लुदाल्पनेलिच्चु –
दल्लिपायमूलनेलधरिइंपनिच्चु –
दल्लिबूडिदयेलताबूयनिच्चु –
दल्लिबुच्चुनेभुविदनयुनिदिरिय–
दल्लिबुच्चुनेसुतुवाल्लकटिकिनि –
दल्लिलेकुंडिनतनयुडुगान –गल्गिना
प्रल्लदुडैइन्निवाटलकु बच्चे–

शैवभक्ति के भावात्मक उद्वेलन, संवेगात्मक तीव्रता और तन्मयता उनके सभी काव्यों का बिन्दु हैं। पालकुरिकि सोमनाथ ने अपने काव्यों में साधारण जीवन बितानेवाले शैव पात्र को लेकर उनकी चारित्रिक द्रुढ़ता और स्वभाव की सहजता को मूर्त रूप दिया है। वे शिवभक्तों को शिव के समान मानकर उनकी आराधना करते हैं। पालकुरीकि सोमनाथ की गिनती काव्यकला की दृष्टि से तेलुगु साहित्य के विकास में विशेष उल्लेखनीय हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. तेलुगु साहित्य संदर्भ और समीक्षा –एस. टी.नरसिंहाचारी।
2. वीरशैव संप्रदाय के प्रगति वादी कवि –एस. टी.नरसिंहाचारी।

ADDRESS :

Dr. D. Satya Latha

39-14-30, Flat No-2,1st Floor, Mona Heights, NH-16,

Madhavadhara, Near D Mart, VISAKHAPATNAM – 530007, ANDHRAPRADESH] INDIA

CELL : 9885910709

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 84-87

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

लोक गीतों में नारी की मनोवेदना की अभिव्यक्ति; रिसर्च एण्ड डेवलपमेण्ट योजनान्तर्गत उच्च शिक्षा

(उ. प्र. सरकार द्वारा अनुदानित शोध के अंतर्गत)

डॉ. ज्योति शर्मा

प्रोफेसर, साहूराम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।

सारांश :-

नारी–मन विशेष रूप से संवेदनशील होता है। जीवन की सारी विडम्बनाओं से उसे उलझना एवं सुलझना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र की महिला हो या शहरी क्षेत्र की, मन की कोमलता एवं संवेदनशीलता उसे उस बिन्दु तक ले जाती है, जहाँ वह अपने भावों का दिग्दर्शन या अभिव्यक्ति लोकगीतों द्वारा करती है। जीवन के सुख–दुःख के उद्गारों को प्रकट करने के लिए जो संगीत अपने आप मुखरित हो उठता है उसी के हम 'लोकसंगीत' कहते हैं। इसमें न स्वर का बंधन है, न ताल की नियम। यह तो अपने तन की भावनाओं का स्वरित रूप है, जिसमें प्रधानता शब्दों की है, जो मन की भावनाओं को मुखरित करते है। जनजीवन में जहाँ आनंद उल्लास है, वहाँ विरह वेदना भी है। मिलन के सुखद क्षण है तो प्रतीक्षा की लंबी घड़ियाँ भी। तन्मयता से अपनी मस्ती में चाहे वह दर्द हो या आनंद., नारी जीवन की अनुभूतियाँ, उनके कोमल कंठों के माध्यम से अभिव्यक्त होकर लोकगीतों में शत–शत रूपों में मुखरित हुई है।

मुख्य बिंदु :- लोकगीत, वेदना, नारी, लोक संस्कृति।

प्रस्तावना :-

प्राचीनकाल से ही मनुष्य अपने–अपने स्तर से सांगीतिक मनोरंजन करते रहे हैं। विभिन्न प्रदेशों की महिलाओं द्वारा अपनी–अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं, रहन–सहन तथा भाषा के अनुसार जिस संगीत प्रकार का प्रयोग किया गया, वह वहाँ का लोक संगीत कहलाया। इस प्रकार लोक संगीत लोक संस्कृति का प्रतिविम्ब है, लोक संगीत सरल व सुबोध महिलाओं की वाणी है, अतः उसमें सरलता का होना स्वाभाविक ही है। दूसरे शब्दों में–जब सहज अनुभूति के साथ सरल भाषा और शब्दों के माध्यम से नारी ने अपने हृदय के भावों को प्रकट किया, तो वह लोक गीत कहलाया। वस्तुतः लोक गीत हृदय का उद्गार है एवं स्वर लहरी एक अद्भुत लोक स्वर विधान है जोकि हृदय से अनायास ही फूट पड़ता है। सरलता, सरसता, माधुर्य और स्वाभाविकता आदि उसकी विशेषताएं है।

एकता में अनेकता समेटे भारत के भिन्न–भिन्न प्रदेशों के असंख्य विभिन्न लोक संगीत सैकड़ों वर्षो की

प्रागैतिहासिकता को अपने में संजोयें हुए हैं। किसी भी देश की संस्कृति का पता वहाँ की लोक कलाओं से चलता है। लोक गीतों का कब किसने रचा यह नहीं बतलाया जा सकता है, इसका रचियता अज्ञात होता है। कभी किसी शुभ अवसर पर आनन्द मग्न होकर किसी व्यक्ति ने एक लाईन बोली होगी, दूसरे ने दूसरी, तीसरे ने भी एक कड़ी जोड़ दी होगी और इसी प्रकार लोकगीत तैयार हो गया होगा।

लोक गीत लोक जीवन की ही देन है। लोक गीतों की परंपरा लोक जीवन की एक अचेतन क्रिया के रूप में चली आ रही है, लोक गीत की कथा वस्तु पर देश, कालपात्र का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। लोक गीतों में महिलाओं के स्निग्ध और निश्छल भावावेश की संपदा निहित रहती है। इन लोक गीतों की गायिकाएं भी महिलाएं ही होती है जो त्यौहारों, पर्वो, विवाह, पुत्र जन्म आदि के उल्लासमय वातावरण के क्षणों में पंरपरा से चले आए गीत गाया करती है। गीतों में हमें नाना रूपात्मक घटनाएं मिलेगीं और उन्ही से संबधित गीतों के विषय भी रहेगें और शब्द भी। महिला लोकगीतों ने भी अनेकानेक रूपों में हर्ष–विषाद, आशा–निराशा, सुख–दुखव्यथा आदि का दिग्दर्शन बड़े ही अच्छे ढंग से होता है। जीवन के सभी प्रसंगों पर नारी कण्ठ से गीत मुखरित होते हैं। यह कहना उचित होगा कि महिला लोक गीतों में मानव जीवन का वास्तविक और संवेदनशील रूप स्वरूप शब्दों और स्वरों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। मानव जीवन की समस्त गतिविधियों, समस्त क्रियायें और प्रतिक्रियायें, चिन्तन पद्धति और जीवन दर्शन की सहज, स्वाभाविक और सफल अभिव्यक्ति इन गीतों में स्वर तथा लय का सहारा लेकर प्रतिपादित हुई है। लोकगीत जनमानस से प्रस्फुटित लोक भावनाओं की वह परिपाटी है, जिसमें नारी मन के उद्‌गार, परिजनों की प्रशंसा, उलाहना, सौन्दर्येकरण वेशभूषा, क्षेत्रीय स्थानों की विशेषताओं का सुमधुर स्वरों के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया जाता है। अगर हम लोक गीतों के मनोविज्ञान की ओर दृष्टिपात करें तो यह दर्शित होता है कि लोकगीतों में स्त्री प्रधानता होने का कारण, पुरूष प्रधान समाज में परंपराओं के निर्वहन की जिम्मेदारी नारी के कधों पर डाली गयी है। इसलिए पारंपरिक अनुष्ठानों में गाये जाने वाले गीत भी स्त्री के हिस्से में आए। यह विचार करने की आवश्यकता है कि महिलाएं जिन परंपराओं के निर्वहन हेतु गीत गाती है वो परंपराएं आखिरकार एक पितृसतात्मक समाज के पोषण के लिए ही अस्तित्व में आई। यदि इन लोक गीतों में महिला पितृसत्ता का विरोध करती तो उन्हें लोकगीत गाने की अनुमति ना मिलती।

नारी वेदना के स्वर :–

स्वयं नारी ने नारी की संवेदनाओं को अपने शब्दों में पिरोकर गीतों की रचना की है, उससे नारी मन की व्यथा, पीड़ा की जो अनुभूति होती है, यह यकीकन आज भी पीड़ादायक है। लोकगीतों में महिलाओं के चित्रण को विभिन्न श्रेणियों में विभक्त कर सकते है।

पुत्र के रूप में भले ही कोई उसे दिल खोलकर स्वीकार ना करे, परन्तु सत्यता है कि आज भी कई परिवार है जहाँ पर पुत्री के जन्म होने पर सब मायूस हो जाते है, परिवार में अंधेरा छा जाता है। मां बनती स्त्री अपने कोख को ही कोसने लगती है। कन्या जन्म पर पिता का मुँह लटक जाता है यह लोक गीतों मे दर्शित होता है।

'जब मोरे बेटी होली हलीं जनमवॉ।
अरे चारों ओरियाँ घेर ले अन्हार रे ललनवा।।'

पिता को कन्या के जन्म पर पछतावा है कि पहले ज्ञात होता तो उसे गर्भ में ही मार दिया होता। अवधी

लोकगीत में इसका वर्णन है :–

'होइगा वियाह परासिर सें दुर नौ लाख दा इज थोर।
भितराँ कइ माँ गुबाहर दइमारीं सतरू के धिया जिनि होइ।।'

नारी का समस्त जीवन पितृसत्ता, पति सत्ता एवं उसके पश्चात् पुत्र सत्ता के अंतर्गत ही बीत जाता है किन्तु वह कभी भी इस शोषण के खिलाफ खड़ी नहीं होती। सामाजिक कुरितियों को लोकगीतों के माध्यम से बतलाया तो गया है परन्तु उसके निदान हेतु कुछ भी वर्णित नहीं है तथा पितृ सत्तात्मक वर्चस्व लोक साहित्य में हमेंशा से ही विद्यमान रहा है। अगर इसके विपरीत किसी पुत्र का जन्म परिवार में होता है तो जच्चा के प्रति व्यवहार एवं माता–पिता की मनोस्थित पूरी तरह से बदल जाने का चित्रण भी लोक गीतों में किया गया है।

'जिस दिन लल्ला तेरा जनम हुआ हुई है स्वर्ण की रात।
सूत्रों के पतंल गलल्ला अम्मावी पौढे, सुरभि का घृत मंगाय।'

कई परिवारों में विवाह के लिए कन्या की सहमति अथवा असहमति का कोई महत्व नहीं है। दूसरे घर में जाने का भय, अपनों से दूर जाने का दुखः, भाई की तरह पालन न करने की पीड़ा को निम्न लोकगीत के माध्यम से महिलाएँ गाती है।

'काहे की ब्याही विदेश, अरे लखिया बाबुल मोहे।
हम तो बाबुल तेरी खुटें की गइया
भइयों को दिनो बाबुल महला दुमहला
हमका दियो पर देश।'

बचपन से ही नारी को यह समझाया जाता है कि वह पराया धन है उसका घर यह नहीं ससुराल है। 'भइया तेरे अंगना की ऐसी चिड़िया है रातभर का बसेरा है, सुबह उड़ जाना है। बाबुल का घर यह बहना, कुछ दिन का ठिकाना है।'

विवाह के बाद नारी का मन नहीं लगता है माँ से गुहार लगाती है कि माँ मेरे पिता को या भाई को लिवाने भेज दो क्योंकि सावन आ गया है लेकिन माँ उसे बहानें बनाती है कि तेरा पिता बुढा है और तेरा भाई छोटा है। अतः वह लेने नहीं आ सकते, इस पर वह कहती है वह मेरा बचपन भेज दो, जो मैने मायके में बीतायें है तो माँ कहती है कि बेटी वह गए दिन वापिस नहीं आते है। अमीर खुसरों द्वारा रचित यह मार्मिक गीत लोकगीत के रूप में गाये जाने लगा :–

अम्मा मोरे बाबा को भेजो रे, कि सावन आयां। बेटी तेरा बाबा तो बुढा रे, कि सावन आया।'

पत्नी के रूप में :–

नारी का प्रधान गुण पति व्रत धर्म हैं। वह मन–वचन और कर्म से पति परायणा होती है, पति फौज में हो या दूर कहीं नौकरी करता हो तो वह उसका इन्तजार करती है। ऐसा ही प्रसंग लोक गीतों के माध्यम से प्रस्फुटित होता है।

'आई गयो मधुमास सजन मोरे।
आजहु नहीं आये सजन मोरे'।।

बुंदेली लोकगीत में भी इसी तरह का वर्णन है :–

'पिया न मोरे आये हो।
बैठी वाट निहारे।।'

कई परिवार में सास तथा ननद से तानें तथा तिरस्कार मिलता है तब वह अपने पति से ननद के बारे में शिकायत करती है और बताती है कि मेरी ननद ही सास को भड़काती है :–

'ननदी हमें नहीं भावे सुनो जी राजा।
मौका मिले जब सासु जी को सिखावे।।'

माता के रूप में :–

लोक नारी जीवन की सार्थकता संतान होने में मानता है। बाँझ स्त्री को तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है।

'लाल पियरना पहिरली, चउकनाबइठली हो,
ललना गो दियाना खेलवनी बलकवा, मोर जनम अकारथ हो।'

विधवा के रूप में :–

लोक गीतों में विधवा का जीवन अत्यन्त मार्मिक है, हृदय द्रावक है।

"चलत, पिरान, कैसे रोये डपिरिया तुम कोना रोय हूँ पिरभु अपने को रोयऊ।"

निष्कर्ष :–

समय के साथ–साथ प्रत्येक लोक संस्कृति में परिवर्तन होते रहते है और उसी के अनुरूप उसके लोक गीतों में परिवर्तन होता रहता है। लोक गीतों के माध्यम से उसमें विद्यमान स्त्री के वेदना के साथ ही साथ उसकी इच्छाएं भी व्यक्त हुई है। लोक गीतों में नारी ने अपने मन की व्यवस्था एवं आकाक्षाओं को बहुत ही सरल एवं सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार अनेकानेक लोक गीतों में नारी वेदना, आकाक्षाओं तथा विरोध के स्वर बिखरे हुए हैं।

संदर्भ :–

1. डॉ0 उषा पाण्डेय–मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में नारी की भावना।
2. डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद–लोक साहित्य और संस्कृति।
3. डॉ0 उदय नारायण तिवारी–भोजपुरी भाषा और साहित्य।
4. डॉ0 त्रिलोचन पाण्डे–लोक साहित्य का अध्ययन।
5. जय प्रकाश–नारी शोषण।
6. डॉ0 श्याम सुन्दर–हिन्दी महाकाव्य में नारी चित्रण।
7. डॉ0 विद्या बिंदु सिंह–अवधी लोकगीत विरासत।
8. डॉ0 राजेश श्रीवास्तव–लोक साहित्य।
9. श्याम परमार–भारतीय लोक साहित्य।

पता :– 72, प्रभात नगर, बरेली, पिन–243001

ईमेल :- jyoti.sharma2317@gmail.com, मोबाइल नं0 9368103998 / 9997160669

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 88-95

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

E–GOVERNANCE, ROLE, CHALLENGES, TOOLS AND CURRENT STATUS OF SMART CITY IN INDIA

RAHUL SAXENA,

NAKUL SHARMA

Ph.D. Pursuing – POLITICAL SCIENCE, DR BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY, AGRA

Abstract :-

E-governance plays a crucial role in the development and implementation of smart cities, utilizing information and communication technologies (ICT) to transform traditional governance processes, enhance efficiency, and improve service delivery to citizens. This abstract explores the role and challenges of e-governance in smart cities, along with the tools used and the current status of smart city development. E-governance serves as a foundational element for smart cities, enabling efficient administration, seamless citizen engagement, and data-driven decision-making. It facilitates the integration and coordination of various smart city systems and services, such as transportation, energy management, waste management, and public safety. Through e-governance, smart cities aim to provide transparent and accessible services, enhance citizen participation, and enable effective governance.Implementing e-governance in smart cities presents several challenges.

These challenges include : Digital Divide, Data, Security and Privacy, Interoperability and Integration, Governance and Policy Frameworks.Various tools and technologies support e-governance in smart cities. These include : Citizen Service Portals, Digital Identity and Authentication, Open Data Platforms, Data Analytics and Decision Support Systems, etc. The current status of smart city development showcases progress in various regions, with dedicated programs and initiatives driving transformation and paving the wayfor sustainable and citizen-centric urban environments.

Introduction :-

E-Governance and Smart Cities :

E-Governance and Smart Cities are two interconnected concepts that have emerged as powerful drivers of technological advancement and urban development in the modern world. They both seek to leverage digital technologies to enhance the efficiency, transparency, and quality of public services,

ultimately improving the lives of citizens.

E-Governance :-

E-Governance, short for Electronic Governance, refers to the use of information and communication technologies (ICTs) to transform traditional government processes into digital systems. It involves the integration of various government functions, services, and interactions with citizens and businesses through digital platforms. The primary goal of e-governance is to simplify and streamline administrative processes, reduce bureaucratic inefficiencies, and promote open and inclusive decision-making.[1]

Key features of E-Governance include :-

- **Digital Services :-** Offering government services online, such as filing taxes, applying for permits, and accessing public records, to increase accessibility and convenience for citizens.
- **Data-driven Decision Making :-** Utilizing data analytics and insights to make informed policy decisions and improve service delivery.
- **Transparency and Accountability :-** Providing transparent access to government information, budgets, and decisions to foster trust between the government and citizens.
- **Citizen Engagement :-** Facilitating citizen participation in decision-making processes through digital channels, such as online surveys and public forums.
- **Interoperability :-** Ensuring seamless communication and data sharing between different government departments and agencies.

Smart Cities :-

A Smart City is an urban area that integrates digital technologies, data analytics, and IoT (Internet of Things) solutions to improve the quality of life for its residents, enhance sustainability, and optimize resource management. The concept revolves around using technology to address urban challenges, such as traffic congestion, energy consumption, waste management, and public safety.[2]

Smart Cities Mission is an initiative by the Indian Government to improve people's living quality in cities and towns by using best practices, information and digital technology, and more public-private partnerships. The smart city mission launch date is June 25, 2015, and Prime Minister NarendraModi launched the initiative. The Union Ministry of Urban Development is responsible for implementing the mission. Also, a Special Purpose Vehicle (SPV) in each state is created, headed by the CEO; they look after the implementation of the mission. To make the mission successful, funding of Rs 7,20,000crore is provided.[3]

In the five rounds, 100 cities are selected countrywide. These cities will be upgraded as per the area development plan. All the states of India are participating in the programme, leaving West

Bengal. This state has not participated due to political differences between the centre and state government. In Maharashtra, Mumbai and Navi Mumbai have withdrawn their participation.[10]

Key features of Smart Cities include :

- **Intelligent Infrastructure :-** Deploying smart systems to manage transportation, energy grids, water supply, waste management, and other critical services efficiently.
- **IoT and Connectivity :-** Utilizing sensors and devices connected through the internet to gather real-time data and enable data-driven decision-making.
- **Sustainable Practices :-** Focusing on eco-friendly initiatives to reduce the city's carbon footprint, promote green energy, and ensure environmental sustainability.
- **Smart Mobility :-** Implementing intelligent transportation systems to enhance mobility, reduce traffic congestion, and promote public transportation usage.
- **Safety and Security :-** Using technology to improve public safety through advanced surveillance, emergency response systems, and disaster management.

The integration of E-Governance with Smart Cities creates a dynamic and interconnected urban ecosystem, where citizens actively participate in governance and technology-driven solutions lead to a more sustainable, efficient, and livable urban environment. As these concepts continue to evolve, they hold the promise of reshaping cities and governance to meet the challenges of the 21st century.[4]

ROLE OF E-GOVERNANACE IN SMART CITY :-

E-governance plays a crucial role in the development and functioning of a smart city. It leverages digital technologies to enhance government services, improve efficiency, and provide better access to information and resources for residents. Here are some key roles of e-governance in a smart city:

- **Digital Service Delivery :-** E-governance enables the delivery of government services through online platforms, making it convenient for citizens to access and avail of various services such as applying for permits, licenses, or certificates, paying bills, registering complaints, and accessing information. This reduces the need for physical visits to government offices and saves time for both citizens and government officials.
- **Citizen Engagement and Participation :-** E-governance platforms facilitate citizen engagement and participation in decision-making processes. It provides channels for citizens to express their opinions, participate in surveys and polls, provide feedback, and contribute to policy formulation. This involvement leads to more inclusive governance and better representation of citizens' needs and preferences.
- **Open Data and Transparency :-** E-governance promotes transparency by providing access

to government data and information. Open data initiatives make relevant data available to the public, allowing citizens, businesses, and researchers to utilize it for various purposes, such as developing applications, conducting analysis, and fostering innovation. Transparent governance helps build trust between the government and the citizens.

- **Smart Infrastructure Management :-** E-governance assists in the efficient management of smart city infrastructure. It enables real-time monitoring, data collection, and analysis of various systems like transportation, energy, water, waste management, and public safety. This data-driven approach helps optimize resource utilization, identify areas for improvement, and make informed decisions for sustainable development.
- **Integrated Service Delivery :-** E-governance facilitates integration and coordination among different government departments and agencies. It enables the sharing of information, workflows, and processes across various departments, reducing redundancy and enhancing efficiency. Integrated service delivery ensures seamless transactions and a holistic approach to problem-solving.
- **Public Safety and Emergency Management :-** E-governance systems support public safety and emergency management in smart cities. These systems can provide real-time alerts, emergency notifications, and information dissemination during crises or natural disasters. E-governance platforms also aid in coordinating emergency response efforts among different agencies, ensuring quick and effective actions to safeguard citizens.
- **Smart City Planning and Development :-** E-governance plays a vital role in smart city planning and development processes. It facilitates the collection and analysis of data related to urban infrastructure, citizen preferences, and environmental factors. This data-driven approach helps policymakers make informed decisions about resource allocation, urban development strategies, and the implementation of smart solutions.

Overall, e-governance is a fundamental enabler of smart cities, providing the necessary digital infrastructure, tools, and platforms to transform traditional governance systems into efficient, inclusive, and citizen-centric models.[5]

CHALLENGES OF E-GOVERNANACE IN SMART CITY :-

E-governance in smart cities presents various challenges that need to be addressed to ensure its effective implementation. Here are some key challenges associated with e-governance in smart cities :

- **Digital Divide :-** E-governance initiatives rely on the availability of digital infrastructure and widespread access to the internet. However, there may be significant disparities in internet penetration and access to technology among different segments of the population. Bridging the digital divide is

crucial to ensure that all citizens can benefit from e-governance services.

- **Privacy and Data Security :-** Smart cities generate a vast amount of data through sensors, cameras, and other connected devices. Ensuring the privacy and security of this data is a significant challenge. E-governance systems must have robust data protection measures in place to safeguard personal information and prevent unauthorized access or misuse.
- **Interoperability and Integration :-** Smart cities consist of various interconnected systems and subsystems, such as transportation, utilities, healthcare, and public safety. Integrating and interoperating these systems pose challenges due to differing data formats, protocols, and standards. E-governance initiatives need to address these technical hurdles to enable seamless information exchange and collaboration between different city departments.
- **Governance Structure :-** Implementing e-governance in smart cities requires a well-defined governance structure involving multiple stakeholders, including government agencies, private sector partners, and citizens. Coordinating and managing these diverse entities can be complex and may require clear policies, regulations, and collaborations to ensure effective decision-making and service delivery.
- **Citizen Engagement and Participation :-** While e-governance aims to enhance citizen engagement, ensuring meaningful participation of citizens can be challenging. Overcoming issues such as digital literacy, access to technology, and ensuring diverse representation requires focused efforts to make e-governance inclusive and accessible to all segments of society.
- **Infrastructure Challenges :-** The success of e-governance initiatives relies on robust and reliable digital infrastructure. However, smart cities may face challenges related to connectivity, network congestion, power supply, and maintenance of hardware and software systems. Adequate investment and planning for infrastructure development are necessary to overcome these challenges.
- **Resistance to Change :-** Introducing e-governance in smart cities often involves significant changes in existing processes, roles, and responsibilities. Resistance to change from stakeholders who are accustomed to traditional systems can hinder the adoption and implementation of e-governance initiatives. Effective change management strategies and stakeholder engagement are crucial to address this challenge.

Addressing these challenges requires a holistic approach involving technological, regulatory, and social considerations. Collaboration between government, industry, and citizens is essential to overcome these hurdles and realize the full potential of e-governance in smart cities.[6][9]

TOOLS OF SMART CITY :-

Smart cities utilize a wide range of tools and technologies to improve efficiency, sustainability, and

the quality of life for their residents. Here are some common tools used in smart city initiatives :

- **Internet of Things (IoT) Devices :-** IoT devices play a crucial role in collecting and transmitting data from various sources in the city. These devices include sensors, actuators, and connected devices that monitor and control infrastructure, such as traffic lights, waste management systems, air quality sensors, and water meters.
- **Big Data Analytics :-** Smart cities leverage big data analytics to process and analyze the vast amount of data generated by IoT devices. Analyzing this data helps city authorities gain insights into patterns, trends, and anomalies, enabling them to make informed decisions and optimize city operations.
- **Smart Grids :-** Smart grids integrate advanced communication and monitoring technologies into traditional power grids. This allows for efficient management of energy distribution, load balancing, and demand response mechanisms. Smart grids also enable the integration of renewable energy sources and facilitate the adoption of electric vehicles.
- **Intelligent Transportation Systems (ITS) :-** ITS involves the use of technologies to improve traffic management and enhance the efficiency of transportation systems. This includes intelligent traffic lights, real-time traffic monitoring, smart parking systems, and public transportation management systems.
- **Smart Buildings :-** Buildings equipped with automation and control systems contribute to energy efficiency and optimize resource consumption. These systems may include smart lighting, HVAC (heating, ventilation, and air conditioning) systems, occupancy sensors, and energy management systems that monitor and adjust energy usage based on occupancy and environmental conditions.
- **Citizen Engagement Platforms :-** These platforms enable residents to participate actively in the decision-making processes of a smart city. Through mobile apps or web portals, citizens can access information, report issues, provide feedback, and engage in community discussions.
- **Smart Waste Management :-** Technologies like smart bins, RFID (Radio Frequency Identification) tagging, and sensor-based waste collection systems optimize waste management processes. They help monitor waste levels, optimize collection routes, and encourage recycling and sustainability.
- **Intelligent Street Lighting :-** Smart street lighting systems use sensors and adaptive lighting controls to adjust lighting levels based on real-time conditions. This helps save energy, reduce light pollution, and improve safety in the city.
- **Integrated Command and Control Centers :-** These centers act as centralized hubs for monitoring, controlling, and coordinating various smart city systems. They consolidate data from

different sources, enable real-time monitoring and analytics, and facilitate efficient emergency response and resource allocation.

These tools, along with others, form the foundation of a smart city, creating an interconnected ecosystem that enhances urban services, sustainability, and the overall quality of life for residents.[7]

CURRENT STATUS OF SMART CITY IN INDIA :-

The Government of India launched the Smart Cities Mission in 2015, which aims to develop 100 smart cities across the country.As of February 16, 2022, the status of Smart City Mission is as follows[11]:-

Particulars	Numbers
Cities	100
Projects	5151
Amount	Rs 2,05,018 crore
Tendered	6809 Projects / Rs189,737 crore
Work orders issued	6222 Projects / Rs 164,888 crore
Work completed	3480 Projects / Rs 59,077 crore

It's important to note that the progress and implementation of smart city projects varied among different cities, and some faced challenges in terms of funding, coordination, and technology adoption.

Conclusion :-

E-governance and smart city initiatives in India have shown great promise in transforming the country's governance and urban landscapes. However, challenges remain, including addressing the digital divide, ensuring data security and privacy, and adapting to rapidly evolving technologies. Continued investments in infrastructure, cybersecurity, and capacity building are essential to sustain and scale these initiatives to benefit all citizens and propel India towards a more digitally inclusive and sustainable future.

REFERENCES :-

1. https://vikaspedia.in/e-governance/national-e-governance-plan/concept-of-e-governance.
2. D. Copenhagen, What exactly a smart city? (Oxford University Press, New Delhi, India, 2000).
3. Ministry of Urban Development, Govt. of India. Smart Cities – Mission Statement and Guidelines.
4. Kumar,T. M. Vinod,(2014), E-Governance for Smart Cities, Advances in 21st Century Human Settlements

book series (ACHS), pp-1-43.

5. TripathyParitha (2015), "E-Governance is a Critical Success Factor for any Indian Smart Cities"
6. Sharma Payal and Mishra Anshuman, (2011), E-Governance in India is the Effectual and Challenging Approach to Governance, Int.J.Buss.Mgt.Eco.Res., Vol 2(5), PP-297-304
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Smart_city
8. Singh, Aarti (2014), an Impact Study on E-Governance in India (Applications and Issues), Asian Journal of Technology & Management Research, Vol-04, PP-06-
9. Dr.Vibhuti, TyagiDr. Ajay Kumar, (2017), E- Governance in India – Concept, Challenges and Strategies, International Journal of Scientific, Technology & management, Vol. 6, issue 2, PP-820-828.
10. Pranav Suresh, Suresh Ramachandran, 2016, Development of Smart Cities in India –Dream to Reality, Scholedge International Journal of Business Policy & Governance, Vol.03, Issue 06, PP-73-81.
11. https://www.magicbricks.com/blog/smart-cities-mission/127407.html
12. Das Rama Krushna, Misra, Harekrishna (2017) "Smart city and E-Governance: Exploring the connect in the context of local development in India", Fourth International Conference on e Democracy & e Government (ICEDEG), At Quito, Ecuador, April 2017.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 96-99

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

युगप्रवर्त्तक निराला

डॉ. दीपाली शर्मा

सहायक आचार्य, हिन्दी, स.ध. राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर।

शोध-सार :-

भावना, ज्ञान और कर्म की त्रिवेणी ने निराला को युगप्रवर्त्तक साहित्यकार के रुप में स्थापित किया। रचनात्मक वैविध्य, संवेदना के अनेक रंग विविध काव्य रुप, नवीन विषय, वैयक्तिकता, सामाजिक रुढ़ियों का विरोध उनके साहित्य में मुखरित होता है। निराला विद्रोही कवि थे उनका विद्रोह व्यष्टि–समष्टि के संबंध सूत्रों से संग्रंथित अकलुश अभिव्यक्ति है, जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण मानवता का विकास और कल्याण है। भाव, भाषा, छंद मुक्ति के लिए निराला को सम्पादकों, सामाजिक परम्परा प्रेमियों, राजनीतिज्ञों के विरोध का सामना करना पड़ा। परन्तु युग स्रष्टा निराला ने हार नहीं मानी। विभिन्न विरोधी तत्त्वो का सामंजस्य, उनके काव्य में भी कोमल–कठोर, स्थूल–सूक्ष्म, वीर–करुण, लघु–विराट, भाव–विचार, माधुर्य–ओज आदि मनोभावों के सूक्ष्म चित्रण के रुप में परिलक्षित होता है। महान, विराट, लघु, शूद्र सभी निराला के स्नेह के अधिकारी हैं। काव्य में प्रचलित प्रगतिशीलता के बहुत पहले निराला ने प्रगतिशील रचनाएं लिख युगस्रष्टा के रुप में पाठकों को उपस्थिति दर्ज कराई।

शोध-पत्र :-

भावना, ज्ञान और कर्म जब एक सम पर मिलते हैं तभी युग प्रवर्त्तक साहित्यकार का जन्म होता है। निराला युग प्रवर्त्तक साहित्यकार थे। उनका रचनात्मक वैविध्य, भाषा और संवेदना के अनेक रंग, विविध काव्य रुपों का प्रयोग उन्हे श्रेष्ठ साहित्यकार के रुप में स्थापित करता है। जिस प्रकार पर्वत पुत्र प्रवाह को अपनी सहोदर शिलाओं से टक्कर लेनी पड़ती है, संघर्ष करना पड़ता है उसी प्रकार साहित्यकार सृजन, मनीषी युग प्रवर्त्तक द्रष्टा को भी समाज की रुढ़ियों उसकी जड़पाषाणी प्रवृत्तियों से जूझना पड़ता है। निराला का सम्पूर्ण जीवन तथा साहित्य, संघर्ष प्रस्फुटित, आवेगपूर्ण सर्वप्लवी ऐसा प्रवाह था जो न केवल स्वेदकणों से वरन् अपने रक्तकणों से उसकी गति और विस्तार में तीव्रता व गहनता भरता चलता था। जीवन की कठिनतम परिस्थितियाँ, विरोध के चक्रव्यूह उपेक्षापूर्ण अनर्गल आरोप भी निराला के साहित्यिक जीवन को बाधित नहीं कर पाते। जो साहित्यकार युग की संस्कारच्युत, रुढ़ तथा अधोमुखी बाधाओं के विष को पीकर उसे अमृत में बदल देने की क्षमता रखता है वही युग प्रवर्त्तक का शिवत्व प्राप्त करता है। निराला अपने युग के शिव हैं :–

''और कोई, कवि तुम एक तुमहीं,
बार–बार झेलते, सहस्रोंवार निर्मम संसार के।''

द्विवेदी युगीन कवि निर्देशित सुधारों और बाह्य सिद्वान्तों से ही जूझते रहे, उनमें अन्तर्बाह्य सांमजस्य की क्षमता नहीं दिखाई दी परन्तु हिन्दी साहित्य में आत्माभिव्यक्ति का माध्यम स्वयं को मानने वालों के अगुआ निराला दिखाई देते हैं वे कहते भी हैं :–

''मैंने मैं की शैली अपनाई, देखा दुःखी एक निज भाई।
दुःख की छाया पड़ी हृदय में, झट उमड़ वेदना आई।।'' (परिमल)

हिन्दी का यह पहला स्वर है जिसमें कवि के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा का आग्रह है।

निराला ने परिवार, जाति, समाज तथा देश की सभी संकीर्णताओं के विरुद्ध केवल शाब्दिक प्रहार ही नहीं किये अपितु अपने आचरण द्वारा उसे चरितार्थ भी किया है। उन्होंने अपनी एकमात्र कन्या का विवाह अपनी जाति से परे कर संकीर्णता से मुक्ति दिखाई :–

तुम करो ब्याह,
तोड़ता नियम मैं,
सामाजिक योग
के प्रथम लग्न
के पढूंगा स्वयं मंत्र,
यदि पंडित जी होंगे स्वतन्त्र। (सरोज स्मृति)

'सरोज स्मृति' में सरोज (पुत्री) के यौवन सौन्दर्य का जो निरपेक्ष एवं वीतराग वर्णन निराला ने किया है वह हिन्दी में ही नहीं वरन विश्व साहित्य में अकेला है।

निराला विद्रोही थे उनका विद्रोह व्यष्टि समष्टि के संबंध सूत्रों से संग्रथित अकलुश अभिव्यक्ति है जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण मानवता का विकास और कल्याण है। निराला काव्य शक्ति, ओज और पौरुष का समन्वय है। अपने युग की सभी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक सभी क्षेत्रों की गलत व निर्जीव मान्यताओं व रुढ़ संस्कारों का विरोध किया। साहित्य भाव, भाषा, छंद शैली पर भी उन्होनें परम्परा से विद्रोह किया।

हृदय कपाट खोल दे,
कर–कर कठिन प्रहार।
आए अभ्यंतर संयत चरणों से नव्यप्रभात। (उद्बोधन)

काव्य की बंधनों से मुक्ति के संबंध में उनका विद्रोही स्वर दिखाई देता है :–

''आज नहीं है,
मुझे कुछ और चाह,
अर्द्धविकच इस हृदय कमल में,
आ तू प्रिये!
छोड़ कर बंधनमय छंदों की छोटी राह।''(परिमल)

भाव, भाषा छंद मुक्ति के लिए निराला को सम्पादकों, सामाजिकों परम्परा प्रेमियों, राजनीतिज्ञों से लोहा लेना पड़ा परन्तु पथ की सभी प्रत्यक्ष बाधाओं को चुनौती देते हुए निराला युगस्रष्टा साहित्यकार के रुप में उभर कर आते हैं, हार नहीं मानते हैं :–

''तब भी मैं इसी तरह व्यस्त,
कवि जीवन में व्यर्थ भी व्यस्त
लिखता अबाध गति मुक्त छंद
पर सम्पादकगण निरानंद
वापस कर देते सत्वर
दे एक पंक्ति दो में उत्तर।''(सरोज स्मृति)

परन्तु निराला का साहस उत्साह अविचलित रहा :–

''तोड़ो कारा तोड़ो कारा,
पत्थर कि निकले, फिर गंगा जल धारा।''(मुक्ति–अनामिका संग्रह)

''राम की शक्ति पूजा' में भगवान राम की ग्लानि, क्षोभ और पीड़ा पर बौद्धिक चेतना की विजय का जो विश्वास बोल रहा है वह स्वयं निराला का सकारात्मक विश्वास है–

धिक जीवन जो पाता ही आया विरोध,
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध,
जानकी! आह, उद्धार प्रिया का हो न सका
वह एक और मन रहा, राम का,
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय।''(राम की शक्ति पूजा)

निराला अपने जीवन व्यक्तित्व और कृतित्व सभी में मुक्त मौलिक एवं असाधारण थे। विभिन्न विरोधी तत्वों का उनमें ऐसा सांमजस्य था जो विविधता में एकता, असंगति में संगति का आकलन करता था उनके जीवन और काव्य में कोमल–कठोर, स्थूल–सूक्ष्म, वीर–करुण, लघु–विराट, भाव–विचार, शब्द–अर्थ, श्रद्धा–भक्ति, माधुर्य–ओज, भौतिक–आध्यात्मिक का आश्चर्यजनक समाहार है। रुप वैचित्र्य की उत्सुकता, अभिव्यक्ति का आवेगपूर्ण औदात्य, भाव गठन की संयमशीलता हृदय के आकुल उद्‌गारों की सांगीतिकता, दार्शनिक बौद्धिक विचारों की रागात्मक तटस्थता के भावा, भाषा, शैली, छंद में अनूठे प्रयोगों की सफलता को मिला कर देखा जाये तो निराला युग प्रवर्त्तक की सशक्त अद्वितीय क्षमता से विभूषित दिखाई देते है।

निराला का हृदय विशाल है उनके लिए सब एक समान है– इसी समभाव के कारण भगवान राम के ऊपर व्यक्तित्व का आरोप करने वाले निराला, कुत्तों के साथ झूठी पत्तल चाटने वाले बच्चों को अपने हृदय अमृत से सींचने के लिए तैयार रहते हैं। कली के सौन्दर्य पर मुग्ध निराला पत्थर तोड़ने वाली मजदूरनी की व्यथा कहते हैं। प्रेयसी के रुप लावण्य का चित्र खींचने वाले निराला विवश विधवा का चित्रांकन करते है।

''वह इष्टदेव के मंदिर की प्रतिमा सी,
वह दीपशिखा सी शांत भाव में लीन
वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति रेखा सी
वह टूटे तरु की छुटी लता सी दीन,
दलित भारत की ही विधवा है। (विधवा)

प्रेम संगीत के स्वरों के साथ 'गरम पकौड़ी' का भी राग आलापते हैं, गुलाब अैर कुकुरमुत्ता, बसंत की परी

एवं ठूंठ के प्रति बराबर ममत्व रखते हैं। महान विराट, लघु शुद्र उपेक्षित सभी निराला के स्नेह के अधिकारी हैं। काव्य में प्रचलित प्रगतिशीलता के बहुत पहले निराला ने प्रगतिशील रचनाएं की। 'बेला', 'नए पत्ते' में तो ग्रामीणों, किसानों, श्रमिको के मर्म को प्रकट करने वाली रचनाओं का अक्षय भण्डार है। भाव विचार और रचना विधान की प्रयोगशीलता में 'कुकुरमुत्ता' बाद के प्रचलित प्रयोगों की आधारशिला बनी।

नवीनता के प्रति आकर्षण और पुरातनता के विरोध का आशय यह नहीं है कि निराला ने अपनी स्वस्थ संस्कृति तथा विकास परम्पराओं की उपेक्षा की– 'यमुना के प्रति','तुलसीदास', 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'जागो फिर एक बार' आदि अनेक कविताओं में जातीय तथा राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति सम्मान तथा प्राचीन उपयोगी परम्पराओं के प्रति आस्था व्यक्त हुई है। आवश्यकतानुसार निराला ने किसी पर भी अपने व्यंग्य की चाबुक चलाने से परहेज नहीं किया पर उनका लक्ष्य सदा व्यक्ति न होकर वह व्यवस्था रहीं जिसमें विषम प्रवृतियों की जड़ता को प्रश्रय और पोषण मिला। निराला की स्पष्ट मान्यता थी कि हिन्दी को मधुरता के साथ ओज की भी जरुरत है इसलिए उन्होंने ओजस्वी रचनाओं की सृष्टि की। 'शक्तिपूजा' में श्रृंगार, वीर, रौद्र, करुण रसों का सफलतम आकलन पाया जाता है। निराला के व्यंग्य उनकी ज्वलंत सामाजिक चेतना के प्रतीक हैं 'गुलाब' उनके यहाँ पूंजीपतियों की शोषण नीति का प्रतिनिधित्व करता है तो 'कुकुरमुत्ता' उन बुद्धिजीवियों के ढोंग को स्पष्ट करता है जो अपनी वाचालता के बल पर अपने को विश्व जीवन का केन्द्र मानते हैं। निराला की प्रतिभा का प्रकाश छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता सभी जगह अपनी स्पष्ट रेखाओं तथा गहरे रंगों से प्रतिबिम्बित हुआ। बोलचाल की सहज भाषा, सामान्य विषयों की काव्याभिव्यक्ति, साधारण उपेक्षित अकिंचन के प्रति समानुभूति और सहानुभूति, हास्य व्यंग्य की मर्मस्पर्शी फुलझड़ियों और जीवन के साथ विकसित होने वाली नूतन काव्य वृत्तियों का जो स्रोत उनके साहित्य में फूटा था, वह आज भी काव्य भूमि में प्रवहमान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रामस्वरुप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005
2. रामस्वरुप चतुर्वेदी–प्रसाद–निराला–अज्ञेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009
3. रामविलास शर्मा, परम्परा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004
4. डॉ. प्रेमशंकर, नयी कविता की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 1988
5. नंददुलारे वाजपेयी, हिन्दी साहित्य 20 शताब्दी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 1985
6. डॉ. नगेन्द्र–हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,1998
7. रामविलास शर्मा– निराला की साहित्य साधना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
8. रामविलास शर्मा– स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

Dr. Deepali Sharma, Ass. Professor, Hindi

580/11 Khanpura Road Subhash Nagar, Ajmer 30501

Email; drrajeshsharma99157@gmail.com

M. 8003614152

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 100-103

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'ग्लोबल गाँव का देवता' : गरीबी का स्त्री–सन्दर्भ

डॉ. अभिषेक शुक्ल

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर–273009

नव–उदारवादी दौर का पूंजीवाद बहुराष्ट्रीय निगमों का पूंजीवाद है। इसमें गरीबी और अमीरी के बीच फासला बहुत बढ़ा है। इस दौर ने मुट्ठी भर लोगों को ही सारी समृद्धि का हकदार बना दिया है। जो अमीर हैं उनकी अमीरी की यात्रा बड़ी नाटकीय ढंग से विकसित हुई है। जो अमीर हैं या हो रहे हैं वह इतने ज्यादा अमीर होते जा रहे हैं कि जिसकी कोई सीमा न हो। पर, जो गरीब हैं वह इसी अनुपात में गरीब होते जा रहे हैं। फलतः पूरा सामाजिक ढ़ांचा ही चरमराता हुआ सा नजर आ रहा है। नव–उदारवादी दौर में पनपी उपभोक्तावादी संस्कृति ने विविध प्रकार की मजबूरी व गिरावट को जन्म दिया है। इससे छोटे–छोटे स्तर पर भी जो शक्तिशाली हैं उन्होंने शोषण के सारे दरवाजे खोल दिए हैं। सामाजिक ताना–बाना कमजोर हुआ है। गरीब आदमी इतना कमजोर व असहाय होता जा रहा है कि हर रोज उसे जिन्दगी की जद्दोजहद करनी पड़ रही है। इस दौर में भुखमरी, कुपोषण व ठण्ड से मरने वालों में काफी इजाफा हुआ है। सरकारी प्रयास नाकाफी साबित हो रहे हैं।

ऐसी स्थिति में गरीब स्त्री का संघर्ष दोहरा हुआ है। ऐसा नहीं है कि स्त्रियों का शोषण पहले नहीं होता था। पहले भी होता रहा पर आज स्थिति थोड़ी अलग है। स्त्री को भोग की वस्तु के रूप में पुरुषवर्चस्व वाला समाज काफी पहले से देखता रहा है। यदि स्त्री गरीब हो तो उसके साथ दुराचार आसान हो जाता है। चूँकि, वर्तमान दौर में गरीबी बहुत तेजी से व निरूपाय स्वरूप धारण करती जा रही है। इसलिए उनका शोषण भी काफी तेज हुआ है। जब पेट भरने को अनाज व तन ढ़कने को कपड़ा न मिल सके तो इन्सान क्या–क्या नहीं करता! गरीब स्त्री दिन भर मजदूरी में खटती है और रात में किसी दुराचारी का शिकार बनती है। वह खुशी से नहीं बल्कि मजबूरी में शिकार होती है।

रणेन्द्र के उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' में असुर आदिवासी स्त्री के नव–उदारवादी दौर में शोषण संबंधित एक रोचक विलाप–गीत है–

''काठी बेचे गेले असुरिन,
बाँस बेचे गेले गे,
मेठ संगे नजर मिलयले,

मुंशी संग लासा लगयले गे,
कचिया लोभे वुफला डूबाले,
रुपया लोभे जात डूबाले गे।[1]

इस गीत में आदिवासी समाज के ताने–बाने के टूटने का दुःख व्यक्त हुआ है। प्रथम दृष्ट्या तो यह गीत शिकायत या आलोचना प्रतीत होता है, जो कि एक असुर पुरुष द्वारा असुर स्त्री से किया जा रहा है। पर यह आलोचना नहीं बल्कि मजबूरी का गान है। इस गीत का अर्थ यह है कि 'लकड़ी और बांस बेचने गई असुरिन, तुमने खदान के मेठ के साथ नजरें क्यों मिलाई थीं? तुमने खदान के मुंशी के साथ लगाव क्यों बढ़ाया? पैसे (कचिया) के लोभ में तुम कुल का नाम डूबा रही हो।[2] दरअसल, उपन्यास में चित्रित सखुआपाट में खदान के काम से आए अधिकारी, किरानी आदि तमाम लोग असुर समाज की स्त्रियों को अपने बहलावे–फुसलावे की चपेट में लेकर उनका शोषण करते है। असुर स्त्रियों के बदले रंग–ढंग को देखकर असुर समाज अपनी व्यथा को गीत के माध्यम से व्यक्त करता है। रुमझुम असुर ने इस गीत के असल मायने व सखुआपाट की वास्तविकता को उजागर किया है– ''यह शिकायत नहीं थी, बल्कि विलाप था। अन्दर से बुरी तरह टूट चुके समाज का विलाप। भूख और गरीबी ने अन्दर से इतना खोखला कर दिया है कि सामाजिक व्यवस्था भरभरा गयी है। अखड़ा में बैगा–पाहन–पुजार और गांव के बड़े–बूढ़ों की बात का वजन दिन पर दिन घटता जा रहा है। ठीक ही बात है कि घर में तीन–चार माह से ज्यादा का अनाज नहीं हो तो कौन बेटों को गांव छोड़ने और बेटियों को डेरा में काम के बहाने रखनी बनने से रोक सकता है?[3] असुर समाज अपने सामाजिक मूल्य के टूटने से व्यथित है। उनकी इज्जत आबरु दारूण गरीबी की भेंट चढ़ रही है। उनकी इसी गरीबी व मजबूरी का फायदा उठा कर खदान के कारिन्दे असुर युवतियों का शारीरिक शोषण करते हैं। गरीब समाज इस सच्चाई से वाकिफ है। इसके बावजूद भुखमरी से बचने का उनके पास कोई उपाय नहीं है। ऐसा नहीं है कि यह असुर समाज या वर्तमान कोई भी गरीब तबका पहले बहुत अमीर रहा हो। अधिकांश ऐसे हैं जो पहले भी गरीब थे और आज भी। किन्तु, इतना संसाधन जुटा लेते थे कि दो वक्त की रोटी का वर्षभर इन्तजाम हो सके। उनके पास जो थोड़ी–बहुत जमीने थीं उससे पालन–पोषण हो जाता था। अपनी गरीबी में भी इज्जत से रह सकते थे। आदिवासी समाज तो वनोपज से भी काम चला लेता था। किन्तु, अब धीरे–धीरे उनका वन में प्रवेश वर्जित हो रहा है। अभ्यारण्य बनाए जा रहे हैं। खदान कम्पनी, बांध परियोजना आदि के कारण उन्हें खेत–घर से बेदखल किया जा रहा है। पुनर्वास ठीक से हो नहीं पाता। परिणामतः वे किसान से मजदूर में तब्दील हो रहे हैं। यह स्थिति ग्रामीण व आदिवासी गरीब दोनों के साथ लगभग एक समान है। इस प्रकार इसमें सबसे ज्यादा मार स्त्रियों को झेलनी पड़ती है। गरीब स्त्री के दोहरे शोषण का ही सामूहिक व्यथा–गान है उपर्युक्त गीत।

इस उपन्यास में गरीबी, स्त्री–शोषण व आन्दोलन का संवेदनशील चित्र खींचा है उपन्यासकार ने। इस उपन्यास में चित्रित शिंडाल्को कम्पनी, सखुआपाट का मैनेजर किशन कन्हैया पाण्डेय इसका असल किरदार है। किशन कन्हैया एक चरित्रहीन व्यक्ति है। सखुआपाट व आस–पास के क्षेत्रों की गरीबी व किशन कन्हैया की

चरित्रहीनता पर उपन्यासकार ने बड़ी सटीक पंक्ति लिखी है कि 'जहां गरीबी की रपटीली राह हो वहाँ चांदी के सिक्के थोड़ा ज्यादा ही तेजी से लुढ़कते हैं।[4] शिंडाल्को कम्पनी के खिलाफ लालचन, जेम्स, रुमझुम व राजकुमार आदि अपने सामूहिक गठजोड़ से आन्दोलन करते हैं। किशन कन्हैया का खरीद–फरोख्त वाली नीति से भी आन्दोलन टूटता नहीं है। जेम्स की बहन सलोनी उसी कम्पनी की एक अन्य शाखा में जॉब करती है, जो कभी किशन कन्हैया के सम्पर्क में रही थी। किशन कन्हैया ने सलोनी के साथ भी दुराचार किया था। अपने घर की गरीबी से लड़ने के लिए सलोनी ने कम्पनी में नौकरी किया। उसी गरीबी की मजबूरी में किशन कन्हैया के शोषण का शिकार भी हुई। किशन ने उस दौरान दुराचार का विडियो भी बना लिया था। इसके पीछे सम्भवतः मंशा यह रही हो कि वीडियो के माध्यम से ब्लैकमेल कर उसका निरन्तर शोषण कर सके। आन्दोलन के दौरान जब उसे यह पता चला कि जेम्स और सलोनी भाई–बहन हैं। तो उसने सलोनी का ट्रांसफर सखुआपाट शाखा में रातों–रात करा लिया। इसके बाद सलोनी के बहाने जेम्स व आन्दोलनकारियों को ब्लैकमेल करने का खेल शुरु हुआ– 'शुरू में जेम्स भड़क गया। सलोनी ने कितनी भी अपनी नौकरी की दुहाई दी, वह मानने का तैयार नहीं था। तब रामरति ने झोले से निकाल एक पुराना वीडियो कैसेट जेम्स को थमाया, जिसके बारे में सुनकर सलोनी और जेम्स दोनों को काठ मार गया। वह सलोनी के पांडे बाबा की छत्रछाया वाले दिनों का कैसेट था, तन्त्र साधना वाला।... दोनों भाई–बहन एक–दूसरे से नजर बचाकर चुपचाप रोये जा रहे थे। रामरति के चेहरे की मुस्कान बता रही थी कि पांडे बाबा की दवा काम कर गयी थी।[5] जेम्स गरीब है पर बहन द्वारा अपनी नौकरी का वास्ता दिए जाने पर भी शिंडाल्को कम्पनी के खिलाफ डिगता नहीं है। पर जब अपनी बहन के आबरु की बात पता चलती है तो वह टूट जाता है और मजबूर होकर आन्दोलन से पीछे हट जाता है। सलोनी की व्यथा ऐसी है कि किशन कन्हैया के दुराचार की कहानी वह पहले कभी कह ही नहीं पाई अपने घर वालों से। या इस दुराचार से पहले इसके खिलाफ नौकरी छोड़ ही नहीं पायी। कारण घर की भयावह गरीबी सलोनी को समझौता करने के लिए मजबूर करती रही थी। इसी का दुःखद परिणाम सामने आता है। जेम्स व सलोनी दोनों लज्जित महसूस करते हैं।

वैसे तो पाखण्ड–प्रपंच की चपेट में कोई भी आ सकता है। लेकिन, गरीबी में ओझा–सोखा, ढोंगी बाबा की गिरफ्त में लोग आसानी से आ जाते हैं। कोयलाश्रम का शिवदास बाबा गरीबी की नब्ज को समझता था। वह गरीब आदिवासी समाज के उत्थान का ढ़ोग करता है। दरअसल, उसका मुख्य काम दलाली का है। कभी कम्पनी की दलाली तो कभी राजनीतिक पार्टियों की। इन सबके अलावा वह दुराचारी भी है। इसलिए उसने अपने आश्रम में बच्चियों की शिक्षा पर जोर दिया। शिक्षित बनाने की आड़ में आस–पास के गरीब आदिवासियों की बच्चियों को ले आता और उसके बाद उनका शारीरिक शोषण करता। यही घटना लालचन असुर की बच्चियों के साथ घटी। वह शिवदास के सेवा–कार्यों से प्रभावित हो उसका भक्त बन जाता है। साथ ही अपनी बच्चियों को उसके आश्रम भेज देता है। एक दिन बीमारों जैसी हालत में जब कविता, नमिता घर पहुंचती हैं तो डॉक्टर साहब असल बात समझ लेते हैं। वे कहते हैं कि– ''डायन भी सात घर छोड़कर खाती है, लेकिन ई बबवा साला

राक्षस है राक्षस। जरूर ई बच्ची लोग को रात में पैर दबाने के लिए बुलाया होगा। उसके बाद छोटी बच्चियाँ पथरा जाती है। दर्जनों ऐसे केस उस आश्रम में मैं देख चुका हूँ। लाज, शरम, भय सब घोलकर पी गया है हरामी।[6] मासूम बच्चियों से दुराचार की घटनाएँ इन्सानियत पर करारा प्रहार है। शिवदास की सत्ता व ताकत की हनक ही थी कि उसकी सच्चाई जानने के बाद भी गरीब–मजबूर समाज उसका खुला विरोध करने में स्वयं को असमर्थ पाता है।

संदर्भ :–

1. रणेन्द्र– ग्लोबल गांव के देवता, नयी दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2014, पृ. 38
2. वही, पृ. 38
3. वही, पृ. 39
4. वही, पृ. 53
5. वही, पृ. 55
6. वही, पृ. 69

मो.नं. : 7268018122

ईमेलः abhishekpostbox5@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 104-107

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षिकाओं की ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. कुमारी सरिता

सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, बी0एम0 ए0 कॉलेज, बहेड़ी।

भावना बरनवाल

शोध प्रज्ञा, शिक्षा विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

सारांश :–

मानव के विकास का साधन शिक्षा है। इसके द्वारा मनुष्य मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक, आर्थिक आदि गुणों का विकास करता है। शिक्षा ग्रहण करने के लिए मनुष्य अनेक विधियों का प्रयोग करता रहता है। प्राचीनकाल से प्रत्यक्ष विधि प्रचलित थी किंतु कोविड–19 के आने के बाद ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम का विकास काफी तेजी से हुआ है। सर्वत्र डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी पठन–पाठन प्रचलन में आगया है। तकनीक का यह प्रवाह ग्रामीण की अपेक्षा नगरीय क्षेत्र में अधिक है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष ये स्पष्ट करते हैं कि ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

प्रस्तावना :–

सदा से हीं शिक्षा मानव के विकास का साधन रही है। इसके द्वारा मनुष्य अपने शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक, आदि गुणों का विकास करता है। शिक्षा ग्रहण करने के लिए मनुष्य अनेक विधियों का प्रयोग करता रहता है। गुरुकुल प्राचीन शिक्षा के केन्द्र थे। वहाँ गुरु शिष्य आमने–सामने बैठकर पढते थे। अतः आरंभ काल से प्रत्यक्ष विधि प्रचलित थी किंतु सन 2020 में कोविड–19 के आने के बाद शिक्षा व्यवस्था थम सी गई थी तब ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम का विकास काफी तेजी से हुआ। सर्वत्र डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी पठन–पाठन प्रचलन में आ गया। ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम लिए फेसबुक, यू–ट्यूब, गुगल मिट, जूम एप आदि के प्रयोग होने लगा। ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम तकनीक का यह प्रवाह नगरीय क्षेत्र में अधिक हुआ। एंड्रॉयड मोबाइल के प्रयोग ने इसको और तीव्रता प्रदान की। बाद के समय में ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक–शिक्षिकाओं ने भी ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम तकनीक को अपनाया। वर्तमान समय में भी ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक–शिक्षिका इस पद्धति को अपनाने में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं। वे आर्थिक और तकनीकी बाधाओं का सामना करते हैं। नेट की कमी एवं तकनीकी ज्ञान के अभाव में वे ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम तकनीक को नहीं

अपना पा रहे हैं। शिक्षकों की अभिवृत्ति यदि सकारात्मक होगी तब ही वे ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम को अपने शिक्षण में प्रयोग कर सकते हैं। शिक्षकों के समान हीं शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति भी सकारात्मक होनी आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र का शीर्षक ''ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षिकाओं की ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' रखा गया है।

पारिभाषिक शब्द :–

ग्रामीण क्षेत्र :– दरभंगा सदर प्रखण्ड का ग्रामीण क्षेत्र।

नगरीय क्षेत्र :– दरभंगा नगर निगम का क्षेत्र।

माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिका :– बिहार बोर्ड के सरकारी विद्यालयों में कक्षा 9 से 10 तक की शिक्षा देने वाली शिक्षिका।

ऑनलाइन शिक्षण :– अधिगम–आभासीय प्लेटफॉर्म या सोसलसाइट आदि का प्रयोग कर शिक्षण करना।

अभिवृत्ति :– अभिवृत्ति का मतलब किसी व्यक्ति वस्तु या विचार के प्रति किसी व्यक्ति की निश्चित सोच है। यहाँ उपकरण पर शिक्षिकाओं द्वारा व्यक्त अभिवृत्ति को लिया गया है।

प्रस्तुत शोध की आवश्यता :–

अध्यापक किसी राष्ट्र के भविष्य के निर्माता होते हैं। अध्यापक जिस सोच के होंगे वैसी ही राष्ट्र की शिक्षा होगी। शिक्षा की बढ़ती चुनौतियों को देखते हुए अध्यापकों को आधुनिक तकनीकों एव विधियों को जानना होगा। इसके लिए ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति होना आवश्यक है। सकारात्मक अभिवृत्ति वाले अध्यापक आभासीय प्लेटफॉर्म या सोसलसाइटका सहज उपयोग कर पाएंगे। वर्तमान समय में बिहार में शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। जिसका प्रभाव शिक्षा पर हुआ है। जो अन्ततः छात्रों की उपलब्धि के लिए काम करेगा। इस कारण उनकी ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम के प्रति अभिवृत्ति भी महत्वपूर्ण है। अतः प्रस्तुत शोध शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ज्ञात करने एवं उसके सुधार में महत्वपूर्ण होगा। इसलिए यह शोध महत्वपूर्ण है।

शोध के उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध समस्या को ध्यान में रख कर के निम्नलिखित उद्देश्य बनाए गए हैं :–

1. ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं के ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम (डिजिटल शिक्षण–अधिगम) के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
2. नगरीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं के ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम (डिजिटल शिक्षण–अधिगम) के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
3. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं के ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम (डिजिटल शिक्षण–अधिगम) के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करना।

परिकल्पना :– उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रस्तुत शोध की परिकल्पना निम्नलिखित है :–

1. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं के ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम (डिजिटल शिक्षण–अधिगम) के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकन :–

प्रस्तुत शोध में बिहार बोर्ड से सम्बद्ध सरकारी विद्यालयों के शिक्षिकाओं को प्रतिदर्श में लेकर स्वनिर्मित ऑनलाइन शिक्षण अभिवृत्ति मापनी द्वारा अभिवृत्ति मापकर मात्रात्मक विश्लेषण किया गया है।

सीमाएँ :– समय एवं धन की कमी एवं उपकरणों के अभाव के कारण केवल 30 ग्रामीण एवं 30 नगरीय प्रतिदर्शों को लेकर स्वनिर्मित उपकरण द्वारा हीं शोध कार्य किया गया है।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध के उद्देश्य को ध्यान में रखकर वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। क्योंकि वर्तमान दशा का अध्ययन करने के लिए यह विधि उपयुक्त विधि है।

समग्र एवं प्रतिदर्श :– प्रस्तुत शोध में दरभंगा सदर प्रक्षण्ड के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षिकाओं को समग्र एवं उनसे 30 ग्रामीण एवं 30 नगरीय शिक्षिकाओं को स्तरित यादृच्छिक विधि से प्रतिदर्श में लिया गया है।

उपकरण :– प्रस्तुत शोध में आँकड़ो का संग्रह स्व–निर्मित एवं प्रमापीकृत शोध उपकरण का प्रयोग कर किया गया है। जिसमें कुल 47 प्रश्न हैं। इसकी विश्वसनीयता .63 है। जिसमें ऑनलाइन शिक्षण अभिवृत्ति से संबंधित प्रश्न हैं।

आँकड़ा संग्रह :– आँकड़ा संग्रह हेतु शोध कर्ता ने विद्यालयों में जाकर शिक्षकों से मिलकर उनमें सौहार्द की स्थापना की। मापनी देकर आवश्यक निर्देश समझा कर समय पूरा होने के बाद भरा प्रपत्र लिया गया।

आँकड़ा विश्लेषण :– प्रस्तुत शोध पत्र हेतु आँकड़ो का विश्लेषण मात्रात्मक रूप में किया गया है। t-test द्वारा आँकड़ो की जाँच की गई है। इसके लिए चेचच सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया है। .05 विश्वास स्तर पर द्विपुच्छ परीक्षण किया गया है।

Table A.1

T-TEST

CRITERIA=CI(0.95).

Group Statistics

	Group	N	Mean	Std. Deviation	S.E. Mean	SED	T	Df	विश्वास स्तर 0.05 का मान
ऑनलाइन शिक्षिण के प्रति अभिवृत्ति	RURAL FEMALE TEACHER	30	161.37	29.92	5.46	7.71	2.25	58.00	2.01 in t table
	URBAN FEMALE TEACHER	30	178.7	29.82	5.45	7.71			

प्रस्तुत विश्लेषण में विश्वास्तर 0.05 पर t का मान टेबल में 2.01 है जो प्राप्त t मान 2.25 से कम है। इस कारण कहा जा सकता है कि क्षेत्र के आधार पर शिक्षिकओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अतः वर्तमान शोध हेतु निर्धारित परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई कि :–

1. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं के ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम (डिजिटल भिाक्षण–अधिगम) के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अर्थात् क्षेत्र का प्रभाव शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति पर दरभंगा सदर प्रखण्ड के संदर्भ में देखा गया है।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं के ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम (डिजिटल शिक्षण–अधिगम) के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर ज्ञात करने से यह पता चला कि क्षेत्र का प्रभाव ऑनलाइन शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर है।

सुझाव :–

– अध्यापिकाओं को ऑनलाइन शिक्षण–अधिगम का प्रशिक्षण देने से उनकी अभिवृत्ति में सुधार हो सकता है। तभी वे इसका सफल संचालन करने में दक्ष होगें।

– ऑनलाइन–शिक्षण अधिगम हेतु आवश्यक एप, सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर की उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में विशेष रुप से होनी चाहिए।

– अध्यापिकाओं को इन्टरनेट का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

– अध्यापिकाओं को एप संचालन समुचित प्रशिक्षण देना चाहिए।

सन्दर्भ साहित्य :–

1 उपाध्याय, आर0 एवं पाण्डेय, सरला, (2001), शैक्षिक टैक्नालॉजी के आयाम, वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन।

2 कपिल, एच0 के, (2014), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।

3 कुमारी, सरिता एवं बरनवाल, भावना, (2021), ऑनलाईन शिक्षण–अधिगम अभिवृति मापनी, दरभंगा।

4 पाण्डेय, के0 पी0, (2012), शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।

5 सुलैमान, मुहम्मद एवं तरन्नुम, रिज्जवाना, (2016), मनोविज्ञान में प्रयोग एवं परीक्षण, पटना : मोतीलाल बनारसीदास।

6 सुलैमान, एम0 एवं कुमार, डी0, (2011), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना : जनरल बुक एजेन्सी।

7 सुलैमान, एम0, (2013), मनोविज्ञान शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी, पटना : मोतीलाल बनारसीदास।

8 PSPP सांख्यिकीय सॉफटवेयर, http://www.Gnu.org/PSPP

bhawanabarnwal65@gmail.com

मो. 7979910601

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 108-113

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

E-Learning -Transformation in Indian Education System

Dr. Aruna Anchal

HOD, Department of Education, Baba Mastnath University, Asthal Bohar Rohtak, Haryana,

Ms. Ashu Soni

Research Scholar, Department of Education, Baba Mastnath University, Asthal Bohar, Rohtak, Haryana

ABSTRACT :-

The paper explores the various facets of e-learning and its impact on education, focusing on student motivation, improved learning, and the development of essential skills. E-learning involves diverse media types like audio, video, text, and images, making it an advanced tool for education. The study emphasizes the significance of e-learning in different educational levels, from primary to higher education. The paper identifies the advantages and disadvantages of e-learning, highlighting its potential to revolutionize education in modern times, especially from India's perspective.

Keywords :- Education system, E-Learning, Impact of E-Learning in Education.

INTRODUCTION :-

"Education is the most powerful weapon which you can use to change the world."

-Nelson Mandela

Education is the cornerstone of human development and culture. It goes beyond merely earning money; it shapes individuals, societies, and nations. Education provides knowledge, enhances moral values, and fosters personal growth. It plays a crucial role in transmitting cultural values and traditions across generations, making it indispensable for individual and societal understanding.

E-Learning is a revolutionary concept that sets it apart from traditional learning methods. It opens up new opportunities and features for students by presenting and delivering educational content through internet-based platforms. E-learning leverages electronic media to facilitate education and can be applied in diverse settings, from distance learning to open schools and universities. The paper examines the central ideas of e-learning, comparing it to traditional education and highlighting its usefulness in modern times.

What is E-Learning?

E-Learning is a system of learning and teaching through electronic media, especially the internet. It provides an efficient means of education, especially for students who face challenges in accessing traditional forms of learning due to family, financial, or transportation issues. E-learning enables students to access education online through various platforms like web browsers, Google, and other tools. It proves to be highly beneficial for individuals who cannot attend physical classes.

The Basic Principles of E-Learning

E-Learning is grounded in the concept of learning through electronic means and relies heavily on technology. Its primary focus is on education, and it encompasses various forms of electronic learning. One essential principle of e-learning is structured content delivery, which was introduced after the advent of webbing and interactive media. This structured approach to learning has evolved with the rapid changes in knowledge. E-learning facilitates more effective and adaptable teaching methods.

Education and E-Learning & its Importance

E-Learning serves as a powerful tool for developing technical and academic skills, fostering personal growth, and acquiring knowledge and etiquette. Online education enables students to learn from the comfort of their homes, eliminating the need for physical presence in institutes and universities. It not only saves time and transportation costs but also contributes to environmental preservation. E-learning allows educators to reach a global audience, transcending geographical barriers and making education accessible to all. The audio-visual techniques used in e-learning have been found to yield better results compared to traditional methods. Moreover, both instructors and learners benefit from discovering new ideas through innovative techniques like electronic books.

E-Learning and Primary Education

E-learning holds immense potential in addressing the challenges faced by primary education, especially in regions where the teacher-to-student ratio is disproportionate. Students who lack access to proper education can benefit from online classes, bridging the education gap. However, e-learning's effectiveness may vary based on the availability of educational facilities and infrastructure.

E-Learning in Secondary and Advanced Education

E-learning is highly effective for secondary-level learners as it offers various platforms for online classes, including webinars, video conferencing, and audio-video aids. Learners from remote areas without access to schools can receive education through online platforms and receive certificates. While e-learning provides convenience and cost-saving benefits, it also faces challenges related to infrastructure and facilities.

E-Learning and Higher Education :-

E-learning significantly impacts learner motivation. Compared to traditional learning, students often find e-learning more engaging and less demanding in terms of motivation. The use of audio-visual techniques in e-learning enhances the learning experience, making it more appealing to learners.

Tools of E-Learning :-

1. **Google Meet :** Google Meet is an audio and visual communication service and it is growth by Google. It is used for providing online classes. These classes are provided free of cost and only internet charges are to be paid. It supports maximum of 250 participants for interactive session and 100,000 participants for live streaming.

2. **Google Schoolroom :** Google Classroom is a free hybrid learning platform developed by Google for educational institutions that aims to simplify creating, distributing, and grading assignments. The primary purpose of Google Classroom is to streamline the process of sharing files between teachers and students. It is obtainable without any cost for iOS and android versions with a maximum of 250 members (tutors and learners) or joining bound is 100 and creating limit is 30 per day for individual version.

3. **Zoom App :** It offers video-call and virtual chat services by a cloud-based peer-to-peer software display place. Zoom is offered for free in IOS and android versions with 40-minute time bound for plan.

4. **Cisco Webex :** Cisco Webex is another very popular commercial tool from an American company Cisco for web/online meeting, video conferencing, screen share and webinars.

5. **WhatsApp or Telegram :** These are two very popular freely available mobile applications used for communicating group chats. Study material can be shared through these applications.

It is also very useful application for being connected. Both of these applications can be obtained free of cost for android and iOS versions.

Advantages and Disadvantages of E-Learning :

Advantages :

- **Flexibility :** E-learning offers flexibility in terms of time and location, allowing learners to access content at their convenience.
- **Accessibility :** E-learning is easily available to people worldwide, overcoming time zone barriers.
- **Efficiency :** E-learning improves efficiency by streamlining learning processes and providing access to a wide range of courses.
- **Cost-Effectiveness :** E-learning is cost-effective, requiring minimal infrastructure and resources compared to physical classes.
- **Mobile :** E-learning can be accessed through mobile devices, making it convenient and portable.

Disadvantages :

- **Internet Dependency :** E-learning relies on a stable internet connection, which may be a challenge in certain regions.
- **Distractions :** Online learning may lead to distractions from unrelated websites and content.
- **Social Isolation :** E-learning may lead to social isolation as students miss out on faceto-face interactions with peers.
- **Physical Health :** Prolonged sitting during online learning can impact physical health.

E-Learning from India Perspective :

India, being one of the most populous countries in the world and boasting a diverse linguistic landscape, faces several unique challenges in its education sector. One of the significant hurdles is the scarcity of well-qualified faculties across various domains. The distribution of good quality faculties is heavily skewed towards big cities and prestigious institutions, leaving smaller cities and remote areas underserved in terms of education quality. However, e-learning has emerged as a powerful tool to address these disparities and bridge the gap in educational access.

E-learning, in principle, has been instrumental in mitigating the challenges posed by the lack of qualified faculties in remote areas. By leveraging technology, experienced faculties can deliver lectures to multiple institutes simultaneously through online platforms. This approach ensures that students in regions lacking access to specialized educators can still receive highquality education. Lectures can be conducted in both live and recorded formats, providing flexibility for students to access the material at their convenience.

An exemplary initiative in this direction is the National Programme on Technology Enhanced Learning (NPTEL), launched by the prestigious Indian Institutes of Technology (IITs). NPTEL offers a vast repository of recorded lectures on various subjects, which are made available to students across the country. This platform has been a game-changer, enabling learners to access top-notch educational content, regardless of their geographical location. The significance of e-learning was particularly evident during the pandemic era. With schools and colleges forced to shut down to curb the spread of the virus, traditional classroom learning came to a halt. E-learning stepped in as a savior, ensuring that education could continue seamlessly despite the challenges posed by the pandemic. Students and teachers swiftly adapted to online learning platforms, and this experience accelerated the integration of technology in the education system.

Apart from the accessibility aspect, e-learning has several other advantages from India's perspective. It has the potential to standardize the quality of education across the nation. Since the same set of lectures can be accessed by students across different regions, disparities in education quality can be minimized. Additionally, e-learning allows for more costeffective education, as it reduces the need for physical infrastructure and enables the optimization of resources.

However, it is essential to acknowledge that e-learning also comes with its own set of challenges. For instance, there might be infrastructural limitations in remote areas, such as limited internet connectivity or access to devices like computers or smartphones. Addressing these challenges requires concerted efforts from the government, private sector, and civil society to ensure that the benefits of e-learning reach every corner of the country.

Conclusion :-

In conclusion, e-learning has emerged as a promising solution to address the scarcity of wellqualified faculties and the uneven distribution of educational resources in India. By leveraging technology, experienced educators can reach students in remote areas, breaking down barriers and creating opportunities for quality education for all. While challenges remain, the increasing adoption of e-learning platforms and the lessons learned from the pandemic will undoubtedly pave the way for a more inclusive and accessible education system in India.

REFERENCES :-

1. Hameed, S. (2008), Effective e-learning integration with traditional learning in a blended learning environment. European and Mediterranean conference on information system, (25-26).
2. https://talentgarden.org/en/digital-transformation/online-learning-the-advantages-anddisadvantages-of-e-learning/ retrieved on 26April 2022.
3. https://www.bellevuecollege.edu/elearning/start/intro/ retrieved 28April 2022

4. https://www.digitalclassworld.com/blog/importance-of-elearning-in-education/retrieved on 25 April 2022.
5. https://www.researchgate.net/institution/ASharqiyah_University
6. https://www.researchgate.net/profile/Khalid-Al-Jardani(Khalid Salim Al-Jardani2020)
7. https://www.researchgate.net/profile/Rakshith-Gowda-K-M(2020)
8. https://www.researchgate.net/publication/346156547_ELearning_in_Higher_Education_Challenges_and_Opportunities
9. https://www.researchgate.net/publication/346647732_A_STUDY_ON_ADVANTAGES_AND_DISADVANTAGES_OF_ONLINE_TEACHING_DURING_COVID-19_WITH_SPECIAL_REFERENCE_TO_MANGALORE_UNIVERSITY_STUDEN TS
(Gowda R and Ayush G K June 2020)
10. https://www.smilefoundationindia.org/blog/e-learning-in-primary-education-anindian-perspective/retrieved on 27 April 2022.(Dash Kedar 3rd October 2017)
11. Smedley, J.K. (2010) Modeling the impact of knowledge management using technology. OR Insight (2010) 23, 233–250.

Email : dr.arunaanchal@gmail.com
Email: soniashu84@yahoo.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 114-125

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

VITAMIN AND MINERALS : BOON AND NEED FOR THE SUSTENANCE OF LIFE

DIPIKA, Research Scholar,
Dr. Avadh Narayan Dwivedi
Department of Life Sciences, Chhatrapati Shahu ji Maharaj University, Kanpur.

ABSTRACT :-

The key to health is the better environment with good intake of balanced diet and nutrients. The prolonged exposure to the hectic schedule and busy life has led us close to the type of food, insufficient with the better sources of minerals and nutrients needed by the body for the sustenance of life, full of boosting energy, to prevent any kind health problems and diseases. But with the ongoing pace of development in the humankind and the resources, this development has become haphazard as it brought with itself an immense source of all kinds of epidemics and health issues and degradation. The need to prevent such on sought implications on the health and body, proper supplements of vitamins, minerals and nutrients are needed to overcome such developmental problems with the ongoing up growth and hectic schedule for the mankind. The manufacturings of food with labels like, "super foods," "healthy foods" and "functional foods," possess additives which are not only unhealthy but also the major reasons for the occurrence of onset of diseases.

Balanced and limited uses of these active molecules in food have to be keenly observed prior to their use with the recurrence of underlying diseases and their associated symptoms. Thus, it is important to objectively observe the inter-relationship between micronutrients, energy metabolism and well-being as well as also identify the risk associated with inadequate micro-nutrient intake and their supplementation. The aim of the research and innovation is to analyze the effects of vitamins and minerals on human health, with respect to their correlations between these compounds and health. The recent trends with emerging technologies are now aimed at improving the stability and bio-accessibility of vitamins and mineral nutrients in foods to maintain their functionality through their bioavailability, metabolism and increased role of health promoting phenomenon.

KEYWORDS :-

Nutrition, vitamins, human health, antioxidants, dietary supplements, energy production, mental and physical fatigue, cognition, cancer, coronary heart disease, physiology, health.

INTRODUCTION :-

Vitamins are the varied group of organic compounds that are required for normal body function. Vitamins are organic micronutrients mainly synthesized by plants and microorganisms. These essential micronutrients are supplied in the diet in trace amount for the maintenance of metabolic pathways. Some vitamins can be synthesized in varying concentrations by Humans such as vitamin D and Niacin that are endogenously synthesized in the skin by exposure to the sun or from the amino acid tryptophan, respectively, which is not enough for the daily needs. Therefore, their dietary intake is also required.

Vitamins such as K2, B1, B2 and biotin are synthesized by intestinal bacteria. Deficiency of essential vitamins and mineral nutrients leads to 'deficiency diseases'. Vitamins are generally distinguished into two categories on the basis of their solubility as mentioned in Table1. Fat- soluble and water-soluble (hydro-soluble vitamins) exhibit varied physio-chemical and biological characteristics. Each vitamin is a family of chemically related compounds that share qualitatively biological activities and may vary in aspects related to their bioactivity and bio assimilation. Vitamin and mineral supplements are the most commonly used dietary supplements taken by people worldwide to prevent the risk of diseases. These vitamins and mineral nutrients are commonly used as the dietary supplements in order to have a better overall diet quality that meets recommended intake levels as per the prescription and need. But Tolerable upper intake is the highest daily nutrient intake that is likely to pose risk of adverse health effects to almost all healthy people as.

Increased intake may leads to the potential risk of adverse effects. Whereas, in low and middle income countries, where specific micronutrient deficiencies are prevalent (e.g., of iodine, iron, zinc, and vitamin A), supplementation is recommended when there is a lack of food based approaches such as dietary modification, fortification, or food provision that are unable to achieve inadequate intake and this step has taken a lead to the virtual elimination of diseases, syndromes or even deficiency of any kind in mankind.

Fat-soluble vitamins	Water-soluble vitamins
Vitamin A or Retinol	Vitamin B1 or Thiamine
Vitamin D or Calciferol	Vitamin B2 or Riboflavin
Vitamin E or α-Tocopherol	Vitamin B3 or Niacin
Vitamin K or Phylloquinone	Vitamin B5 or Pantothenic acid
	Vitamin B6 or Pyridoxine
	Vitamin B7 or Biotin
	Vitamin B9 or Folic acid
	Vitamin B12 or Cobalamin
	Vitamin C or Ascorbic acid
Soluble in fats	Soluble in water
They do not contain nitrogen	They contain nitrogen (except vitamin C)
Require bile salts and fats for absorption	Easily absorbed
Normally not excreted in the urine	They present urinary excretion threshold (Unlikely toxicity)
No daily or usual intake is required	Almost daily intake is required
Hypervitaminosis can cause toxicity	Not stored in the body (Exception: vitamin B12 in liver)
Liver and adipose tissue storage	

Table 1. : Classification of vitamins and their key differences.

This paradigm shift towards the better lifestyle have lead to increased understanding of the biochemical processes of the immediate generation of cellular energy along with the use of vitamins and minerals as coenzymes and cofactors in the initiation of these processes for the sustenance of life. The lack of vitamins and micronutrients may, otherwise, leads to impair cellular energy production, resulting in symptoms of tiredness and lack of energy.

The impeccable need of vitamins and minerals has been a topic of research since decades to keep a check on the health and well-being of mankind. Vitamins and minerals plays an essential role in a variety of ways like it aids in initiation of basic metabolic pathways that support fundamental cellular functions as well as in energy-yielding metabolism, DNA synthesis, oxygen transport, and neuronal functions for brain and muscular function, in cognitive and psychological processes, including mental and physical fatigue associated with B vitamins such as B1, B2, B3, B5, B6, B8, B9 and B12, vitamin C, iron, magnesium and zinc, deals with the biochemical bases and actions of various

micronutrients at both the molecular and cellular levels and connects them with cognitive and psychological symptoms. Thus, since ancient times, the essentiality of these vitamins and mineral nutrients are topic of debate to ensure the betterment of mankind with respect to their health and well-being.

ENERGY METABOLISM WITH THE AID OF VITAMINS AND MINERAL NUTRIENTS :

Vitamins play an important role in several metabolic pathways, closely associated with many of the enzymes that catalyze the reactions involved in these metabolic processes as stated in the

Table 2. Using the 'biological role' as criteria, vitamins are classified into five groups:

1) **Vitamins acting as coenzymes :** B1 (thiamine), B2 (riboflavin), B3 (niacin), B5 (pantothenic acid), B6 (pyridoxine) and B7 (biotin).
2) **Antioxidant vitamins :** E (a-tocopherol) and C (ascorbic acid).
3) **Vitamins showing hormonal functions :** A (retinol) and D (calciferol).
4) **Vitamins that act in the cellular proliferation :** B9 (Folic acid), B12 (cobalamin).
5) **The vitamins involved in coagulation :** K or phylloquinone.

Thus, vitamins work together at the cellular level and are essential for neurological functioning and central metabolism. Deficiency of any one or more may hinder the use of the other vitamins. On the other hand, antioxidant vitamins protect against cell damage caused by the oxidative attack of free radicals of reactive nitrogen species, thereby, avoiding the destruction of the body's tissues. The vitamins prevent the development of a large number of degenerative diseases, associated with ageing and oxidative stress, such as Alzheimer's disease, Parkinson's disease, multiple sclerosis, cancer and myocardial infarction, as well as assume additional endocrine functions and their deficiency may leads to metabolic processes imbalances. The upliftment of energy to empower the body's metabolic processes is derived from the daily intake of food which is stored in the high energy phosphate bonds of the body's energy storage molecule, Adenosine Triphosphate (ATP).

The process by which energy is transformed into ATP is known as cellular respiration which takes place in the mitochondria. The most preferred source of energy from this production of ATP is the Glucose, others being carbohydrates, fats and proteins that can also be metabolized to Acetyl coenzyme A (CoA) which enters the citric acid (Krebs) cycle and gets oxidized to carbon dioxide and water. Thus, from the given biological functions of different vitamins, it is clear that deficiency of any of these may leads with the compromise of mitochondrial functions causing disturbance in the energy metabolism limiting the physical performance, hemoglobin synthesis, maintenance of bone health and strength and an adequate immune function. Vitamins and minerals not only plays critical roles in cellular energy production by fuelling and maintaining the required biochemical and structural

integrity of the body, along with performing physical activity and enabling new tissue deposition but also helps in the structural and functional development of brain cells. Various levels of conversion of ingested food take place as per the requirement by the body that further gets broken down for the energy-generation processes.

The varied role of vitamins and minerals play specific role as per the requirement by the brain cells like contributing to the high demand of energy from the brain, maintaining brain structures and enabling intercellular connections when significant structural and functional changes in the brain occur, development in Neuronal Structures (Thiamine (vitamin B1) is involved), may control apoptosis (programmed cell death), synthesis of acetyl-CoA (Pantothenic acid (Vitamin B5) is used), in cerebral methylation processes and also for maintaining neuronal and glial membrane lipids leading to changes in mood, irritability and sleep (Folate (vitamin B9) is involved), nervous system modulation of neurotransmitter receptors and brain cellular structures (such as glutamatergic and dopaminergic neurons) and the synthesis of glial cells and myelin (Ascorbate (Vitamin C) is needed), for neuronal differentiation and proliferation (Iron is needed), and for the formation-migration of neurons and of neuronal synapses (Zinc is needed).

The metabolic interplay between vitamins B6, B9 and B12 is important to enable the synthesis of methionine. While,Vitamin C is involved in the synthesis and modulation of some hormonal components of the nervous system. It is a cofactor of the enzymes that catalyze the formation of catecholamines: (noradrenaline and adrenaline), and of enzymes that are active in the biosynthesis of neuropeptides. Magnesium is involved in the active transport across cell membranes of potassium and calcium, for neuromuscular coordination and optimal nerve Transmission, protection against excessive excitation leading to cell death, etc. The high concentrations of zinc present in the synaptic vesicles of specific neurons, called 'zinc-containing' neurons, plays a significant role in controlling

Vitamin	Biological roles	Clinical signs of deficiency	Toxic effects
Vitamin A (retinol	Cellular repair and maintenance. Immune response. Development of NS. Normal vision. Fetal development. Reproduction. Bone growth. Antioxidant activity.	Xerophthalmia, night blindness, keratinization of the corneal epithelium, dry mucous membranes.	Anorexia, weight loss, extreme irritability, diplopia, alopecia, headache, bone abnormalities, liver damages, birth defects.

Vitamin D (cholecalciferol)	Bone and dental mineralisation. Absorption and metabolism of calcium and phosphorus.	Rickets (in children), osteomalacia (in adults) and osteoporosis.	Hypercalciuria and hypercalcemia with soft tissue calcifications, renal and cardiovascular damage.
Vitamin E (α-tocopherol)	Powerful antioxidant. Synthesis of heme group. Antitoxic function.	Peripheral neuropathy, spinocerebellar ataxia and pigmentary retinopathy.	Haemorrhagic toxicity, headache, fatigue, nausea, double vision, muscular pains, creatinurea, gastrointestinal distress.
Vitamin K (phylloquinone)	Blood clotting. Protein synthesis. Bone metabolism.	Haemorrhages.	Menadione (synthetic form) causes liver damage, jaundice and haemolytic anaemia in newborns.
VitaminB1 (thiamine)	Macronutrient metabolism. Neuronal function.	Beriberi. Wernicke-Korsakoff syndrome. Polyneuritis. Heart failure. Anorexia and gastric atony.	Not observed.
VitaminB2 (riboflavin)	Energy metabolism. Ocular function. Antibody and red blood cells formation. Mucosal maintenance.	Oral-ocular-genital syndrome.	Not observed.
(niacin)	metabolism. Sex hormone production. Glycogen synthesis.	dementia and diarrhoea).	nausea, blurred vision and IGT.
VitaminB5 (pantothenic acid)	Energy metabolism. Antibody synthesis. Corticosteroid synthesis Cholesterol synthesis.	Hypertension, gastrointestinal disturbances, muscular cramps, hypersensitivity, neurological disorders.	Not observed.

VitaminB6 (pyridoxine)	Fat and protein metabolism DNA and RNA synthesis Haemoglobin synthesis. Antibody production. Electrolyte balance. Neuronal function. Conversion of tryptophan to niacin.	Neuropathy (paraesthesia). Epileptiform convulsions in infants. Hypochromic anaemia, seborrheic dermatitis and glossitis.	Sensory neuropathy and skin disorders.
VitaminB7 (biotin)	Energy metabolism. Cell growth Fatty acids amino acids and glycogen synthesis.	Dermatitis, conjunctivitis, alopecia and abnormalities of the CNS (depression, hallucinations and paraesthesia).	Not observed.
Vitamin B9 (folic acid)	DNA and RNA synthesis Growth and cell division Leukocytes and erythrocytes formation and maturation. Folic acid metabolism.	Macrocytic anaemia.	Neurological complications in people with vitamin B12 deficiency.
VitaminB12 (cobalamin)	Lipid and protein metabolism Red blood cells maturation. Iron absorption. DNA and RNA synthesis. Neuronal function.	Hematologic (macrocytic anaemia), paraesthesia.	Not observed.
Vitamin C (ascorbic acid)	Multiple functions as coenzyme Iron absorption. Wound healing Antioxidant. Corticosteroid Synthesis.	Scurvy. Sjögren syndrome, gum inflammation, dyspnoea, oedema fatigue. Bone abnormalities, haemorrhagic symptoms and anaemia.	Diarrhoea and other gastrointestinal disturbances.

Table 2. : Biological Functions of Vitamins

USE OF VITAMINS AND MINERALS AGAINST DISEASES AND HEALTH PROBLEMS

New advances in the field of science and technology has put forward the varied effect of the use of vitamins through the diet in human health as well as the treatment of several human diseases with controlled analysis and the treatment of several human diseases. The therapeutic efficacy of

vitamins and minerals as per the administered dose plays a significant role in the prevention or treatment of diseases. Deficiencies of various diseases are the repercussion of the insignificant intake of vitamins and minerals or due to the improper diet or unbalanced food intake. Table 2 and Table 3 show the various functions performed by intake of vitamins and minerals as well as the sources of it.

S.N.	MICRONUTRIENTS	FUNCTION IN ENERGY METABOLISM	FOOD SOURCES
		Vitamins	
1.	Thiamine (B_1)	• Essential cofactor in the conversion of carbohydrates to energy. • Needed for normal muscle function, including the heart muscle. • Involved in oxidative carboxylation reactions, which also require manganese ions.	Enriched, fortified or whole-grain products, bread and bread products, mixed foods whose main ingredient is grain, cereals, potatoes, liver, pork and eggs
2.	Riboflavin (B_2)	• As a cofactor in the mitochondrial respiratory chain, helps in the release of energy from foods. • Component of the main coenzymes FAD and FMN.	Organ meats, milk, bread products and fortified cereals
3.	Nicotinic acid niacin (B_3)	• As a cofactor in the mitochondrial respiratory chain, helps in the release of energy from foods. • Transformed into NAD and NADP, which play a key role in oxidation –reduction reactions in all cells.	Meat, fish, poultry, enriched and whole grain breads and bread products, fortified cereals and mushrooms
4.	Pyridoxine (B_6)	• Helps in the release of energy from foods. • Used as a cofactor by nearly 100 enzymatic reactions, mainly in protein and amino acid metabolism.	Fortified cereals, organ meats, fortified soy-based meat substitutes and bananas
5.	Vitamin B_{12}	• Essential for metabolism of fats and carbohydrates and the synthesis of proteins. • Interacts with folic acid metabolism.	Fortified cereals, meat, fish and poultry
6.	Biotin (B_7)	• As a cofactor, involved in metabolism of fatty acids, amino acids andnutilization of B vitamins.	Liver, egg yolk, pork and vegetables
7.	Pantothenic acid (B_5)	• Plays an essential role in the Krebs cycle. • Component of coenzyme A.	Chicken, beef, potatoes, oats, cereals, tomato products, liver, kidney, yeast, egg yolk, broccoli and whole grains
8.	Vitamin C	• Essential for synthesis of carnitine (transports long-chain fatty acids into ascorbic acid (mitochondria) and the catecholamines, adrenaline and noradrenaline. • Ascorbic acid facilitates transport and uptake of non-haem iron at themucosa,	Citrus fruits, tomatoes, potatoes, Brussel sprouts, cauliflower, broccoli, strawberries, cabbage and spinach

		the reduction of folic acid intermediates, and the synthesis of cortisol. • Potent antioxidant	
9.	Folic acid (Vitamin B_9)	• Folates function as a family of cofactors that carry one-carbon (C1) units required for the synthesis of thymidylate, purines and methionine, and required for other methylation reactions. • Folate is essential for metabolic pathways involving cell growth, replication, and survival of cells in culture. • Around 30 – 50% of cellular folates are located in the mitochondria.	Enriched cereal grains, dark leafy vegetables, enriched and whole grain breads, fortified cereals, liver and nuts
10.	Vitamin A(retinol)	• Synthesis of ATP in Mitochondria.	Liver, fish, dairy products, meat, egg yolk, butter, darkly coloured fruits and leafy vegetables
11.	Vitamin D (cholecalciferol)	• Stimulating intestinal calcium and phosphorus by absorption. • Stimulating bone calcium mobilization. • Increasing renal re-absorption of calcium in the distal tube.	Fish liver oils, fatty fish, egg yolk, fortified dairy products and fortified cereals
12.	Vitamin E (α-tocopherol)	• Since it is a nucleophile, it is able to trap electrophilic mutagens in lipophilic compartments. • Generates metabolites that facilitate natriuresis.	Vegetable oils, unprocessed cereal grains, nuts, fruits, vegetables, meats
13.	Vitamin K (phylloquinone)	. Utilizes the energy of vitamin KH_2 oxidation to perform the chemical work required in Gla synthesis.	Green vegetables, Brussel sprouts, cabbage, plant oils and margarine
		Minerals	
1.	Calcium	• Essential for the excitability of muscles and nerves. • Activates a series of reactions including fatty acid oxidation, mitochondrial carrier for ATP (with magnesium), and glucose-stimulated insulin release.	Dairy and fortified plant based milk, cheese, yogurt, calcium-fortified orange juice, canned sardines and salmon.
2.	Phosphorus	• Structural component of nucleotide coenzymes; ATP contains phosphorus, as does creatine phosphate, another high-energy compound. • ATP is involved in energy transformation and molecular activation.	Dairy, red meat, seafood, legumes, and nuts
3.	Magnesium	• Essential for the excitability of muscles and nerves. • Cofactor in over 300 enzyme reactions, particularly those involving metabolism of food components. • Required by all enzymatic reactions involving the energy storage molecule ATP.	Whole grains, nuts, seeds, legumes, and several fruits and vegetables

Trace elements			
1.	Copper	• Essential cofactor of cytochrome C oxidase, a component of the mitochondrial respiratory chain. • Involved in iron metabolism	Organ meats, shellfish, nuts, seeds, whole grains and chocolates
2.	Chromium (III)	• Potentiates insulin action, thus promoting glucose uptake by the cells. • Individuals who exercise strenuously have been reported to have higher urinary levels of chromium.	Mussels, broccoli, grape juice, brewer's yeast, brazil nuts, whole wheat
3.	Iron	• Essential part of haemoglobin for oxygen transport, of myoglobin for transporting and storing oxygen in the muscle and releasing it when needed during muscle contraction. • Facilitates transfer of electrons in the respiratory chain and is thus important in ATP synthesis. • Necessary for red blood cell formation and function.	Meat, eggs, nuts, soybeans, legumes, seafood
4.	Manganese	• Cofactor of several enzymes involved in metabolism of carbohydrates and gluconeogenesis.	Brown rice, oatmeal, legumes, spinach, nuts
5.	Zinc	• Essential part of more than 100 enzymes, some of which are involved in energy metabolism.	Oysters, beans, whole grains, dairy products, crab

Table 3.: Vitamins and Minerals Function and Sources

These vitamins, minerals and other bioactive compounds available in food or dietary supplements is increasing significantly in advanced societies, especially reducing the implications of health hazards, leading to various associated problems like cardiovascular disease, cancer, hypervitaminosis or hypovitaminosis, myocardial infarction, type 2 diabetes ,etc., due to its deficiency.

CONCLUSION :-

The strong biological and physiological rationale indicates the involvement of vitamins and minerals in cellular energy production in overcoming various levels of diseases and health problems that are detrimental for the proper sustenance of life. Lack of any one kind disturbs the entire body system and is therefore, proved to be fatal for the existence. Thus, inadequate intakes of these micronutrients should be prevented for the maintenance of proper defense system against the diseases. Supplementing individuals with vitamin and minerals is thus highly likely to result in health benefits in the areas of mental and physical fatigue, as well as cognitive and psychological functions. Thus, proper physiological functioning within the body is major evidence that confirms the fundamental role of vitamins and minerals in energy metabolism and the lack of just one of these vitamins may compromise an entire sequence of biochemical reactions necessary for transforming food into

physiological energy. It is also clear that several minerals and trace elements are essential for energy generation, while, inadequate intake of micronutrients, generally leads to a lot of health risk. Thus, it is well proved and stated that the micronutrients are important for energy metabolism and the risk for an inadequate micronutrient status leads to chronic lack of energy and underlying disease. Therefore, it is highly recommended as a supplement prescribed for an adequate period of time, ideally not less than 6 weeks, to obtain a noticeable effect on physical well-being. Along with this, the most prudent recommendation and scientifically supported for disease prevention is to eat a balanced diet with an emphasis on fruits and vegetables rich in antioxidants, since it is possible only through the diet, that natural intake of vitamins is possible and further, it becomes impossible to eat excessive quantities of vitamins. This approach minimizes the risk of micronutrient deficiency or excess. With the pace of scientific development, a greater knowledge and impetus in this area of the science of nutrition will have an impact on clinical practice dietetics and nutrition guidelines for public health.

REFRENCES :-

1. Rosenfeld L. Vitamine—vitamin. The early years of discovery. Clinical Chemistry. 1997.
2. Mora JR, Iwata Myvon Andrian UH. Vitamin effects on the immune system: Vitamins A and D take centre stage.Nature Reviews Immunology. 2008.
3. Nair R, Maseeh A. Vitamin D: The "sunshine" vitamin. Journal of Pharmacology and Pharmacotherapeutics. 2012.
4. Bender DA. Nutritional Biochemistry of the Vitamins. 2nd ed. United Kingdom: Cambridge University Press; 2003.
5. Groff JL, Gropper SS, Hunt SM: Advanced Nutrition and Metabolism, 2nd edn. St. Paul: West Publishing, 1995.
6. Depeint F, Bruce WR, Shangari N, et al: Mitochondrial function and toxicity: Role of vitamins on the one-carbon transfer pathways. Chem Biol Interact 2006.
7. Institute of Medicine: Dietary Reference Intakes for Calcium, Phosphorus, Magnesium, Vitamin D and Fluoride. Washington DC: National Academic Press, 1997.
8. Institute of Medicine: Dietary Reference Intakes for Thiamin, Riboflavin, Niacin, Vitamin B6, Folate, Vitamin B12, Pantothenic Acid, Biotin and Choline. Washington DC: National Academic Press, 1998.
9. Institute of Medicine: Dietary Reference Intakes for Vitamin C, Vitamin E, Selenium and Carotenoids. Washington DC: National Academic Press, 2000.
10. Institute of Medicine: Dietary Reference Intakes for Vitamin A, Vitamin K, Arsenic, Boron,

Chromium, Copper, Iodine, Iron, Manganese, Molybdenum, Nickel, Silicon, Vanadium and Zinc. Washington DC: National Academic Press, 2001.

11. Institute of Medicine Committee on Use of Dietary Reference Intakes in Nutrition Labeling Dietary reference intakes: guiding principles for nutrition labeling and fortification. National Academies Press, 2003.
12. Shakur YA, Tarasuk V, Corey P, O'Connor DL. A comparison of micronutrient inadequacy and risk of high micronutrient intakes among vitamin and mineral supplement users and nonusers in Canada. J Nutr 2012.

Dr. Avadh Narayan Dwivedi
bablupcb@gmail.com
04, Parsan House, Dubauli Parsan, Patti Pratapgarh, U.P.
Pin Code - 230 135

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 126-130

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

संत कबीर की सामाजिक चेतना

रेखा रानी

विद्यार्थी, चौ० बंसी लाल विश्वविद्यालय, भिवानी, हरियाणा।

शोध–सार :–

संत कबीरदास का भारतीय समाज तथा संत साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। मध्यकाल भारत में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ अपनी जड़ जमा चुकी थी। उस समय धार्मिक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, ऊँच–नीच, वर्ण व्यवस्था, हिंदू–मुस्लिम झगड़े अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुके थे। ऐसे समय में कबीर का जन्म हुआ। संत कबीरदास जी के समय भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दशा बहुत शोचनीय थी।

एक तरफ जनता मुसलमान शासकों, धर्मान्धता से दुःखी थी तो दूसरी तरफ हिंदू जनता कर्मकांड और पाखंड आडम्बर के कारण पतन की तरफ जा रही थी। कबीर का जन्म उस समय हुआ जब मध्यकाल घोर निराशा एवं अंधकार की तरफ अग्रसर हो रहा था। छूआछूत, रूढ़िवादिता का बोलबाला था। संत कबीर ने इन सभी सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया।

संत कबीर निर्गुण मत के अनुयायी कवि हैं। भक्तिकाल में निर्गुण भक्तों में कबीर को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। हिंदी साहित्य में हम कबीर के योगदान को नकार नहीं सकते। उनके जितनी जन कल्याण की भावना और किसी में देखने को नहीं मिली।

महात्मा कबीर लोक सेवी, समाज सुधारक और समता के हामी और युग उन्नायक संत कवि थे। वे मध्यकाल में नवजागरण के प्रतीक थे तथा उदारवादी समन्वयी शासक और सहिष्णुता के परिपोषक थे। कबीर जाति पात, संप्रदायवाद सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक कट्टरता, कर्मकांड आदि सभी के प्रबल विरोधी थे। इनकी रचनाओं को पढ़कर इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है। कबीर ने शोषित–सर्वहारा आदि सभी के लिए परमात्मा का द्वार खोल दिया था। जो वर्षों से उच्च जाति के लोगों ने बंद कर रखा था। वे निर्भीक और निरंतर संघर्षशील रहने वाले महान संत थे। धर्म कर्म के नाम पर लोगों को ठगने वाले धार्मिक गुरुओं के सख्त विरोधी थे।

''कबीर ने जाति व्यवस्था पर कड़े प्रहार किए। वर्ण–व्यवस्था को देश की प्रगति में, समाज की एकता में बाधक बताया। ऊँच–नीच की भावना, जातिगत श्रेष्ठता को कबीर ने कभी प्रश्रय नहीं दिया।''[1]

''शबरी कवन अचार कियो है, कब काशी कर आई।
प्रीति जानि जाके फल खाए, तीनों लोक बड़ाई।।[2]

जनवादी कबीर, समतामूलक कबीर, यथार्थवादी कबीर, सामाजिक एकता के प्रति पक्षधर थे। कबीर भक्ति के ऐसे ऊँचे हिमालय पर आसीन थे, जिस पर पहुँचने के बाद न तो वह हिंदू रह जाता है और न ही मुसलमान सिर्फ रहती है तो मानवता।

अपने युग के भारत में सामाजिक जागरूकता के अग्रणी होने के साथ उन्होंने धार्मिक क्रांति को भी नेतृत्व किया। काशी जैसे शहर में जहाँ पर कट्टर ब्राह्मणों का गढ़ था। पंडितों के मत–मतांतरों की नगरी में एक कोरी जुलाहा हृदय की सरलता लेकिन उनके गर्व की गर्जना करते हुए दिखाई देते हैं।

उन्होंने समरसता, एक दृष्टि, एक जाति, एक राष्ट्र की भावना को आगे बढ़ाया। कबीर ने जाति की बजाय ज्ञान को अधिक महत्त्व दिया।

''जाति न पूछो साधु की, जब पूछो तब ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।''[3]

कबीर ने जाति को कोई महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने जाति को तुच्छ माना और उसके ज्ञान को महत्ता प्रदान की। कबीर ने साधना के क्षेत्रों में आडम्बरों का विरोध किया। नाथ योगियों से कबीर ने सम्बन्ध जोड़ा लेकिन बाह्याचार का भी उन्होंने विरोध किया।

प्रदर्शन करने वाले योगी कबीर की दृष्टि में कच्चे साधक हैं। यदि योग करने से परमात्मा प्राप्ति होती है तो योग करना है तो मन का योग करो मन को वश में करो। सही योग तो ये होगा जिससे जीवन सफल हो सके।

कबीरदास पूजा–अर्चना, तीर्थ, व्रत तथा रोजा–नमाज को भी बाह्याचार ही समझते हैं। उन्होंने तीर्थ और व्रत को विष माना है जो पूरे संसार में फैला हुआ है।

''पोथी पढ़ी–पढ़ी जग मुआ पंडित भया न कोये।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।''[5]

कबीर के अनुसार जिस मनुष्य में प्रेम, दया व करूणा भावना है वही सबसे बड़ा ज्ञानी है। केवल पोथी पढ़ने मात्र से मानवता, दया, भावना आदि नहीं होत।

''खबर नहीं या जग में पल की।
सकूत कमले नाम समर ले, को जाने कल की।।
कौड़ी–कौड़ी माया जोड़ी, बात करे छल की।
पाप गठरिया है सिर ऊपर, कैसे होय हलकी।।''[6]

सद्गुरु कबीर कहते हैं यह संसार नाशवान है। इस संसार में रहकर एक पल मात्र का भी भरोसा नहीं है। इसीलिए परमात्मा का नाम सुमरण कर ले। अपने अच्छे कर्मों का फल अपने साथ ले जाएं। इन्सान अपने पूरे जीवन में पाप–छल कर–कर के एक–एक कौड़ी (रुपये) इकट्ठा करता है अर्थात् अपने जीवन में पाप रूपी रुपये इकट्ठा करता है। वह पाप की गठरी में इतनी भारी हो जाती है कि वह किस प्रकार से हल्की होगी।

''गुरु को कीजै दण्डवत, कोटि–कोटि परनाम।
कीट न जाने भृंग को, करि ले आप समान।।''[7]

सतगुरु कबीर शिष्यों को उपदेश देते हैं कि आप लोग गुरु को कोटि–कोटि दण्डवत प्रणाम करियो जैसे कीट भृंगी के महत्त्व को नहीं जानता है फिर भी भृंगी काट को अपने समान बना देती है। उसी प्रकार गुरु शिष्य को अपने समान बना लेते हैं।

''बकरी पाती खात है ताकी कारी खाल।

जो नर बकरी को खात है, तिनको कौन हवाल।।''[8]

सतगुरु कबीर जीव हिंसा के घोर विरोधी थे। वे कहते हैं बकरी घास पात खाती हैं। उसकी मनुष्य खाल काढ़कर मांस तक खा जाते हैं। वह उस बकरी को खा जाते हैं, जिसका कोई अपराधा नहीं है। उनका क्या होगा जो अपराधी हैं।

वहीं सतगुरु कबीर जी ने मनुष्य जीवन में गुरु की महिमा का गुणगान किया है। मनुष्य अपने जीवन को सफल एक गुरु के द्वारा ही बना सकता है।

''गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काको लागौं पाय।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो बताय।।
''कबीर गुर गरबा मिला, मिलि गया आहे नौंना
जाति पाति कुल सब मिटे, नाऊं धरौगे कौन।।''[9]

सतगुरु कबीर ने गुरु का स्थान सबसे ऊँचा बताया है। गुरु अपने भाव स्वभाव के अंदर शिष्य को इस प्रकार मिला लेता है, जिस प्रकार आटे में नमक होता है। चाहे गुरु ऊँच जाति का हो। वह शिष्य के साथ कोई भेदभाव नहीं करता और ना ही करना चाहिए। और ना ही शिष्य को जातिगत भेदभाव सभी से दूर रहना चाहिए। गुरु के मिलते ही सभी भेदभाव समाप्त करने पड़ते हैं। अब मुझे किस नाम से पुकारेंगे?

''पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात,
एक दिन छिप जाएगा, त्यों तार परभात।।''[10]

इनमें कबीर ने कहा है कि मानव क्षण भंगुर है जिस प्रकार पानी पर बुलबुला क्षण मात्र के लिए होता है उसी प्रकार मानव का शरीर भी पानी के बुलबुले के समान है। क्या पता कब यह बुलबुले की भांति कब समाप्त हो जाए।

आदर्शवादी समाज का निर्माण करने में कबीर ने जितना संघर्ष किया शायद ही किसी ने किया होगा। आध्यात्मिक नैतिक चेतना से प्रेरित होने के कारण ही कबीर के मन में जिस आदर्श मानव की मूर्ति विराजमान थी वह एक सहज, नैतिक, सात्विक ईश्वर भक्त, पहुंचना जिस पर जाने के बाद मानव के अन्दर के सभी विकार समाप्त हो जाएं ताकि मानव सहज रूप से निवास कर सके। कबीरदास ऐसे ही मिलन बिन्दु पर खड़े थे जहाँ एक ओर हिन्दुत्व निकल जाता है तो दूसरी ओर मुसलमान जहाँ एक ओर ज्ञान निकल जाता है, दूसरी ओर आशिवा, जहाँ एक ओर ज्ञान भक्ति मार्ग निकल जाता है दूसरी ओर योगमार्ग जहाँ एक ओर निर्गण भावना निकल जाती है, दूसरी ओर सगुण साधना। उसी प्रशस्त चौराहे पर वे खड़े थे। वे दोनों को देख सकते थे और परस्पर विरूद्ध दिशा में गये। मार्गी के गुण दोष उन्हें स्पष्ट दिखाई दे जाते थे।[11]

डॉ० हजारी प्रसाद के शब्दों में, ''वह सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के आगे प्रचण्ड, दिल से साफ, दिमाग से दुरूस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अस्पृश्य एवं कर्म से वंदनीय थे।''[12]

सार रूप में कहा जा सकता है कि कबीर समाज सुधारक हैं मानवतावादी हैं। वे भारतीय समाज और हिन्दी साहित्य की अप्रतिम, अनूठी निधि है।

जिस प्रकार गुरु, जात–पात, भक्ति इत्यादि समाज का अंग है, ठीक उसी प्रकार नारी भी समाज का

महत्त्वपूर्ण स्थान है। नारी को वेदों, पुराणों में जननी की संज्ञा दी गई है। नारी इस सम्पूर्ण ब्रह्माण की सृष्टा है जो इस संसार में जन्म–मरण के चक्र को चलायमान रखने में अपना सहयोग प्रदान करती है। कबीर तो निर्गुणवादी सन्त थे, उन्होंने नारी की सुन्दरता, प्रेम के स्वरूप तथा उसका शृंगारिक वर्णन भी किया था।[13] लेकिन उन्होंने नारी के कपट व्यवहार, व्याभिचार तथा छल करने वाले रूप का भी वर्णन किया था। उनका मानना था कि –

''नारी नसावै तीनि गुण, जेहि नर पासै होई।[14]
भगति मुकति, निज ग्यान मैं, पैसि न सकई कोई।।

कबीर के काव्य में नारी के प्रति निन्दा के भाव को स्पष्ट किया है क्योंकि उनका मानना है नारी का सानिध्य मनुष्य के लिए नरक के द्वार खोल देता है।[15] उन्होंने बार–बार ''नर कौ अंग'' में नारी के काम रूप के बारे में चेतावनी दी है तथा नारी के प्रति मोह रखने से बचने के लिए उपदेश प्रदान किया है क्योंकि वे मानते है कि –

''नारी सेती नेह, बुद्धि विवेक सबही हरै।
कोई गवावै देह, कारज कोई नसरे।।[16]

कबीर के कथनों में नारी के प्रति जो व्यवहार दृश्यमान प्रतीत होता है वह शायद अन्य किसी भी निर्गुण सन्त ने प्रकट ही नहीं किया। कबरी ने पर नारी के प्रति अनुरक्ति के भंयकर परिणामों को वर्णन हमारे सम्मुख किया है। उन्होंने कहा है कि जो व्यक्ति नारी आसक्ति में डूबा रहता है उसका पतन तो निश्चित है।[17] ऐसे व्यक्ति राम के नाम की भक्ति नहीं कर पाते और नरक को प्राप्त होते हैं। उनका विचार है कि –

''परनारी को राचनो जह लहुसुन की खानि
कौन बैठ खाइए, परगट होई निदानि।।''[18]

कबीर के इन विचारों से यह जान पड़ता है कि वे अपने जन्म से संबंधित सभी बातों से सर्वज्ञ थे। इसी कारण वे नारी के प्रति आदर भाव नहीं रखते इसीलिए उर्वशी सूरती ने लिखा है कि कबीर का निवास स्थान एक वेश्यालय के निकट था। वे स्त्रियों के इस आचारण से दुःखी थे इसलिए उन्होंने अपनी झोपड़ी को जला दिया।[19] डॉ० रामनिवास चण्डक जी ने भी कहा है कि कबीर का जन्म इसी प्रकार के आचरण का ही तो परिणाम है। इसी कारण उसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उन्होंने नारी के लिए इतने कठोर तथा कटु शब्दों का प्रयोग किया है।[20] कबीर का उन महान् संतो में स्थान है जिन्होंने मनुष्य को भक्ति के साथ–साथ अपने आचरण और व्यवहार की सत्यता पर भी प्रकाश डाला है क्योंकि राम नाथ की भक्ति वह मनुष्य कर सकता है जो छल, कपट, चोरी, झूठ, अत्याचार, पाप इत्यादि दुर्गुणों से दूर रहे।[21] उनका मानना था कि मनुष्य का उद्देश्य सदा ही उच्च कर्म करने का होना चाहिए क्योंकि सद्आचरणशील व्यक्ति ही सच्चा भक्त हो सकता है। वे कहते हैं कि –

''कबीर भेष अतीत का करतूति करै अपराध
बाहरि दीसै साध गति माहै महा असाध।।''[22]

उनका कथन है कि व्यक्ति को आन्तरिक तथा बाह्य रूप से समान गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए, उसके दोनों रूपों में अन्तर होना निंदनीय है। कबीर सदा आँखों देखी पर ही विश्वास करते थे क्योंकि उनका कहना है कि जिस राम को उन्होंने नहीं देखा उसका स्वरूप उसे माँ, बाप, भाई, बहन, पिता तथा पुत्र में समान रूप

से दिखाई पड़ता है। इसीलिए वे भक्ति के प्रति सहृदय भाव रखते हैं।[23] वे कहते हैं कि जो यदि मानव ईश्वर द्वारा ..... इन रूपे का दर्शन कर लेता है वही सच्चा भक्त है।

लोहा कंचन समि करि देखे। ते मूरति भगवाना।[24]

कबीर ने जो समाज के लिए देखा, अनुभव किया, जो समाज को दिया ना तो आज तक कोई कर पाया है और ना ही कर पाएगा। उस समय निम्न जाति के लोगों के साथ बोलना तक निषेध था। कबीर उसी वर्ग से होने के बावजूद भी समाज को एक ऐसी दिशा में लेकर गए जिसमें न जाति पाति थी, भेदभाव नहीं था, ना ही छोटा या बड़ा कबीर के द्वारा किये गए उपकार को हम भूल नहीं सकते हैं।

संदर्भ-सूची :-

1. के.एल. चंचरीक, महात्मा कबीर जीवन और दर्शन, पृष्ठ – 53
2. वही, पृष्ठ – 52
3. वही, पृष्ठ – 54
4. सं. शुकदेव सिंह, बीजक रमैणी, पृष्ठ – 103
5. माता प्रसाद कबीर ग्रन्थावली, पृष्ठ – 65
6. के.एल. चंचरीक, महात्मा कबीर जीवन और दर्शन, पृष्ठ – 118
7. वही, पृष्ठ – 147
8. वही, पृष्ठ – 164
9. वही, पृष्ठ – 147
10. डॉ० पारसनाथ तिवारी, कबीर वाणी संग्रह, पृष्ठ – 179
11. डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, पृष्ठ – 77, 78
12. डॉ० रामकुमार वर्मा, कबीर एक अनुशीलन।
13. चिंतन, डॉ० ब्रजभूषण शर्मा, पृष्ठ – 128 .....।
14. कबीर ग्रन्थावली, कामी नर कौ अंग .....।
15. कबीर चिंतन, डॉ० ब्रजभूषण शर्मा, पृष्ठ – 129
16. कबीर ग्रन्थावली, कामी नर कौ अंग, 10
17. कबीर चिंतन, डॉ० ब्रजभूषण शर्मा, पृष्ठ – 131
18. कबीर ग्रन्थावली, पद 357
19. कबीर जीवन और दर्शन, उर्वशी सूरती, पृष्ठ – 48, 49
20. कबीर जीवन और दर्शन, डॉ० रामनिवास चण्ड, पृष्ठ – 22
21. कबीर का सामाजिक दर्शन, डॉ० प्रहलाद मौर्य, पृष्ठ – 190
22. कबीर ग्रन्थावली, असाध कौ अंग, पृष्ठ – 38
23. कबीर का सामाजिक दर्शन, डॉ० प्रहलाद मौर्य, पृष्ठ – 195
24. कबीर ग्रन्थावली, पृष्ठ – 112, पद – 184

ई–मेल : rekhatejpalchauhan@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 131-137

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रमणिका गुप्ता का अपराजेय संघर्ष

प्रियंका सिंह

पीएच.डी., शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी (बिहार)

शोध सार :-

मैंने इधर
पढ़ ली है हवा की फितरत
बहना और बहाना
उड़ना बस उड़ना
कहीं ना टिकना
है उसकी आदत
और मै भी बहने लगी
उड़ने लगी।।

रमणिका गुप्ता की दोनों ही आत्मकथा बहुत ही महत्वपूर्ण है। एक इनके व्यक्तित्व का संघर्ष है तो दूसरा इनके अस्तित्व की लड़ाई। हादसे आत्मकथा एक स्त्री ही नहीं एक राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में उभरती महिला के यथार्थ को बताने की कहानी है।

राजनीति एक ऐसा दलदल है जहाँ स्त्री को रगड़ते हुए पुरूष अपने को आगे कर लेता है। इस दलदल में रमणिका गुप्ता जैसी स्त्री बेवाक बोलते हुए अपनी बातों पर अडिग रहते हुए बिहार की राजनीतिक व्यवस्था को जड़ से हिला देने वाली निडर क्रांतिकारी महिला की साहस की गाथा भी है। लिखती है कि ''की।'' वहाँ के लोग ''नहीं स्त्री कार्यकर्ताओं को अपना कलेवा मानते थे जिसे भूख लगने पर खाने का एक स्वार्जित जन्म सिद्ध अधिकार उन्होंने प्राप्त कर रखा था। उनकी नजर में बिना किसी पुरूष नेता वृक्ष का सहारा लिए महिला नेता–कांग्रेस के बहुत से नेता मुझसे चिढ़ते थे क्यों कि मैंने उनकी कभी परवाह नहीं ता पनप और बढ़ नहीं सकती थी और मैं लता बनने को तैयारथी।''[1]

एक स्त्री का इस तरह बेवाक बोल देना पुरूष समाज के लिए कितना घातक प्रहार है जहाँ स्त्रियों को अपने फैसले लेने में मनाही हो वह लेखिका का अपने फैसले खुद लेने और उसे पूरा करने के लिए कितने संघर्ष से गुजरी होगी, लेखिका के मन में दूसरों के लिए कुछ कर गुजरने की लालसा है वह कहती हैं ''अपने परिवार के लिए तो सभी लोग सब कुछ करते है जो दूसरों के लिए कुछ करें वही इंसान है।''[2]

इनकी आत्मकथा और स्त्रियों की आत्मकथा की तरह परिवार के ही सुख–दुख तक ही नहीं और ना ही

अपने व्यक्तित्व का संघर्ष रमणिका गुप्ता यहाँ तक सीमित नहीं उनका संघर्ष उनके व्यक्तित्व की लड़ाई खुद तक नही सीमित वह दूसरे स्त्री समाज मजदूरों का संघर्ष है जिसे वह साथ लेकर चलती हैं और अपनी जान जोखिम में डाल कर दूसरों को बचाती हैं। शायद ही रमणिका गुप्ता की तरह कोई महिला होगी जिसकी आत्मकथा इतनी बेवाक होगी।

इस बात पर राजेन्द्र यादव द्वारा कही गई बात सटीक बैठती है ''इन्ही तुफानी झंझावातों से गुजरकर आई है रमणिका गुप्ता। आर्य समाज कांग्रेस, समाजवादी और कम्युनिस्ट होने की उनकी यह यात्रा भारतीय राजनीति के नाटकीय मोड़ो का इतिहास भी है और विकास भी इस माहौल में इस आत्मकथा को एक 'अबला' का परत–दर–परत अपने को छीलते जाने और सबला के अधिकार की प्रक्रिया के रूप में भी देखा जा सकता है, हालाँकि यहाँ यह एक औरत की नहीं राजनीतिक कार्यकर्ता की कहानी अधिक हैं, कितना दुष्कर रहा होगा आर्यसमाजी संस्कारों में पली हुई एक लड़की के लिए पुरूष साथियों के साथ सोना, खाना, सेक्स और प्यार के भावानात्मक द्वन्द्वों से गुज़रना और कभी गोली और कभी फरसों के हमलों से बच निकलना...चाहे एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पवर्तारोही लड़कियाँ हों या आन्तरिक्ष–यानों में उड़ने वाली कल्पना चलवाएं– वह सब कहाँ छूट जाताहै– जो घरों–परिवारों में 'लड़की' होने के नाम पर घुट्टी पिलायी जाती है..पुरूषों द्वारा नियन्त्रित, संचालित बिहार की राजनीति में चालीस साल एक औरत की महत्वपूर्ण उपस्थिति कितना कुछ बना–बिगाड़ पाई है उसे देखना रोचक है।''

रमणिका गुप्ता को बचपन से ही राजनीति करने में मजा आता था। इन्हें बचपन से ही राजनीति और सामाजिक बदलाव की धारणा से जुड़ी रही। जब वह ''पांचवी–छठी कक्षा से पढ़ती थी तो 'सत्यार्थ प्रकाश' के समर्थन में मूर्ति पूजा के खिलाफ घंटो बहस करती रहती है।''[3] लेखिका ने सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं अपने आत्मकथा के माध्यम से उजागर किया है। रूढ़ि, परम्परा वेश्यावृत्ति, मुर्तिपूजा राजनीति में औरतों को वस्तु के तौर पर देखना आदि रमणिका गुप्ता का तीखा प्रहार हैं।

''राजनीति में स्त्री कार्यकर्ताओं को अपना कलेवा मानते है जिसे भूख लगने पर खाने का एक स्वर्जित जन्मसिद्ध अधिकार उन्होंने प्राप्त कर रखा था।''[4]

1. राजनीति और समाजसेवा में निडरता, आत्मविश्वास और जिद्द जरूरी हैं। एक स्त्री को राजनीति में आने के लिए खुद सहारा या सहयोगी बनना चाहिए, सहारा खोजना नहीं ट्रेड यूनियन या राजनीति में आने वाली महिलाओं को देहाती शब्दावली के अनुसार थेथर' बनना जरूरी है। 'छुई–मुई' बनने से समाज पर चलने की हिम्मत जुटाना जरूरी है। हवा के विपरीत चलने का इरादा आवश्यक हैं। हवा के साथ तो हजारों तिनके उड़ते रहते हैं, जो उन्हें झेलकर, जड़ से न उखड़े या झेलने के क्रम में टूट भले जाएँ पर उड़े नहीं, चर्चा में वे ही रहते है'' लेखिका बचपन से ही खुदगर्ज प्रवृत्ति की स्त्री थी। सन् 1947 को भारत को स्वराज्य प्राप्त हो जाने के पश्चात् पाकिस्तान का गठन हुआ तथा साथ ही मुस्लिम पाकिस्तान भेजे जाने लगे तथा पाकिस्तान में फसे हिन्दू परिवार भारत लाने का कार्य हो रहा था।

लेखिका मुस्लिम स्त्रियों के लिए लड़ाई करने के साथ ही निडरता के साथ मंच पर खड़ी होकर सरकारी अफसरों पर सीधा निडरता पूर्वक आरोप लगाती है–''ये लड़कियों को खोजने का आश्वासन दे रहे हैं सबके झूठ बोलते है। इनके घरों में ही तो लड़कियाँ है। इन्हीं लोगों के घरों, में जाइए एक के यहाँ पांच–पांच, दस–दस

लड़कियाँ मिल जाएंगी।'[5] लेखिका अपने विचारों को स्वतंत्रता के साथ निडरता से कहती हैं। बचपन से गांधी के विचारों से प्रेरणा लेती दिखती हैं, वो लिखती है नोआखाली के दंगे को लेकर गांधी जी ने आमरण अनशन शुरू किया था। कहती है ''मैंने घर में ही अनशन शुरू कर दिया और खाना–पीना बन्द कर दिया।"

स्त्री की राजनीतिक स्थिति तो बहुत दयनीय एवं भयानक रही हैं, राजनीति में तो केवल पुरुष का ही वर्चस्व रही है, स्त्री को वे 'कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं कि स्त्री आगे बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेगी, तो आगे बढ़ेगी तो पुरुष का अस्तित्व खतरे में आ सकता है। यह बात पुरुष भली–भाँति जानते हैं। इसी वजह से स्त्री को बर्दाश्त नहीं कर पाते। जो स्त्री राजनीति में उतरती है उसकी तरफ बुरी दृष्टि से देखा जाता है। उसके चरित्र को लेकर समाज में मजाक उड़ाया जाता है।

एक राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकता के रूप में रमणिका गुप्ता सक्रिय भूमिका निभायी। कोलयरी ये 'ट्रेड यूनियन' का गठन उनकी राजनीतिक एवं सामजिक कार्यकर्ता के रूप में उनका योगदान बहुत ही उच्च कोटि, सच्चाई के साथ प्रेम, विश्वास हमेशा चला रहा है। उनके सच्चाई का प्रमाण देश की प्राचीन एवं बड़ी कम्पनी 'टाटा' से उनका संघर्ष एवं परिणामस्वरूप 'टाटा कम्पनी' का मजदूर के हितों के लिए उठाये गए हितकारी कदम थे।

आधुनिक समय में भारत जो 'यूनियन' पहले से ही बना था। यूनियन के बारे में पहले से ही मजदूर नेताओं के किस्से सुन चुकी थी इसीलिए यूनियन से रमणिका जी को घृणा हो गई थी, लेकिन घाटो (टाटा कम्पनी) के मज़दूर भी, रेलीगढ़ा और गिद्दी (एन. सी.डी.सी.) मजदूर भी यूनियन बनाने पर जोर देने लगे। अन्त में बहुत बहस और सोचने विचारने के बाद दूसरों से भिन्न यूनियन बनाने के लिए तैयार हुई, जो केवल रोटी की लड़ाई न लड़कर राजनीतिक लड़ाइयों में मजदूरों के साथ–साथ किसानों, नौजवानों और महिलाओं की भी सहभागिता लें और दे। यूनियन का संगठन करना रमणिका गुप्ता के जीवन की अहम् घटना थी। जिसके बाद रमणिका गुप्ता राजनीतिक में अपने जड़े बहुत ही मजबूत कर ली और उसके बाद कई आन्दोलन को सुचारू रूप से चलाने लगी। यही से उनके जीवन को एक नया आयाम मिला और लम्बी यात्रा की लड़ाई शुरू हो गई।

वह अपने व्यक्तिगत सुख सुविधा छोड़कर कठिनाई के रास्तों पर चलना स्वीकार कर ली जो लोगों के हितों में हो। वह एक जगह लिखती हैं– "उसमें अकेली 'मैं' नहीं थी बल्कि समष्टि थी, समष्टि की प्रतीक 'मैं'– एक व्यापक दृष्टि का रूप में। मैं समाहित हो गई थी उस समूह में और समूह व्याप्त हो गया था मुझमें कुछ और हासिल करने की ललक बराबर संघर्ष करने को प्रेरित करती है। और निराशा को पास फटकने नहीं देती। संघर्ष जैसे–जैसे बढ़ता है, हौसला भी वैसे–वैसे ही बढ़ता है– आस्थाएँ दृढ़ होती है, विश्वास अडिग ही नहीं बनते बल्कि–बिल्डअप होते हैं।''[6.]

रमणिका गुप्ता ने अनगिनत लड़ाइयाँ लड़ी और जीत ने उन्हें जोखिम उठाने की प्रेरणा दी और हार ने सन्तुलन बनाए रखा।

यूनियन बनने के बाद 'कोयला श्रमिक संगठन' की सबसे बड़ी उपहार मजदूरों का परिचय–पत्र था। हजारों मजदूर हजारीबाग, गिरिडिह के कोयला खदानों में काम करते थे। वे बेचारे रात–दिन मेहनत करते हैं और उन्हें मेहनत के हिसाब से पगार बहुत कम मिलता, उनका पूरे परिवार का खर्चा नहीं चल पाता। और उनके पास काम करने का कोई लिखित रिकार्ड नहीं होता था कि वे उस खदान के स्थायी मजदूर हैं।

ठेकेदार अपने स्वार्थ के लिए मजदूरों का खून चूसते थे। मजदूरों के काम का कोई लिखित–प्रमाण नहीं रखा जाता था कि कहाँ, कब, कितने मजदूर काम किये। क्या नाम हैं हाजिरी हो या पगार किसी का जिक्र नहीं करते थे। ताकि मजदूरों को कभी भी काम से निकाला जा सके, उनके मेहनत का पगार भी रोकी जा सके और कभी भी दुर्घटना होने पर मजदूरों के घर को मुआवजा न देना पड़े। रमणिका गुप्ता ने यूनियन के मजदूरों को उनका हक उनका परिचय पत्र दिलाने के लिए बहुत ही संघर्ष किये और सफल भी हुई, मजदूरों का परिचय पत्र मिला और उसमें उनका स्थायित्व नाम और उनकी पहचान करा दिया। जो की यह भी रमणिका गुप्ता के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी जिसपर लिखती हैं–

''परेंज बंगलै पर अनशन के फलस्वरूप परिचय–पत्र देने का निर्णय भी हुआ और टोकन–स्वरूप ही सही दस रूपए प्रति मजदूर की दर से बोनस–स्लिप के साथ बोनस भी मिला इस बोनस खाते तथा बी–फार्म रजिस्टर का भरा जाना मजदूरों के लिए वरदान साबित हुआ चूँकि उनका रिकार्ड बन गया, जो पहले कभी नहीं बना था। इसी रिकार्ड के आधार बना था। इसी रिकार्ड के आधार पर नंबर के साथ परिचय–पत्र भी मजदूरों को मिला जो राष्ट्रीयकरण के बाद खदानों के उनकी नौकरी का प्रमाण पत्र माना गया।

'ट्रेड यूनियन' के गठन के बाद रमणिका गुप्ता ने अपने सम्पूर्ण जीवन को गरीब मजदूरों, दलित किसानों व वंचित महिला पुरुषों को समर्पित कर दिया। उनके अन्दर इतनी आकर्षण शक्ति थी, जिसमें जिज्ञासा, आत्मबल, सत्यता से किसान मजदूर उनकी ओर आकर्षित हुए वह सारे लोग रमणिका गुप्ता को 'माई' के नाम से जानते थे। 'ट्रेड यूनियन' हों या कोई और समाज सेवा आन्दोलन के संघर्ष बहुत लम्बे अरसे तक चला रमणिका गुप्ता ने अपने मजबूत इरादों से मजदूरों के हौसलों को बढ़ाया इरादों से मजदूरों के हौसलों को बढ़ाया तो कभी मजदूरों व किसानों पर होने वाले अत्याचार को खुद के उपर झेला। इनके संघर्ष की गाथा पढ़ने पर मन भावुक सा हो जाता है, ठेकेदारों, भू–माफियाओं ने मजदूरों के एक जूट को तोड़ने के लिए अनेक हथकंडे अपनाऐं। तो कभी उनके भीतर फूट डालने की कोशिश की तो कभी साजिश करते हुये मजदूरों की हत्या की मंशा से हिंसात्मक कार्यवाही की। लेकिन मजदूर के संगठन इतने मजबूत थे कि वे टूटे नहीं, जीतते चले, उनके हौसले बहुत ही मजबूत थे, मजदूरों ने सबकुछ सहा पर हार नहीं माना और ना ही अपने चुनाव के नेताओं को कमजोर पड़ने दिया। मजदूरों की हौसले प्रेरणा दायक बनी।

रमणिका गुप्ता "भूख हड़ताल, जेल जाना, कोर्ट के घेराव, प्रदर्शन जज का घेराव, राज्यसभा की याचिका का घेराव, राज्यसभा की याचिका सुप्रीम कोर्ट तक मुकद्दमेबाजी, खदान बंदी भुखमरी से जुझती पर हारी नहीं, झुकी नहीं। इतने बड़े सामंती परिवार के होने के बावजूद भी, मजदूरों व किसानो के गाँवों–गाँवों भटकना पेड़ों के पत्ते को उबालकर खाना चूहों के बिलों से चावल जुटाना कफन के लिए पैसा जुटाना, देश–प्रदेश से चंदे माँग कर अपना और गरीब मजदूरों का जीवनयापन करना।

इस पर रमणिका गुप्ता लिखती हैं– ''हड़तालों प्रदर्शन, कोर्ट के घेराव "हड़तालों" प्रदर्शन, कोर्ट के घेराव जज का घेराव, राज्यसभा की याचिका, समिति के समक्ष गवाही, भूख हड़ताले, सुप्रीम कोर्ट तक मुकद्दमेबाजी, निषेधाज्ञाएं। खदान–बंदी, भुखमरी, गोलीबारी तथा मौत सब सहा पर झुकी नहीं। उसने अगल–बगल के गाँवों के पेड़ों के पत्ते उबालकर खाए–चूहों के बिलों से धान बीनकर खाना जुटाया कफन के लिए जुगाड़ बिठया, देश–प्रदेश चंदे की खोज में गयी– घर पर टूटी नहीं मजदूर न ही उसने मेरा या अपने साथियों पर भरोसा और

ना ही हमारा मनोबल टुटने दिया।''[7]

यह लम्बी लड़ाई अपने में एक इतिहास हैं। खदानों के राष्ट्रीयकरण के बाद भी मजदूरों को बहाल करवाने के लिए उनके सारे जुटों को भीषण संघर्ष करना पड़ा। जब की ठेकेदार मजदूरों के सारे रिकार्ड लेकर भाग गए थे, या वे जाली रिकार्ड बनाकर अपने संबंधियों के नाम चढ़ाकर उन्हें नौकरी दिलाने के लिए साजिश रचने लगे।

उनके नए नेता भी पैदा हो गए जो फर्जी मजदूरों के लिए आन्दोलन पर उतारू थे। रमणिका गुप्ता सन् 1960 ई. में राजनीति में अपने कदम रखे और सन् 1968 से 1976 तक केदला का संघर्ष उस क्षेत्र के क्रमिक संगठनों का इतिहास हैं जिसका कुछ हिस्सा रमणिका गुप्ता जी ने पंक्तिबद्ध किया–

बनावट का मानचित्र है।''86 –"मजदूरों द्वारा उस बंजर धरती में संघर्ष के बीज रोपने हेतु–हल नाधने की जद्दोजहद की बानगी है, या यह उस धरती की जिस पर हैवानों का कब्जा था।'[7]

रमणिका गुप्ता अपने परिवार के सुख–सुविधाओं को छोड़कर झारखण्ड के आदिवासियों के साथ खेत–खलिहानों में साथ रहकर पत्ते का साग और मकई का घुहा खाया। ठेकेदारों ने रमणिका गुप्ता को मारने की योजना बनाई, तो एक ठेकेदार भगत सिंह ये रमणिका गुप्ता को उनके जान से मारने के साजिश से उन्हें अवगत कराया तथा उन्हें कुदरिया गाँव जहाँ मजदूरों का एक बड़ी संगठन के साथ आन्दोलन चल रहा था। वहाँ जाने से रोकने की कोशिश कि तो रमणिका ने जवाब देते हुए कहा– ''मेरे न जाने का अर्थ होगा डर जाना और डर जाने का मतलब है मजदूरों का विश्वास खो देना और आन्दोलन ठप्प पड़ जाना। इसलिए मेरा जाना जरूरी है, ताकि मजदूरों का हौसला पस्त न हो नेतृत्व में उनकी आस्था न टूटे– मैं अगर मारी भी जाऊँगी, तो भी मजदूर आन्दोलन की एक दिशा मिल जाएगी।'[8]

रमणिका गुप्ता को मजदूर अपना भगवान मानते थे किसी भी हालत में हो फिर भी उन्हें अपने माई (रमणिका गुप्ता) पर पूर्ण विश्वास था और उन्हें वह खोना नहीं चाहते थे, जितना हो सकता था मजदूरों ने अपने माई (रमणिका गुप्ता) की सुरक्षा स्वयं किया।

1968 में चुनाव के तुरन्त बाद मजदूरों के लिए किये वायदे के अनुरूप रमणिका गुप्ता एक महीने घाटों में स्कूल निर्माण कराने की चुनौती 'टाटा कम्पनी' को दे दी और फिर शुरू हो गई टाटा कम्पनी से स्कूल बनाने के मुद्दे पर लड़ाई। टाटा कम्पनी मजदूरों के बच्चों के लिए स्कूल नहीं बनने देना चाहती थी, वहाँ इंटक की यूनियन थी जो प्रबन्धन के इशारे पर ज्याद चलती थी। जब स्कूल के नाम पर मजदूरों ने चंदा लेकर पैसा जुटाकर सत्रह हजार रूपया इंटक की यूनियन के पास जमा था, फिर भी बिना टाटा कम्पनी की सहमति से स्कूल बनाने को तैयार नहीं थे। रमणिका गुप्ता रूकने वाली कहा थी, एक माह पूरा होते ही स्कूल की नींव डालने के लिए किसानों और मजदूरों का आह्वान किया तो दस ग्यारह हजार किसान–मजदूर घाटों में स्कूल के प्लाट पर जमा हो गए और वहाँ साफ–सफाई करके स्कूल की नींव डाल दी और रमणिका गुप्ता को हाईस्कूल निर्माण के स्वागत में पहनाई गई फूल माला की बोली लगाई गयी इस निर्णय के साथ की जो पैसा माला के बिक्री से मिलेगा वह भवन निर्माण में लगेगा। उनकी कामयाबी पर टाटा कम्पनी डर गयी और स्कूल के निर्माण के कार्य को रोकने के लिए कोर्ट से 'स्टे–आर्डर' ले ली गई। फिर भी इतना कुछ होने के बावजूद रमणिका गुप्ता को रोकना आसान नहीं है और वह थमने वाली कहाँ थी वह लिखती हैं–

"मैंने ग्रामीणों को साथ लेकर मजदूरों के सहयोग से रातों–रात सब कमरों की छतों की ढलाई करवा दी। कोट–पैंट, घड़ी–मोजा पहने हुए गाँव के लड़कों ने भी बालु–सीमेंट, गिट्टी रात भर ढोया, मैंने भी ढोया–और स्कुल की छत ढल गई। बच्चों की पढ़ाई। स्कूल में शुरू कर दी गई। स्कूल का नाम मैंने ही रखा। राम मनोहर लोहिया श्रमिक उच्च विद्यालय।"[9]

फिर बाद में रमणिका गुप्ता ने 'टाटा कम्पनी' के खिलाफ ठेकेदारी खत्म करो ''ठेकेदारी मजदूरों ठेकेदारी खत्म करो। ठेकेदारी मजदूरों को स्थायी और नियमित करो' तथा स्थानीय बेरोजगारों की नौकरी दो' का आन्दोलन छेड़ा। फिर चुनाव प्रचार के दौरान ही, प्रचार छोड़कर गोमिया और खुद गड़्ढा बस्ती में पानी की लड़ाई शुरू कर दी। रमाणिका गुप्ता गरीब, पिछड़ा, मजदूरों किसानों को संगठित कर उनके किसानों को संगठित कर उनके कल्याण के लिए हमेशा अपने कल्याण के लिए हमेशा अपने जान की जोखिम लड़ती रही, जो आज के समाज के लिए प्रासंगिक हैं। रमणिका गुप्ता को दो बार विधान परिषद सदस्या चुनी गई एवं एक बार विधान सभा सदस्या चुना जाना उनकी ईमानदारी संघर्षों का नतीजा रहा।

कल को भी राजनीति में 'गंदगी थी और आज भी राजनीति में इतनी गंदगी भर गई है स्वार्थ, अपराध, शोषण, भ्रष्टाचार आदि पर्याय बनने लगे हैं, रमणिका गुप्ता जैसी ईमानदारी सृजनशील और दुसरों के लिए हमेशा कल्याणकारी कार्य करने वाली नेता राजनीति के असल चेहरे हैं। केदला, झारखण्ड, कुजू, रैलीगढ़ा आदि कोलियारियों में संघर्ष हुए जिसने रमणिका गुप्ता पर हमले भी हुए।

घायल भी हुयी और अनेक बार गिरफ्तार भी हुयी, पर डटी रही। सन् 1968 में मांडु चुनाव लड़ती हैं। वह लिखती हैं कि ''यूनियन का गठन मेरे जीवन की एक अहम् घटना थी। बाद में मैंने पूरी तरह उस क्षेत्र में जड़े जमाली और एक के बाद कई आन्दोलनों का तांता लग गया।''[10]

'ठेकेदारी खत्म करो' के सन्दर्भ में 1970 ई. में मील–मालिकों और नेताओं ने अपनी मिलीभीत से रमणिका गुप्ता पर हमला करवाते हैं। जिससे रमाणिका गुप्ता घायल होने के साथ–साथ कलाई की हड्डी टूट जाती है। किसी तरह वहाँ से अपनी जान बचाकर निकलती है। और वह अस्पताल में भर्ती होती है उसी समय संसद द्वारा मजदूरों के हक में फैसला होने की गूंज अस्पताल में भर्ती रमणिका गुप्ता को सुनाई देती हैं। वह लिखती हैं– ''मुझे तो एक बड़ी लड़ाई लड़ने के लिए मजदूरों को तैयार करना अभी बाकी था। मुक्ति की जंग अभी अधूरी थी।[106] रमणिका गुप्ता अपने इरादों को कभी भी किसी भी हाल में झुकने नहीं दिया। अदम्य विश्वास था उनमें और असीम जिजीविषा थी। भला अधूरा आन्दोलन छोड़कर वो कैसे मरती! इसीलिए अपने अन्दर के जिजीविषा को कभी मरने नहीं दिया। उनका राजनीतिक में विस्तार उनके विरोधियों के लिए घातक था, रमणिका गुप्ता का अखबारों की सुर्खियों में राष्ट्रीय फलक पर छा जाना उनके लिए ही मलाल था। हजारी बाग में मजदूरों के बचाव के लिए हटा रहना उनके यूनियन के ठेकेदारो, मालिकों का अन्दर ही अन्दर विरोधी नेतृत्व अचकचा गया, भौंचक रह गया। वह इस सन्दर्भ में लिखती हैं– ''मेरे ख्याल में एक औरत आन पर आ जाए तो वह मर्दों से अधिक जोखिम उठा सकने की कुब्बत रखती हैं। मेरे साथ कार्य करने वाले मर्द मुझे, वहाँ न जाने की राय दे रहे थें। में उस दिन नहीं जाती तो वहाँ कभी न जा पाती।''[11]

लेखिका के लिए चुनौति भरा जीवन जीना बहुत मुश्किल होगा पर लेखिका ने अपने आत्मकथा में यह जिक्र ही नहीं किया है कि मैं थक गई हूँ या हार गई उनकी निडरता ललक और कार्य के प्रति निष्ठा बहुत

ही सराहनीय हैं आत्मकथा में वर्णित घटनाओं की लेखिका ने–

1. हादसें
2. कोयला खादानों में संघर्ष (जिसमें इन्होंने राजनीति नेता से मिलना, धरना देना जेल जाना) संजय गांधी से मुलाकात राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ का विवाद 1976 से 1980 के बीच की घटनाएं 1980 को विस्थापित आन्दोलन आदि घटनाओं का वर्णन किया हैं।
3. 1973 में खदानों का राष्ट्रीकरणं
4. बिहार विधान– परिषद/विधान–सभा में उठे विवादरू राजनीतिक संस्मरण एवं निष्कर्ष।

हादसे के अन्तर्गत लेखिक अपने बचपन से ही आपहुदरी की व्यथा को कहती है जहाँ लेखिका का जीवन राजनीतिक के दलदल में एक स्त्री की संघर्ष की अपराजेय गाथा हैं।

लेखिका का कहना है कि मैंने जीवन में इस अन्तिम निर्णय को ही अपने हाथ में लेने का साहस किया इसलिए एक–न–एक विवाद हमेशा मेरे इर्द–गिर्द घेरा डाले रहा। मैंने इन विवादों को, मिथकों को तोड़ा–इसका मुझे अहसास हैं।''[12]

रमणिका गुप्ता ने मानवीय संवेदना को हमेशा प्रथम प्राथमिकता देती हैं

संदर्भ :-

1. रमणिका गुप्ता २००५ हादसे।
2. आपहुदरी २०१५
3. वही, पृ० 33
4. आपहुदरी, पृष्ठ 70
5. वही, पृष्ठ 77
6. हादसे, पृष्ठ 25
7. हादसे, पृष्ठ 20
8. वहीं, पृष्ठ 18
9. वहीं, पृष्ठ 21
10. आपहुदरी, पृष्ठ 33
11. हादसे, पृष्ठ 17
12. वही, पृष्ठ 27
13. सीमांत बहुआ स्त्री उपेक्षिता, पृष्ठ
14. श्रृंखला की कड़ियां, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 22

प्रियंका सिंह, पीएचडी हिंदी

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार–845401

Priyankasinghbhu1992@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 138-143

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतना

डॉ० सुनीता देवी, शोध निर्देशिका
बिमला शर्मा, शोधकर्त्री
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला–171005

भूमिका :–

साहित्य सृजन का उद्देश्य समाज का कल्याण चिंतन है जो मानव को एक दिशा प्रदान करता है। साहित्य में लोकमंगल की भावना निहित होती है अतः साहित्य ही समाज का हितसाधक माध्यम है। साहित्य ही मनुष्य की सबसे बड़ी पूंजी होती है। किसी संस्कृति का ज्ञान कराने में भी साहित्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस तरह भारतीय सभ्यता एवं मूल्य, साहित्य में सुरक्षित हैं और वर्तमान पीढ़ी इनका पालन कर सकती है। आज के साहित्यकार वर्तमान भारत की समस्याओं को अपने साहित्य में पर्याप्त स्थान दे रहे हैं। साहित्य में समाज का प्रतिबिंब दिखाई देता है। जीवन को प्रतिबिंबित करने के लिए साहित्य को विभिन्न रुपों में अपनाया जाता है। इन सभी रुपों में कथा–साहित्य सबसे अधिक लोकप्रिय एवं प्रभावोत्पादक रूप है। कथा–साहित्य की दोनों विधाएँ कहानी तथा उपन्यास संवेदना, यथार्थता, सामाजिकता, आँचलिकता, राष्ट्रीयता तथा भावात्मकता से परिपूर्ण विधाएँ रही हैं। हिंदी साहित्य में कथा–साहित्य का उद्भव एवं विकास आधुनिक युग में हुआ है। कहानी तथा उपन्यास विधाएँ संवेदना, कथ्य, शिल्प और संचेतना की दृष्टि से प्राचीन भारतीय कथा या आख्यायिका की परंपरा से भिन्न तथा आधुनिकता की चेतना से संपन्न हैं। कथा–साहित्य में मनोरंजन के साथ–साथ जीवन के व्यापक संदर्भों को सूक्ष्मता से रुपायित करने की क्षमता सन्निहित रहती है। वास्तव में कथा–साहित्य पाठक एवं लेखक के बीच संप्रेषण का सबसे सूक्ष्म माध्यम है। हिंदी कथा–साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा कथा–साहित्य को नया आयाम दिया। उनके कथा–साहित्य में मानव जीवन के सभी पहलुओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत हुआ है। उस समय कथा–साहित्य में सुधारवादी जीवन दृष्टि ही प्रधान थी। आधुनिक समय में हिंदी कथा–साहित्य ने सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक तथा साँस्कृतिक सभी पहलुओं को बखूबी से उभारने में सफलता प्राप्त की है। रुचिकर होने के कारण कथा–साहित्य वर्तमान युग की जटिलताओं को व्यक्त करने में समर्थ है।

रमेश पोखरियाल 'निशंक' बहुआयामी व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के धनी हैं। निशंक आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। इन्होंने साहित्य की सभी विधाओं को अपनी लेखनी से सुशोभित किया है। वे एक

राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ कवि, कहानीकार तथा उपन्यासकार के रुप में साहित्य सृजन में अपना योगदान दे रहे हैं। आज समाज अनेक समस्याओं में जकड़ा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी इन समस्याओं का निदान स्वप्न मात्र बनकर रह गया है। इन्होंने अपने कथा–साहित्य में स्त्री–पुरुष संबंध, संयुक्त परिवार विघटन, युवा पीढ़ी में पनपता रोष, मूल्यहीनता, संवेदनहीनता, आर्थिक विशमता एवं भ्रष्ट राजनीति इत्यादि समस्याओं को लिया है।

विषय का स्पष्टीकरण :-

साहित्य समाज की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। समाज से अलग मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। साहित्यकार जिस परिवेश में जन्म लेता है, जिस परिवेश में पलता है, उस परिवेश का चित्रण अपने साहित्य में करता है। जिन समस्याओं, अभावों को उसने स्वयं अपने जीवन में देखा है उन सबकी झलक उसके साहित्य में प्रमुख रुप से देखी जा सकती है। साहित्य ही वह माध्यम है जिसके द्वारा जीवन के व्यापक अनुभवों को सूक्ष्मता व गहराई के साथ चित्रित किया जाता है। साहित्य की प्रमुख विधाओं में कथा–साहित्य सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। कथा–साहित्य में कहानी तथा उपन्यास दोनों विधाएं सम्मिलित होती हैं। कथा–साहित्य में सारी विधाओं की छवियों को सन्निहित कर लेने की क्षमता होती है। इसमें कथा के साथ–साथ काव्य की सी भावुकता और संवेदना, निबंध की सी चिंतन मूलकता, नाटक की सी संवाद और परिवेश योजना होती है। मानव के चरित्र पर प्रकाश डालना तथा उसके रहस्यों को खोलना ही कथा–साहित्य का मूल ध्येय है। आरंभ में जब कथा लेखन की शुरूआत हुई तो इसका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन ही था किन्तु प्रेमचंद युग से कथा–साहित्य लेखन का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन नहीं अपितु सामाजिक समस्याओं एवं कुरीतियों का चित्रण करना रहा है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध का शीर्षक निशंक के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतना है।

'ग्रामीण चेतना' शब्द दो शब्दों, 'ग्रामीण' और 'चेतना' का अर्थपूर्ण संयोजन है। 'ग्रामीण' शब्द का अर्थ होता है– गाँव में रहने वाला, ग्रामवासी, गाँव से संबंधित और 'चेतना' शब्द का अर्थ होता है– जागृति, समझ, ज्ञान या यह समझ सकते हैं कि चेतना का अर्थ मनुष्य की जागृति से है अर्थात् मन की वह अवस्था जब उसे अपने या संसार के होने का एहसास हो। इस प्रकार ग्रामीण चेतना से अभिप्राय ग्रामीण लोगों में जागृति आना और एक विशेष प्रकार की समझ का विकसित हो जाना है।

साहित्य ही वह माध्यम है जिसने अनुभूति के स्तर पर ग्राम चेतना की अन्तःधारा को स्वर प्रदान किये हैं। ग्राम चेतना के अध्ययन से ग्राम्य जीवन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं साँस्कृतिक रूपों की आंतरिकता और उसमें उभर रहे नवीन भाव–बोध का हमें विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। यही आज की युगीन आवश्यकता भी है। हिंदी कथा–साहित्य में ग्रामीण–चेतना के विविध संदर्भों का प्रस्तुतीकरण सर्वप्रथम प्रेमचंद के कथा–साहित्य में हुआ है। प्रेमचंद के बाद कुछ काल तक उपन्यासकारों की सृजन–प्रवृत्ति व्यक्तिवाद एवं मनोविश्लेषण की ओर झुक गई और इस बीच गाँव के प्रति विरक्ति की भावना तीव्रता से पनपने लगी। हिंदी में आँचलिक उपन्यासों के माध्यम से ग्राम्य–जीवन की विविध समस्याओं, संभावनाओं के नये आयाम उभरे हैं।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध में निशंक के कथा–साहित्य में चित्रित ग्रामीण समाज की समस्याओं, रीतियों, परंपराओं, जीवन–शैली तथा ग्रामीण चेतना के विविध आयामों जैसे– सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, साँस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा पर्यावरणीय आधारों पर विवेचित एवं विश्लेषित करने का प्रयास किया जायेगा। ग्राम भारतीय

सभ्यता एवं संस्कृति की आत्मा है। ग्रामीण शब्द का प्रकृति से घनिष्ठ संबंध है। ग्राम एक पूर्ण सामुदायिक इकाई है जिसमें जीवन की पूर्णता के दर्शन होते हैं। ग्राम ही भारतीय संस्कृति का वास्तविक प्रतिनिधित्व करते हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में रमेश पोखरियाल 'निशंक' का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। वे एक राजनेता होने के साथ–साथ कवि, कहानीकार, उपन्यासकार के रूप में भी काफी प्रसिद्ध हैं। राष्ट्रीयता एवं मानवीय मूल्यों से संबंधित उनकी काव्य रचनाएँ काफी लोकप्रिय हुई हैं लेकिन कथा–साहित्य के माध्यम से उन्हें विशेष लोकप्रियता मिली है। निशंक ने अपने कथा–साहित्य में पहाड़ी ग्रामीण समाज, ग्रामीण जीवन, ग्रामीणों की समस्याओं तथा ग्रामीणों में उत्पन्न हुई जागरूकता को अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया है। निशंक ने ग्रामीण जीवन की जिन समस्याओं को अपने कथा–साहित्य में लिया है वे समस्याएँ आज भी पूरे ग्रामीण समाज में यथा तथ्य रूप में दिखाई देती हैं।

संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण :-

रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में पहाड़ी ग्रामीण समाज की समस्याओं का चित्रण हुआ है। उसमें आज के परिवेश को लेखक ने यथार्थ रूप में चित्रित किया है। निशंक ने आधुनिक युग के पहाड़ी ग्रामीण परिवेश में व्याप्त ग्रामीण चेतना के विविध आयामों व परिवेश के जीवन सत्यों को ज्यों–का–त्यों अपने कथा–साहित्य में चित्रित किया है रमेश पोखरियाल 'निशंक' के साहित्य से संबंधित जो शोध कार्य हुआ है वह निम्न है –

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' द्वारा नवम्बर 2017 में प्रकाशित कृति 'कथाकार निशंक के उपन्यासों में जीवन मूल्य' जिसमें निशंक के दस उपन्यासों को जीवन मूल्यों की कसौटी पर परखने का प्रयास किया गया है।

सुप्रसिद्ध कथाकार नरेन्द्र कोहली द्वारा जनवरी 2018 में प्रकाशित पुस्तक 'हिन्दी उपन्यासः सृजन और सिद्धांत' में निशंक के व्यक्तित्व व रचनाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला है। जिसमें निशंक की साहित्य के प्रति रूचि व प्रेरणा स्त्रोतों को विस्तारपूर्वक विवेचित किया गया है।

रमा द्वारा अगस्त 2020 में संपादित 'निशंक का रचना संसारः देश के पार' में निशंक द्वारा प्रकृति और पहाड़ में व्याप्त पीड़ा और अनुराग दोनों को सम्मिलित किया गया है।

गोपाल शर्मा द्वारा फरवरी 2021 में प्रकाशित 'निशंक एक अंतरंग पाठ' में निशंक द्वारा अब तक प्रकाशित साहित्य में प्रकृति और राष्ट्रीयता की भावना का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

ऋषभदेव शर्मा द्वारा संपादित 'तत्वदर्शी निशंक' जो 2021 में प्रकाशित हुआ, जिसमें रमेश पोखरियाल 'निशंक' के संपूर्ण रचनाक्रम को छः खण्डों में विभाजित कर विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा निशंक की समग्र साहित्यिक रचनाओं का सूक्ष्म विवेचन करते हुए समग्र साहित्यिक मूल्यांकन किया गया है।

कपिल देव पँवार द्वारा 2021 में प्रकाशित समीक्षात्मक कृति 'निशंक' के साहित्य में लोकतत्व' जिसमें 'लोक' को कथा–साहित्य की आधार भूमि बनाया है तथा लोक–तत्त्वों को निजता में न लेकर संपूर्ण प्राणी–जगत की संवेदनाओं को विराटत्व में प्रतिबिंबित किया है।

सोनिका रानी द्वारा 'डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक का कथा–साहित्य वस्तु तत्त्व और शिल्प विधान' पर पीएच० डी० की उपाधि हेतु शोध–प्रबंध वर्ष 2015 में लिखा गया है। इस शोध–प्रबंध में कहानियों में चित्रित समस्याओं का वर्णन किया है जिसमें कथ्य और शिल्प सांकेतिक रूप में विद्यमान हैं।

संविन्द्र शर्मा द्वारा 'डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' पर पीएच० डी० की उपाधि हेतु शोध–प्रबंध वर्ष 2017 में लिखा गया है। इस शोध–प्रबंध में निशंक के समस्त साहित्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना का विस्तृत चित्रण किया है। निशंक की अधिकांश रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति का सफल चित्रण हुआ है।

इन शोध–ग्रंथों व समीक्षात्मक लेखों व विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में रमेश पोखरियाल 'निशंक' के साहित्य पर छुट–पुट सामग्री अवश्य प्रकाशित हुई है।

विषय का परिसीमन :-

रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य का फलक इतना विस्तृत नहीं है फिर भी निशंक ने जितना लेखन कार्य किया उसमें संपूर्ण पहाड़ी ग्रामीण क्षेत्र की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। इनके कथा–साहित्य का मुख्य उद्देश्य अति दुर्गम व पिछड़े ग्रामीण समाज की विवेचना करना है। मैनें लेखक के कथा–साहित्य में प्रस्तुत शोध–प्रबंध के विस्तार को ध्यान में रखते हुए 'रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में व्यक्त ग्रामीण चेतना' को शोध का विषय बनाया। इनके कथा–साहित्य को शोध की सीमा में रखते हुए मैंने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, साँस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य तक ही सीमित रखा है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध में विषयानुकूल सामग्री का ही चयन किया जायेगा। सबसे पहले निशंक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जायेगा। उसके बाद ग्रामीण चेतना के अंतर्गत–ग्राम का अर्थ एवं परिभाषा, चेतना का अर्थ एवं परिभाषा, ग्रामीण चेतना का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप तदोपरांत इस शोध–प्रबंध में ग्रामीण चेतना के विविध आयामों का चित्रण किया जायेगा। निशंक ने अपने कथा–साहित्य में पहाड़ी ग्रामीण समाज को केन्द्र में रखा है। इसलिए इस शोध–प्रबंध की सीमा को ग्रामीण चेतना तक ही सीमित रखा जायेगा।

विषय का महत्त्व :-

प्रस्तुत विषय अपने आप में मौलिक एवं नवीन है। इस दृष्टि से इसका महत्त्व स्वतः ही सिद्ध होता है। कथा–साहित्य में जीवन को समग्रता से अभिव्यक्त किया जा सकता है क्योंकि कथा–साहित्य ही समाज में व्याप्त सभी प्रकार की समस्याओं एवं विषमताओं को व्यक्त करने में समर्थ है। रमेश पोखरियाल 'निशंक' हिन्दी साहित्य की आधुनिक धारा के सजग लेखक हैं इन्होंने अपने समस्त साहित्य में सामाजिक विसंगतियों, आधुनिकता बोध, यथार्थ जीवन दर्शन, मानवीय मूल्यों का विघटन, मशीनी युग में हुई घुटन, संत्रास, कुंठा, अकेलापन, क्षणबोध, निराशा, संवेदनहीनता तथा संबंधो में शिथिलता जैसी विकृतियों को चित्रित किया है। ग्रामीण चेतना के माध्यम से निशंक ने ग्रामीण क्षेत्रों व ग्रामीणों में उत्पन्न हुई जागृति का आकलन कर यथार्थ रूप से अभिव्यक्त किया है।

मेरे शोध–प्रबंध का उद्देश्य रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में निरुपित ग्रामीण चेतना के विविध आयामों को खोजकर उन्हें प्रस्तुत करना रहेगा। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साँस्कृतिक आदि क्षेत्रों में ग्रामीण समाज में चेतना की दशा और दिशा क्या है, मानव अपनी अस्मिता को तलाशता हुआ किस प्रकार समाज और संस्कृति से जूझ रहा है, किस प्रकार देश आजाद होने पर मानव का मोह भंग हुआ, आर्थिक रूप से क्यों अधिकतर भारतीय कमजोर हैं, शोषित हैं तथा क्यों आज का युवक या मनुष्य इस शोषण का खुलकर विरोध नहीं कर पा रहा है। समाज आज भी अमीर तथा गरीब वर्गों में क्यों विभक्त है, असमानता का यह दौर क्यों है, ग्रामीण

समाज और ग्रामीण संस्कृति के स्वरुप में बदलाव क्यों हो रहा है, ग्रामीण युवाओं में पलायन की मनोस्थिति क्यों बन रही है, क्यों ग्रामीण नारी आज भी शोषण का शिकार होती है, इन सभी प्रश्नों को निशंक ने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से उजागर किया है। निशंक का कथा–साहित्य पिछड़े और गरीब तबके की पीड़ा को सामने लाता है जो समस्त विश्व के पिछड़े समाज के संघर्ष को प्रदर्शित करता है। इस विषय का महत्त्व इस बात से भी है कि इसके अध्ययन से पाठक, रचनाकार के संवेदनात्मक धरातल के विस्तार से परिचित हो जायेगा। यह विषय पूर्णतया नवीन है क्योंकि अब तक इस पर कोई भी शोध कार्य नहीं किया गया है।

शोध लेखन प्रविधि :-

प्रस्तावित शोध–प्रबंध 'रमेश पोखरियाल निशंक के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतना' लेखन में विविध अनुसंधान प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा जिसमें से वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि मुख्य रूप से होगी। इसके अतिरिक्त प्रयुक्त सामग्री का यथोचित प्रयोग किया जायेगा। शोध–प्रबंध लेखन में जिस शोध प्रविधि को अपनाया जायेगा, वह मूलतः एम०एल०ए० स्टाइल शीट हैदराबाद पर आधारित होगी। शोध–प्रबंध में प्रस्तुत रुपरेखा, पाद टिप्पणी, संदर्भ ग्रंथ सूची आदि का प्रयोग इसी के अनुरूप किया जायेगा।

अध्याय योजना :-

प्रस्तावित शोध–प्रबंध में ग्रामीण परिवेश तथा उस परिवेश में रहने वाले साधारण लोगों की समस्याओं को सूक्ष्मता से समझने, परखने तथा प्रस्तुत करने के लिए विश्लेषण पूर्ण अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा। ग्रामीण चेतना का संदर्भ देते हुए संपूर्ण शोध–प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया जायेगा। शोध–प्रबंध के प्रारंभ में भूमिका तथा अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची, हिन्दी, अंग्रेजी शब्दकोश तथा पत्र–पत्रिकाओं का विवरण दिया जायेगा।

शोध–प्रबंध के पहले अध्याय में 'रमेश पोखरियाल 'निशंक': व्यक्तित्व एवं कृतित्व' शीर्षक के अन्तर्गत जन्म, परिवार, शिक्षा, विवाह एवं व्यवसाय उपशीर्षकों द्वारा लेखक के व्यक्तित्व को जानने का प्रयास किया जायेगा। इसी प्रकार कृतित्व उपशीर्षक के माध्यम से कहानी, उपन्यास, काव्य, सम्मान एवं पुरस्कार तथा हिंदी कथा–साहित्य में निशंक का योगदान इत्यादि महत्वपूर्ण बिंदुओं को विवेचित करने का प्रयास किया जायेगा।

शोध–प्रबंध का दूसरा अध्याय 'रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतनाः सैद्धांतिक विवेचन' से संबंधित है। इसमें ग्रामीण चेतना तथा उसके विविध आयामों को चित्रित करने का प्रयास किया जायेगा।

तीसरा अध्याय 'रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतनाः सामाजिक परिप्रेक्ष्य' से संबंधित है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत समाज से अभिप्राय, साहित्य और समाज, पारिवारिक संबंध और सामाजिक समस्याओं इत्यादि उप शीर्षकों को उद्घाटित किया जायेगा।

चौथा अध्याय 'रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतनाः राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य' से संबंधित है। इसके अंतर्गत राजनीति और ग्रामीण समाज, राजनीतिक चेतना के प्रमुख तत्त्वों तथा अर्थ एवं ग्रामीण समाज, आर्थिक वैषम्य, नारी और युवा की अर्थ संबंधी समस्याओं और पलायन की समस्या इत्यादि को विश्लेषित किया जायेगा।

पाँचवा अध्याय 'रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतनाः धार्मिक एवं साँस्कृतिक

परिप्रेक्ष्य' से संबंधित है। इसमें धर्म से अभिप्राय, धर्म एवं ग्रामीण समाज, धर्म के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष तथा संस्कृति का सामान्य अभिप्राय, संस्कृति एवं ग्रामीण समाज, संस्कृति के आंतरिक एवं बाह्य पक्ष इत्यादि को विश्लेषित करने का प्रयास किया जायेगा।

छठा अध्याय 'रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कथा–साहित्य में ग्रामीण चेतना : मनोवैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य' से संबंधित है। इसके अंतर्गत मनोविज्ञानः अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, साहित्य एवं मनोविज्ञान, मनोवृत्तियां, युवा मनोस्थिति, बाल मनोविज्ञान, विकलांग मनोस्थिति तथा पर्यावरणः अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, ग्रामीण समाज और पर्यावरण, पर्यावरण विनाश और मानव का भविष्य, ग्रामांचलीय प्राकृतिक सौंदर्य इत्यादि को विश्लेषित करने का प्रयास किया जायेगा।

अंत में सार, उपलब्धियाँ एवं भावी शोध संकेत हैं। इसके पश्चात् संदर्भ ग्रंथ सूची में मूल ग्रंथ, सहायक ग्रंथ (हिंदी), सहायक ग्रंथ (अंग्रजी), शब्दकोश एवं विश्वकोश (हिंदी व अंग्रेजी) तथा पत्र–पत्रिकाओं का विवरण दिया जायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अपना–पराया, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010
2. छूट गया पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010
3. प्रतिज्ञा प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2011
4. वीरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008
5. निशान्त, भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008
6. पहाड़ से ऊंचा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008
7. पल्लवी भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010
8. कृतघ्न प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015
9. भागोंवाली, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015
10. शिखरों के संघर्ष (संयुक्त), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2016

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 144-148

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

जल संकट

कैलाश प्रजापत

अतिथि शिक्षक, भूगोल, राजकीय महाविद्यालय कुचेरा नागौर, राजस्थान।

उद्देश्य :-

इस शोध का मुख्य उद्देश्य विश्व में जल वितरण को दर्शना वह जल संकट जैसी समस्याओं के बारे में अवगत कराना तथा निराकरण के उपाय बताना है।

परिचय :-

जल वह प्राकृतिक उपहार है जिसका कोई विकल्प नहीं है। इसीलिए जल को अमृत या जीवन भी कहा गया है। जब जल होता है, तो उसका महत्व समझ में नहीं आता है परन्तु जब जल की कमी अर्थात् जल संकट आता है तो उसकी उपयोगिता का पता चलता है। जल को पानी, नीर या किसी भी नाम से पुकारें, यह हमारे अस्तित्व का पर्याय है तथा इस तथ्य को हमें भली–भाँति समझना भी चाहिए। पृथ्वी पर जीवन के लिए हवा और पानी दो प्रार्थमिक चीजें हैं। इनके अभाव में जीवनयापन संभव नहीं है। वास्वत में आज हमारे देश में जल संकट की स्थिति इतनी अधिक गम्भीर हो चुकी है कि इसने हमारे समक्ष राष्ट्रीय आपदा का रूप ले लिया है। पानी की निरंतर होती कमी और पानी के लिए दिनों–दिन होते संघर्ष ने आने वाले कठिन समय के संकेत देना शुरू कर दिये हैं। हमें समय रहते सचेत होने की आवश्यकता है। हम न केवल पानी की कमी की समस्या के प्रति उदासीन हैं बल्कि आज उपलब्ध पानी का भी निर्ममता से दोहर कर रहे हैं तथा समय समस्या को और अधिक गंभीर बना रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण विगत् कई दशकों से देश के जल प्रबन्धन पर ईमानदारी से ध्यान न दिया जाना है। वास्तव में समस्या जल की कमी की नहीं, अपितु समुचित जल प्रबन्धन की है।

इस समय भारत में विश्व की 17 प्रतिशत आबादी हेतु मात्र चार प्रतिशत जल है। जल एक अतिमहत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। सामान्य जल रासायनिक रूप से उदासीन होता है। इसकी पी–एच मान 7 होता है अर्थात् यह न तो अम्लीय होता है और न ही क्षारीय। प्रदूषित जल में रसायन एवं कई तरह की घात भारी धातुएं मिली रहती हैं। भारी धातुएं प्रकृति में पृथ्वी के आरम्भ काल से ही पायी जाती हैं। भारी धातुओं से अभिप्राय उन धातुओं से होता है जिनका घनत्व 5 ग्राम प्रति घन सेमी से अधिक या परमाणु संख्या 20 से अधिक है जैसे – आर्सेनिक, सीसा, कैडमियम, क्रोमियम, निकिल, जिंक एवं पारा आदि। जल में इनकी अधिक मात्रा मानव, पशु एवं पेड़–पौधों के

लिए हानिकारक है। निर्धारित स्वीकार्य मात्रा से अधिक मात्रा में यह धातुएं जल के माध्यम से शरीर में पहुंचने पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं।

एक अनुमान के अनुसार देश की 19 फीसदी आबादी आर्सेनिक जैसी भारी धातु से संक्रमित जल का उपयोग करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार सर्वोधिक आर्सेनिक की मात्रा उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल व असम के भूजल में पायी जाती है जबकि महाराष्ट्र केरल, उत्तराखंड, त्रिपुरा, गोवा एवं अरूणाचल प्रदेश के भूजल में आर्सेनिक की मात्रा न्यून हैं।

पानी की उपलब्धता और पेयजल की किल्लत ने मानव जाति की चिन्ता बढ़ा दी है। 22 मार्च 1993 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व जल दिवस घोषित कर शुद्ध पानी की किल्लत की तुलना 'टाईम बम' से करते हुए आने वाले समय में मानव जाति को एक बड़े खतरे से आगाह किया था। उनका मानना है कि विश्व में करीब 20 फीसदी लोगों को पीने का पानी उपलब्ध नहीं है और लगभग 50 फीसदी लोगों को साफ पानी उपलब्ध नहीं है। तेजी से हो रहा भूमिगत् जल का दोहन, गम्भीर खतरे का संकेत है।

किसानों द्वारा की जाने वाली 70 प्रतिशत सिंचाई भूजल के भरोसे है जिससे भूजल का अति दोहन हो रहा है तथा अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से, ये तत्व पानी के रिसाव के माध्यम से भूजल में मिलकर उसे प्रदूषित कर रहे हैं, ऐसे में उपलब्ध संसाधनों को भी हम बर्बाद कर रहे हैं। विश्व में जल की उपलब्धता को निम्न तालिका द्वारा समझा जा सकता है –

विश्व में जल का प्रतिशत

क्र.सं.	स्रोत	प्रतिशत
1	समुद्र	97.24
2	बर्फ–हिमनद	02.14
3	भूजल	0.16
4	शुद्ध जल झील	0.009
5	अन्तर्देशीय सागर	0.008
6	जमीनी नमी	0.005
7	वातावरणीय नमी	0.001
8	नदी जल	0.0001
	कुल जल	100.00

तालिका से स्पष्ट है कि उपलब्ध जल में पेय जल की मात्रा अति न्यून है तथा बढ़ती जनसंख्या के साथ जल की खपत बढ़ रही है, परन्तु जल के संरक्षण एवं समुचित उपयोग के अभाव में एक गम्भीर संकट उभर रहा है। निम्नतालिका द्वारा इस संकट का अनुमान लगाया जा सकता है।

विभिन्न क्षेत्रों में जल की कुल आवश्यकता (बी.सी.एम.)

क्षेत्र	जल की मांग				
	1990	2000	2010	2025	2050
सिंचाई	437	541	688	910	1072
पेयजल	32	42	56	73	102
औद्योगिक	–	8	12	23	63
उर्जा	–	2	5	15	130
अन्य	33	41	52	72	80
योग	502	634	813	1093	1447

आज समय की पुरजोर मांग है कि हमें वर्षा जल को संचित करके उसका उपयोग करने की प्रभावी योजना बनानी होगी यह भूजल के पुनर्भरण का प्रमुख साधन है। वर्षा जल को व्यर्थ गवाना देश के लिए अपूर्णनीय क्षति होगी क्योंकि प्रकृति में उपलब्ध अधिकांश जल पेयजल के रूप में प्रयोग करने लायक नहीं है।

सबको स्वच्छ पानी की उपलब्धता की दिशा में बेहतरीन काम करने वाले दुनिया के शीर्ष देशों में शामिल होने के बावजूद भारत में साफ पानी से वंचित विश्व की सर्वाधिक आबादी रहती है। हालॉकि बड़ी जनसंख्या इसका कारण है, पर भारत से ज्यादा जनसंख्या वाला चीन इस सूची में बेहतर स्थिति में है।

वर्ष 2015 में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार भारत की 16.31 करोड़ जनसंख्या स्वच्छ पेय जल से वंचित है जबकि इथियोपिया में 6.05 करोड़, नाइजीरिया में 5.94 करोड़, चीन में 5.75 करोड़ तथा कांगों में 4.68 करोड़ आबादी शुद्ध पेय जल से वंचित है।

भूमिगत जल से कृषि भूमि की दो तिहाई से अधिक सिंचाई की जाती है, जबकि अन्य सभी परियोजनाओं द्वारा प्राप्त पानी के जरिये शेष भूमि की सिंचाई की जाती है। साथ ही देश के अधिकांश राज्यों में भूमिगत जल का इस्तेमाल छोटे–छोटे उद्योगों और पेयजल के रूप में किया जाता है। अभी तक हम दोबारा भर जाने वाले भूमिगत जल के सिर्फ एक तिहाई हिस्से का ही इस्तेमाल कर सके हैं। किन्तु बढ़ते औद्योगीकरण और विशाल आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए बेहिसाब इस्तेमाल से शेष बचे जल को हम इस्तेमाल से पहले ही प्रदूषित कर बर्बाद कर देते हैं। नतीजतन बढ़ती आबादी को शुद्ध पेयजल उपलब्ध करा पाना अब नामुमकिन सा लग रहा है।

एक ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, 60 करोड़ लोग जलापूर्ति के संकट से जूझ रहे हैं, देश के सिर्फ 59 जिलों में ही भूजल पीने के लिए सुरक्षित है, 54 फीसदी इलाका पानी के भारी संकट से जूझ रहा है, 40 फीसदी भूजल का दोहन हर वर्ष शहरीकरण और उद्योगों के लिए, जबकि 80 फीसदी भूजल का उपयोग घरेलू उपयोग में होता है, देश के 65 फीसदी खेतों के लिए सिंचाई की सुविधा नहीं है। पिछले साल वर्षों में भूजल स्तर में 54 फीसदी गिरावट आई है। पानी के बंटवारे को लेकर तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र आदि राज्यों के बीच अक्सर टकराव की खबरें आती रहती हैं। पहले दर्जे के शहरों में 86.55 फीसदी आबादी के लिए संगठित जल आपूर्ति की व्यवस्था है, जहाँ प्रति–व्यक्ति दैनिक औसतन 189 लीटर पानी उपलब्ध होता है, जबकि उड़ीसा जैसे

राज्य के कुछ इलाकों में तो प्रति–व्यक्ति जल आपूर्ति मात्र 8 लीटर है, जबकि तमिलनाडु के तीरुनेलवेली में प्रतिव्यक्ति दैनिक जलापूर्ति मात्र 5 लीटर है। दिल्ली में अनेक स्थानों पर लोग दूषित पानी पीने को विवश होते है।

ऑकड़े जुटाना जरूरी है, परन्तु उपलब्ध ऑकड़ों से ही साफ है कि लगभग पूरे देश में भूमिगत जल का स्तर तेजी से गिर रहा है। दस वर्ष पूर्व 200 फुट पर पानी उपलब्ध था तो आज 500 फुट पर मिल रहा है। सभी किसानों को अपने बोरवेल गहरे कराने पड़ रहे हैं। इस समस्या का सामना करने के लिए केन्द्र सरकार ने राज्य सरकारों को सुझाव दिया है कि नये बोरवेल लगाने के लिए लाईसेंस लेना अनिवार्य कर दिया जाए। यह पॉलिसी सफल नहीं होगी, क्योंकि वर्तमान में लगे हुए बोरवेलों से ही भूमिगत जल का गिराव जारी रहेगा। इसके लिये उपाय यह है कि हर क्षेत्र में बोरवेल की अधिकतम गहराई को निर्धारित कर दिया जाए।

भूमिगत जल का स्तर गिरने का दूसरा कारण बिजली पर दी जा रही सब्सिडी है। लगभग सभी राज्यों में किसानों को सस्ती दर पर बिजली दी जा रही है। कई राज्यों में मुफ्त बिजली भी दी जा रही है। इससे किसानों की प्रवृति अधिक पानी को निकालने की बनती है। मान लीजिए कि खेत की एक बार सिंचाई करने पर बिजली का खर्च 500 रुपया आता है जबकि इससे उपज में200 रूपये की वृद्धि होती है। जाहिर है, ऐसी सिंचाई करना उचित नहीं है जिसमें लागत ज्यादा और आय कम हो। फिर भी किसानों के लिए ऐसी सिंचाई करना लाभप्रद हो जाता है, क्योंकि उसे बिजली का मूल्य अदा नहीं करना होता है। इस प्रकार भी देश में पानी की भारी बरबादी हो रही है। जरूरी है कि किसानों से बिजली और पानी का समुचित मूल्य वसूल किया जाए जिससे वह पानी का उचित उपयोग करें इसके साथ ही फसलों के समर्थन मूल्य में पर्याप्त वृद्धि करनी चाहिए जिससे किसान पर अतिरिक्त बोझ न पड़े। यदि हमें पानी बचाना है तो फसलों पर भी नियंत्रण जरूरी है। राजस्थान के रेगिस्तान में मिर्च, दक्कन के पठार में अंगूर और गुजरात के सूखे क्षेत्रों में कपास की खेती की जा रही है। समृद्ध किसानों द्वारा भूमिगत जल का अति दोहन करके इन फसलों को उगाया जा रहा है। कानून बनाकर हर क्षेत्र में उन फसलों के उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगाया जाए जिनके उत्पादन के लिए पानी उपलब्ध नहीं है। उपरोक्त कदमों को लागू करने के लिए ऑकड़े वर्तमान में उपलब्ध हैं। अतः इन दिशा में तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है।

हमें पूरे देश में भूमिगत जलाशयों का जाल बिछाना होगा। बरसात के पानी को भूमिगत जलाशयों में डालना होगा जिससे वह गर्मी के समय में उपयोग के लिए भूमि में सुरक्षित पड़ा रहे। भाखड़ा, टेहरी और सरदार सरोवर जैसे सभी बड़े जलाशयों को हटाना होगा। इनमें वाष्पीकरण से पानी का भारी नुकसान हो रहा है। इसके साथ ही नहरों के माध्यम से सिंचाई में पानी का भारी दुरुपयोग हो रहा है, क्योंकि किसान को पानी की मात्रा के अनुसार मूल्य अदा नहीं करना पड़ता है। इन बाँधों को हटाकर भूमिगत जलाशयों में पानी का भण्डारण किया जाये तो वाष्पीकरण और पानी के दुरुपयोग दोनों से बचा जा सकता है।

इस दिशा में नेशलन हाइड्रोलॉजी पॉलिसी के माध्य से अच्छा कदम उठाया जा सकता है।

उपरोक्त के साथ–साथ निम्न छोटे–छोटे प्रयासों पर भी विचार करना जल संकट के समाधान की दिशा में एक सकारात्मक पहल .:–

1. परम्परागत तालाबों, पोखरों का संरक्षण एवं अतिक्रमण मुक्त करना।

2. 'अदृश्य जल' की विचाराधारा का प्रचार–प्रसार एवं अधिक जल से उत्पन्न खाद्य पदार्थों की उपज को न्यूनतम करना।
3. निरन्तर बढ़ती आबादी पर प्रभावी नियन्त्रण एवं दैनिक जीवन में जल की खपत में नियंत्रण।
4. सामूहिक जल आपूर्ति व्यवस्था सुनिश्चित की जाए तथा घरों में लगी सबमर्सिबल पम्प प्रतिबन्धित हो। पकड़े जाने पर उचित दण्ड व्यवस्था हो।
5. वाहन धुलाई केन्द्र पूर्णतः प्रतिबंधित किए जाएं।
6. उद्योगों द्वारा जल की बर्बादी पर अंकुश लगाया जाए। प्रदूषक एवं कचरा निस्तारण अनिवार्य हो तथा प्रभावी समीक्षा की जाए।
7. सूखते जल स्रोतों के कारणों का पता लगाकर उन्हें बचाया जाए।

विचार दर्शन केवल राजनीति से ही संबंधित है, जबकि कौटिल्य ने सम्पूर्ण मानव जीवन का विस्तृत विश्लेषण किया है और इतिहास के अन्य पक्षों पर भी प्रकाश डाला है। कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा एक विशाल साम्राज्य स्थापित करवाकर उस साम्राज्य के महामंत्री के रूप में अपने प्रशासनिक सिद्धान्तों को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करवाकर भारत को एकता के सूत्र में बांधने का जो प्रयास किया, वह मैकियावली द्वारा सम्भव न हो सका। इस तरह प्रशासनिक व्यवस्था के संदर्भ में कौटिल्य मैकियावली से ज्यादा व्यावहारिक थे। कौटिल्य मैकियावली की अपेक्षा अधिक दूरदर्शी प्रतीत होते हैं और उनके द्वारा स्थापित राजनीतिक सिद्धान्त आगे आने वाले समय में अत्यधिक प्रभावकारी सिद्ध हुए, परन्तु इतना होते हुए भी दोनों ही विचारकों को एक सच्चा देशभक्त मानने में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। दोनों ने अपने विचाराधाराओं द्वारा प्रशासनिक व्यवस्था का जो सांगोपाग विवरण प्रस्तुत किया है, वह राजनीतिक क्षेत्र में अद्वितीय है।

सन्दर्भ :–

1. द्रष्टव्य, बेनी प्रसाद, द स्टेट इन एंशिएण्ट इण्डिया, इलाहाबाद (1928), पृ0 253
2. लल्लनजी गोपाल, प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा, वाराणसी (1999) पृ0 125
3. अनंत सदाशिव अलतेकर, प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, वाराणसी (2003) पृ0 18
4. रामशरण शर्मा के अनुसार अर्थशास्त्र का कुछ अंश ईसवी सन् की दूसरी शताब्दी की वस्तुस्थिति का प्रतिबंधित करते है। द्रष्टव्य प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ, नई दिल्ली (1990) पृ0 35
5. दृष्टव्य, ए0एस0 अलतेकर, पूर्वोक्त, पृ0 11
6. अर्थशास्त्र, 1.17.6
7. तत्रैव, 5.1.12.4, 14.1–4
8. एच0 एन0 सिन्हा, द डेवलेपमेंट ऑफ इण्डियन पॉलिटी, बम्बई (1963)
9. दृष्टव्य, कॉलेश्वर राय, इतिहास दर्शन, इलाहाबाद (2004), राजनीतिक चिन्तन, अध्याय–3, पृ0 44

कैलाश प्रजापत सुपुत्र श्री प्रताप राम प्रजापत
मु पोस्ट–– कोलिया, जिला – डीडवाना कुचामन, पिन कोड–– 341305
मो– 9649953161

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 149-152

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

लार्ड कार्नवालिस के न्यायिक सुधार : एक ऐतिहासिक विशलेषण

Dr. VIKRAM SINGH DEOL
PROFESSOR IN HISTORY,
DR BHIM RAO AMBEDKAR GOVERNMENT COLLEGE, SRI GANGANAGAR

फरवरी, 1785 ई. में वारेन हेस्टिंग्स त्याग–पत्र देकर इंग्लैण्ड वापस चला गया। उसके स्थान पर काउंसिल का एक वरिष्ठ सदस्य जॉन मैकफर्सन गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया। सितम्बर, 1786 ई. में कार्नवालिस के आने तक वह इस पद पर रहा। वह 1786 ई. से 1793 ई. के बीच एवं 1805 ई. में भारत का गवर्नर जनरल रहा। कार्नवालिस भारत में अपने सुधारो के लिए जाना जाता है।

लार्ड कार्नवालिस के न्यायिक सुधार :–

कार्नवालिस का उद्देश्य भारत में एक ईमानदार और कुशल न्याय व्यवस्था स्थापित करना था। कंपनी संचालकों ने उसे मितव्ययिता तथा सरलता के आदेश देकर भेजा था। उसने न्याय को जन साधारण तक पहुँचाने का प्रयत्न किया। पी.ई. राबर्ट्स का कथन है कि ''दीवाने और फौजदारी न्यायलयों के संगठन में कार्नवालिस ने हेस्टिंग द्वारा आरंभ किये गये कार्य की पूर्ति की।'' कार्नवालिस ने सन् 1787–1790 ई. और 1793ई. में न्याय विभाग में सुधार किये ये सुधार पहले बंगाल, बिहार, उड़ीसा और बाद में मद्रास तथा बम्बई ये लागू किये गये। इसके सुधारों का मुख्य उद्देश्य मितव्ययिता था। जिलों की संख्या 36 से घटाकर 23 कर दी गयी। प्रत्येक जिले में ईस्ट इंडिया कंपनी का शपथयुक्त अधिकारी कलेक्टर बनाया गया जिसका कार्य लगान एकत्र करना तथा दण्डाधिकारी व न्यायधीश के रूप में कार्य करना था। तीनों कार्य उसे अलग–अलग रूप में से करने थे। माल अदालत की अपीले बोर्ड आफ रेक्न्यू कलकत्ता ले जायी जा सकती थी। अंतिम अपील गवर्नर जनरल इन कौन्सिल के पास ले जायी जा सकती थी।

दीवानी मुकदमों में 1000 रूपये से अधिक के मामले सदर दीवानी अदालत में लें जाये सकते थे, जिसका निर्णय अंतिम होता था। 5 हजार रूपये से अधिक के मामले की अपील राजा के पास तक ले जायी जा सकती थी। रजिस्ट्रार का पद बनाया गया। कलेक्टर मांफ्युसिल दीवानी अदालत के न्यायाधीश की हैसियत से 200 रूपये तक के मालमे रजिस्ट्रार को भेज सकते थे। कलेक्टर द्वारा अभिप्रमाणित करने पर रजिस्ट्रार का फैसला वैध हो जाता था। 1787 की न्याय व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष कलेक्टर के हाथों में कई शक्तियाँ केन्द्रित करना था। यह शक्तियों के विभाजन के सिद्धांत के विपरीत था। न्याय विभाग कार्यपालिका के दबाव में था। सन् 1790

ई. में कार्नवालिस ने फौजदारी विभाग में सुधार किये। सदर निजामत अदालत को कलकत्ता स्थानान्तरित कर दिया गया। इस अदालत की हप्ते में एक बैठक अनिवार्य कर दी गयी। कार्यवाही का नियमित रिकार्ड रखने का प्रावधान रखा गया। नबाव के नियंत्रण को पूर्णतया समाप्त कर दिया गया। गवर्नर जनरल इन कौन्सिल मुख्य काजी और दो मुक्तियों की सहायता से अंतिम अपील सुन सकता था। चार दौरा अदालतों की स्थापना की गयी। बंगाल, बिहार, उड़ीसा, की चार विभागों में बाँट दिया प्रधानकाजी और मुफ्ती होते थे, जिन्हें गवर्नर जनरल नियुक्त करता था अथवा अक्षमता के आधार पर निकाल सकता था। ये अदालते अपने सर्किट में घूमकर न्याय करती थी।

इसके फैसलों को दण्डाधिकार कार्यान्वित करते थे। मृत्युदण्ड क्षमता आजीवन कारावास के फैसले की पुष्टि सदर निजामत से करनी होती थी। जिलाधीश को दण्डाधिकारी भी बना दिया गया। उसे शांति भंग करने वालों यथा खूनी, चोर, डकैत आदि को पकड़ने तथा उनकी प्रथम सुनवाई करने व निर्दोष पाने पर छोड़ देने का अधिकार दिया गया। मामूली वारदातों में वह अपराधी को दण्डित कर सकता था। उसे गंभीर अपराधों में उसे अपराधी को फौजदारी जेल में रखने अथवा सर्किट कोर्ट की बैठक तक जमानत पर छोड़ने का अधिकार था। खून एवं डकैती में जमानत नहीं होती थी। कार्नवालिस ने पाया कि कम तनख्वाहों की वजह से न्याय अधिकारी निचले तबके से जाते थे। इसलिए वे रिश्वत की ओर आकर्षित होते थे। कार्नवालिस ने वेतन अधिक आकर्षक बना दिये ताकि सच्चरित्र व कार्य कुशल योग्य व्यक्ति न्यायिक सेवाओं में भर्ती हो सकें। अगले सुधार 1793 ई में किये गये। माल अदालतें समाप्त कर दी गयी तथा सारे लगान संबंधी मामलों दीवानी अदालतों को जाने लगे। तीनों प्रांतों के प्रत्येक जिलों में एक दीवानी अदालत का प्रावधान रखा गया। प्रत्येक अदालत का संचालन कंपनी का कमानेण्टेड सर्विस का अधिकारी करता था तथा उसे न्यायधीश के रूप में कार्य करते समय विशेष शपथ लेनी होती थी। दीवानी अदालते लगान संबंधी तथा दीवानी मुकदमे दोनों पर विचार करती थीं परंतु फौजदारी पर नहीं। हिन्दु तथा मुस्लिम कानून से और दोनों के न होने पर सद्सद् विवेक से न्याय दिया जाता था।

इसी वर्ष पारित एक प्रस्ताव द्वारा कंपनी के कर्मचारियों को भी दीवानी अदालतों के आधीन कर दिया गया। भारतीय प्रजा भी अंग्रेज व्यक्तियों के खिलाफ 500 रू. से कम के मुकदमें दीवानी अदालतों में ला सकती थी। इससे अधिक के मुकदमें की सुनवायी सुप्रीम कोर्ट कलकत्ता में होती थी। कलकत्ता, पटना, मुर्शिदावाद, ढांका में चार प्रांतीय अपील अदालें का निर्माण किया गया। जहाँ अपील के अलावा सीधे मुकदमें भी जाते थे इनके अधिकारी कवनेण्टेड सेवाओं से आते थे। यहां एक हजार रूपये तक के मुकदमों की सुनवायी होती थी। 1000 रूपये से अधिक के मुकदमें सीधे सदर दीवानी अदालत में ले जाये जा सकते थे, जिसका फैसला 500 रूपयें तक अंतिम होता था। इससे ऊपर के मुकदमें राजा की कौन्शिल में ले जाये जा सकते थे। सदर अदालत निम्न अदालतों पर निरीक्षण व नियंत्रण भी रखती थी। 50 रूपये तक के मुकदमों की सुनवायी करने के लिये निचली अदालतों में मुन्सिफ रखे गये जो कार्य भार के अनुसार रखे जाते थे उनकी कार्यवाही दीवानी अदालत द्वारा अनुमोदित होनी आवश्यक थी। ये मुन्सिफ अवैतनिक होते थे। अतः इनके विरूद्ध घूसखोरी की शिकायतें आने लगी। 1793 ई. में कार्नवालिश ने कोर्ट फीस समाप्त कर दी। उसने वकीलों के व्यवसाय को भी नियंत्रित करने का प्रयत्न किया वकील केवल सरकार द्वारा निर्धारित फीस ही ले सकते थे। अधिक वसूली करने का प्रमाण मिलने पर उन्हें अपने व्यवसाय से वंचित किया जा सकता था। अपने न्यायिक सुधारों को 1793 ई. तक अंतिम

रूप देकर कार्नवालिश ने उन्हें कार्नवालिश कोड (संहिता) के नाम से प्रकाशित किया। यह सुधार प्रसिद्ध ''शक्तियों के पृथक्करण'' के सिद्धांत पर आधारित था। उसने कर संग्रहण तथा न्याय प्रशासनों को अलग–अलग कर दिया। उस समय तक जिला कलेक्टर के पास भूमिकर विभाग तथा विस्तृत न्यायिक एवं दण्डाधिकारी की शक्तियाँ होती थी।

अतः कलेक्टर के रूप में किये गये अन्याय का निराकरण स्वयं वही जब न्यायधीश के रूप में करता था। इस न्याय की विश्वसनीयता कृषक या जमींदार के पास कम हो जाते थी। अतः कलेक्टर से अब न्यायिक एवं फौजदारी के अधिकार ले लिये गये। और उसके पास केवल लगान वसूलने का अधिकार रह गया। जिला न्यायधीश के पद का निर्माण किया गया जिसे फौजदारी व पुलिस के कार्य भी दे दिये गये। कार्नवालिश ने कानून की संप्रभुता (साँवरेनिटी आफ लॉ) का नियम स्थापित किया। देश के कानून व अदालतों में भारतीय प्रजा, कंपनी के कर्मचारी, यूरोपियन नागरिक अथवा स्वयं सरकार को भी लाया जा सकता था। सैटनकार ने लिखा कार्नवालिश कोड ने माल, पुलिस फौजदारी एवं नागरिक न्याय कर्तव्यों की पूरी व्यवस्था की।

अधिकारियों की शक्तियों को सीमित किया। अपील की व्यवस्था करके अन्याय को रोकने के लिये कानूनी व्यवहार किया तथा भारत की इस सिविल सेवा की स्थापना की जो आज भी उसी रूप में मौजूद हैं। कार्नवालिस कोड का प्रधान उद्देश्य हिन्दु मुसलमानों में समन्वय स्थापित करने, उनकी भावनाओं को शांत करने, उनकी धार्मिक भावनाओं व सामाजिक विचारों से छेड़खानी न करने तथा इसके साथ ही साथ अराजकता, अव्यवस्था एवं शक्ति के अनियंत्रित एवं अनियमित प्रयोग के स्थान पर व्यवस्था, नियम एवं क्रम स्थापित करना था। वारेन हेस्टिंग ने जिस प्रशासनिक इमारत की जीव रखी थी, कार्नवालिस ने उस पर विशाल भवन का निर्माण किया। लार्ड हेस्टिंग ने (1813–1823) इस कार्य को और आगे बढ़ाया तथा अब तक न्याय विभाग में आयी विसंगतियों को दूर करने का प्रयत्न किया।

लार्ड कार्नवालिस के फौजदारी कानूनों में सुधार :–

1790 ई. से 1793 ई. के मध्य कार्नवालिस ने फौजदारी कानूनों में भी सुधार किया। हत्या के मामले में हत्या की भावना पर अधिक बल दिया गया न कि हत्या में प्रयुक्त अस्त्र अथवा ढंग पर। अंग–विच्छेद के स्थान पर कड़ी कैद की सजा पर बल दिया गया।

कार्नवालिस ने जो न्यायिक सुधार किये वे अत्यधिक जटिल थे। कानूनी प्रक्रिया लंबी खिंचने लगी। न्याय महँगा हो गया। मुकदमेबाजी बढ़ गई। यूरोपीय न्यायाधीश भारतीय रीति–रिवाज एवं परंपराओं से अनभिज्ञ थे।

लार्ड कार्नवालिस के पुलिस सुधार :–

पुलिस कर्मचारियों में ईमानदारी एवं स्फूर्ति लाने के लिए कार्नवालिस ने उनके वेतन में वृद्धि की। चोरों एवं हत्यारों के पकड़ने पर पुरस्कार देने की व्यवस्था की। जिलों को 400 वर्ग मील के क्षेत्र में विभाजित कर प्रत्येक क्षत्रे में एक दरोगा की नियुक्ति की गई। अंग्रेजी न्यायाधीशों को जिले की पुलिस का भार दे दिया गया।

लार्ड कार्नवालिस के राजस्व सुधार :–

कार्नवालिस ने 1787 ई. में प्रांत को राजस्व क्षेत्रों में विभाजित किया एवं प्रत्येक क्षेत्र में एक–एक कलेक्टर की नियुक्ति की गई। इनकी संख्या पहले 36 थी, अब घटकर 23 कर दी गई। 1790 ई. में कार्नवालिस ने जमींदार को भूमि का स्वामी स्वीकार कर लिया। इन जमींदारों को कंपनी को वार्षिक कर देना होता थ। ठेके

की राशि में से भी 1/11 भाग कम कर दिया गया। यह व्यवस्था पहले 10 वर्ष के लिए की गई थी, परंतु 1793 ई. मे उसे स्थायी कर दिया गया।

लार्ड कार्नवालिस के व्यापारिक सुधार :-

व्यापारिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार दूर करने हेतु कार्नवालिस ने आवश्यक व्यापारिक सुधार संपन्न किये। 1774 ई. में स्थापित व्यापार बार्डे में सदस्यों की संख्या 11 से घटाकर 5 कर दी। ठेकेदारों के स्थान पर गुमाश्तों एव व्यापारिक प्रतिनिधियों द्वारा माल लेने की व्यवस्था लागू की। ये लोग पेशगी के रूप मे निर्माताओं को धन दे देते थे और उसी समय भाव निश्चित कर देते थे। इससे कंपनी को सस्ता माल मिल जाता था।

कर संग्रह एवं व्यापार में लगे कर्मचारियों के भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए इनके वेतन में वृद्धि की गई। कलेक्टर को मासिक वेतन 1500 रुपये एवं संगृहीत कर पर 1 प्रतिशत कमीशन देने की व्यवस्था की। वित्तीय एवं व्यापारिक मामलों में सिफारिशों को पूर्णतः समाप्त कर दिया।

सन्दर्भ :-

लार्ड कार्नवलिस एकमात्र गवर्नर थे जिनकी समाधि भारत में ''गाजीपुर'' (उतर प्रदेश) में स्थित है कानवलिस ने श्रीरंगपटनम की संधि की टिपु सुल्तान के साथ। इन्हीं के समय में तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध हुआ था, 1790–1792

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 153-161

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राजनीति में मीडिया चित्रण हिंदी अखबारों में महिला राजनेताओं का अध्ययन

नरेन्द्र सोनी, पीएचडी शोधार्थी,
डॉ. सुनैना, शोध निर्देशक,
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

सार :– मीडिया में जनता को प्रभावित करने की अपार शक्ति है और संचार क्रांति ने इसके महत्व को और बढ़ा दिया है। दुर्भाग्य से, आजकल मीडिया अपनी वास्तविक भूमिका से डगमगाने लगता है और पक्षपातपूर्ण जानकारी देता है जो समाज के विकास को और कठिन बना देता है। आलोचक विलाप करते हैं कि महिलाओं को समाज में समान रूप से चित्रित करना एक ऐसा विषय है जिसे भारतीय मीडिया ने कम प्राथमिकता दी है। उनके अनुसार, भारतीय मीडिया को लैंगिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है ताकि यह महिलाओं के मुद्दों को लैंगिक संवेदनशील तरीके से कवर करे। प्रस्तुत शोध हिंदी अखबारों में हरियाणा की महिला राजनेताओं के चित्रण पर आधारित है। अध्ययन में हरियाणा से प्रकाशित 3 हिन्दी समाचार पत्रों के समाचारों का अध्ययन किया गया है।

कुंजी शब्द :– राजनीति, मीडिया, चित्रण, अखबार, महिला।

परिचय :–

भारत का संविधान पुरुषों और महिलाओं को समान स्थिति की गारंटी देता है और लिंग, वर्ग, पंथ आदि के आधार पर किसी भी तरह के भेदभाव पर रोक लगाता है। सभी कानूनी प्रावधानों और मजबूत कानूनों के बावजूद महिलाओं को अभी भी पुरुषों से हीन और अधीनस्थ माना जाता है। वे लंबे समय से समाज में बराबरी का दर्जा पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस पितृसत्तात्मक दुनिया में न केवल महिलाओं को वंचित और उत्पीड़ित किया जाता है बल्कि सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में भी उनकी उपेक्षा की जाती है। हरियाणा में स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी का महत्व नए हरियाणा पंचायत राज अधिनियम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा उन वंचित लोगों को निर्वाचित स्थानीय निकायों में शामिल करना और उचित प्रतिनिधित्व देना है जो सदियों से सत्ता की राजनीति की मुख्यधारा से हाशिए पर थे। महिलाओं, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण ने समुदाय के उन वर्गों को अवसर प्रदान किया है जिन्हें राजनीतिक सत्ता और भागीदारी के गलियारों से सिर्फ इसलिए दूर रखा गया था क्योंकि उनके पास संसाधनों तक पहुंच नहीं थी।

पिछले दो दशकों के दौरान हजारों महिलाएं हरियाणा में स्थानीय स्वशासन के लिए चुनी गई हैं और कई हिस्सों में अनिवार्य 33 प्रतिशत आरक्षण सीमा को भी पार कर गई हैं। यह सच है कि प्रशासन में पूर्व अनुभव और प्रशिक्षण की कमी के कारण शुरू में कई महिलाएँ ठीक से काम नहीं कर पाती थीं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उनमें से कई केवल उन्नत स्थिति का आनंद ले सकते थे और वास्तविक प्रशासनिक कार्य उनके पुरुष समकक्षों के माध्यम से किया जाता था। उस समय इन निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों में से कई को प्रॉक्सी सदस्य या अनुपस्थित सदस्य के रूप में उपहास किया गया था और उनके पास इस मामले में शायद ही कोई ज्ञान या अनुभव या प्रशिक्षण था कि कैसे स्थानीय राजनीति के कार्यान्वयन भाग के बारे में जानें। लेकिन एक घटना के रूप में यह बहुत ही कम समय तक चला। इन महिलाओं को सरकारी के साथ–साथ गैर–सरकारी और स्वैच्छिक एजेंसियों द्वारा बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण और कौशल प्रदान किए गए ताकि उन्हें शिक्षित और सशक्त बनाया जा सके और प्रशासन की बारीकियों और वित्तीय प्रबंधन की तकनीकों आदि को समझा जा सके। कुछ ही समय में इनमें से कई महिलाएं शीर्ष पर पहुंच गईं और विभिन्न वित्तीय और प्रशासनिक मुद्दों के साथ–साथ सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाओं को संभालने में अपनी योग्यता साबित कर सकीं।

हरियाणा के विभिन्न जिलों में ऐसे कई मामले सामने आए हैं जहां इन महिलाओं ने विभिन्न प्रकार के अन्याय पर साहसपूर्वक सवाल उठाए हैं। भ्रष्टाचार और वित्तीय गड़बड़ियों के खिलाफ आवाज उठाई है और विकास संबंधी मुद्दों से संबंधित जनता की वास्तविक मांगों को बेहद ईमानदारी से पूरा किया है। जीवन के सभी क्षेत्रों के सामान्य पुरुष और महिलाएं जो अब तक कार्यालयों या अधिकारियों के पास जाने से डरते थी या सीधे पहुंच से भी वंचित थी वे अपनी सामान्य जरूरतों के लिए स्थानीय सरकारी कार्यालयों में प्रवेश करने में सक्षम थे। हरियाणा बनने के शुरू में चुनी गई अधिकांश महिलाएँ अशिक्षित और गृहिणी थीं। लेकिन पंचायत राज संस्था के उनके अनुभव ने उनमें से कई को बदल दिया है। इस परिवर्तन के तत्वों में सशक्तिकरण, आत्मविश्वास, राजनीतिक जागरूकता और सूचना की पुष्टि शामिल है। बड़ी संख्या में निर्वाचित महिलाओं ने संसाधनों पर नियंत्रण का दावा करके और सबसे बढ़कर पुरुष सत्ता और वर्चस्व के पारंपरिक क्षेत्रों को चुनौती देकर सशक्तिकरण की भावना हासिल की है। महिला साक्षरता दर में वृद्धि का एक हिस्सा पंचायतों में महिलाओं की उपस्थिति और खुद को और गांव के अन्य लोगों को शिक्षित करने की उनकी इच्छा को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। भारतीय सामाजिक विज्ञान संस्थान ने हरियाणा में पंचायत राज के एक अध्ययन में चार जिलों में लगभग सौ निर्वाचित महिलाओं की प्रगति की समीक्षा की है की पदों पर निर्वाचित होने पर युवा महिलाओं सहित अधिकांश निर्वाचित महिला पंच निरक्षर थीं। लेकिन इसके तुरंत बाद उन्होंने अपनी नई भूमिकाओं में महारत हासिल करने के लिए साहित्यिक कौशल के साथ–साथ प्रशासनिक प्रशिक्षण की मांग की और आम तौर पर अपनी बेटियों के लिए शिक्षा की आवश्यकता महसूस की।

हरियाणा में स्थानीय निकायों के स्तर पर एक और महत्वपूर्ण बदलाव यह हुआ है कि स्थानीय स्तर पर विकास प्रक्रिया लिंग केंद्रित हो गई है। महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल सुविधाएं, स्वच्छता की स्थिति आदि जैसे मुद्दे जो पहले उपेक्षित थे अब गांवों के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण एजेंडे के रूप में सामने आए हैं। महिला निर्वाचित प्रतिनिधि पंचायत से संबंधित विकासात्मक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। पहले अधिकांश महिलाएँ ग्राम सभा और ग्राम समिति

की बैठकों में विशेषकर अपने बुजुर्गों की उपस्थिति में भाग लेने से झिझकती थीं। इसलिए उनके मुद्दों और समस्याओं को भी दरकिनार किया जाना तय था। लेकिन अब निर्वाचित महिलाएं बैठकों में और गांव के एजेंडे के निर्माण में अधिक से अधिक महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत करती हैं। वे स्थानीय महिलाओं को ग्राम समिति की बैठकों में उनके मुद्दों को उठाने में मदद करने और इन समस्याओं को हल करने के लिए विकास कार्यक्रमों का सुझाव देने के लिए नेतृत्व देती हैं। पंचायत सदस्य स्वास्थ्य और रोजगार सुविधाएं सुनिश्चित करने, स्कूलों में लड़कियों का नामांकन, महिलाओं को स्थानीय कल्याण योजनाओं का लाभ प्रदान करने, बलात्कार, दहेज, छेड़छाड़ आदि के मामलों से निपटने में महत्वपूर्ण पहल कर रहे हैं। वे स्वयं सहायता समूहों को संगठित करने में सक्रिय हैं। महिलाओं के प्रवेश ने छोटे पैमाने पर स्वरोजगार के अवसरों, छोटे व्यवसायों और महिला केंद्रित विकास गतिविधियों पर स्थानीय वित्त का कुछ हिस्सा खर्च करने के माध्यम से महिलाओं के लिए कुछ स्तर की आर्थिक स्वतंत्रता भी सुनिश्चित की है। पुरुष–महिला लिंग अनुपात एक बड़ा अंतर यह है कि हरियाणा में स्थानीय रूप से निर्वाचित महिलाएं हरियाणा में पुरुष–महिला लिंग अनुपात के चिंताजनक अनुपात के आसपास काम करने में सक्षम हैं। हरियाणा में कई पंच और सरपंच महिलाओं ने दहेज और कम उम्र में शादी जैसी उन सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाओं के खिलाफ लड़ने का कठिन काम अपने ऊपर ले लिया है जो लड़कियों या महिलाओं की स्थिति को कम करती हैं। उन्होंने बालिकाओं के जन्म पर गायन, मिठाइयां आदि बांटकर, उन्हें शैक्षिक, खेल और अन्य सामाजिक स्थान और रास्ते प्रदान करके लड़कियों और महिलाओं की स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जो पहले उनकी पहुंच से बाहर थे। .

साहित्य अवलोकन :–

***महिलाएं और भारतीय प्रिंट मीडिया चित्रण और प्रदर्शन* (1992)** विषय पर रमा झा द्वारा अध्ययन किया गया जो भारतीय प्रेस में महिलाओं के चित्रण की जांच करता है। अध्ययन से परिणाम निकलकर आया कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की वैश्विक और तेज पहुंच के बावजूद यह मुद्रित दुनिया है जो स्थायी रूप से लोगों के मानस में चली जाती है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किए जाने के साथ ही भारत में महिला आंदोलन को बल मिला और अस्सी के दशक में कई शिक्षित महिलाओं ने पत्रकारिता को एक ऐसे पेशे के रूप में चुनना शुरू किया जिसे हाल तक पुरुषों का गढ़ माना जाता था। तब से महिला पत्रकार महिला नेटवर्किंग का हिस्सा बन गई हैं और महिलाओं के सवाल पर सरकार के रुख के बारे में जनता को जानकारी दे रही हैं। शोध उन बाधाओं पर प्रकाश डालता है जिनके साथ मुख्यधारा के समाचार पत्रों में काम करने वाली महिला पत्रकार हैं।

सोनिया बाथला द्वारा आयोजित *महिला, लोकतंत्र और मीडिया भारतीय प्रेस में सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रतिनिधित्व* (1998) विषय पर शोध का निष्कर्ष है कि प्रेस कवरेज में महिलाओं के मुद्दे मुख्य रूप से घटना–उन्मुख हैं। इस शोध की प्रेरणा नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत में निहित है जो इस बात पर बल देता है कि लोकतांत्रिक राजनीतिक नींव लिंग पक्षपाती रही है और विभिन्न विसंगतियों से ग्रस्त है। मीडिया में राजनीतिक एवं सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को रोकने और राजनीतिक नागरिकों के रूप में उनकी भूमिका को सीमित करने के रूप में पाया गया है। शोध से पता चलता है कि अधिकांश समाचार हिंसा एवं अपराध ा पर केंद्रित होते हैं क्योंकि वे मीडिया के उपयोग में बड़े अच्छे तरीके से फिट होते हैं और नियमित स्रोतों से

प्राप्त करना आसान होता है।

पूर्णिमा और व्यासुलु (1999) द्वारा किया गया अध्ययन मुख्य रूप से पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में आने वाली बाधाओं पर केंद्रित है। अध्ययन के दौरान उन्होंने पाया कि पंचायती राज संस्थाओं में महिला प्रतिनिधियों की बाधाएं उनकी सीमित गतिशीलता घरेलू जिम्मेदारी से लेकर ऐतिहासिक पूर्वाग्रहों तक विस्तृत हैं। पंचायतों में पुरुष सदस्यों द्वारा किए जाने वाले अपमान और भेदभाव को दूर करने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण महिलाओं को प्रदर्शित करता है। भविष्य के बारे में महिलाओं की आशावादी प्रकृति और निर्णय लेने में भागीदारी ने विकेंद्रीकृत शासन में बदलाव होना चाहिए।

मोहंती (1999) द्वारा महाराष्ट्र, उड़ीसा और बंगाल में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि महिला प्रतिनिधि सुरक्षित पेयजल, मध्याह्न भोजन, आईसीडीएस कार्यक्रम के कार्यान्वयन, पीडीएस के माध्यम से गेहूं और चावल के वितरण सहित गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करने की कोशिश कर रही हैं। जिला पंचायतों की महिला प्रतिनिधियों पर कर्नाटक में किया गया एक अध्ययन भी उपरोक्त निष्कर्षों का समर्थन करता है। 1987 और 1990 के बीच दो साल के अंतराल के बाद मूल्यांकन करने पर इन महिलाओं ने ध्यान देने योग्य अंतर बनाया है। आज वे अधिक अभिव्यंजक हैं और चर्चा के मामलों पर एक राय रखती है। महिलाएं अपनी टिप्पणियों की सामग्री के संदर्भ में गुणात्मक सुधार दिखाती थीं। उनके पुरुष सहकर्मियों की तुलना में दृष्टिकोण में अंतर है। वे शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और पंचायतों के दायरे में आने वाले इस तरह के मामलों से निपटने के लिए कम भ्रष्ट पाए गए हैं।

राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी विषय पर बेस लाइन रिपोर्ट (2002) इस तथ्य को स्थापित करती है कि यह लोकतांत्रिक परंपराओं को मजबूत करने और उत्पीड़न के खिलाफ उनके संघर्ष दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं के लिए राजनीतिक सक्रियता, अन्य वंचित समूहों की तरह सामाजिक परिवर्तन का अभिन्न अंग है। केवल स्थानीय और शासन के निचले स्तरों पर राजनीतिक स्थान देना पर्याप्त नहीं है। राजनीतिक कार्यालयों के उच्च स्तरों पर महिला आरक्षण के लिए संघर्ष जारी रहना चाहिए। 85वें संविधान संशोधन विधेयक का अधिनियमन अभी भी एक दूर का सपना है। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में समानता के लिए संघर्ष तब तक जारी रहेगा जब तक उन्हें हासिल नहीं कर लिया जाता। तभी महिलाएं एक लैंगिक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए अपने राजनीतिक एजेंडे को चार्टर कर सकती हैं।

शोध उद्देश्य :–

1. समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं की वर्णित भूमिका का अध्ययन करना।
2. समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं की प्रवृति का अध्ययन करना।
3. समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं का हिंसा के शिकार का अध्ययन करना।
4. समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं के समाचारों का प्रकार का अध्ययन करना।
5. समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं का व्यवहार का अध्ययन करना।

शोध पद्धति :–

वर्तमान अध्ययन हिन्दी समाचार पत्रों में राजनीतिक महिलाओं के समाचार विश्लेषण पर आधारित है। इसलिए ब्रह्मांड और शोध की जनसंख्या हिन्दी समाचार पत्रों से लिए गए समाचार हैं। इंण्डियन रिडरसिप सर्वेक्षण

2021 रिपोर्ट के अनुसार हरियाणा में टॉप सूची में 3 हिन्दी समाचारों का वितरण सबसे ज्यादा है। ये हिन्दी समाचार पत्र 1. दैनिक भास्कर, 2. दैनिक जागरण एवं 3. अमर उजाला है। इस अध्ययन में 3 हिन्दी समाचार पत्रों के समाचारों का अध्ययन किया गया है। प्रतिदर्श का चयन शोधकर्ता द्वारा परिमित जनसंख्या से किया गया है। 1 फरवरी 2021 से 31 जनवरी 2022 तक 3 हिन्दी समाचार पत्रों द्वारा कुल 365 संस्करण लिए गए। शोधकर्ता द्वारा प्रत्येक संस्करण की संचयी आवृत्ति निकाली गई जो की 2 आवृत्ति प्राप्त हुई। प्रस्तुत शोध में संचयी आवृत्ति के आधार पर चयनीत कुल 191 संस्करणों में से प्रत्येक दूसरे संस्करण का चयन किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण :–

समाचार पत्रों में राजनेतिक महिलाओं की वर्णित भूमिका

वर्णित भूमिका		दैनिक भास्कर		दैनिक जागरण		अमर उजाला	
क्र.सं.	वर्णित भूमिका	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	मुख्य नायक	501	87.43	788	82.53	598	78.27
2	प्रतिपक्षी	53	9.24	78	8.16	16	2.05
3	अन्य	19	3.33	89	9.31	150	19.68
	कुल	573	100	955	100	764	100

तालिका–1

उपरोक्त तालिका व ग्राफ में समाचार पत्रों में राजनेतिक महिलाओं के वर्णित भूमिका के आंकडों को दर्शाया गया है। दैनिक भास्कर में 87.43 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 82.53 प्रतिशत व अमर उजाला में 78.27 प्रतिशत समाचारों में मुख्य नायक के रूप में दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 9.24 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 8.16 प्रतिशत व अमर उजाला में 2.05 प्रतिशत समाचारों में प्रतिपक्षी के रूप में दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 3.33 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 9.31 प्रतिशत व अमर उजाला में 19.68 प्रतिशत समाचारों में अन्य नायक के रूप में दिखाया जाता है।

समाचार पत्रों में राजनेतिक महिलाओं की प्रवृति

राजनैतिक महिलाओं की प्रवृति		दैनिक भास्कर		दैनिक जागरण		अमर उजाला	
क्र.सं.	प्रवृति	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	साकारात्मक	408	71.22	855	89.54	533	69.76
2	नकारात्मक	04	0.69	03	0.31	12	1.58
3	सामान्य	161	28.09	97	10.15	219	28.66
	कुल	573	100	955	100	764	100

तालिका–2

उपरोक्त तालिका व ग्राफ में समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं की प्रवृति के आंकड़ों को दर्शाया गया है। देनिक भास्कर में 71.22 प्रतिशत, देनिक जागरण में 89.54 प्रतिशत व अमर उजाला में 69.76 प्रतिशत समाचारों

में सकारात्मक प्रवृति दिखाई जाती है। देनिक भास्कर में 0.69 प्रतिशत, देनिक जागरण में 0.31 प्रतिशत व अमर उजाला में 1.58 प्रतिशत समाचारों में नकारात्मक प्रवृति दिखाई जाती है। देनिक भास्कर में 28.09 प्रतिशत, देनिक जागरण में 10.15 प्रतिशत व अमर उजाला में 28.66 प्रतिशत समाचारों में सामान्य प्रवृति दिखाई जाती है।

समाचार पत्रों में राजनेतिक महिलाओं का हिंसा के शिकार

हिंसा के शिकार		दैनिक भास्कर		दैनिक जागरण		अमर उजाला	
क्र.सं.	हिंसा के शिकार	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	शारीरिक	00	00	02	0.20	01	0.13
2	मानसिक	04	0.69	03	0.31	12	1.58
3	हिंसा की कोई घटना नहीं	569	99.31	950	99.49	751	98.29
	कुल	573	100	955	100	764	100

तालिका–3

उपरोक्त तालिका व ग्राफ में समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं के हिंसा के शिकार के आंकडों को दर्शाया गया है। दैनिक भास्कर में 00 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.20 प्रतिशत व अमर उजाला में 0.13 प्रतिशत समाचारों में राजनैतिक महिलाओं को शारिरिक हिंसा के शिकार के रूप में दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 0.69 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.31 प्रतिशत व अमर उजाला में 1.58 प्रतिशत समाचारों में राजनैतिक महिलाओं को मानसिक हिंसा के शिकार के रूप में दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 99.31 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 99.49 प्रतिशत व अमर उजाला में 98.29 प्रतिशत समाचारों में राजनैतिक महिलाओं को हिंसा की कोई घटना नहीं शिकार के रूप में दिखाया जाता है।

समाचार पत्रों में राजनेतिक महिलाओं से सम्बन्धित समाचारों का प्रकार

समाचारों का प्रकार		दैनिक भास्कर		दैनिक जागरण		अमर उजाला	
क्र.सं.	समाचारों का प्रकार	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	अनुकूल	408	71.21	855	89.52	533	69.76
2	प्रतिकूल	03	0.52	48	5.02	23	3.01
3	निष्पक्ष	162	28.27	52	5.46	208	27.23
	कुल	573	100	955	100	764	100

तालिका–4

उपरोक्त तालिका व ग्राफ में समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं से सम्बन्धित समाचारों का प्रकार के आंकड़ों को दर्शाया गया है। दैनिक भास्कर में 71.21 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 89.52 प्रतिशत व अमर उजाला में 69.76 प्रतिशत समाचारों का प्रकार अनुकूल होता है। दैनिक भास्कर में 0.52 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 5. 02 प्रतिशत व अमर उजाला में 3.01 प्रतिशत समाचारों का प्रकार प्रतिकूल होता है। दैनिक भास्कर में 28.27

प्रतिशत, दैनिक जागरण में 5.46 प्रतिशत व अमर उजाला में 27.23 प्रतिशत समाचारों का प्रकार निष्पक्ष होता है।

समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं का व्यवहार

राजनैतिक महिलाओं का व्यवहार		दैनिक भास्कर		दैनिक जागरण		अमर उजाला	
क्र.सं.	व्यवहार	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	पीड़ित	01	0.17	12	1.25	16	2.09
2	कमजोर	02	0.34	03	0.31	04	0.54
3	मजबूत	08	1.39	08	0.88	03	0.39
4	भावनात्मक	00	00	00	00	00	00
5	निर्भिक	03	0.52	00	00	06	0.78
6	स्वतंत्र	00	00	00	00	00	00
7	आश्रित	00	00	00	00	00	00
8	अन्य	559	97.58	932	97.56	735	96.20
	कुल	573	100	955	100	764	100

तालिका–5

उपरोक्त तालिका व ग्राफ में समाचार पत्रों में राजनैतिक महिलाओं के व्यवहार के आंकड़ों को दर्शाया गया है। दैनिक भास्कर में 0.17 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 1.25 प्रतिशत व अमर उजाला में 2.09 प्रतिशत समाचारों में पीड़ित व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 0.34 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.31 प्रतिशत व अमर उजाला में 0.54 प्रतिशत समाचारों में कमजोर व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 1.39 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.88 प्रतिशत व अमर उजाला में 0.39 प्रतिशत समाचारों में मजबूत व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 00 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 00 प्रतिशत व अमर उजाला में 00 प्रतिशत समाचारों में भावनात्मक व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 0.52 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 00 प्रतिशत व अमर उजाला में 0.78 प्रतिशत समाचारों में निर्भिक व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 00 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 00 प्रतिशत व अमर उजाला में 00 प्रतिशत समाचारों में स्वतंत्र व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 00 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 00 प्रतिशत व अमर उजाला में 00 प्रतिशत समाचारों में आश्रित व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 97.58 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 97.56 प्रतिशत व अमर उजाला में 96. 20 प्रतिशत समाचारों में अन्य व्यवहार दिखाया जाता है।

शोध सार :–

शोध परिणाम से यह निष्कर्ष निकलकर आया है कि समाचार पत्रों में सबसे ज्यादा प्रतिशत समाचारों में राजनैतिक महिलाओं को मुख्य नायक की भूमिका में वर्णित किया जाता है। प्रतिपक्षी एवं अन्य वर्णित भूमिकाओं का प्रतिशत सबसे कम है। दैनिक भास्कर में 87.43 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 82.53 प्रतिशत व अमर उजाला

में 78.27 प्रतिशत समाचारों में मुख्य नायक के रूप में दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 9.24 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 8.16 प्रतिशत व अमर उजाला में 2.05 प्रतिशत समाचारों में प्रतिपक्षी के रूप में दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 3.33 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 9.31 प्रतिशत व अमर उजाला में 19.68 प्रतिशत समाचारों में अन्य नायक के रूप में दिखाया जाता है। राजनैतिक महिलाओं की प्रवृति में सबसे ज्यादा प्रतिशत साकारात्मक प्रवृत्ति के समाचार होते है। नकारात्मक प्रवृत्ति के समाचारों का प्रतिशत सबसे कम है। दैनिक भास्कर में 71.22 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 89.54 प्रतिशत व अमर उजाला में 69.76 प्रतिशत समाचारों में सकारात्मक प्रवृति दिखाई जाती है। दैनिक भास्कर में 0.69 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.31 प्रतिशत व अमर उजाला में 1.58 प्रतिशत समाचारों में नकारात्मक प्रवृति दिखाई जाती है। दैनिक भास्कर में 28.09 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 10. 15 प्रतिशत व अमर उजाला में 28.66 प्रतिशत समाचारों में सामान्य प्रवृति दिखाई जाती है। राजनैतिक महिलाओं के समाचारों में सबसे ज्यादा प्रतिशत कोई भी हिंसा की घटना नहीं होती है। मानसिक हिंसा के समाचारों का प्रतिशत सबसे कम है वहीं शारीरिक हिंसा के समाचारों का प्रतिशत शून्य है। दैनिक भास्कर में 00 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.20 प्रतिशत व अमर उजाला में 0.13 प्रतिशत समाचारों में राजनैतिक महिलाओं को शारीरिक हिंसा के शिकार के रूप में दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 0.69 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.31 प्रतिशत व अमर उजाला में 1.58 प्रतिशत समाचारों में राजनेतिक महिलाओं को मानसिक हिंसा के शिकार के रूप में दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 99.31 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 99.49 प्रतिशत व अमर उजाला में 98. 29 प्रतिशत समाचारों में राजनैतिक महिलाओं को हिंसा की कोई घटना नहीं शिकार के रूप में दिखाया जाता है। समाचार पत्रों में सबसे ज्यादा प्रतिशत समाचारों का प्रकार अनुकूल होता है तथा सबसे कम प्रतिशत समाचारों का प्रकार प्रतिकूल होता है। दैनिक भास्कर में 71.21 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 89.52 प्रतिशत व अमर उजाला में 69.76 प्रतिशत समाचारों का प्रकार अनुकूल होता है। दैनिक भास्कर में 0.52 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 5. 02 प्रतिशत व अमर उजाला में 3.01 प्रतिशत समाचारों का प्रकार प्रतिकूल होता है। दैनिक भास्कर में 28.27 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 5.46 प्रतिशत व अमर उजाला में 27.23 प्रतिशत समाचारों का प्रकार निष्पक्ष होता है। समाचारों में सबसे ज्यादा प्रतिशत समाचार अन्य व्यवहार जिसमें सामान्य व्यवहार सम्मिलित है के होते है। सबसे कम प्रतिशत समाचारों में पीड़ित, कमजोर, मजबूत एवं निर्भिक व्यवहार होता है। समाचारों में निर्भिक भावनात्मक, स्वतंत्र एवं आश्रित व्यवहार को शून्य प्रतिशत स्थान दिया जाता है। दैनिक भास्कर में 0.17 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 1.25 प्रतिशत व अमर उजाला में 2.09 प्रतिशत समाचारों में पिडित व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 0.34 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.31 प्रतिशत व अमर उजाला में 0.54 प्रतिशत समाचारों में कमजोर व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 1.39 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 0.88 प्रतिशत व अमर उजाला में 0.39 प्रतिशत समाचारों में मजबूत व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 00 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 00 प्रतिशत व अमर उजाला में 00 प्रतिशत समाचारों में भावनात्मक व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 0.52 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 00 प्रतिशत व अमर उजाला में 0.78 प्रतिशत समाचारों में निर्भिक व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 00 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 00 प्रतिशत व अमर उजाला में 00 प्रतिशत समाचारों में स्वतंत्र व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 00 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 00 प्रतिशत व अमर उजाला में 00 प्रतिशत समाचारों में आश्रित व्यवहार दिखाया जाता है। दैनिक भास्कर में 97.

58 प्रतिशत, दैनिक जागरण में 97.56 प्रतिशत व अमर उजाला में 96.20 प्रतिशत समाचारों में अन्य व्यवहार दिखाया जाता है।

निष्कर्ष :-

शोध परिणाम से यह निष्कर्ष निकलकर आया है कि समाचार पत्रों में सबसे ज्यादा प्रतिशत समाचारों में राजनीतिक महिलाओं को मुख्य नायक की भूमिका में वर्णित किया जाता है। प्रतिपक्षी एवं अन्य वर्णित भूमिकाओं का प्रतिशत सबसे कम है। राजनीतिक महिलाओं की प्रवृति में सबसे ज्यादा प्रतिशत सकारात्मक प्रवृत्ति के समाचार होते है। नकारात्मक प्रवृत्ति के समाचारों का प्रतिशत सबसे कम है। राजनेतिक महिलाओं के समाचारों में सबसे ज्यादा प्रतिशत कोई भी हिंसा की घटना नहीं होती है। मानसिक हिंसा के समाचारों का प्रतिशत सबसे कम है वहीं शारीरिक हिंसा के समाचारों का प्रतिशत शून्य है। समाचार पत्रों में सबसे ज्यादा प्रतिशत समाचारों का प्रकार अनुकूल होता है तथा सबसे कम प्रतिशत समाचारों का प्रकार प्रतिकूल होता है। शोध से प्राप्त आंकड़ों से यह परिणाम निकलकर आया है कि सबसे ज्यादा प्रतिशत समाचारो में नाम एवं परिचय होता है। सबसे कम प्रतिशत समाचारों में नाम एवं परिचत नहीं होता है। समाचारों में सबसे ज्यादा प्रतिशत समाचार अन्य व्यवहार जिसमें सामान्य व्यवहार सम्मिलित है के होते है। सबसे कम प्रतिशत समाचारों में पीड़ित, कमजोर, मजबूत एवं निर्भिक व्यवहार होता है। समाचारों में निर्भिक भावनात्मक, स्वतंत्र एवं आश्रित व्यवहार को शून्य प्रतिशत स्थान दिया जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. Jha, R. (1992). Women and the Indian print media: portrayal and performance. (No Title).
2. Bathla, S. (1998). Women, democracy and the media: Cultural and political representations in the Indian press. (No Title).
3. Vyasulu, P., & Vyasulu, V. (1999). Women in Panchayati Raj: Grass Roots Democracy in Malgudi. Economic and Political Weekly, 3677-3686.
4. Fox, T., Ward, H., & Howard, B. (2002). Public sector roles in strengthening corporate social responsibility: A baseline study. Washington, DC: World Bank.
5. Sharma, A. (2012). Portrayal of Women in Mass Media. Media Watch: An International Journal in Media and Communication.
6. Sarah, G. (2001). The Routledge companion to feminism and post-feminism. p.25 Scharrer, E. (2002). An Improbable Leap: A content analysis of newspaper coverage of Hillary Clintons transition from First Lady to Senate candidate. Journalism Studies, 3, 393-406.
7. Scheufele, D. A. (1999). Framing as a theory of media effects. Journal of communication, 49(1), 103-122. UNDP. (2010). The 2010 Women in Local Government Status Report. p. 20.
8. Weber, R. P. (1990). Basic Content Analysis, 2nd ed. Newbury Park, CA.Women in International Development, Michigan State University, 1987.
9. Zahid Y. (2013). Portrayal of Women in Elite Press of Pakistan and the United States World Applied Sciences Journal 28 (6): 847-853, ISSN 1818-4952 DOI: 10.5829/idosi.wasj.2013.28.06.13849

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 162-167

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी समस्या

उषा कुमारी

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची।

मृदुला गर्ग की रचनाओं का केंद्र नारी ही रही है। इनकी रचनाओं में नारी से जुड़ी समस्याओं की उपस्थिति स्वाभाविक है। मृदुला गर्ग ने अपने कथा साहित्य में नारी से जुड़ी विभिन्न समस्याओं को सामने लाया है। नारी एक बेटी बहू, पत्नी, मां के रूप में होती है और हर रिश्ते को निभाती है परंतु हमारे समाज में नारी के ऊपर ही सवाल उठाए जाते हैं, कहीं नारी देवी के रूप में पूजी जाती है तो कहीं नारी को अग्नि परीक्षा से भी गुजरना पड़ता है।

हमारे समाज में नारी से जुड़ी कई समस्याएं हैं :– जैसे कामकाजी नारी, परित्यक्ता, विधवा नारी की समस्या इत्यादि।

कामकाजी नारी की समस्या :–

मृदुला गर्ग ने अपने कथा साहित्य में आधुनिक युग की महिलाएं जिनके जीवन में आज बहुत से परिवर्तन आए हैं। ऐसे बदलते युग में एक तरफ तो महिलाएं प्रगति की ओर तेजी से बढ़ रही हैं साथ ही उन्हें कई तरह की समस्याओं का सामना भी करना पड़ रहा है। खासकर वे महिलाएं जो कामकाजी हो, किसी व्यवसाय से जुड़ी हो, ऐसी महिलाओं को अपने घर परिवार के साथ–साथ कार्यालय की भी जिम्मेदारी संभालनी पड़ती है और वैसे भी नारी के लिए हमारे समाज कि जो नजरिया है वह आज भी बहुत ज्यादा बदली नहीं है यदि औरत को अपने काम में देर हो जाए या वह अपने काम के सिलसिले में घर से बाहर रहती है तो उस पर कई तरह के सवाल उठाए जाते हैं। एक स्त्री अपने परिवार का सहारा बनने के लिए घर से बाहर जाकर काम करती है पर उसे बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान समय में महंगाई, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि इत्यादि के कारण और साथ में पारिवारिक उन्नति और स्वयं की आत्मनिर्भरता के लिए काम करती है। वर्तमान समय में एक महिला चाहे शिक्षित हो या ना हो पर वह आत्मनिर्भर बनना चाहती है। एक गरीब अशिक्षित महिला जो दूसरों के यहां काम कर अपने परिवार का भरण पोषण करती है किंतु ऐसे में अगर परिवार के सदस्यों का साथ प्राप्त ना हो तो एक कामकाजी नारी के लिए विकराल समस्या खड़ी हो जाती है। यदि कामकाजी नारी एकल परिवार में रहती है तब यह समस्या और भी जटिल और चुनौतीपूर्ण बन जाती है, मृदुला गर्ग के 'खाली' कहानी की नायिका मधुर कामकाजी नारी है और एकाकी परिवार में रहते हैं। पति पत्नी दोनों ही अपने–अपने काम में व्यस्त रहते हैं जिस कारण नायिका बच्चा

पैदा नहीं कर पाती है। वह कहती है कि हम दोनों अपने–अपने काम में मशगूल रहते हैं, तो उसे पालेगा कौन?'[1] एक स्त्री देवी, अप्सरा और भक्ति से हटकर मानवी सहचरी बनना चाहती है, आत्मनिर्भर बनना चाहती है, वह अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहती है, परंतु महानता की चोटी से वेश्या के टीले पर छोड़ने वाला कोई और नहीं बल्कि यही देवी भक्त है जो नारी के रास्ते रुकावटें पैदा करते हैं। प्राचीन काल में स्त्रियों ने अपना स्वत्व एक कांच की बंद पिटारी में इस कदर कैद रखा था कि सांस लेना भी दूभर था क्योंकि उसमें ना खिड़की थी न रोशनदान इसी कारण न तो खुलकर जी सकती थी और ना तो मर सकती थी इन सारी समस्याओं को झेलती रही परंतु औरतों की कतार में कुछ ऐसे सख्त जान बाहर निकले जिन्होंने जिंदगी का नक्शा ही बदल कर रख दिया उन्होंने आजादी की मांग उठाई। आजादी की जंग सही मायने में 1947 में मानी जाती है, पर स्त्रियों ने जंग पहले ही छोड़ दी थी। आशा रानी बोहरा जी कहती है, 'भारतीय जीवन व्यवस्था पुरुष प्रधान होने से साहित्य के विकास में स्त्री का योगदान पहले स्पष्ट रूप में कम और प्रेरणा के रूप में अधिक रहा। प्राचीन काल में यद्यपि अभिव्यक्ति के लिए समान अधिकार थे फिर भी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि सृजन क्षेत्र में यह समानता बराबर संख्या के स्तर पर भी हो आगे चलकर तो विभिन्न स्थितियों के दबाव से यह अंतर बढ़ता ही चला गया और स्त्री स्वयं सर्जक बजाय अधिकतर सर्जक पुरुष की प्रेरणा ही बनती चली गई। यह स्थिति कमोबेश हर देश हर काल में हर भाषा में रही है।[2]

स्त्री और पुरुष की सामाजिक स्थिति की भिन्नता पर बात करते हुए समाज में स्त्री के प्रति दो एवं व्यवहार की चर्चा होती है वैधानिक क्षेत्र में भी स्त्री भेदभाव का शिकार है, अरविंद जैन ने 'औरत होने की सजा' नामक पुस्तक में कानूनी लूप होल्स की चर्चा की है। तुम औरत हो मुझसे अलग मेरे विरुद्ध आंख उठाने की कोशिश की करोगी तो कीड़े मकोड़े की तरह कुचल दी जाओगी, कोई तुम्हारी मदद के लिए आगे नहीं आएगा। समाज, धर्म, कानून, मठाधीश, मंत्री नेता और राजा सब मेरे हैं, बल्कि ये ही वे हथियार हैं जिनसे में इस दुनिया में ही नहीं दूसरी दुनिया में भी तुम्हें नहीं छोडूंगा।

मृदुला गर्ग के विमर्श के केंद्र में कामकाजी औरत है, जो परिवार के लिए रोजी रोटी का जुगाड़ करने के बाद भी पुरुष से स्वयं को नीचा मानती है। मृदुला गर्ग कहती है कि 'स्त्री है तो मादा चाहे जिस वर्ग से ही जितने घंटे काम में खपती हो, जितनी मजदूरी पाती हो, समस्या है तो शील की रक्षा की और शील पर आक्रमण की।[3]

मृदुला गर्ग कहती हैं कि नारी का घर के कामकाज के एवज में पैसे मांगना इस नारी संबंधी अधिकार विमर्श में पश्चिमी समाज का उदाहरण देती है जहां बच्चों के पालन पोषण का दायित्व राष्ट्र का होता है किंतु यही तनख्वाह की मांग यदि भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में देखे तो भी इस मांग कि कोई तुक नहीं होती। मृदुला गर्ग कहती है कि तनख्वाह या पारिश्रमिक की मांग मजदूर मालिक से करता है फिर गृहणी की तनख्वाह कौन देगा? पति इसका सीधा अर्थ तो यह हुआ कि पति–पत्नी का मालिक है और पत्नी उसकी नौकरानी यह मैं हूं कि सब सरल कालरा रेडियो स्टेशन में काम करके अर्थ उपार्जन में पति का हाथ बटाती है। उसके पति को पीने की लत है और नौकरी छूटे हुए भी 6 महीने से अधिक हो गए हैं. पैसों की तंगी के कारण उसे मॉडल बन

कर सौ–सौ रूपये कमाने पर दिवस होना पड़ता है। वह कहती है कि 'हाथ तंग है रेडियो स्टेशन से उसकी आमदनी इतनी नहीं की सब शौक पूरी किए जा सके। यूं तो पति की नौकरी छूटती जुड़ती रहती है पर इस बार अंतराल कुछ अधिक खींच गया है उपर यह पीने की लत। (4) छत पर दस्तक कहानी की नायिका पति को आर्थिक रूप से मदद करने और बच्चों को सुविधाएं देने के लिए ही स्कूल में टीचर की नौकरी करती है फिर भी परिवार में उसका कोई महत्व नहीं था। 'तीन किलो की छोरी' कहानी में शारदाबेन ग्राम सेविका है। सौ रूपये वेतन पाती है और परिवार का खर्च चलाने के साथ बेटे की पढ़ाई का भी खर्च खुद ही उठाती है नौकरी के साथ–साथ घर का चूल्हा चौका भी संभालती है। दुनिया का कायदा कहानी में की रक्षा कॉलेज में पढ़ाने के साथ ही घर और अपने बच्चे की देखरेख स्वयं ही करती है बच्चे की वजह से वह अक्सर पति के साथ बाहर जाने से कतराती है। पति के बाहर चलने के प्रस्ताव पर वह कहती है।

'शशि को रोज नौकर के पास छोड़ना पड़ता है.
कालेज जाती हूं तब भी छोड़ती हूं
इसलिए दोबारा शाम को छोड़ने का मन नहीं होता।'(5)

दो एक फूल जिस की नायिका मालती शर्मा अविवाहित डॉक्टर है उसके घर में झाडू पोछा करके शांतम्मा अपना जीवन यापन करती है। शांतम्मा का पति अपनी कमाई के पैसों से शराब पीकर घर में मारपीट करता है और औरत को मजबूरी में घर से बाहर निकाल कर अर्थ उपार्जन करना पड़ता है फिर भी न तो उसे पति का प्यार मिलता है और ना ही सहयोग ऐसे में उसका जीवन और भी कष्टदायक बन जाता है।

विधवा नारी की समस्या :–

समाज में एक स्त्री के लिए विधवा होना अत्यंत ही हीन अवस्था मानी जाती है। पति की मृत्यु के पश्चात स्त्री को कदम कदम पर उसके असहाय होने की बदकिस्मती होने की आदि का एहसास दिलाया जाता है। डॉ. क्षितिज यादव राव धुमाल कहते हैं 'भारतीय संस्कृति में विधवा का जीवन अत्यंत उपेक्षित एवं तिरस्कृत माना जाता है विधवाओं को अशुभ मानकर मंगल कार्यों में उसकी उपस्थित घृणात्मक मानी जाती है।'(6) पति का नाम होना एक स्त्री के लिए आप है। प्राचीन भारतीय समाज में तो विधवा स्त्री से जीने का अधिकार छीन लिया जाता था तथा सती प्रथा के तहत उसे पति के शरीर के साथ आत्मदाह करने पर विवश कर दिया जाता था। आज भी समाज में स्त्री प्रथा जैसे प्रथा तो नहीं है परंतु एक स्त्री को हर पल मौत मिलती है। उसे हीन दृष्टिकोण से देखा जाता है। एक स्त्री को विधवा होने के बाद बहुत सारे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

उपेक्षा प्रताड़ना तथा तिरस्कार के कारण उसका अपने परिवार तथा समाज में जीना दूभर हो जाता है किंतु आज समय परिवर्तन के साथ–साथ विधवा नारी के जीवन में कई बदलाव आ रहे हैं। मृदुला गर्ग के उपन्यास 'अनित्य' में एक विधवा स्त्री की समस्या का चित्रण किया गया है। उपन्यास की पात्र रंजना एक विधवा स्त्री है, जब वह गर्भवती थी तभी उसके पति की मृत्यु हो जाती है परंतु रंजना बहुत ही हिम्मत के से काम लेती है और अपने आप को मजबूत बनाते हैं। 'निपट अकेली औरत रंजना को 1 दिन भी अभिजीत ने रोते चीखते नहीं देखा और ना कड़वाहट में गोते लगाते।'(7) कठगुलाब उपन्यास के नमिता पति की मृत्यु के बाद विधवा तो

बनती है किंतु वह किसी तरह के बंधन में जीना नहीं चाहती है बल्कि वह दूसरे पुरुषों से संबंध भी रखती है।

इसी तरह मिलजुल मन उपन्यास में भी विधवा नारी का चित्रण किया गया है। छोटी लालाईन को पति की मृत्यु के बाद विधवा जीवन बिताना पड़ता है छोटी लाइन पूरी तरह अकेली बड़े लाला के सहारे हो रही।'[8] हालांकि छोटी लालाईन को परंपरागत विधवाओं की तरह नहीं जीना पड़ा किंतु उन्हें इस बात का दुख जरूर था कि उन्हें जायदाद में कोठी के अलावा कुछ भी ना मिला। अपने दुख के को बैजनाथ जैन से बताते हुए बार–बार रो पड़ती है और कहती है कि काश छोटेलाल आने तवारिखी कागजात अपनी मेज की दराजों में ताला बंद न कर के पिता जी के हवाले किए जाते तो यू नेस्तनाबूत न हुए होते।[9] रेशम कहानी में हेमवती के माध्यम से विधवा नारी का चित्रण हुआ है किंतु विधवा हेमवती को पति की मृत्यु के बाद ना हीं किसी प्रकार के बंधन में बंधकर रहना पड़ता है और ना ही अपने शौक को मारना पड़ता है। यहां तक की पति के रहते हुए उसे जिस नियंत्रण एवं अनुशासन में रहना पड़ता था। वह उनके न रहने पर खत्म हो जाता है।

तलाक एवं परित्यक्ता नारी की समस्या :-

पति पत्नी के वैवाहिक संबंध का सामाजिक एवं कानूनी रूप से विच्छेद तलाक कहलाता है। कई बार तलाक पति पत्नी को उनके घुटन भरे वैवाहिक जीवन से मुक्ति दिलाता है, तो कई बार उनके जीवन को सदा के लिए अकेलेपन की खाई में धकेल देता है। आज हमारे समाज में कई ऐसी स्त्रियों के उदाहरण देखने को मिलते हैं जो कि बिना तलाक के ही अपने पति या परिवार द्वारा त्यागी तिरस्कृत की गई होती है। ऐसे में स्त्री का जीवन और भी कष्टदायक बन जाता है। मृदुला गर्ग का उपन्यास उसके हिस्से की धूप में मनीषा अपने पति जितेन की अति व्यस्तता से परेशान हो तलाक का निर्णय लेती है। इसी तरह अनित्य उपन्यास में भी काजल का पति मुखर्जी काजल को तलाक दे देता है। यहां तक कि वह उसके बेटे को भी अपने साथ ले जाता है।

कठगुलाब उपन्यास में स्मिता का मनोचिकित्सक पति जिम जारविश जो कि माइग्रेन से पीड़ित है और कभी–कभी स्मिता पर कीड़े पर छिपकली की तरह झपट कर इस पिता से अपनी हर बात मनाता है किंतु एक दिन उसके इस व्यवहार से तंग आकर स्मिता विद्रोह कर शीशा तोड़ देती है जिससे जिम स्मिता पर बेल्ट से वार करता है। इसके प्रतिवाद में स्मिता भी जिम की पिटाई करती है। अंत में जिम स्मिता को पागल ठहराते हुए उसे तलाक देता है। स्मिता मारियान को बताती है कोई पांच एक साल बाद जारविस ने स्मिता को तलाक दे दिया था।'[10] इसी तरह मारियान का पति इर्निंग मारियान द्वारा एकत्र की गई उपन्यास सामग्री को के बूते लिखे गए उपन्यास को मात्र अपना नाम देकर उसके साथ छल करता है। मारियान द्वारा विरोध किए जाने पर वह उसे मानसिक विकार से ग्रस्त बताकर तलाक देता है। वह अदालत में अर्जी देता है कि उसकी पत्नी पर हिस्टीरिया या मानसिक विकार के दौरे पड़ते थे जिनके दौरान वह मारपीट पर उतर आती थी। लिहाजा वह उससे तलाक चाहता था।[11] मारियान का दूसरा पति गैरी कूपर भी तलाकशुदा था उसकी पत्नी ने उसे इसलिए तलाक दिया था कि गैरी को बच्चों का रोना धोना पसंद ना था।

इसी उपन्यास में असीमा की मां एक परित्यक्ता नारी है जोकि अपने चरित्रहीन पति को अनचाही मांगों को पूरा न करने के कारण पति उसका त्याग करता है। उस कारण असीमा की मां को अकेले ही सिलाई का

काम करके अपने दोनों बच्चों का लालन–पालन करना पड़ता है वह पति से एक पैसा तक नहीं मांगती उसका मानना था कि मेरे सिद्धांत मुझे ऐसे पति से एक पैसा लेने की इजाजत नहीं देते जो किसी और का पति बन चुका है।[12] इस प्रकार सिद्धांत वादी असीमा की माँ अनेक कष्ट सहकर भी पति से पैसे नहीं लेती और अपने बच्चे को पालती है।

नारी शोषण की समस्या :-

मृदुला गर्ग के की रचनाओं में नारी शोषण की समस्या को उभारा गया है। मैं और में उपन्यास की माधवी एक कुशल गृहिणी एवं कथा लेखिका है किंतु वह अपनी प्रशंसा और प्रसिद्धि की भूखी है। इसी का फायदा उठाकर कौशल उसका आर्थिक मानसिक और शारीरिक शोषण करता है। वह माधवी को बेवकूफ समझता है वह कहता है खूब औरत है बेवकूफ और खूबसूरत, बेहद प्यारी चीज बेवकूफ और खूबसूरत और इस पर पैसे वाली और पैसों के मामले में भी बेवकूफ इस प्यारे मिश्रण में संभावनाएं ही संभावनाएं हैं।[13] कठगुलाब उपन्यास में नारी शोषण को मुख्य समस्या के रूप में उभार आ गया है। उपन्यास में प्रत्येक नारी पात्र किसी ना किसी शोषण का शिकार होती है। स्मिता माता पिता की मृत्यु के बाद बहन के घर रहती है, जहां उसका जीजा उसका बलात्कार करता है। बाद में स्मिता स्वयं के बल पर अमेरिका जाकर वहां रहते हुए पति जिम से भी प्रताड़ित होती है। इस प्रकार स्वदेश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी वह अनेक प्रकार से प्रताड़ित होती है।

नर्मदा भी अपने जीजा के शोषण का शिकार बनती है। जीजा उससे नौकरी करवाता है और पैसे खुद ले लेता है। यहां तक की बड़ी होने पर नर्मदा से वह जबरन विवाह भी करता है। मारियान अपने पति इविंग द्वारा बौद्धिक शोषण का शिकार होती है। इविंग उसे उपन्यास की सामग्री जुटाने में मदद करने के लिए कहता है किंतु ईविंग मारयान की प्रतिभा का फायदा उठाकर उपन्यास मात्र अपने नाम पर छपवाता है। रेशम कहानी में भी नारी शोषण का चित्रण है। हेमवती पति के कठोर व्यवहार और नियंत्रण में जीने को विवश है। बाहरी जन की सरिता भी पति के अपमान उसको सहते हुए जीवन जीती है। मीरा नाची. नामक कहानी में नारी शोषण का चित्र अंकित किया गया है। छोटी उम्र से ही मेरा मां के नियंत्रण में रहती है मा उसके नाचने गाने घूमने–फिरने यहां तक कि उसके खाने पर भी यह कह कर बंधन लगाती है कि अधिक मोटी होने की अवस्था में कोई भी लड़का उसे पसंद नहीं करेगा। तीन किलो की छोरी में लल्ली बेन का शोषण उसका पति और सास मिलकर करते हैं। इस प्रकार मृदुला गर्ग नारी शोषण के साथ–साथ व्यक्ति के द्वारा अपने से कमतर के शोषण की भी आलोचना करती है।

उपरोक्त विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मृदुला गर्ग नारी जीवन के हर एक पहलू पर बखूबी रोशनी डालते हुए मार्मिक तरीके से उनके सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक व सांस्कृतिक अस्तित्व पर काफी गहनता से उल्लेख किया है। मृदुला गर्ग की कहानियां तथा उनकी उपन्यासों में स्त्री के अस्तित्व तथा उनके शोषण पर विस्तार से चर्चा की गई है। मृदुला गर्ग की कहानियों को पढ़ करके समाज के वास्तविक चरित्र का पता चलता है तथा समाज में नारी की स्थिति और समानता भेदभाव तथा पुरुष प्रधानता के चरमोत्कर्ष का भी उन्होंने बखूबी उल्लेख किया है। अंत में हम यह कह सकते हैं कि मृदुला गर्ग नारी के अस्तित्व को भलीभांति

समझते हुए उन्हें जागृत करने का प्रयास किया है। मृदुला गर्ग की कहानियां तथा उपन्यासों में नारियों के प्रति उनकी भावनात्मक लगाव, समझ, समरसता एवं बोध को परिचित कराते हैं।

संदर्भ :–

1. मृदुला गर्ग, संगति विसंगति खरीदार, पृष्ठ सं.–375
2. आशारानी वोहरा, औरत कल, आज और कल, पृष्ठ सं. 58
3. अरविंद जैन, औरत होने की सजा, पृष्ठ सं. 27
4. मृदुला गर्ग, चूकते नहीं सवाल, पृष्ठ सं. 74
5. मृदुला गर्ग, टूकड़ा टुकड़ा आदमी यह मैं हूँ, पृष्ठ सं. 14
6. मृदुला गर्ग, दुनिया का कायदा, पृष्ठ सं. 74
7. डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाल, 20वीं सदी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन, पृष्ठ सं. 71
8. मृदुला गर्ग, अनित्य, पृष्ठ सं. 161
9. मृदुला गर्ग, मिलजुल मन, पृष्ठ सं. 29
10. मृदुला गर्ग, मिलजुल मन, पृष्ठ सं. 30
11. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृष्ठ सं. 118
12. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृष्ठ सं. 198
13. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृष्ठ सं. 167

मोबाईल नं. 9771984178

kumariusha201091@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 168-171

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वर्तमान भारतीय लोकतंत्र में अम्बेडकर के विचारों की भूमिका

राजेन्द्र कुमार वर्मा, शोधार्थी
डॉ. मधुलिका यादव, शोध निर्देशिका
सहायक प्रोफेसर,

डॉ. अम्बेडकर ने लोकतंत्र का कोई अपना सिद्धान्त नहीं दिया लेकिन इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि प्रजातंत्र एक बिन्दु नहीं है। यह एक ढंग है, यह एक ऐसी जीवन पद्धति है जिसमें समयानुसार अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। स्वंय अम्बेडकर जी ने कहा है कि ''प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो मानव इतिहास में स्थायी हो।''

डॉ. अम्बेडकर ने अपने लोकतांत्रिक विचारों को वैचारिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रखा। उन्होंने व्यावहारिक पहलू पर भी अधिक बल दिया। व्यावहारिक लोकतंत्र में ही उनको अटूट आस्था थी एक बार उन्होंने घोषणा भी की कि हमारा यह महान कर्त्तव्य है कि हम जनतंत्र को जीवन–सम्बन्धों के मुख्य सिद्धानत के रूप में संसार से समाप्त न होने दें। यदि हम लोकतंत्र में विश्वास करते हैं तो हमें उसके प्रति सच्चा वफादार होना चाहिए। हमें लोकतंत्र में केवल विश्वास ही प्रकट नहीं करना चाहिए, वरन् हम जो कुछ भी करें हमें अपने शत्रुओं को जनतंत्र के मूल सिद्धान्त, स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व का अन्त करने में सहायता नहीं करनी चाहिए। व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टि से अम्बेडकर ने लोकतंत्र को ही भारत की परिस्थितियों में आवश्यक बताया। स्वतंत्रता संग्राम के समय उनका मुख्य उद्देश्य शोषितों के लिए न्याय एवं मानव अधिकार प्राप्त करना था। इसलिए उन्होंने ऐसी सरकार का समर्थन किया जो जनता की हो, जनता के लिए हो और जनता द्वारा बनाई गई हो। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ''लोकतंत्र संगठित रूप से रहने का एक ढंग है। लोकतंत्र की जड़ें जो लोग संगठित रूप से समाज का निर्माण करते हैं, उनके ही सामाजिक सम्बन्धों में मिलती हैं।'' अम्बेडकर एक व्यावहारिक लोकतंत्रवादी थे और समाज के लोकतांत्रिक प्रबन्ध में उनका अटूट विश्वास था।

डॉ. अम्बेडकर का कहना है कि सामान्य लोगों को लोकतंत्र की रक्षा के लिए शिक्षा दी जानी चाहिए यह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिल्कुल सच है क्योंकि अशिक्षा एवं अज्ञान ही लोकतंत्र के महान शत्रु हैं। लोग इस योग्य होने चाहिए कि वे राजनैतिक दलों तथा उनके मसविदों को भली–भाँति समझें और उसके बाद अपने राजनीतिक अधिकारों का प्रयोग करें। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार लोकतांत्रिक समाज केवल सिद्धान्तों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका व्यावहारिक पहलू भी होता है, जिनका सम्बन्ध जनता की वास्तविक स्थितियों से होता है।

इससे केवल उन्हीं लोगों को लाभ नहीं मिलना चाहिए जो पहले से धनी हैं। परम्परावादी सामाजिक ढाँचा जिन लोगों के पक्ष में है, उन्हीं का लाभ होना, लोकतंत्र का गला दबाने के बराबर है। इसलिए अम्बेडकर ने कहा

एक लोकतांत्रिक समाज को यह चाहिये कि वह प्रत्येक नागरिक को अवकाश तथा संस्कृति का जीवन प्रदान करे। भारत का परम्परावादी सामाजिक ढाँचा लोकतंत्र का महान शत्रु है। इससे लोगों में ऊँच–नीच, गरीब–अमरी, नौकर–मालिक की भावनाओं को बढ़ावा मिलता है।

डॉ. अम्बेडकर संसदात्मक सरकार की ओर इसलिए आकर्षित थे कि इसके अन्तर्गत आत्मोन्नति, आत्म सम्मान तथा व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर बल दिया जाता है। इसमें उत्तम राष्ट्रीय चरित्र को प्राथमिकता दी जाती है। संसदात्मक सरकार एक व्यवस्था की द्योतक है। इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने संसदात्मक लोकतंत्र को ही प्राथमिकता दी और अन्त में कहा कि, ''कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं जब मैं यह सोचता हूँ कि भारत में लोकतंत्र का भविष्य बहुत ही अंधकारमय है, लेकन कुछ ऐसे क्षण भी हैं जब मैं अनुभव करता हूँ कि यदि हम सब कन्धे से कन्धा मिलाकर चलें और संवैधानिक नैतिकता को कायम रखने का दृढ़ प्रतिज्ञा करें तो हम एक ऐसी नियमित दल व्यवस्था स्थापित कर सकते हैं, जिसमें स्वतंत्रता समानता एवं भ्रातृत्वभाव की रक्षा हो सकती है।''

इसमें कोई शक नहीं है कि डॉ. अम्बेडकर का लोकतंत्र में अटूट विश्वास था, लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि लोकतंत्र व्यवस्था में कुछ दोष भी हैं। संसदीय व्यवस्था में अनेक अच्छी बातें मिलती हैं और सरकार जनता की सरकार, जनता के लिए होती है। फिर भी आश्चर्य की बात है कि वर्तमान समय में लोकतंत्र के विरूद्ध लोगों की भावनाऐं दिखाई पड़ती हैं। भारत में भी लोकतांत्रिक और संसदीय परम्पराओं के प्रति लोगों में असंतोष है। बहुत से लोग इनके पक्ष में नहीं हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने इसका मुख्य दोष कार्यक्षमता या कार्य पद्धति का धीमापन होना माना है। यही कारण है कि जो अधिनायक प्रवृत्ति के होते हैं उन्हें लोकतंत्र में पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिलती और वे फिर लोकतांत्रिक परम्परा की धज्जियां उड़ाते हैं।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार एक और दोषपूर्ण विचारधारा है जिसने संसदात्मक सरकार या जनतांत्रिक व्यवस्था को बदनाम किया है। यह उस तथ्य को अनुभव करने की असफलता है जो यह कहता है कि ''राजनैतिक लोकतंत्र वहाँ सफल नहीं हो सकता जहाँ सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र नहीं है।''

दोषपूर्ण विचारधारा के अतिरिक्त जो कि संसदात्मक लोकतंत्र की असफलता का कारण रही है, दोषपूर्ण संगठन भी एक कारण है। डॉ. अम्बेडकर ने बताया कि ''सभी राजनैतिक समाज दो वर्गो में विभक्त हो जाते हैं शासक और शासित। लेकिन यह विभाजन एक बुराई का रूप धारण कर लेता है। यदि यह बुराई यहीं रूक जाए तो कोई बात नहीं है लेकिन यह व्यवस्था इतनी यांत्रिक तथा दृढ़ बना दी जाती है कि शासक लोग सदैव शासक वर्ग में से ही छांटे जाते हैं। यह इसलिए होता है कि सामान्यतः लोग यह जानने का प्रयास नहीं करते हैं कि वे स्वंय अपने ही शासक हैं वे केवल इसी से संतुष्ट रहते हैं कि सरकार चुन दी है और उसे स्वंय अपने ही ऊपर शासन करने के लिए छोड़ दिया।''

डॉ. अम्बेडकर ने यह चेतावनी दी कि यदि संसदात्मक लोकतंत्र भारत में असफल रहता है तो ''इसका परिणाम विद्रोह, अराजकता तथा साम्यवाद में परिवर्तित होगा।'' जिन लोगों के हाथों में शक्ति है और जिन पर देश की भारी जिम्मेदारी है उन लोगों को लोकतंत्र के दोषों पर ध्यान रखकर अपना कार्य करना चाहिये, यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो भारत में लोकतंत्र का भविष्य अंधकारमय बन जाएगा। अराजकता की सम्भावनाऐं बढ़ जाऐंगी। इससे साम्यवाद के लिए मार्ग साफ हो जाएगा। ''मैं आपको इन आकस्मिक घटनाओं के बारे में आगह

किये देता हूँ और यदि आप यह चाहते हैं कि इस देश में संसदात्मक लोकतंत्र कायम रहे, यदि आपको विश्वास है कि आपकी विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता बनी रहे यदि आपको स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना है यदि आप व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार में विश्वास करते हैं तो इस देश के समाज के बुद्धिमान अंग होने के नाते आपका यह महान कर्त्तव्य है कि संसदात्मक सरकार की पद्धति को बनाए रखें, इसके लिए काम करें और इसे परिश्रम से सफल बनायें।''

डॉ. अम्बेडकर यह अच्छी तरह जानते थे कि संसदात्मक लोकतंत्र ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है, जिसे जादू–टोना से सफल बनाय जा सके। केवल जनता को लोकतांत्रिक भावनाऐं ही लोकतंत्र को सफल बना सकती हैं। यदि वे इसके प्रति वफादार हैं और तद्नुसार कार्य करें तो लोकतंत्र भली–भाँति कार्य कर सकता है।

डॉ. अम्बेडकर ने लोकतंत्र के दोषों को ही नहीं बताया साथ–साथ उसकी सफलता के लिए कुछ आवश्यक सुझाव भी दिये। अम्बेडकर के अनुसार सबसे पहली शर्त यह है कि लोकतंत्र की कार्य सफलता के लिए एक विरोधी दल का होना आवश्यक है। विरोधी दल का सीधा अर्थ है कि सरकार की कार्य पद्धति की सदैव देखभाल होती रहेगी। उन्होंने कहा कि ''लोकतंत्र यह अनुभव करता है कि सरकार के कामकाज की देखभाल के लिए कोई होना चाहिए। यह देखना आवश्यक है कि सरकार गलत काम तो नहीं कर रही है। इस प्रकार की देखभाल निरन्तर रूप से होनी चाहिए। इसलिए इंग्लैण्ड व कनाडा के लोग विरोधी दलों पर धन खर्च करने में बिल्कुल नहीं हिचकिचाते हैं।''

उनके अनुसार लोकतंत्र की सफलता के लिए कानून तथा प्रशासन की दृष्टि में सब लोगों को समान समझा जाना चाहिए। मौलिक रूप से लोकतंत्र में सभी लोग बिना किसी भेदभाव के समान हैं। '' डॉ. अम्बेडकर की सम्मति से पूर्ण स्वतंत्रता काल्पनिक हो सकती है, लेकिन फिर भी हमें समानता को एक महत्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में लोकतंत्र में स्वीकार करना चाहिए।''

डॉ. अम्बेडकर ने लोकतंत्र की सफलता के लिए संवैधानिक तरीके अपनाने का समर्थन किया उन्होंने लिखा कि ''यदि हम लोकतंत्र को न मात्र सिद्धान्त वरन् व्यवहारतः बनाए रखना चाहते हैं तो हमें क्या करना चाहिए? सर्वप्रथम बात हमें सामाजिक एवं आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संवैधानिक विधियों में अटूट विश्वास रखना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमें क्राँति के रक्तिक ढंगों का परित्याग करना चाहिए। इसका अर्थ पद्धतियों को छोड़ना चाहिए। यदि आर्थिक एवं सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के सभी संवैधानिक तरीके असफल हो जाऐ तो असंवैधानिक ढंग अपनाने में कुछ न्यायिक संगति है लेकिन जहाँ संवैधानिक ढंग खुले हो वहाँ असंवैधानिक विधियों को अपनाने में कोई युक्ति नहीं है। ये विधियाँ अराजकता की जननी हैं। अतः जितना जल्दी हम उन्हें तिलांजलि दे सकें उतना ही अच्छा होगा।''

डॉ. अम्बेडकर ने लोकतंत्र की सफलता के लिए कम से कम दो राजनीतिक दलों का होना अनिवार्य बताया। उन्होंने कहा कि सरकार चलाने के लिए दल आवश्यक हैं। लेकिन दो दल सरकार को निरंकुश बनने से रोकने के लिए आवश्यक हैं। लोकतांत्रिक सरकार उसी समय तक लोकतांत्रिक है जब उसमें द्वि दल पद्धति कार्य करती है, एक पक्ष में दूसरी विपक्ष में।

अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में अम्बेडकर ने मानववाद के आधार पर एक प्रकार के राजनीतिक दर्शन का

विकास किया जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना की वह पहले था। उनके लोकतंत्र के प्रति विचार एवं सिद्धांत अंग्रेजी भाषा के पाँच पी पर आधारित है जैसे जनता (People), दल प्रणाली (Party System), प्रैस (Press), संसद (Parliament), प्लेटफार्म (Plateform)।

उन्होंने लोकतंत्र में दलितों एवं महिलाओं के अधिकारों के लिये अकेले ही संघर्ष प्रारम्भ किया किन्तु धीरे–धीरे सम्पूर्ण वर्गो द्वारा उनका समर्थन किया जाने लगा। वह संकटग्रस्त रास्तों का डर किये बिना, आलोचनाओं को नजरअंदाज करते हुये अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ते रहे। सच ही कहा गया है कि –

राह चलता जो अकेला है रास्ता,
उसके लिए अंनजान क्या।
इंसान जो अपने पसीने से जीया,
भाग्य क्या उसके लिए भगवान क्या।
दबा दे जो जहाजों को उसे तुफान कहते हैं,
जो तुफान से टक्कर ले उसे इंसान कहते हैं।
वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ में बिखरे फूल न हों,
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धाराऐं प्रतिकूल न हों।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. बी.आर. अम्बेडकर : व्हॉट कांग्रेस एण्ड गाँधी हेव इन टू द अण्टचेबिल्स, 1946, पृ. 194
2. ऑल इण्डिया डिप्रेस्ट क्लासिक कांफ्रेस (तृतीय अधिवेशन) नागपुर में दिया गया भाषण, जुलाई 1942
3. डॉ. अम्बेडकर – लाइफ एण्ड मिशन, पृ. 487
4. हॉट कांग्रेस एण्ड गांधी हैव इन टू द अनटेचिबल, पृ. 95
5. भगवानदास द्वारा संकलित सम्पादित द स्पोक अम्बेडकर, 1969, पृ. 203
6. द स्पोक अम्बेडकर, वॉल्यम 1, पृ. 46
7. द स्पोक, वॉल्यम 1, पृ. 46–47
8. डी.ए.वी. कॉलेज जालंधर (पंजाब में दिया गया भाषण) 28/10/1951
9. द स्पोक अम्बेडकर, वॉल्यम 1, पृ. 65
10. एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, पृ. 39
11. संविधान सभा में दिया गया भाषण, 25/11/1949
12. बी.आर. अम्बेडकर रानाडे, गांधी एण्ड जिन्ना, 1943, पृ. 77

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

डॉ. निशीथ गौड़, लब्ध स्वर्णपदक, यू जी सी नैट परीक्षा उत्तीर्ण
एम. ए. संस्कृत एवं हिंदी, बी.एड,पी एच.डी,
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, डी.ई.आई. (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा।

प्रकाशन सम्मान एवं अनुसंधान :-

- 12 पुस्तकें प्रकाशित।
- 16 पुस्तकें संपादित।
- 20 शोध आलेख प्रकाशित।
- 40 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता एवं शोध पत्र प्रस्तुति।
- गीना देवी शोध श्री सम्मान 2023, गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी।
- हिंदी सेवी विदुषी सम्मान, कथा, यू.के, लंदन 2018
- सिहाग साहित्य सम्मान, भिवानी, हरियाणा 2018
- चौधरी खूम सिंह स्मृति सम्मान, अलवर 2017
- हिंदी मनस्वी सम्मान, आगरा 2016
- अवार्ड फॉर बेस्ट पेपर, एसआरएसडी पेपर मेमोरियल शिक्षा शोध, आगरा 2015
- आउटस्टैंडिंग फैकल्टी अवार्ड, चेन्नई, 2015
- लोक रत्न राष्ट्रीय पुरस्कार, वर्धा 2010
- ज्वेल ऑफ़ इंडिया, युवा समूह प्रकाशन, वर्धा 2009

ईमेल –nishithgaur@dei.ac.in

डॉ. वर्षा रानी, M. Ed; MA (संस्कृत), **UGC NET/JRF, Ph.D**
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

प्रकाशन, सम्मान एवं अनुसंधान :-

- नारी गौरव सम्मान 2022, कृष्णा बसंती रिसर्च लिटरेचर एक्सीलेंस अवॉर्ड 2022,
- राष्ट्र पुत्री सम्मान 2023
- 7 पुस्तकें और 2 सम्पादित जर्नल प्रकाशित
- अभी 2 पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है
- 11 शोध आलेख प्रकाशित एवं 15 शोध आलेखों की प्रस्तुति
- 35 सेमिनार, कॉन्फ्रेंस, वेबीनार इत्यादि में सहभागिता
- अन्तराष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी में सहभागिता और सम्मानित
- बोहल शोध मंजूषा पत्रिका की विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति में शामिल
- एशियन सोसाइटी ऑफ़ डिज़ास्टर मैनेजमेंट की सदस्य।

संपर्क सूत्र :- 9671904323
ईमेल –vasu14rani@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115